

गौतावली सटीक ।

—०००—

गौतावली के विषम पद और गूड़ अर्थ की मूलभूट टीका
श्री जानकीरमण छपा पाच श्री सीतारामाय हरि
हरप्रसाद जी ने संतजन के उपकार हेतु
रचना किया ।


—०००—

जिसे बनारस लाइट छापेखाने में सुनशी हविशंशकाल
वा बाबू अचिनाश्रीलाल वा बाबू भोलानाथ
की सञ्चालि से गोपीनाथ पाठक ने
छापा संमत् १९२६ ।

Banars :

PRINTED AT THE LIGHT PRESS. : BY GOPENAUH PATHUK.

1869.

 इस पुस्तक के पाठक जनों पर प्रगट हों कि १०४ अंक के आगे ११३ का अंक है सो यह छापेवालों की भूल से छप गया है परन्तु पाठ क्रम से हैं उसमें कुछ छूट अथवा अशुद्ध नहीं हैं ॥

गीतावली सटीक ।

- 000 -

श्री सीतारामार्थानमः ।

श्लोक । बालादंगवरं रामं कौशल्यानन्दवर्द्धनम् । अतः प्रोक्तुमुमश्यामं
दध्योदनमुखं भजे ॥ १ ॥ सोरठा । जपतरहतसबजाम जा-
सुनामब्रह्मादिकौ । हरिहरकरतप्रणाम तेहि सियसियबर
चरणकौ ॥ १ ॥ दोहा । भरतलषनरिप्रदवनपद बंदिध्याय
हनुमान । हरिहरटीकारचतहै देऊसुधारिसुजान ॥ २ ॥
मू० । नीलांबुजश्यामलकोमलांगं सीतासमारोपितवामभागं । पा-
शौमहाशायकचारुचापं नमामिरामं रघुवंशनाथम् ॥ १ ॥

टी० । श्याम कमल सम श्यामल कोमल अंग श्री सीता जू वाम
भागमें भली भांति तें स्थित श्री हाथमें असोष बाण श्री सुंदर सारंग
घनुष है जिनके तिन रघुवंशनाथ श्री राम कौ नमस्कार करत हौं
श्री राम की चारि लीला प्रधान हैं बाल विवाह वन और राजलीला
यह चारों श्लोक के एक एक पदसे जनाए नीलांबुजश्यामलकोमला
गं तें बाल श्री सीतासमारोपितवामभागं तें विवाह श्री पाशौमहा
शायकचारुचापं तें वन श्री नमामिरामं रघुवंशनाथं तें राज्यलीला ॥
मू० । राग असावरी । आजुसुदिनसुभघरीसुहाई रूपशील
गुनधामरामनृपभवनप्रगटभएआई ॥ १ ॥ अतिपुनीतमधु
मासलगनग्रह वारयोगसमुदाई हरषवन्तचरअचरभूमिसुर

गीतावली स० ।

तनुहृहपुलकिक्रिजनाई ॥ २ ॥ वरषाहँविवुधनिकरकुसुमावलि
नभदुंदुभीवजाई कौशल्यादिमातुसबहरप्रित यहसुखवरनि
नजाई ॥ ३ ॥ सुनिदतरघसुतनन्मलिएसव गुरजनविप्रबुला
ईवेदशिहितकमिक्लिधापरसमुचि आनद उरनसमाई ॥ ४ ॥
सदनवेदधुनिकरतमधुरमनि वज्जविधिवाजुवधाई पुग्वामिन्ह
प्रियनाथहेतु निजनिजमंपदालुटाई ॥ ५ ॥ मनितीरनबज्ज
केतुपताकनि प्रीहचिरकरिछाई मागधसुतद्वारवंदीजन ज
ईतकरतवडाई ॥ ६ ॥ सहजसिंगकिएवनिताचलि मंग
लविपुलवनाई गार्वादेहिअसीसमुदितचिर जियोतनयसुष
दाई ॥ ७ ॥ बेयिन्हकुमकुमकीचअरगता अगरुअवीरउ
डाई नाचिहँपुरनरनारिप्रेमभरि देहदसाविसराई ॥ ८ ॥
अमितधेनुगजतुरगसनमनि जातरूपअधिकार्ई देतभूपअनु
रूपजाहिजोइ सकलसिद्धिगृहआई ॥ ९ ॥ सुखीभएसुगसं
तभूमिसुर खलगनमनमक्तिनाई सबहिंसुमनविकमतगविनि
कमत कुमुटाविपिनविलखाई ॥ १० ॥ जोसुखमिंधुसकत
सीकरतेमिविवरंचिप्रभुताई सोसुखउमगिअवधरह्योदसदि-
सिकवनजतनकहौगाई ॥ ११ ॥ जेरघुवीरचरनचिन्तकतिन्ह
कीगतिप्रगटदेखाई अविरेलअमलअनूपभगतिदृढ तुलसिदा
सतवपाई ॥ १२ ॥

टी०। सखी प्रति सखी कहति है आजु सुंदर दिन औ सुंदर सुभ
घनी मे रूप शील औ गुन के धाम थी राम महाराज दशरथ के
गृह मे आइ के प्रगट भए भवन प्रगट भए आई कहिवे को यह
भाव कि अपने दृच्छा करि पर धाम ते आइ के प्रगटे गर्भ ते ना
हीं ॥ १ ॥ अति पवित्र चैत्र मास कर्क लग्न पांच ग्रह उच्च के मेषके
वृष मकर के मंगल तुला के शनैश्वर कर्क के वृहस्पति मीन केशुक
औ थी राम जन्म दिन मेरु तंच औ रामसुधामे सोमवार औ सूर

सागर में बुधवार औ गोसाँ जी मंगलवार एहीग्रंथ मे लिखे सो कल्यांतर करि व्यवस्था करना औ योग समुदाय सुकर्मादि हैं चरं जंगम अचर स्थावर औ भूमिसुर ब्राह्मण हर्षवन्त हैं सो कैसे जानि पखौ तेहि हेतु लिखत हैं कि तनुरुह कहैं रोम सो पुस्तक करि जनाय दिए । शंका अचर की पुलकावली कैसेजानिपरी । उत्तर । अचर पर्वत वृक्षादि तिनको रोम रूप दृश्य पचादि हैं ते लहलहाय उठे सोई पुलकना है चर अचर से भूमिसुर को पृथक लिखवे को यह भाव की औ रघुनाथ को ब्रह्मण्य जानि ब्राह्मणन की मव तैं अधिक आनंद भयो अतएव भागवत में लिखा । ब्रह्मण्यः सत्यमंधश्च रामोदाशरधिर्यथा । मधु मास को अति पुनीत कहिबे को यह भाव कि वर्ष का आदि मास है अतएव औ दशरथ महाराज अश्वमेध याग चैचै मे आरभ्य किए । बालमीकीय रामायण मे लिखा ॥ २ ॥ देवतन के समूह आकाश में नगारा बजाइ पुष्प समूह वरषत हैं नगारा बजाइवे को यह भाव कि रावण के भय तैं छिपे छिपे क्षिप्रत रहे ते आजु नगारा बजाइ प्रगटे औ औ कौशल्या ज आदि सब माता हर्षित हैं यह सुख बरनि नहीं जात है जाते चौधेपन में पुत्र प ए धाते मातन को सुख अकथनीय ठहराये ॥ ३ ॥ दशरथ महाराज पुत्रजन्म सुनि सब कुल दृढ़ औ ब्राह्मणों को बोलाय लिए वेदविहित नांदोमुख आद्यादि परम शुचि क्रिया करि जो आनंद भयो सो उर मे नहीं समात है गुरुजन विप्र दोऊ बोलाइवे को यह भाव कि लौकिक क्रिया गुरु जन औ वैदिक क्रिया ब्राह्मण मन्हारै ॥ ४ ॥ मधुर खरतें सुनि गृह में वेद धुनि करत औ बहू प्रकारते बधाई बांजति है प्रर बासी प्रिय को नाथ है तिन के हेतु अपनी अपनी संपदा लुटाई प्रियनाथ कहिबे को यह भाव कि महाराज के पुत्र होएविना जो अनाथ रहे सो सनाथ भए ॥ ५ ॥ तोरन बंदनवार केतु ध्वजा प्रताका फारहरा वा केतु सचिन्ह जैसे विष्णु के ध्वज में गरुड़ चिन्ह

औ शिव के ध्वज में वृष चिन्ह औ पताका चिन्ह रहित मागधक-
 थक सूत पौराणिक बंदी भाट ॥ सूताःपौराणिकाःप्रोक्तामागधार्थं
 शंसकाः । बंदिनस्त्वमलप्रज्ञाःप्रस्तावसदृशोक्तयः ॥ ६ ॥ सहज शृंग
 जेहि भांति तें किए रह्यौ तैसहीं उठि धाईं मंगल विपुन हरहीं दूर्वादि
 सहज शृंगार को यह भाव कि मंगल बनाइवे के आनंद मे शृंगारसजना
 भूलिगई ॥ ७ ॥ गलिन मे केसर औ अरगजा को कीच है औ अग
 की धुआं औ अबीर उड़त है औ देह दसा विमराइ प्रेम में भरि
 पुर के नर नारि नाचत हैं ॥ ८ ॥ गज हाथी तुरंग घोड़ा जात रूप
 सोना सिद्धि अणिमादिक ॥ ९ ॥ देवता संत औ ब्राह्मण सुखी भए
 औ खलगण के मन मे मतिनाई आई अर्थात् दुखी भए जैसे सूर्य
 के निकसत सब फूल फूलत है पर कोंडूँ को बन बिलखात अर्थात्संपु
 टित होत है भाव सपेदी भीतर जात ख्याहीऊ पर आय जात है ॥ १० ॥
 जो सुखरूप समुद्र के एक बंद ते शिव ब्रह्मा की प्रभुताई है सो सुख
 अजोध्या जी के दशो दिशा में उमगि रह्यौ वा अजोध्या जी तें उ-
 मगि के दशों दिशा में जाय रह्यौ ताकों कवन जतन तें गाइ कह्यौ
 भाव बंद को जो भली भांति न जानै सो समुद्र कों कैसे बखानै ॥
 ११ ॥ जे रघुनाथ के चरन के चिन्तक हैं तिनकी गति प्रगट देखि
 परति है अर्थात् ज्ञानिन कों कहीं प्रगट न भए औ भक्तन के पुत्र
 है प्रगट भए भाव जो स्वयं रह्यौ सो परबश भयौ अंतराल रहित
 निर्मल औ उपमा रहित दृढ भक्ति तब तुलसीदास ने पाई भाव
 केवल भक्ति करि रघुनाथ के प्रगटे तें कर्म ज्ञान को भरोसा छोड़ि
 केवल भक्ति ही दृढ करि लियो ॥ १२ ॥ १ ॥

मू० । राग जयत श्री । सहेली सुनुसोहिलोरे सोहिलोसोहिलो
 सोहिलोसोहिलोसवजगआजु पूतसपूतकौसिलाजायो अच
 लभयोकुलराजु ॥ १ ॥ चैतचारुनौसीसितमध्यगगनगतभा-
 नु नषतयोगग्रहलगनभलेदिन मंगलमोदिनधानु ॥ २ ॥

व्योमपवनप्रावकजलथलदिसि दसङ्गसुमंगलमूल सुरदुंदुभी
 वजावहिंगावहिंगं हरषहिंगरषहिंगंफूल ॥ ३ ॥ भूपतिस
 दनसोहिलोसुनिवाजेगहहेनिसान जहंतहंसजहिकलस-
 ध्वजचामरतोरनकेतुवितान ॥ ४ ॥ सौचिसुगंधरचेचौकेगृह
 आंगनगलीबजार दलफलफूलदूबदधिरोचन घरघरमंगल-
 चार ॥ ५ ॥ सुनिसानंदउठैदसख्यंदन सकलसमाजसमेत
 लियेबोलिगुरसचिवभूमिसुर प्रमुदितचलेनिकेत ॥ ६ ॥ जा
 तकर्मकमिपूजिपितरसुर दियेमहिदेवनदान तेहिअवसरसुत
 तोनप्रगटभए मंगलमुदकल्याण ॥ ७ ॥ आनदमहँआनंद
 अवध आनंदवधावनहोइ उपमाकहेचारिफनकी मोकीं
 भलानकहैकविकोइ ॥ ८ ॥ सजिआरतीविचित्रथारकर जूथ
 जूथवरनारि गावतचनीवधावनलैलैनिजनिजकुलअनुहारि
 ९ ॥ असहीदुसहीमरङ्गमनहिमन बैरिनवढङ्गविषाद नृप
 सुतचारिचारुचिरजोवङ्ग संकरगौरिप्रसाद ॥ १० ॥ लैलै
 ठोबप्रजाप्रमुदितचलि भांतिभांतिभरिभार करहिंगनकरि-
 आनरायकी नाचहिराजदुआर ॥ ११ ॥ गजरथवाजिवाहि
 नौवाहन सबनिसवारेसाज जनुरतिपतिरितुपतिकोसलपुर
 विहरतसहितसमाज ॥ १२ ॥ घंटाघंटीपखाउजआउजभां
 भवेनुडफतार नूपुरधुनिमंजीरमनोहर करकंकनभनकार ॥
 १३ ॥ नृत्यकरहिनटनटीनारिनर अपनेअपनेरंग मनङ्गमदन
 रतिविविधवेषधरि नटतसुदेससुधंग ॥ १४ ॥ उघटाहँकंदप्र
 बंधगीतपद रागतानबंधान सुनिकिन्दरगंधर्वसराहत विथके
 हैविबुधाविमान ॥ १५ ॥ कुंकुमअगरअरगजाकिरकहिं भ
 रहिंगुलालअवीर नभप्रसूनभरिपुरीकोलाहल भइमनभाव
 तिभीर ॥ १६ ॥ बड़ीवयसविधिभयोदाहिनो गुरसुरआसिर्वाद
 दसरथमुकतसुधासागरसब उमगेहैतजिमरजाद ॥ १७ ॥

ब्रान्हानवेद्वंदिषिरुदावति जयधुनिमंगलगान निकमतपैठत
 लोगपरस्पर बोलतलगिलगिकान ॥ १८ ॥ वारहिंसुकुतार
 तनराजमहि षीपुरमुमुखिसमान वगरेनगरनेछावगिमनिगन
 जनुजुवारिजवधान ॥ १९ ॥ कौन्हेवेदविधिलोकोरितिन्पु मं
 दिरपरमङ्गलास कौसल्याकेकईसुमिचा रहसविवसुरनिशा-
 स ॥ २० ॥ रानिनदिएवसनमनिभूषन राजासहनभंडार मा
 गधसूतभाटनटजाचक जहंतहंकराहिकवार ॥ २१ ॥ विप्रवधू
 सनमानिसुआसिनि जनपुरजनपहिरादू सनमानेअवनीसअ
 सीसतईसरमेसमनाइ ॥ २२ ॥ अष्टसिद्धिनवनिद्धिभूतिसव
 भूपतिभवनकमांहि समउसमाजराजदशरथको लोकपसक-
 लसिहार्हि ॥ २३ ॥ कोवहिसकैअवधवाप्तिनको प्रेमप्रमो
 दउछाऊ सारदसेमगनेसगिरीसाहं अगमनिगमअवगऊ ॥
 २४ ॥ सिवविरंचिसुनिसिद्धप्रसंसत बडेभूपकेभाग तुलसिदा
 सप्रभुसोहिलोगावत उमगिउमगिअनुराग ॥ २५ ॥

टी० । सहेली प्रतिमहेली की उक्ति हैसहेली सखी वा सहेली सहे-
 वाली जेहि को यह उखव सोहात अर्थात् असही दुमही नाही
 सोहिलो कहै उखव सब जगत मे सोहिला है याते बङ्गवार लिखे
 वा पांच बेर लिखवे ते पांचो देवतन को उखव युक्त जनाए वा पंचभूत
 सब हर्षित भए जे पहिले रावनादि करि दुखी रहे ताते पांच बार
 वा पहिले सोहिलो रे जो लिखे सो सुनिवे में है फेरि चारि बार
 लिखेजाते चारि भाइन का जन्मोखव है वा आनंदते बङ्गार लिखेसपूत
 कहिवे को यह भाव कि जन्मते तीन भैयन को और वो लाए वा दिन
 ग्रहादि भजे तें जाने की सपूती करैगे अचल भयो कुल राज कहिवे
 को यह भाव कि पुच भए विना जो चल होत रह्यौ सो अचल भयो
 ॥ १ ॥ शुक्ल पक्ष मध्यान्ह काल औ बार मंगल आनंदको निधान है
 ॥ २ ॥ आकास वायु अग्नि जल औ थल करि पृथ्वी लेना औ दशो दिगा

मैसुमंगल कामूल है आकाशादि पांचो लिखवते पांचो भूतन को हर्ष
 जनाए ॥ ३ ॥ निसान नगारा चामर कहै चमर वितान समिआना
 ॥ ४ ॥ सुगंध अतर गुलावादि दत्त तुलसी विल्व पचादि फल सुपारी
 नरिअर अदि रोचन गोरोचन वा रोरी ॥ ५ ॥ दशखंदन दशरथ
 महाराज निकेत महल ॥ ६ ॥ जात कर्म नांदी मुख आइ जेहि
 में दही अक्षत से आइ औ दुर्गादि जल से तर्पन होत है ताको
 करि पितर सुर पति ब्राह्मणन वो दान दिए । संका । सूतक में
 पूजा औ दान कैसे किए । उत्तर । जब लौ नार नही छौना जाय
 तबलो सूतक नाही लगत है तेहि अक्षर मे तीनपुत्र और प्रगट
 भए मंगल मुद् कल्यान अर्थात् मंगल रूप भरतजी मुद् रूप लक्ष्मण
 जी औ कल्यान रूप शत्रुघ्न जी है ॥ ७ ॥ श्रीरघुनाथ के जन्म के आ
 नंद महं तीनों भैयन का जन्म भयो ताते आनंद महं आनंद लिखे
 अयोध्या जी मे आनंद जुक्त बधावा होत है चारो फल सम चारो
 भैयन को कहे ते हमको कोऊ कवि भना नकहैगो अर्थात् जाको
 जन मोक्षादि दाता है जात तेहि को मोक्षादि की उपमा वैसे सं
 भवे ॥ ८ ॥ विचित्र धार अद्भुतधार बरनारि अहिवाती कुल अनु
 चारि कुन के योग्य भाव ब्राह्मणी सतो गुणा ठाठ से औ चत्रियार
 जो गुनी ठाठ से इत्यादि ॥ ९ ॥ अमही कहै जो और की बढ़ती
 न सहि सकै दुमहो कहै दुख करि पर बढ़ती सहे वा दुमही
 दुष्ट ए सब मन ही मन अर्थात् कुटि के मरुज औ बैरिन को वि
 षाद बढ़ौ ॥ १० ॥ ढोत्र कहै भेंट की सामग्री अर्थात् अपने अपने
 जाति के अनुरूप जैसे अहीर दही बाई पान इत्यादि आन कहै
 दोहाई ॥ ११ ॥ बाहिनी जो सेना ताको बाहन जो नायक तिनने
 हाथी रथ घोड़ा सबनि के साज सँवारे वाहयतीतवाहनः इस व्यु
 त्यक्ति ते नायक को वाचक भयो मानो सेनापति नहीं है काम है
 सेना नही है बसन्त गितु है सो अयोध्या जी मे समाज सहित वि-

हरत है इहां समाज भूषण वसनादि हैं वा गजरथ औ तुरंगरथ औ बाहिनी वाहन अर्थात् घोड़ीघोड़ा हथिनी हाथी आदि सबनि के साज सँवारे अपर पर्ववत ॥ १२ ॥ घंटा हाथी आदि के घंटो हाथिन के भेत्ता की औ साढ़नी पायक आदि की आउज कहैं तासा अरबी में तासा को आउज कहत हैं तार करताल मंजीर पावजेव १३ ॥ अपने अपने रंग कहैं चाल तैं अर्थात् संगीत नाचने वाले संगीत के चाल तैं औ तांडव नाचने वाले तांडव के चाल तैं इत्यादि नट नटी नारि नर नृत्य करत हैं मानौ काम रति बद्धत बेष धरि सुदेश कहैं सुंदर औ सुधंग कहैं सूधे अंग तैं नाचत हैं अर्थात् हाथ मुह टेटा नाहीं होए प्रावत है वा सुधंग शुद्ध अंग नृत्य के ॥ १४ ॥ छंद औ प्रबंध औ गीत के पद राग तान बंधान पूर्वक उघट हिं अर्थात् गावहिं जैसे ध्रुपद तराना है तैसे छंद प्रबंध गीत भी है संगीत ग्रंथन में स्पष्ट बंधान कहैं लय अर्थात् गीत समाप्त पर्ववत तान ताल बराबर चला जाय बार बराबर भी भेद न पड़े सुनि के गंधर्व किन्नर सराहत हैं कि अस हम नहीं गाय सकते औ देव तन के विमान विशेष थकि गए अर्थात् अचल है गए भाव जो स्वर्ग में नहीं सुने रहे सो सुने तातें मोड़ि रहे ॥ १५ ॥ तीखुर आदि से मेही औ अति लाल जो बनत ताको गुलाल कहत हैं औ तेहि से कमलान औ मोटा जो जोन्हरी आदि के पिसान से बनत है ताको अवीर कहत हैं कोलाहल अधिक शब्द मन भावती भीर जो भीर बद्धत दिन से चाहत रहे सो भई ॥ १६ ॥ बड़ी वयम साठि हजार बरिस के अवस्था मे गुरू औ देवता के आशिर्वाद ते विधता दाहि नो भयो षष्टिर्वर्षसहस्राणि जातस्यममकौशिक इति श्रीमद्रामायणे महाराज दशरथ के सुकृत रूप जे अमृत के सब समुद्र हैं अर्थात् चारो समुद्र ते मर्याद कहैं किनारा छोड़ि उमगे भाव जैसे समुद्र जो किनारा छोड़ि उमगे तो सब जग डूबि जाय सो एकको को कहै

सब सुकृत समुद्र उमगे एहितें यह ब्यंजित किए कि सब ब्रह्मांड
 आनंद मे डूबि गयो ॥ १७ ॥ विरदावली यह लगि लगि कान क-
 हिवे को यह भाव कि वेदादि धुनि तें जो महाशब्द भयो तातें सु
 नात नाहीं कानमेलगि जब जोर सें बोलत हैं तब सुनात है ॥ १८ ॥
 मोती जवाहिर आदि श्री महाराज की पटगानी औ पुर की स्त्री
 गन समान नेवछावर कराहैं एहि तें यह जनाए की पुरवासिनिनि को
 भी आनंद महाराजिन के तुल्यै भयो नेवछावर करतमे जो गिरे मनि
 समूह ते बगरे कहैं छितिराने नगर मेज्वार जोन्हरी औ जब धान
 के समान ॥ १९ ॥ मंदिर मे परम जल्लास पूर्वक वेद लोक रीति
 महाराज कीन्हे अर्थात् वेद रीति जात संस्कार अभ्युदयिक आहुति
 पतनारक्षणादि लोकीति नार गाड़व औ राई नोन वारव औ चौकी
 हेतु आगिआदि राखव सब रनिवास कौशल्या कै कैई सुभित्ता आदि-
 रहस विवश कहिए हर्ष के विशेष बम भई ॥ २० ॥ सहन कहैं
 संपूर्ण कवार कहैं यह ॥ २१ ॥ सुआसिनि कहैं सावित्री कन्यावर्ग ज
 न दासादि पुरजन पुरवासी अबनीश दशरथ महाराज ईश शिव रमे
 श विष्णु ॥ २२ ॥ आठो सिद्धि औ नवो निधि सब एश्वर्य युक्त महा
 राज के भवन मे कमाहैं कहैं परिचर्या करत हैं लोकप इन्द्रादि
 अणिमामहिमाचैव गरिमालघिमातथा । प्राप्तिः प्राकाशमीशित्वं वशि
 त्वं चाष्टमिद्वयः ॥ पद्मोस्त्रियांमहापद्म शंखोमकरकच्छपौ । मुकुंदकुं
 दनीलाञ्छ खर्वञ्च निधयोनवेतिशब्दार्णवे ॥ २३ ॥ गिरीश शिव अ-
 गम शास्त्र निगम वेद इन्ह कौं अथाह है वाशिवादि को अगम वेद
 को अथाह है ॥ २४ ॥ २५ ॥

मू० । रागविलावल । आजुमहामंगलकोसलपुरसुनिन्दपकेसुतचारि
 भएसदनसदनसोहिलोसुहावननभअरुनगरनिसानचये । १ ।
 सजिसजिजानअमरकिन्तरमुनिजानिसमयसमगानठये नाच
 हिंनभअरुकरामुदितपनपुनिपुनिवरषहिंसुमनचये ॥ २ ॥ अ

तिसुखवेगिवोलिगुरभूसुरभूपतिभीतरभवनगए जातकर्मकरि
 कनकवसनमनिभूषितसुरभिसमूहदये ॥ ३ ॥ दलरोचनफल
 फूलदूबदधियुवतिन्हभरिभरिथारलये गावतचलींभीरभइवी
 थिन्हबंदिनवांकुरविरदवये ॥ ४ ॥ कनककलसचामरपताक
 ध्वजजहूतहूबंदनवारनये भरहिँअवीरअरगजाछिरकाहिँसक
 ललोकएकरंगरये ॥ ५ ॥ उमगिचल्यौआनंदलोकतिज्जंदेंतस
 बनिमंदिररितये तुलसिदासपुनिभरेइदेखियतरामछपाचित
 वनिचितये ॥ ६ ॥

टी० । हये कहै बजे ॥ १ ॥ समै सम गान ठये अर्थात् सो हरादि
 गान ठाने चये समूह ॥ २ ॥ सुरभी धेनु ॥ ३ ॥ बांकुरिबग्द उत्-
 छष्ट यश बये कहै बदे ॥ ४ ॥ रएरंगे ॥ ५ ॥ रितये खाली किये ॥ ६ ॥
 मू० । रागजयतश्ची । गावैबिमलविवुधवरबानी भुवनकोटिकल्यानकंदु
 जायोपूतकोसिलारानी ॥ १ ॥ मासपाषतिथिवारनषतग्रहयो
 गलगनसुभठानी । जलथलगगनप्रसन्नसाधुमनदसदिसिहि
 यज्जलसानी ॥ २ ॥ वरषतसुमनवधावनगरनभहरषनजातव
 षानी । ज्यौंज्जलासरनिवांसनरेसहिँत्यौंजनपदरजधानी ३ ॥
 असरनागमुनिमनुजसपरिजनविगतविखादगलानी । मिलेहि
 मांभरावनरजनीचरलंकमंकअकुलानी ॥ ४ ॥ देवपितरगु
 रुविप्रपूजिन्हपदियेदानरुचिजानी । मुनिवनितापुरनारिसआ
 सिनिसहसभांतिसनमानौ ॥ ५ ॥ पादूअवाइअसीसतनिकस
 तजासकजनभएदानी । यौंप्रसन्नकेकईसुमिचहिँहोह्महेस
 भवानी ॥ ६ ॥ दिनदूसरेभूपभामिनिदोउभईसुमंगलषानी । भ
 योसोहिलोसोहिलोमोजनुसृष्टिसोहिलेसानी ॥ ७ ॥ नाचत
 गावतभोसनभावतसुषसुअवधअधिकानी । देतलेतपहिरतप
 हिरावतप्रजाप्रमोदअषानी ॥ ८ ॥ गाननिसानकोलाहलकौतु
 कदेषतदुनीसिहानी । हरिविरंचिहरप्रसोभाकुलिकोसलपुरी

लुभानी ॥ ६ ॥ आनदञ्चवनिराजरवनीसवमागङ्गकोखिजु
 डानी । आसिषदैसराहृंसिादरउमारमाब्रह्मानी ॥ १० ॥
 विभवविलासवादिदशरथकीदेपिनजिनहिंसोहानी । कीर
 तिकुसलभूतिजयरिधिसिधितिन्ह परसवैकोहानी ॥ ११ ॥ छ
 टीवारहौलोकवेदविधिकरिसुविधानविधानी । रामलघनरि
 पुदमनभरतधरेनामललितगुरज्ञानी ॥ १२ ॥ सुकृतसुमनति
 लमोदवासिधिजतनजंघभरिघानी । सुषसनेहसवदियोदस
 रथहिषरिषलेलधिरथानी ॥ १३ ॥ अनुदिनउदयउक्काहउम
 गजगघरघरअवधकहानी । तुलसीरामजन्मजसगावतसोसमा
 जउरअनी ॥ १४ ॥ ४ ॥

टी० । विबुध देवता कल्याण कंद कल्याण के मूल वा मेघ जायो
 उत्पन्न कियो ॥ १ ॥ सुभ ठानी शुभस्थानी जल थल आकाश औ
 साधुन के मन प्रसन्न होत भयो औ दशो दिशा को हृदय जलसत
 भयो शंका जलादि प्रसन्न कैसे भए उत्तर जल निर्मल भयो पृथ्वी लषी
 संपन्न भई गगन मेघादि रहित भयो सोई प्रसन्न होना है ॥ २ ॥
 जनपद देश रजधानी अयोध्या ॥ ३ ॥ देवता नाग मुनि मनुज परिवार
 सहित विषाद गलानि रहित भए औ रावण राक्षसों के मिलेहिँ माभा
 अर्थात् फूट बिना लंका शंका तै अकुलात भई मिलेहिँ माभा विधि वात
 विगारी जैसे यह चौपाई मे मिलेहिँ माभा का अर्थ है तैसे इहां
 जानना वाजव देवता आदि विषाद गलान रहित भए सो विषाद ग
 लानादि रावन रजनी घरके माभा मिलेहिँ तें अर्थात् डेरा किए तें
 लंका शंका तें अकुलात भई ॥ ४ ॥ दूसरे दिन महाराज को दोऊ
 भामिनी कैकेयी जू सुमित्रा जू सुमंगल की खानि भई अर्थात् श्री
 राम जी के दूसरे दिन दशमी को पुष्य नक्षत्र मीन लग्न मे श्री
 भरत जी को प्रादुर्भाव भयो भरत जी के दूसरे दिन एकादशी को
 श्लेषा नक्षत्र कर्क लग्न मे लक्ष्मण जी शत्रुघ्न जी को प्रादुर्भाव भयो

तिसुखवेगिवोलिगुरभूसुरभूपतिभीतरभवनगण जातकर्मकरि
 कनकवसनमनिभूषितसुरभिसमूहदये ॥ ३ ॥ दलरोचनफल
 फूलदूवदधियुवतिन्हभरिभरिधारलये गावतचलींभीरभदूवी
 थिन्हवंदिनवांक्रुरविरदवये ॥ ४ ॥ कनककलसचामरपताक
 ध्वजजहूतहूवंदनवारनये भरहिँअवीरअरगजाक्रिरकाहिँसक
 ललोकएकरंगरये ॥ ५ ॥ उमगिचल्यौअनंदलोकतिङ्गंदेतस
 वनिमंदिररितये तुलसिदासपुनिभरेइदेखियतरामकृपाचित
 वनिचितये ॥ ६ ॥

टी० । हये कहै बजे ॥ १ ॥ समै सम गान ठये अर्थात् सो हरादि
 गान ठाने चये समूह ॥ २ ॥ सुरभी धेनु ॥ ३ ॥ बांक्रुरिवरद उत्-
 कृष्ट यश बये कहै बदे ॥ ४ ॥ रएरंगे ॥ ५ ॥ रितये खाली किये ॥ ६ ॥
 मू० । रागजयतथी । गावैविमलत्रिवुधवरवांनी भवनकोटिकल्यानकंदु

जायोपूतकोसिलारानी ॥ १ ॥ मासपाषतिथिवारनषतग्रहयो
 गलगनसुभठानी । जलथलगगनप्रसन्नसाधुमनदसदिसिहि
 यज्जलसानी ॥ २ ॥ वरषतसुमनवधावनगरनभहरषनजातव
 षानी । ज्यौंज्जलासरनिवांसनरेसहिँ ल्यौंजनपदरजधानी ३ ॥
 अमरनागमुनिमनुजसपरिजनविगतविखादगलानी । मिलेहि
 मांभरावनरजनीचरलंकसंकअकुलानी ॥ ४ ॥ देवपितरगु
 रुविप्रपूजिन्हपदियेदानरुचिजानी । मुनिवनितापुरनारिसआ
 सिनिसहसभांतिसनमानी ॥ ५ ॥ पादूअघादूअसौसतनिकस
 तजाचकजनभएदानी । यौंप्रसन्नकेकईसुमिचिहहोइमहेस
 भवानी ॥ ६ ॥ दिनदूसरेभूपभामिनिदोउभईसुमंगलषानी । भ
 योसोहिलोसोहिलोमोजनुसृष्टिसोहिलेसानी ॥ ७ ॥ नाचत
 गावतभोमनभावतसुषसुअवधअधिकानी । देतलेतपहिरतप
 हिरावतप्रजाप्रमोदअघानी ॥ ८ ॥ गाननिसानकोलाहलकौतु
 कदेषतदुनीसिहानी । हरिविरंचिहरपुरसोभाकुलिकोसलपुरी

लुभानी ॥ ६ ॥ आनदश्चनिराजरवनीसवमागङ्गकोखिजु
 डानी । आसिषदैदैसराहृंसिादरउमारमाब्रह्मानी ॥ १० ॥
 विभवविलासवादिदशरथकीदेपिनजिनहंसोहानी । कीर
 तिकुसलभूतिजयरिधिसिधितिन्ह परसवैकोहानी ॥ ११ ॥ छ
 टीवारहौलोकवेदविधिकरिसुग्घानविधानी । रामलघनरि
 पुदमनभरतधरेनामललितगुरञ्जानी ॥ १२ ॥ सुकृतसुमनति
 लमोदवासिविधिजतनजंघभरिघानी । सुषसनेहसवदियोदस
 रथहृषरिषलेलथिरघानी ॥ १३ ॥ अनुदिनउदयउच्छाहउम
 गजगघरघरअवधकहानी । तुलसीरामजन्मजसगावतसोसमा
 जउरअनी ॥ १४ ॥ ४ ॥

टी० । विबुध देवता कल्याण कंद कल्याण के मूल वा मेघ जायो
 उत्पन्न कियो ॥ १ ॥ सुभ ठानी शुभस्थानी जल थल आकाश औ
 साधुन के मन प्रसन्न होत भयो औ दशो दिशा को हृदय जलसत
 भयो शंका जलादि प्रसन्न कैसे भए उत्तर जल निर्मल भयो पृथ्वी कृषी
 संपन्न भई गगन मेघादि रहित भयो सोई प्रसन्न होना है ॥ २ ॥
 जनपद देश रजधानी अयोध्या ॥ ३ ॥ देवता नाग मुनि मनुज परिवार
 सहित विषाद गलानि रहित भए औ रावण राक्षसों के मिलेहि माभा
 अर्थात् फूट बिना लंका शंका तै अकुलात भई मिलेहि माभा विधिवात
 विगारी जैसे यह चौपाई मे मिलेहि माभा का अर्थ है तैसे इहां
 जानना वाजव देवता आदि विषाद गलान रहित भए सो विषाद ग
 लानादि रावन रजनी घरके माभा मिलेहि तें अर्थात् डेरा किए तें
 लंका शंका तें अकुलात भई ॥ ४ ॥ दूसरे दिन महाराज को दोऊ
 भामिनी कैकेयी जू सुमित्रा जू सुमंगल की खानि भई अर्थात् श्री
 राम जी के दूसरे दिन दशमी को पुष्य नक्षत्र मीन लग्न मे श्री
 भरत जी को प्रादुर्भाव भयो भरत जी के दूसरे दिन एकादशी को
 श्लेष्मा नक्षत्र कर्क लग्न मे लक्ष्मण जी शत्रुघ्न जी को प्रादुर्भाव भयो

उत्सव में उत्सव भयो मानो सृष्टि उत्सव मे सानी है श्रीमद्रामायणे
 पुष्पेजातस्तुभरतो मीनलम्नेप्रसन्नधीः । सर्पेजातौतुसौमित्रौ कुलीरे
 ब्युदितेरवौ । पाद्मेअन्येद्यःपांचजन्यत्मा कैकेय्यांभरतोऽभवत् । तदन्ये
 घःसुमित्राया मनंतात्माचलच्छरणः । सुदर्शनात्माशत्रुघ्नोद्वौजातौयुगपत्प्रि
 ये अत्र एव श्रीगोसाई जी छठी तीन दिन मे स्पष्ट लिखे त्यों अजु कालि
 हं परों जागर हों हिगे नेवते दिए शंका पहिले तेहि अवर सुत तीन
 प्रगटभए मंगल मुद कल्याण एहि पद मे एकै दिन सब भाइन का जन्म
 जनाए औ इहां तीन दिन मे कहे सो कैसे उत्तर कल्पान्तर करि
 याको व्यवस्था जानना ॥ ७ ॥ प्रमोद आनंद ॥ ८ ॥ दुनी संसार
 कुलिसव ॥ ९ ॥ पृथ्वी पति की रानी आनंदित भई माग कोख ते
 जुड़ात भई भाव माग तो पतिते जुड़ानै रघो पर पुत्र भएते कोखि
 उ करि जुड़ानी वा आनंद की भूमि जे सब महाराज की रानी ते
 माग औ कोखि ते जुड़ात भई रमा उमा ब्रह्मानी के सराहिवे को
 यह भाव कि विश्व के पिता कों पुत्र बनाए ताते धन्य है ॥ १० ॥
 विभव का विस्तार औ वंश की वृद्धि दशरथ महाराज की देधि कै जिन
 को न सोहानी तिन्ह पर यश मंगल ऐश्वर्य जय रिद्धि औ अणिमा-
 दिक सिद्धि सबै कोहानी भाव ए सब ताको त्याग किए ॥ ११ ॥
 गुरु ज्ञानी विधानी जो श्री वशिष्ठ जू सो छठी औ बरही की लो
 क वेद विधि कों सुंदर विधान तें करि राम लषन रिपु दवन भरत
 सुंदर नाम धरे इहां छन्दोनुरोध ते क्रम पूर्वक नाम न लिखे ॥ १२ ॥
 पहिले तिलफूल मे वासा जात है फेर पेरा जात है तब फुलेल होत
 है ताको रूपक कहत है ब्रह्मा ने सुकृत रूप सुगंध दार फूल मे
 आनंद रूप तिल को वासि कै यत्न रूप कोल्हू मे घानी भरि पेरि
 कै सुख रूपी फुलेल दशरथ महाराज कों दिए औ खरी औ खले
 ल कहै फोकट जो सो धिरथानी कहै देवता तिन को दिए ॥ १३ ॥
 प्रति दिन उकाह को उदै औ उमंग है औ जगत मे घर घर अयो

ध्या जी की कहानी है रही है सो समाज उर मै आनि कै तुलसी
राम जन्म यग गावत है भाव जाते हमारे हृदय मे भी उछाह को
उमंग उदय होय ॥ १४ ॥ ४ ॥

म० । रागकेदारा । अश्वधवधावनेघरघरमंगलसाजसमाज । सगुनसो
हावनेमुदितकरतसर्वनिजनिजकाज ॥ छंद ॥ निजकाजमज
तसँवारिपुरनरनरि रिरचनाअनगनी । गृहअजिरअटनिवजार
वीथिन्हचारुचौकेविधिघनी ॥ चमरपताकवितानतोरनकल
सदीपावलिबनी । सुखसुकृतसोभामयपुरीविधिसुमतिजन-
नीजनुजनी ॥ दो० । चैतवतुरदसचांदनी अमलउदितनिसि
राजु । उडगनअवलिलसीदस दिसिउमगतआनदआजु ॥
छंद । आनंदउमगतआजुविबुधविमानविपुलवनायकै । गाव
तवजावतनटतहरषतसुमनवरषतआदूकै ॥ १ ॥ नरनिरषिन
भसुरपेपिपुरछविपास्परसचुपादूकै । रघुराजसाजसराहिलो
यनलाङ्गलेतअघादूकै ॥ २ ॥ दो० । जागिएरामछठीसजनी
रीरजनीरुचिरनिहारि । मंगलमोदमढीमूरतिजहँटपवा
लकचारि ॥ छंद ॥ मूरतिमनेहरचारिविरचिविरंचिपरमा
रथमई । अनु रूपभूपाहजानिपूजनयोगविधिसंकरदई ॥ तिन
कीछठीमंजुलमढीजगसरअजिन्हकीसरसई । किएनीदभामि
निजागरनअभिरामिनीजामिनिभई ॥ ३ ॥ दो० । सेवकसज
गभयेसमयसुसाधनसचिवसुजान । मुनिवरगुरुसिषयेलौकिक
कवैदिकविधिबिधान ॥ छंद । वैदिकविधानअनेकलौकिक
आचरतमुनिजानिकै । बलिदानपूजामूलिकामनिसाधिरा
पीआनिकै ॥ जेदेवदेवीसेदूयतहितलागिचितसनमानिकै ।
तेतंचमंचसिषादूराषतसवनसोपह्चिचानिकै ॥ ४ ॥ दो० ।
सकलसुआसिनिगुरजनप्रजनपाङ्गनेलोग । विबुधविलासि
निसुरमुनिजाचकजोजेहिजोग ॥ छंद । जेहिजोगजेतेहि

भांतितेपहिराद्रपरिपूरनकिए । जैकहतदेतअसीसतुलसीदा
सज्योँडलसतहिए ॥ ज्यौआजुकालिऊपरँवजागरहोहिँगे
नेवतेदिए । तेधन्यपन्यपयोधिजेतेहिंसमैसुषजीवनजिए ॥
दो० । भूपतिभागवलीसुरनर नागसराहिसिँहाँहिँ । तियव
रबेषअलीसंपतिसिधिअनिमादिकमाँहिँ ॥ छंद । अनिमा
दिसारदसैलनंदिनिवाललालहिँपालहीँ । भरिजनमजेपाये
नतेपरितोषउमारमालहीँ ॥ निजलोकविसरेलोकपनिघर
कीनचरआचालहीँ । तुलसीतपततिऊतापजगजनुप्रभुछठी
छायालहीँ ॥ ६ ॥ पू ॥

टी० । अत्र छट्टी लिपित है कवि की उक्ति है अवध मे मंगल सा-
ज समाज औ बधावा घर घर है औ निज निज काज करत सगुन
सोहावने होत ताते सब मुदित है पुर नर नारि अगनित रचना सँ-
वारि कै जाको जो काज ताको सजत है गृह आंगन अटारिन बजार
औ गलिनमे घनी विधि ते सुंदर चौकें औ चवँरपताका चंदवा बंदन
वार कलश औ दीपावली बनी है सुख सुखत सोभामय पुरी जो
औ अयोध्याजू तिनको ब्रह्माजू की सुंदर मति रूपाजननी ने मानो
उत्पन्न करी है ॥ १ ॥ अब सखी प्रति सखी की उक्ति है आज
उजेरी चैत चतुर्दशी को निर्मल अर्थात् धूम मेघ आदि रहित नि
शिराज कहै चन्द्रमा प्रकाश मान है औ तारागण की पँक्ति सो
भित भई है औ दशो दिशा मे आनंद उमगत है आजु देवता अ
नेक विमान बनाय के आनंद उमगत गावत बजावत नाचत हर्षित
होत आयके सुमन वर्षत है नर आकाश देषि औ देवता पुर कृषि
देषि परस्पर आनंद पाय रघुराजको साज सराहि अघाय कै लो-
चन लाभ लेत है ॥ २ ॥ री सखी राम छठी की राति सुंदर नि-
हारि के जागिए मंगल औ मोद सोई मंदिर है मंदिर मे मूरति
रहति है इहाँ महाराज के चारों बालक सोई मूर्ति है परमारथ

रूप मनोहर चारि मूर्ति ब्रह्मा सुंदर रचिकै ताके अनुरूप महा-
 राजही को पूजन योग्य जानि ब्रह्मा शिव मिलि दई तिन की छठी
 सुंदर मंदिर मे है वा तिन की छठी मंजुल कहैं सुंदर मंदिर है
 औ जिन्ह की सरसई करि जगत सरस है सो नौद किए औ भा-
 मिनि जागरन किए ताते रमणीया रात्री भई वा जिन्ह की सरसई
 ते जगत सरस है तिन्ह की छठी रूप सुंदर मढी मे और को को
 कहैं नौद रूपा भामिनि भी जागरन किये ताते रमणीया रात्रि
 भई ॥ ३ ॥ सेवक समय के सुंदर साधन हारे औ सचिव सुजान
 सब सजग भए तिन के मुनिवर जे गुरू ते लौकिक वैदिक अनेक
 प्रकार के विधान सिखाए तब मुनि जानि कै अनेक वैदिक लौकिक
 विधान को आचरन करत हैं बलिदान पूजाहेतु औ जड़ी औ मणी
 आनि कै साधि राखी औ हित लागि चितते सनमानि कै जे देव
 देवी सेइयत है ते देव देवी के तंच मंच सबनिसो पहिचानिके
 सिखाय राखत पहिचानि कै कहिवे को यह भाव की जेहि देवता
 मे जाकी प्रीति है वाते देव देवी सब मुनि वरन सो पहिचान करिके
 अपना २ जंच मंष सिखाय राखत सिखायवे को यह भाव कि जो
 एहवार न पूजे जाहिंगे तो फेर न कोऊ पूजे गो ॥ ४ ॥ संपूर्ण
 सोहागिनि श्रेष्ठ वर्ग पुरजन पाऊन विबुध विलासिनि कहैं देव पत्नी
 देवता मुनि औ याचक लोग जो जेहि योग के हैं तेहि को तेहि
 भांति बस्त्र भूषणादि पहिराय परिपूरण किए जैसे तुलसी दास को
 हृदय झलसत है तैसे झलसत हिए जय कहत असोस देत हैं
 औ नेवता दिए कि ज्यौं आजु जागरन भयो है अर्थात् श्री राम
 के छठी को तैसे काल्ह श्री भरत के छठी को औपरों श्री लक्ष्मण
 शतुहन के छठी को जागरन होहिंगे अब गोसाईं जी कहत हैं ते
 धन्य हैं औ पुन्य के समुद्र हैं जेतेहि समय मे सुख पूर्वक जीवन
 तें जिए अर्थात् वहि उसव मे जे रहे ॥ ५ ॥ संपति कहैं लक्ष्मी

औ सिद्धि अणिमादि ते स्त्री सखी को श्रेष्ठ वेष करि कमाति है
 अर्थात् दासी पना करति है औ अणि मादि सिद्धि औ सरस्वती
 औ पार्वती औ बालराम को लालत पालत है जन्म भरि मे जेपरि
 तोषन पाए ते परि तोष उमा रमा लहतु भई अर्थात् पुत्र खे ला
 यवे को सुषन पाए रहीं सो पाईं औ इंद्रादिक अपने लोक को भले
 जावे को को कहै घरकी चरचा तकनहीं चलावत है गोसाईं जी
 कहत है मानो तीनो ताप मे तपत संसार प्रभु कृठी की छाया पाई
 है ॥ ६ ॥ ५ ॥

म० । राग जयतश्री । वाजतअवधगहागहेअनंदवधाए नामकरनिरघु
 वरनिकेन्हपसुदिनसोधाये । पायरजायसुरायकोवृष्टिपराजवा
 लाए शिष्यसचिवसेवकसखासादरसिग्नाए । साधुसुमतिस
 मरथसवैसानंदसिखाए जलदलफलमनिमूलिकाकुलिकाजल
 खाए ॥ १ ॥ गनपगौरिहरपूजिकैगोष्टददुहाए घरघरमुद
 मंगलमहागुनगानसोहाए । तुरितमुदितजहँतहँचलेमनके
 भएभाए सुरपतिसासनुघनमनोमारुतमिलिधाए ॥ २ ॥ गृह
 आंगनचौहटगलीबाजारबनाए कलसचमरतोरनध्वजासुवि
 तानतनाए । चित्रचारुचौकेरचिलिधिनामजनाए भरिभरिसर
 वरवापिकाअरगजासनाए ॥ ३ ॥ नरनारिन्हपलचारिमेसव
 साजसजाए दशरथपुगच्छविआपनीसुरनगरलजाए । विबुध
 विमानबनाइकैअनंदितआए हरषिसुमनवापनलगेगयेधनु
 जनुपाए ॥ ४ ॥ बरेविप्रचहुंबेदकेगविकुलगुरुज्ञानी आपुव
 शिष्ठअथर्वनीमहिमाजगजानी । लोकरीतिविधिवेदकीकरि
 कछ्योसुबानी सिसुसमेतबेगिबोलियेकौसल्यारानी ॥ ५ ॥
 सुनतसुआसिनलैचलीगावतिबडभागी उमारमासारदसची
 देषिसुनिअनुरागी । निजनिजरुचिवेषविरचिकैहिलिमिलि
 संगलागी तेहिअवसरतिहुलोककीसुदमाजनुजागी ॥ ६ ॥

चाह चौकवैठतभईभूपभामिनिसोहैं गोदमोदमूरतिलिएसु
 कृतीजनजोहैं । सुषसुषमाकौतुककलादेखिमुनिमुनिमोहैं
 सोसमाजकहैबरनिकैअसोकविकोहै ॥ ७ ॥ लगेपढ़नरक्षा
 चाकृषिराजविराजेगगनसुमनभरिजयजयेवज्जवाजनवाजे ।
 भएअमंगललंकमैसंकसंकटगाजे भुअनचारिदसकेबडेदुखदा
 रिदभाजे ॥ ८ ॥ बालविलोकिअथर्वनोहंसिहरहिजनायोसु-
 भकोसुभमोदमोदकोरामनामसुनायो । आलबालकलकोसि
 लादलवरनसुहयो कंदसकलआनंदकोजनुअंकुरिआयो ॥
 ॥ ९ ॥ जोहिजानिजपिजोरिकैकरपुटसिराषे जयजयजय
 करुनानिधेसादरसुरभाषे । सत्यसंधसांचेसदाजेआषरआषे
 प्रनतपालपायेसहीजेफलअभिलाषे ॥ १० ॥ भूमिदेवदेवदेषि
 कैनरदेवमुखारी बोलिसचिवसेवकसखापटधारिभंडारी । दे
 ज्जजाहिजेहिचाहिएसनमानिसँभारी लगेदेनहियहरषिकै
 हेरिहेरिहँकारो ॥ ११ ॥ रामनेवछावगिलेनकोहठिहोतभिखा
 रीवज्जरिदेतेहिदेखियेमानज्जधनधारी । भरतलघनरिपुद
 मनहंधरेनामविचारीफलदायकफलचारिकेदसरथसुतचारी
 ॥ १२ ॥ भयेभूपबालकानिकेनामनिरूपमनीके गयेसोचसंक
 टमितेवतेंपरतौके । सुफलमनोरथविधिकियेसवविधिसव
 हीके अवह्वैहैगायेसुनेसवकेतुलसीके । १३ ॥ ६ ॥

टी० । कवि की उक्ति आनंद वधावा अवध से गहागह वाजत है
 गहागह यह अनुकरण है चारो भाइन के नाम करण के हेतु
 महाराज सुंदर दिन सो धावत भए महाराज की आज्ञा पाय श्री
 बशिष्ठ जू के शिष्य श्री महाराज के मंत्री दास सखा बोलवावत
 भए ते आहू के सादर शिर नवाए ते सब साधु समर्थ को बशिष्ठ जू
 आनंद सहित सिषावत भए भाव वस्तु आनै की विधि समुद्रादि
 जल तुलसी दुर्वा विल्वादि दल सोपारी आदि फल पंच रत्न

आदि मणि सतावरि आदि जड़ी और जे संपूर्ण काज के वस्तु लि-
 खाइ दिए ॥ १ ॥ गनेश गौरी श्री शिव जी को पूजि कै गाइन
 को दुहाए घर घर मे महा आनंद मंगल और गुणके गान सुंदर होत
 भए मन के भाए भए ते सचिव सेवकादि जहां तहां तुरित हर्षित
 चले मानो इंद्र के आज्ञा तें मेव पवन मिलि करि धाए ॥ २ ॥ गृह
 सु० । विचित्र सुंदर चौकै रचि कै नाम लिखि जनावत भए अर्थात्
 यह चौक श्री राम को है यह श्री भरतादि भैयन को है श्री तलाव
 बावली मे अरगजा भरि भरि के सनाए ॥ ३ ॥ एतना बड़ा काज सो
 चारि पल मे नर नारि सब सजाए दशरथ पुरने अपनी छवि तें इन्द्र
 लोक को लज्जित किए अत एव देवता विमान बनाय के आनंदित
 आए भाव लज्जिली पुरी मे रहना उचित नही हर्षिके फूल बरखन
 लगे मानो गए धन पाए ॥ ४ ॥ वशिष्ठ जी ने बरे कहे नेवता दिए
 चारो वेद के ब्राह्मणो को श्री आप वशिष्ठ जो अथर्वनी हैं जाकी
 महिमा जगत जानत है सो लोक रीति श्री वेद की विधि करि
 सुंदर बानी ते कहे मिसुइ० सु० ॥ ५ ॥ सुनत मात्र सुआसिनी बहि
 भागिनी गावत ले चली पार्वती लक्ष्मी सरस्वती इन्द्र नी स्वरूप दे-
 खि गान सुनि कै अनुगत भई अपनी अपनी रुचि अनुसार बेख
 बनाय हिलि मिलि संग लागत भई तेहि अवसर मे तीनों लोक की
 मानो सुंदर दशा जागी भाव चौकठ के बाहर होते सुंदर दसा जागी
 तो जब घर के बाहर निकसैगे तब क्या जानै क्या होयगो बरही के दिन
 अ गन मे निकालवे की रीति है ॥ ६ ॥ सुंदर चौके मे भूप भामिनी
 बैठत भई गोद मे आनंद की मूर्ति लिए सोभत है जेहि मूर्ति को
 सुकती जन देखत है सुख श्री परम शोभा श्री कौतुक की कला
 देखि सुनि के मुनि मोहत है सोइ० सु० ॥ ७ ॥ विराजे शोभे संक
 संकट गाजे कहै संका श्री संकट गाजत भए ॥ ८ ॥ बालक को
 देखि अथर्वणी ने शिव को जनायो जो शुभ को शुभ मोद को

मोद रामनाम है सो षँसि के सुनायो माता पिता आदि को सुनायो
 षँसने को यह भाव कि इन का नित्य नावँ जो है ताको अब धरत
 हौं । पाद्मेश्वरः कमलवासिन्या रमणोयंतो हरिः । तस्मात् श्रीराम
 इत्यस्य नामभिर्द्वंपुरातनम् ॥ सहस्रनामसदृशं स्मरणात्पुण्यं क्लृप्तं
 म् ॥ वशिष्ट कीं अथर्वनी रघुवंश मे भी लिखा है ॥ अथाथर्वनिधे-
 स्तस्य विजितारिपुरःपुरः । अर्थार्थमर्थप्रतिवाच माददेवदतांबरः ॥ अ-
 थर्वनी कहिवे ते पुरोहित कृत्य के ज्ञाता जनाये तथाच कामन्दके ॥
 चर्याचरणनीत्यां च कुशलः स्यात्पुरोहितः । अथर्वविहितं कुर्यान्नि-
 त्यं शांतिकपौष्टिकम् ॥ तीनों वेद मे औ राजनीति मे प्रवीण होय
 सो पुरोहित अथर्वण वेद करि विहित शांतिक पौष्टिक कर्म करै
 धाल्ला रूप सुंदर श्री कौशल्या जू हैं तिन मे सकल आनंद को मूल
 मानो अंकुर अयो है इहां अंकुर के स्थान मे बाल श्री राम हैं
 अंकुर ते दुइ दलनि कसत है सो इहां राम नाम के सुंदर दोऊ
 अक्षर हैं ॥ ६ ॥ श्री रामजी को देषि कै औ वशिष्टजी के कहिवे
 ते नाम जानि के ताको जपि कै हस्तपुट जोरि सिरपर राखे अर्थात्
 प्रणाम किए हे करुणानिधेहे सत्य संध हे प्रणतपाल आप की जय होय
 जय होय आदर सहित देवता भाषे आपजे आषर आषे कहैं कहे
 अर्थात् जनिडरपडमनिसिद्धसुरेसा । तुमहिलागिधरिहौं नरवेसा ॥
 इत्यादि ते सदा सांचे जे फल अभिलाषे रहे ते ठीक पाए अर्थात्
 आप के अवतार के अभिलाषे रहे सोपाए ॥ १० ॥ ब्राह्मण औ देवतन
 को देषिके सुखी जो नर दे सो सचिव सेवक सखा पटधारी वस्त्रन के
 अधिकारी औ भंडारी अन्नादिक के अधिकारी बोलाय के अज्ञा दिए
 ॥ ११ ॥ धनधारी कुबेर ॥ १२ ॥ भूप के बालकन के उपमा रहित
 नीके नाम भए तब ते पुरतियन के सूच गये औ संकटमिटे भावसू-
 तका गृह मे अनेक विघ्न को भय रहत है औ खियन को भीरु सुभाव
 भी होत है ताते डरी रहैं सो बरही कुशर्वकल समाप्ति प्रईभ

ताते सोच गयो वा शुभ को शुभ सोद को सोद राम नाम सुनि
सोच रहित भई ॥ १३ ॥ ई ॥

मू० । रागविला। बल्लसुभगसेजमो हतिकौसल्यारुचिररामसिसुगोद
लिये । बारबारविधुवदनबिलोकतिलोचनचारुचकोरकिये ॥
१ ॥ कवड्डं पौट्टिपयपानकरावतिकवड्डं किराषतिलायहिये
बालकेलिगावतिहलरावतिपुलकितप्रेमपिपूषपिये ॥ २ ॥ वि
धिमहेसमुनिसुरसिहातसवदेखतअंबुदओटदिये । तुलसि
दासअसोसुषरघुपतिपैकाङ्गतोपायोनविये ॥ ३ ॥

टी० । कवि की उक्ति विधु चंद्र ॥ १ ॥ श्रीराम प्रेम रूप अमृत
को पिए जो श्री कौशल्या जू ते बाल लीला के पद गावति श्री श्री
रघुनाथ की हाथ पर भुलावति श्री रोमांचित होति है भाव हर्ष ते
॥ २ ॥ बादर के ओट देइ देषि वे को यह भाव कि प्रत्यक्ष होय
देखिवेते माता हम लोगों के ओर दृष्टि करैंगे तौ यह सुष जात
रहैंगे ऐसो सुष रघुपति सें वियेक है दूसरे ने न पायो ॥ ३ ॥ ७ ॥

मू० । राग सोरठा । हैहौलालकवड्डेवलिमैया । रामलषन
भावतेभरतरिपुदमनचारुचाख्यैमैया ॥ १ ॥ बालविभूषनव-
सनमनोहरअंगनिविरचिवनैहौ । सोभानिरखिनिछावरिक
रिउरलःयवारनेजैहौ ॥ २ ॥ छगनमगनअगनाखेलिहौमि
लिठुमुकिठुमुकि कवधैहौ । कलबलबचनतोतरेमंजुलकहिमा
मोहिबुलैहौ ॥ ३ ॥ पुरजनसचिवरावराणीसवसेवकसखास
हेली । लैहैलोचनलाङ्गमुफललषिललितमनोरथवेली ॥ ४ ॥
जासुषकीलालसालटभिवसुकसनकादिउदासी । तुलसीतेहि
सुषसिंधुकौसिलामगनपैप्रेमपिआसी ॥ ५ ॥ ८ ॥

टी० । मैया बलिजाय हे लाल कव बडे है हौ भाव ते कहै सो-
हाते ॥ १ ॥ बाल विभूषन कठला जामे बजर वट्ट बघनहा आदि
रहत है औरो पदिक हारादि अनेक औ वसन भिँगुरिया चौतनी

आदि मन के हरैया अंगन मे विरचि के बनःवोगी वा अंगनि को भी विशेष रचि बने हौं भाव चोटो गांठि उवटि डिठौना आदि दै शोभा देखि नेवछावर करि उरलाय प्रिगि आपै नेवछावरि होय जै हौं ॥ २ ॥ छगन मगन एक खेल विशेष है कल बल जो बुद्धि के बज्जत कला औ बल से बुभ्वाय तोतरे आधे और के और कहै सोई स्पष्ट करत है कहि मा मोहि बलै हौ अर्थात् माय स्पष्टन कहि मा कहि बोलै हौ ॥ ३ ॥ पुरजन सचिव आदि सुंदर मनोरथ रूप लता मे सुंदर फल देखि लोचन लाज्ज लेइ है इहां सचिव पद से आठो मंत्रो जानना बाल्मीकीये। घृष्टिर्जयंतो विजयः सुधोराध्वर्द्धनः । अशो कोधर्मपालश्च । सुमंतश्चाष्टमो महान् ॥ ४ ॥ लालसा मे लटू है भाव जैसे एकै ठां व घूमत भूमत लटू अचल रहत ॥ ५ ॥ ८ ॥

स० । पगनि कवचलि हौ चा गौ भै आ । प्रेमपुलकि उरलाय सुअन सबक हत सुमित्रा मै आ ॥ १ ॥ सुंदरतनसिसुवसनविभूषननप्रसिष निरषिनिकै आ । दलिननिप्राननेछावरिकरि करि लै है मातु व लै आ ॥ २ ॥ किलकनिनटनिचलनिचितवनिभजिमिलनिम नोहरतै आ । मनिषंभनिप्रतिविंब भक्तकछविछलकिहिभरि अँ गनै आ ॥ ३ ॥ बालविनोदमोदमंजुनविधुलीलाललितजुन्है आ भूपतिपुन्यपयोधिउमगिघरघरआनंदवधैया ॥ ४ ॥ ह्वै ह्वै सकल सुकृतपुष भाजनलोचनलाज्जलुटै आ । अनायासपाइ है जनम फलतोतरै वचनसुनै आ ॥ ५ ॥ भरतगामरिपुदमनलषनकेचरि तसरितअन्हवैया । तुलसीतवकैसे अज्जुं जानिवेरघुवरनगरव सै आ ॥ ६ ॥ ॥ ८ ॥

टी० । निकैया सुंदराई हन तोरि के को यह भाव कि अपनो न-जर न लगे ॥ २ ॥ नटनि नाचनि भजि मिलनि भागि के मिलना मणि खंभनि मे जो प्रतिविंब परैगे तिनकी छवि की भक्तक भरि अँ गनाई छलकिहि भाव प्रतिविंब का प्रतिविंब भरि अँगनाई परिहि वा

अबहीं जो घर मे रहिवे ते मणिवंभनि मे प्रतिविंब के भलक की छवि है सो जब बाहर खेलि है तब भरि अंगनाई भलकहि भाव अंगन भरि बालकै बालक देखि परैगे ॥ ३ ॥ चारोभैयन के लरिक खेल जो आनंद सो चन्द्रमा औ सुंदर खेलना जो है सो तेहि चंद्र की चांदनी तेहि चंद्र प्रकाश युक्त को देखिकै पुण्य के समुद्र जे भूपति ते उमगि है जब समुद्र उमगत है तब शब्द करत है इहां घर घर मे आनंद ते जो बधाई होना है सो शब्द है ॥ ४ ॥ तोतरे वचन के सुनन हारे बेपरिश्म जन्म के फल कौं पावैगे भाव वेद वेदांत के अवरण म नन निदिध्यासन विना जन्म को फल अर्थात् मोक्ष पावैगे इहां माधुर्य पक्ष मे स्पष्ट है ॥ ५ ॥ श्री गोसांई जी कहत हैं भरत राम रिपु दवन लपन के चरित्र रूपी नदी के स्नान करैया जैहें तिन को तब के सरिस अबो रघुवर नगर वसैआ जानना ॥ ६ ॥ ६ ॥

म० । रागकेदारा । चुपरि उवटि अन्हवायकैनयन अंजेर चिह्नित लकगोरोचनको कियो है । भूपर अनूपमसि बिंदु वारे वारे वार विलसत सीसपर हेरि हरै हियो है ॥ १ ॥ मोद भरि गोदलिये लालति सुमिजा देषि देवक है सबको सुकृत उपबियो है । मातुपि तु प्रिय परिजन पुरजन धन्य पुन्य पुंज पेषि पेषि प्रेमरस पियो है ॥ २ ॥ लोहितललित लघुचरन करकमल चालचाहि सो छवि सुकवि जिय जियो है । बालकेलि वातवस भलकि भलमलत सोभा की दीयटि मानो रूपदीपदियो है ॥ ३ ॥ रामसिसुसानु जचरित चाय रुगासुनि सुजन निसादर जनमला ज्जलियो है । तुलसीवि हाइदसरथदसचारि पर अैसे मुखयोग बिधिवि रच्यो न बियो है ॥ ४ ॥ १० ॥

टी० । उवटन लगाय तेल चुपरि नहवाय कै नेत्र मे काजर दिय औ रुचि पूर्वक रुचि कै गोरोचन को तिलक कियो औ भौंह पर उपमा रहित स्याम बिंदु दियो अर्थात् डिठौना औ छोटे छोटे वार

सिर पर शोभित हैं देखे से हृदय हरि लेत हैं ॥ १ ॥ आनन्द मे भरि कै गोद में लिये सुमिचाजू को दुलारत देखि देवता कहत हैं कि सब को सुकृत उद्रे भयो हैं औ माता पिता प्रिय परिवार के जन औ परजन धन्य औ पुन्य के पुंज हैं काहेते कि देखि देखि कै प्रेम रस को पेलियो है ॥ २ ॥ सुंदर लाल छोटे २ चरन औ कर कमल का चाल कहैं चलावना जो सो छवि देखि कै सुंदर कवि को जीव जी उद्यौ है इहां चाल शब्द तेहांथ पैर का चलावना लेना क्योंकि बँकड़ आं चलना अचहीं आगे कहैं गो मानो शोभा रूप दीवट पर रूप रूपो दीया धर्यौ है सो बाल केलि रूप वायु के बस भक्तिकि के भलमलात है ॥ ३ ॥ गोसांई जी कहत हैं कि चौदहो भुअन मे ऐसे सुख के योग्य महाराज दशरथ को छोडि के ब्रह्मने दूसरे को नही बनायो है । ४ ॥ १० ॥

मू० । रामसिसुगं दमहामोदभरेदशरथकोसिलज्जललकिलखन लाललियेहैं । भरतसुमिचालयेकेकईसचुसमनतनप्रेमयुलकि मगनमनभयेहैं ॥ १ ॥ मेठीलटकनमनिकनकरचितबालभू षनवनाइअक्केअंगअंगठयेहैं । चाहिचुचुकारिचूबिलालत लावतउरतैसेफलपावतजैसेसुबीजवयेहैं ॥ २ ॥ घनओटविबु धविलोकिवरषतफूलअनुकूलवचनकहतनेहनयेहैं । ऐसेपि तुमातुपूतपुरपरिजनविधिजानियतआयुभरिएईनिरमयेहैं ॥ ३ ॥ अजरअमरहोऊकरोहरिहरकोऊजरठजठेरिन्हिआ- सिवाददियेहैं । तुलसीसराहेभागतिन्हकेजिन्हकेहियेडिं भरामरूपअनुरागरंगरयेहैं ॥ ४ ॥ ११ ॥

टी० । बालराम गोद में हैं ताते दशरथ महाराज महामोद मे भरे हैं औ श्री कौशल्या जू भीललकि कै लषन लाल को लिये हैं भरत जू को श्री सुमिचा जू औ शचुहन जू को कैकई जू लये हैं प्र म तें तन पुलकि करि कै सब के मन मगन भये हैं ॥ १ ॥ भालपर

के बालकों चोटो सरिस दूनो ओर से गंधि के पीछे के ओर ले जात हैं ताको मेढी कहत हैं तामे लटकने लटकत हैं और मणि सेनाते रचित अर्थात् जड़ाऊ बाल समय के भूषण आछेवनाय कै अंग अंग में ठाने हैं अर्थात् पहिराये हैं देषि चुचुकारि चूमि कै दुलारत औ हृदय मे लगावत हैं तैसे फल पावत जैसे सुंदर बीज बोए हैं इहां सुंदर बीज सुंदर कर्म हैं ॥ २ ॥ मेघ के ओट तें देवता देषिकै फूल वर्षत हैं औ नये नेह से अनुकूल वचन कहत हैं वां नेह से देव नम्र ह्वै गए हैं वा अनुकूल वचन कहत हैं कि दूनके नेह नवीन है अर्थात् अमन देखे पिता माता नगर पग्जिन को जानियत हैं कि विधाता आयुष भरि में एसे दूनहीं को बनाए हैं ॥ ३ ॥ जरट जठेल्ह बूठ औ बुढिया डिंभ बालक रये रंगे ॥ ४ ॥ ११ ॥

मू० । राग असावरी । आजुअनरसेहैंभोरकेपयपियतननीके । रहतनबैठेठाढेपालनेभक्ततज्जरोअतराममेरोसोसोचुसवहीके १ ॥ देवपितरग्रहपूजिअेतुनातौलिअैधीके । तदपिकवज्जकंरज्जकसखोएसेहीअरतजवपरतदृष्टदुष्टतीके ॥ २ ॥ बेगिबोलिकुलगुरुकुअैमाथेहाथअमीके । सुनतआद्गिखिकुसहरेनरसिहमंचपढ़िजोसुभिरतभयभीके ॥ ३ ॥ जासुनामसर्वससदासिवपारवतीके । ताहिभारवतिकौमिलायहगीतिप्रोतिकीहियज्जलसतितुलसीके ॥ ४ ॥ १२ ॥

टी० । अनरसे हैं खन मनाए हैं ॥ १ ॥ घत को तुला दान सुख कारक रोगहार कहैं अरत छैलात ॥ २ ॥ शीघ्र बोलादये कुल गुरु को कि माथ को अमृत रूप हांथ तें कुअें सुनत मात्र मेच्छपि आय कै नरसिंह मंच जो सुभिरत भय को भय होत सो पढ़ि कै कुश हरे कुश तै मार्जन किये ॥ ३ ॥ ४ ॥ १२ ॥

मू० । माथेहांथजवदियोच्छषिरामकिलकनलागे । सहिसामसुम्भि लीलाबिलोकिगुरुसजलनयनतनपुलकिरोमरोमजागे ॥ १ ॥

लियेगोदधाएगोदतेमोदमुनिमनअनुरागे । निरखिमातुहर
धीहियेअलीओटकहृतिवृद्धबचनप्रेमकेसेपागे ॥ २ ॥ तुम
सुरतरुघुवंसकेदेतअभिमतमागे । मेरेविसेषगतिरावरीतु-
लसीप्रमादजाकेसकलअमंगलभागे ॥ ३ ॥ १३ ॥

टी० । माता के गोद तें धाए तब मुनि गोद में लिए औ इर्ष ते मुनि मन
मे अनुरागे ॥ २ ॥ सुर तरु कल्पवृक्ष अभिमत वांछित फल ॥ ३ ॥ १३ ॥

मू० । अमि अबिलोकनिकरिऊपामुनिबरजवजोए । तबतेरामअरुभर
तलघनरिप्रदमनसुमुखिसखिसकलसुअनमुखसोये ॥ १ ॥ ला
यसुमिचाहिएहिएफनिमनिज्योगोए । तुलसीनेवछावरिकर
तिमातुअतिप्रेममगनमनसजलसुलोचनकोए ॥ २ ॥ १४ ॥

टी० । अमिय बिलोकनि अमृतदृष्टिजोए देषे ॥ १ ॥ सुमिचा लूहृदय
मे लगाय लिए जैसे सर्प मणि को छपावत कोए कहैं कोर ॥ २ ॥ १४ ॥

मू० । मातुसकलकुलगुरुबधप्रियसखीसुहाई । सादरसवमंगलकिए
महिमनिमहेसपरसबनिमुधेनुदुहाई । बोलिभूपभूसुरलिये
अतिविनयबडाई पूजिपांयसनमानिदानदियेलाहिअसीसमुनि
वरपैसुमनसुरसाई ॥ २ ॥ घरघरपुरवाजनलगेअनंदबधाई
सुषसनेहतेहिसमयकोतुलसीजानैजाकोचोरोहैचितचङ्गभा
ई ॥ ३ ॥ १५ ॥

टी० । सकल माता कुल गुरु बधू अरुंधती औ सुंदर प्रिय सखी
आदर सहित मंगल किए भूमि मे जो मणि कहैं अथ महेश तिन
पै वा महिन्न स्तोत्र ते सबनिने सुंदर धेनु दुहाई अयोध्या खंड मे
क्षीरेश्वर महादेव पर दूधदुहावनालिखा है ॥ १ ॥ ब्राह्मणों को म
हाराज बोलाय लिए अति विनय बडाई तें पांय पूजि सनमानि कै
दान दिए तब आसीसपाए सो मुनि कै देवतन के स्वामी फूल बर्षत
भए ॥ २ ॥ ३ ॥ १५ ॥

मू० । रागधनाथी । यासिसुकेगुननामबडाई कोकहिसकैसुनऊ

नगपतिश्रीपतिसमानप्रभुताई ॥ १ ॥ यद्यपिबुधिवयरूपसील
 गुनसमैचारुचाह्योभाई तदपिलोकलोचनचकोरससिरामभ
 गतसुषदाई ॥ २ ॥ सुरनरमुनिकिअभयदनुजहतिहरिहि
 धरनिगरुआई कौरतिविमलविश्वअवमोचनिरहिहिमकल
 जगछाई ॥ ३ ॥ याकेचरनसरोजकपटतजिजोभजिहैमन
 लाई मोकुलजगुनसहिततरिहैभवएहनकछूअधिकाई ॥ ४ ॥
 सुनिगुरुचनपुलकितनदंपतिहरषनहृदयसमाई तुलसिदा
 सअवलोकिमातुमुखप्रभुमनमेमुसुकाई ॥ १६ ॥

टी० । समैबराबर ॥ १६ ॥

मू० । रागविलावल । अवधअजुआगसीएकआयो करततनिरखि
 कहतमत्रगुनगनवहुतनिपरिचोपायो ॥ १ ॥ बूढोबडोप्रमा
 निकब्रह्मनसंकरनामसुहायो संगतिसुमिष्यसुनतकौसि-
 ल्य भीतरभवनगुलायो जिदियो ॥ २ ॥ पायपषाणिअआसन
 सनसनप्रहिरायो मलेचारुचरनचाह्योसुतमाथेहाथदिवा
 यो ॥ ३ ॥ नषमिषवालविलोकिप्रतनुपुलकनयनजलछयो
 लैलैगोदकमनकरनिरषतउग्रप्रमोदअनमायो ॥ ४ ॥ जन्म
 प्रसंगकह्योकौसिकमितिसोयख्यंवरगायो रामभरतरिपदम
 नलषनकोजयसुषसुजससुनाया । तुलसिदासरनिवासरहस
 वसभयोसवकोमनभयो सनमान्यौमहिदेवअसीसतसानंद
 सदनसिधायो ॥ १७ ॥

टी० । शिव जी जोत धीवनि कै संग मे सुंदर शिष्य का गभशुंड
 जी के बनाय कै दृष्ट दर्शन हेतु आए हैं उर प्रमोद अनमायो हृदय
 मे आनंद नहीं अमात है ॥ १७ ॥

मू० । रागकेदारा । पैदियेलात्तपालनेहौभुलावौ करपदमुखचख
 कमललसतनपिलोचनभँवरभुनावौ ॥ १ ॥ बालविनोदमोदमं
 जूलमनिकिलकनिखानिखुलावौ तेइअनुरागतागुहिबेकङ्गं

मतिवृगनयनिबुलावौ ॥ २ ॥ तुलसीभनितभलीभामिनिउर
सोपहिराडफुलावौ चारुचरितरघुवरतेरेतेहिमिलिगाइचर
नचितलावौ ॥ ३ ॥ १८ ॥

टी० । हे लाल पालने पौढ़ि ए हम भुलावै कर पद मुख नेच
रूप कमलै शोभित देखि कै अपने नेच रूप भ्रमर को भुलावै ॥ १ ॥
बाल क्रीड़ा को अनंद सोई सुंदर मणि है मणि खानिते निकमति
है सो कहत हैं कि किलकनि रूपी खनि से खुलावौ अर्थात् प्रग-
टावौ तेहि मणि को अनुराग रूपो धागा मे गुहिवे कौ मति रूपी
वृग नैनी अर्थात् पटहारिन को बुलाय लेंउं ॥ २ ॥ गोसाईं जी
कहत हैं कि भनित भली रूपा भामिनी के उर मे सो मणि का
हार पहिराय कै फुलावौ अर्थात् अनंदित करों हे रघुवर तेर सुंदर
चरित्र कौ तेहि भनित रूपी भामिनी के संग मिलि गाइ कै चरण
मे चित्त लगावौ ॥ ३ ॥ १८ ॥

मू० । सोइएलाललाडिलेरघुराई मगनमोदलिएगोदसुमिचावार
वारवनिजाई ॥ १ ॥ हंसैसतअनरसेअनरसतप्रतिविंबनिज्यौं
भाई तुन्हसबकेजीवनकेजीवनसकलसुमंगलदाई ॥ २ ॥ मूल
मूलसुरबीथिवेनितमतोमसुदलअधिकाई नषतसुमननभवि
टपबोडिमानोछपाछिटकिछविछाई । हौजभांतअलसातता
ततेरीवानिजानिभैपाई गाइगाइहलराइबोखिहौंसुखनीद
रीसुहाई ॥ ४ ॥ बाछरूछवीलेछैन।छगनमगनमेरेकहति
मल्लाइमल्लाई सानुजाहियजलसतितुलसीकेप्रभुकिललित
लरिकाई ॥ ५ ॥ १९ ॥

टी० । हमिवे ते हंसत है औ उदास होवे ते उदास होत है
विंबनि प्रति जैसे परिछाहीं तुम सब के जीवन के जीवन औ सब
सुमंगल देनि हार हौ ॥ २ ॥ मूल मूल नक्षत्र है सुर बीथी लता
है औ तम समूह सुंदर दलों की अधिकाई है औ नक्षत्र कहें

तारागण फूल हैं सो आकाश रूप वृक्ष पर छिटकि औ बोड़ि कहै
 फौलि कै मानो राति छवि छाई है मूल नक्षत्र को मूल लिखिवे
 को यह भाव कि जड़ मे एक मुसरा रहत है तामे महीन महीन
 बज्जत सोर रहत है मूल नक्षत्र के ग्यारह तारे हैं तेहि मे से एक
 मुसरा के स्थान है औ दस महीन महीन सोरो के है ॥ ३ ॥ हे तात
 अलसात जम्हात हौ तुम्हारी बान हम जानपाई भाव जब अस करत
 हौ तब सो अत हौ हाथ पर हिलाय गाय गाय सुख निदिआ को
 बोलै हौ ॥ ४ ॥ मल्हाइ मल्हाई रगि आय रगि आय ॥ ५ ॥ १६ ॥

मू० । ललनलोनेलैरुआबलिमैआ सुखसोइअनोदवेरिआभइचारु
 चरितचाख्यौभइआ ॥ १ ॥ कहतिमल्हाइलाइउरछनछनछ
 गनछबीलेछोटेछैआ मोदकंदकुलकुमुदचंदमेरेरामचंद्ररघु
 रैआ ॥ २ ॥ रघुवरबालकेलिसंतनकीसुभगसुभदसुरगैआ
 तुलसीदुहिपीवतसुषजीवतपयसुपेमघनोघैआ ॥ ३ ॥ २० ॥

टी० । लेरुआ बकरा चारु चरित सुंदर हैं चरिच जेहि के ॥ १ ॥
 छैया बालक मोद कंद आनंद केमूल औ कुल रूप कुमुद के चंद्रमा
 ॥ २ ॥ रघुवर की बालकेलि संतन की सुंदर शुभदेनिहारी कामधेनु
 है तेहि कामधेनु ते सुंदर प्रेम रूप दूध जामे घनाघीव है ताको
 तुलसी दुहि कै पीवत है ताते सुख युत जीवत है ॥ ३ ॥ २० ॥

मू० । सुखनीदकहतिआलिआइहौ रामलघनरिपुदमनभरतसिमु
 करिसवसुमुखसोआइहौ । रोवनिधोवनिअनखानिअनरस
 निडोठिमूठिनिठुरनसाइहौ हंसनिखेलनिकिलकनिआनंद
 निभूपतिभवनवसाइहौ ॥ २ ॥ गोदविनोदमोदमधमूरतिह
 रषिहरषिहलराइहौ तनुतिलतिलकरिवारिरामपरलैहौरो
 गबलाइहौ ॥ ३ ॥ रानीराउसहितसुतपरिजननिरघिनयन
 फलपाइहौ चारुचरितरघुवंसतिलककेतहंतुलसिहिमिलि
 गाइहौ ॥ ४ ॥ २१ ॥

टी० । अब मांता फुसिलावति है कि सुख नीद कहति है कि हे आली मै आइ हौं सुमुख प्रसन्न ॥ १ ॥ रोअनि धोअनि छूटि है रोइवे के अर्थ मे अनखानि प्रनमनानि अनरसनि उदासीनता दीठि नजर मूठि टोना ताको निठुरताते नसांअोंगी भाव दया न करोंगी वा ए सब जो निठुरति ह्को नसांअों गी भूपति भवन बसाइवे को यह भाव कि जब बालक सुख पूर्वक सोअत है तब उठे पर आनंद पूर्वक खेलत है ॥ २ ॥ क्रीड़ा औ आनंदमय मूरति को गोद मे लै कै हरषि हरषि के हलराअोंगी तन को तिल तिल करिके श्री राम पर नेवकावरि करि रोग बलाय हम लै हौं ॥ ३ ॥ रानी राजा को पुत्र परिवार समेत देषि कै नैननि को फल पाअोंगी सुंदर चरित्र रघुवंश तिलक के तहां तुलसी के संग मिलि गाअोंगी ॥ ४ ॥ २१ ॥

मू० । रागअसावरी । कनकरतनमयपालनोरधोमनङ्गमारसुत हार विविधषेलौनाकिंकिनीलागेमंजुलमुक्ताहार । रघुकुल मंडनरामलला ॥ १ ॥ जननीउवटिअन्हवाइकैमनिभूषनस जिलियेगोद पौढायेपटुपालनेसिसुनिरषिमगनमनमोद । दसरथनंदनरामलला ॥ २ ॥ मदनमोरकीचंद्रिकाभलकनिनिदरतितनजोति । नीलकमलमनिजलदकीउपमाकहैलघुमति होति ॥ मातुसुदतफलरामलला ॥ ३ ॥ लघुलघुलोहितललितहैपदपानिअधरएकरंग । कोकविजोछुबिकहिंसकैनखसिख सुन्दरसवअंग ॥ परिजनरंजनरामलला ॥ ४ ॥ पगनूपुरकटिकिंकिनीकरकंजनपङ्गुचीमंजु । हियहरिनषअङ्गुतबन्धौ मानोमनसिजमनिगनगंजु । पुरजनसुरमनिरामलला ॥ ५ ॥ लोयननीलसरोजसेभूपरमसिबिंदुविराज । जनुबिधुमुखछुबिअमिअकोरच्छकराख्योरसराज ॥ सोभासागररामलला ॥ ६ ॥ गभुअारीअलकावलीसेलटकनललितललाट

लनुउड़गनविधुमिलनकोचलेतमविदारिकरिवाट ॥ सहजसु
 हावनगामलला ॥ ७ ॥ देप्रिषेलवनाकिलकहिंपदपनिवि
 लोचनलोल । विचित्रविहंगअलिजलजज्योसुखमासरकरत
 कलोल । भक्तकल्पतरुगामलला ॥ ८ ॥ बालबोलिविनुअर
 थकेसुनिदेतपदारथचारि । जनुइनवचनन्हितेभयेसुरतरुताप
 सत्रिपुरारि । नामकामधुकरामलला ॥ ९ ॥ सखीसुमित्रावार
 हींमनिभूषनवसनविभाग । मधुरभुलादूमल्लावईगावैउमगि
 उमगिअनुराग । हैजगसंगलरामलला ॥ १० ॥ मोतीजा
 योसीपमेअरुअदितिअन्यौजगभानु । रघुपतिजायोकोसिला
 गुनसंगलरूपनिधानु । भुअनविभूषनरामलला ॥ ११ ॥ राम
 प्रगटजवतेभयेगयेसकलअसंगलमूल । सीतमुदितहितउदित
 हैनितवैरिनकेउरसूल ॥ भवभयभंजनरामलला ॥ १२ ॥ अ
 नुजसखामिसुसंगलैखेलनजैहैचौगान । लंकाखरभरपरैगो
 सुरपुरवाजिहैनिसान ॥ रिपुगनगंजनरामलला ॥ १३ ॥ रा
 मअहेरेचलैगैजवगजरथवाजिसँवारि । दमकंधरउधकध
 कीजनिधावैधनुधारि ॥ अरिकरिकेहरिरामलला ॥ १४ ॥
 गीतसुमित्रामखिनकेसुनिसुनिसुरमुनिअनुकृत । दैअसीस
 जैजैकहेहरषैवरषैफून ॥ सुरसुषदायकरामलला ॥ १५ ॥
 बालचणितमयचंद्रमायहमोरहकलानिधान । चितचकोरतु
 लसीकियौकरैप्रेमअमियरसपान ॥ तुलसीकोजीवनरामल
 ला ॥ १६ ॥

टी० । श्री सुमित्रा जू श्री सखिन की उक्ति है रघुकुल मंडन राम
 लला जे है तिन्ह को मानो काम रूपवठई कनक रतन मै पालना
 रचत भयोतामे बडतरंग के खेलवना श्री बुधरू श्री सुंदर मोती
 न की माला लगे हैं ॥ १ ॥ दूसरथ नंदन राम लला को माता ने
 उवटि अन्हवाइ के मणिन के गहना सजि के गोद ब्रिये फेर सुंदर

पालना मे पौढ़ाए बालक को देखि कै मन आनंद मे मगन भयो
 ॥ २ ॥ मातु सुव्रत फल राम लला के तन की जोति काम के मोर
 की वा काम रूप मोर की चंद्रिका के भलकनि को निरादर करति
 है नील कमल औ नील मणि औ नील मेघ की उपमा कहे तुच्छ
 मति होती है ॥ ३ ॥ परिजन रंजन राम लला के छोटे २ पद हाथ
 ओठ एक रंग सुंदर लाल हैं नष सिष सुंदर सब अंग की जो छवि
 सो कवन कवि कहि सकै ॥ ४ ॥ परिजन के चिंतामणि रूप राम
 लला के पग मे घुंघुरू कमर मे किंकिनी औ हस्त कमलन मे सुंदर
 पहुंची औ हृदय मे वघनहा आश्चर्य बना है मानो ए सब भूषण
 काम के मणि समूहों को निरादर करनि हारे है ॥ ५ ॥ सोभा
 सागर राम लला के नेत्र नील कमल सम हैं औ भौंह पर काजर
 को बिंदु सोभत है सो मानो काजर को बिंदु नहीं है शृंगार रस
 है ताको मुख चंद्र के छवि रूप अमृत को रत्नक राख्यो है ॥ ६ ॥
 सहज सोहावन राम लला के गर्भ वाली अलकावली औ सुंदर ल-
 टकन ललाट पर लसत है मानो चंद्रमा के मिलन को तारा गन
 तम बिदारि राह करि चले इहां लटकन उडगन है मुख शशि है
 तम अलकावली है दूनो तरफ बाल अलगाए ते जो लकीर ह्वै गई
 है सो राह है ॥ ७ ॥ भक्त कल्प तरु राम लला जो है सो खेलवनां
 देखि कै किलकत है पग हाथ नेत्र चंचल है मानो विचित्र पत्नी
 भ्रमर औ कमल परम सोभा रूप सर मे कलोल करत है इहा
 विचित्र विहंग बालकन के पगमे महावरादि से चिरई लिषीजाति
 है सो है नेत्र भ्रमर कर कमल है ज्यों का मानो अर्थ किया है
 सो भी होत है कुवलयानंदे मन्येशंकेध्रुवंप्रायो नूनमित्येवमादि
 भिः । उत्प्रेक्षाव्यज्यते शब्दै रिवशब्दोपितादृशः ज्यौ इवपर्यायश ॥ ८ ॥
 नाम कामधेनु है जेहि के तेहि रामलला के विनु अर्थ के बाल-
 वचन जोसोम ने से चारो पदार्थ देत है भाव आप तो बे अर्थ को

है औ सब अर्थ देत है वा बाल बोल बिनु अर्थ को जो है ताको सुनि कै सुनैया चारो फल देइवे को समर्थ होत है मानो इन वचननते भए हैं कल्पवृक्ष औ तपस्वी औ शिवजी भाव देखिबे मे बेअर्थ के एऊ हैं पर सब अर्थ देत हैं सो क्यों नहोहिं कारन को गुन कार्य मे रहतही है ॥ ८ ॥ जगमंगल जो रामलला हैं तिनकों सखी औ सुमित्राजू मणिभूषण वसन पृथक २ नेवकावर करत है धीरे धीरे भु लाय अनुराग ते उमगि २ रगिआय गावत है ॥ १० ॥ मोती सीप मे जग्न्यो औ जगत मे अदिति ने भानु को जग्नायो औ गुन मंगल मोद के पात्र रघुकुल के पति औ भुवन के विशेष भूषण करन वाले राम लला को कौशल्या जू उत्पन्न किये ॥ ११ ॥ श्री राम प्रगट जब ते भए तब ते सब अमंगल के मूल गए मित्र आनंदित औहित कहैं नाते दार उदय के प्राप्त भए हैं औ बैरिन के उर मे नितही झल है सो क्यों न होय भव भय के भंजनि हार राम लला हैं ॥ १२ ॥ रिपु गन गंजन राम लला जो हैं सो अनुज सखा सिसु संग लै के जब चौगान खेलन जैहैं जद्यपि जेहि डंडा से गेंदा खेला जात है ताको चौगान कहत हैं पर इस खेल का भी नाम चौगान है लंका मे खर भर औ सुर पुर मे नगारा बाजिवे को यह भाव कि बाल काल मे एतनी फुरती है तो आगे क्या जानै कैसी होय गी ॥ १३ ॥ जब श्री राम हाथीरथ घोड़ा सँवारि सिकार को चलैं गे तब दशकंधर के उरमे धक्क धकी होय गी कि अब इहां भी धनु धारन करि के जनि दौड़ै सो क्यों न होय अरि रूपी हाथी के सिंह राम लला हैं ॥ १४ ॥ सुमित्रा औ सखिन के गीत अनुकूल सुर मुनि सुनि के असीस देइ जय जय कहत हर्षत हैं औ फून बर्षत हैं सो क्यों न सुखी होहिं सुरन के सुख दायक रामलला हैं अनुकूल गीत को यह भाव कि जस चाहत रहे तस गीतो मे सुनत हैं ॥ १५ ॥ तुलसी जीवन रामलला जो हैं सो यह षडकशला नि-

धान बाल चरित मय चंद्रमा है वा तुलसी के जीवन जे राम लला हैं तिन के षोडशकला निधान बाल चरित्र मय जो यह चंद्रमा है ताको तुलसी अपने चित्त को चकोर कियो सो प्रेम रूपी जो अमृत रस ताको पान करत है चंद्रमा के षोडश कला अमृतादि है तैहि के अनुसार रघुकुल मंडनादि षोडश विशेषण किए चंद्रकला यथा अमृतामानदांतुष्टिं पुष्टिंप्रोतिरंतितथा । लज्जांश्रियंस्वधारां चिं ज्योत्स्नांहंसवतींततः ॥ क्वायांचप्रूरणौवामा ममांचंद्रकलाइमाः । स्वजीजाधानमोताञ्च क्रमात्संप्रूजयेत्सुधीः ॥ १ ॥ शारदा तिलकादि तंच मे शंख स्थपन प्रकरण मे प्रसिद्ध है रघुकुल मंडन राम लला को अमृत कला कहिवे को यह भाव कि बंश विना मृतक सरीर सम जो रघुकुल भया रहा ताकोजिआय लिए दशरथ नंदन को मानदा कला कहिवे को यह भाव कि जो जगत के कारण सो पुत्र भए एहि ते अधिक कवन सन्मान देहिंगे ॥ महिमाश्रवधिरामपितु माता । औविधिहरिहरसुरपतिदिसिनाथा ॥ वरनहिंसबदसरथगुन गाथा । मातु सुकृत फल राम लला को तुष्टि कला कहिवे को यह भाव कि अपने सुकृत को फल पाए तोष होत है सो सुकृत फल रघुनाथ को प्राय संतुष्ट भई ॥ आनंदश्रवनिराजरवनीसब मागड्डं कोष जुड़ानी परिजन रंजन को पुष्टि कला कहिवे को यह भाव की परिवार के जन को पोषण करि रंजित किए ककुक काल बीते सब भाई बड़े भए परिजन सुषदाई पुरजन सुरमणि रामलला को प्रीति कला कहिवे को यह भाव कि प्रीति तें चिंतामणि सम सब कों मनोवांछित फल देत है । प्रणवोंपुरनरनारिवहोरो । ममताजिनपरप्रभुहिनथोरी ॥ सोभा सागर को रति अर्थात् रमणोहीपन कारिणी कला कहिवे को यह भाव कि बाल स्वरूपो मे सखी देषि कै ठगि गई ॥ अबलोकिहौशोचबिमोचनकोठगिसीरहीजो नठगेधिगसे ॥ सहजसोहावनरामललाको ॥ लज्जा अर्थात् लज्जा

दायिनी कला कहिवे को यह भाव कि जेतने सोहावने रहें सब लजाय गए ॥ भुजनिभुजगसरोजनयननिवदनविधुजित्यौलरनि ॥ औ ॥ लाजहिंतनशोभानिरषि कोटिकोटिशतकाम । भक्त कल्पतरु को श्री कला कहिवे को यह भाव कि भक्तन को सब प्रकार की श्री देत है ॥ रामसदासेवकरुचिराखी ॥ औ ॥ राखत भलेभावभक्तनको कछुकरीतिपारथहिजनाई ॥ नाम काम धेनु है जाको तेहि राम लला को स्वधा पितृगण तृप्तिजनि का कला कहिवे को यह भाव कि संतान के नाम की बड़ाई सुनि के पितर लोग तृप्ति होत है ॥ रामरूपगुनशीलसुभाज । प्रमुदितहोहिं द्वेषिसुनिराज ॥ जग मंगल राम लला को राचि कला अर्थात् विश्राम दायिनी कहिवे को यह भाव कि राचिउ विश्रामहेतु है औ एउ है ॥ सोसुषधामरामअसनामा । अखिललोकदायकविश्रामा ॥ भुवन विभूषन राम लला को ज्योत्स्ना कला कहिवे को यह भाव कि भुवन को विभूषन ज्योत्स्नाकलौ है एउ है ॥ सहजप्रकासरूपभगवाना । औ पुरुषप्रमिद्वप्रकाशनिधि । भवभयभंजनरामलला का हंसकहिए सूर्य सो रहैं जेहिमे सो हंसवती कलाताकोकहिवे को यह भाव कि सूर्य तम नाशकहैं औ एउ अज्ञान तम नाशकहैं वा हंस जो सूर्य ताकी कला चंद्रमा मे रहत औ एउ सूर्यवंशीहैं ॥ रामकसनतुम्हकहहुअस हंसवंशअवतंस । रिपुगनगंजनराम ललाको ॥ छाया कला कहिवे को यह भाव कि छायो ताप हरत औ एउ रिपुगण के मारि भक्तन को ताप हरत ॥ शीतलसुषदृक्काहजेहिकरकीमेटतपापतापमाया । अरि करि के हरि राम लला को परणी कला कहिवे को यह भाव कि रावणदि सचुनको मारि जगत् के सुख ते परि पूर्ण किए । जवरघुनाथसमररिपुजीते । सुर नरमुनिसबकेभयबीते ॥ सुर सुष दायक राम लला को बामा कहैं सुंदरी कला कहिवे को यह भाव कि चंद्रमा की सुंदरी कला सुख

दायक एऊ देवतन के सुखदायक तुलसी को जीवन राम लना को अमा अर्थात् परिमाण रहित कला कहिबे को यह भाव कि परिमाण रहित कलौ जीवन दात्री औ एऊ जीवन दाता ॥ प्रानप्रानकेजीव के जिवसुषकेसुखराम । चंद्रमा की चौदह कला प्रगट है अमा-वस परिवा की दूह कला गुप्त है तेहि तें गोसाईं जी चौदह तुक से बाल लीला प्रगट राषे दूह तुक से गुप्त किए अर्थात् पहिले औ अंत मे ॥ १६ ॥ २२ ॥

मू० । रागकान्हरा । पालनेरघुपतिहिंभुलावै लैलैनामसप्रेमसरस स्वरकौसल्याकलकीरतिगावै ॥ १ ॥ केकिंकंटदुतिस्वामबरनत्र पुत्रालविभूषनविरचिबनाए अलकैकुटिलललितलटकनभ्रुनी लनलिनदोउनयनसुहाए २ सिसुसुभायसोहतजबकरगहिब दननिकटपदपल्लववल्याए मनऊंसुभगजुगभुजगजलजभरिलेत सुधासिसोसचुपाए ॥ ३ ॥ उपरअनूपविलोकिखिलौनाकिल कतपनि २ पानिपसारत मनऊउभयअंभोजअरुनसोविधुभय विनयकरतअतिआरत ॥ ४ ॥ तुलसिदासबऊबासविवसअलिगुं जतसोऊबिनहिंजातवषानी मनऊंसकलश्रुतिप्रचामधुपल्लै विसदसुजसवरनतवरबानी ॥ ५ ॥ २३ ॥

टी० । पालना मे रघुपति को भुलावति है कौशल्या जू प्रेम स-हित मधुर स्वर से नाम लैलै कै अर्थात् वच्चाभैना तोता छगन मगन आदि कहि कहि कै सुंदर कीर्ति गावति है ॥ १ ॥ मोर के कंटकी द्युति समान श्याम बरन सरौर है तामे बाल समय के विभूषण विशेष रचि कै बनाये भए है टेहे अलक है औ भौंह पर सुंदर लटकन है औ नील कमल सम सुंदर दोऊ नयन है । अलकाश्रुणकुंतला इत्यमरः छूटे बारको अलक कहत है ॥ २ ॥ बाल सुभाव तें जव कर तें गहि कै सुष के निकट पल्लव दूव अर्थात् पल्लव सम कोमल औ लाल पद को ले आवत भए तब अस सोहत मनो सुंदर दूह

सर्प सचुपाएक हैं आनंदित चंद्रमा से कमल मे भरि के सुधा लेत
 हैं इहां दोज हाथ सर्प है पद कमल है मुख चंद्रमा है छवि सुधा
 है ॥ ३ ॥ ऊपर उपमा रहित खेलौना देखि कै किलकारी मारत
 औ पुनि पुनि हाथ पसारत हैं मानो दुइ कमल चंद्रमा के भय
 से अति आर्त सूर्य से विनय करत हैं इहां खेलौना सूर्य हैं लाल
 रंग से औ हाथ दोज कमल है औ पुनि पुनि पसारना आर्तता है
 ॥ ४ ॥ गौसाई जी कहत हैं कि बज्र सुगंध ते विवस जो भ्रमर
 गुंजत हैं सो छवि बखानी नहीं जाति है मानो सकल वेदन की
 षट्चा भ्रमर है के श्रेष्ठ बानी तें उज्वल सुयश रघुनाथ को बरनत
 हैं ॥ ४ ॥ २३ ॥

मू० । झूलतरामपालनेसोहैं भूरिभागजननीजनजोहैं । अधरपानि
 पदलोहितलोने सरसिगारभवसारससोने ॥ ३ ॥ किलकत
 निरषिविलोलखेलौना मनऊंविनोदलरतछविछौना ॥ ४ ॥
 रंजितअंजनकंजविलोचन आजतभालतिलकगोरोचन ॥ ५ ॥
 लसैमसिबिंदुवदनविधुनीको चितवतचितचकोरतुलसीको ॥
 ॥ ६ ॥ २४ ॥

टी० । जो है देपत है ॥ १ ॥ तन कोमल के सुंदर श्यामता से
 बाल समय के विभूषणन की परिच्छाहीं झलकति है ॥ २ ॥ ओठ
 हाथ पद सुंदर लाल हैं मानो शृंगार रूप तडाग मे लाल रंग के
 कमलै उत्पन्न भए हैं इहां लुप्तोत्पेक्षा है इहां सर शृंगार से श्याम
 सरीर लेना काहे ते कि शृंगार रस भी श्याम है ॥ ३ ॥ खेलौना
 देषि चंचल है किलकत हैं मानो खेलवार मे छवि के बालक ल-
 रत हैं इहां हाथ पर हाथ पांव पर पांव का फेकना सो लरना
 है कमल वत्तेज जो सो अंजन से रंजित हैं औ भाल मे गोरोचन
 कै तिलक शोभत है ॥ ५ ॥ सुंदर विधु वदन मे डिठौना लसत है
 तेहि मुख चंद्र को तुलसी को चित रूप चकोर चितवत है ॥ ६ ॥ २४ ॥

मू० । रागकल्याण । राजतसिसुहृपरामसकलगुणनिकायधामकौतु
कीकृपालब्रह्मजानुपानिचारी नीलकंजजलदपुंजमरकतम
निसदृशस्यामकामकोटिसोभाअंगअंगजपरवारी ॥ १ ॥ हा
टकमनिरत्नखचितरचितइन्द्रमंदिराभद्रंदिरानिवाससदनवि
धिरच्यौसवारी । विहरतनृपअजिरअनुजसहितबालकेलि
कुसलनीलजलजलोचनहरिमोचनभयभारी ॥ २ ॥ अ-
रुनचरनअंकुसध्वजकंजकुलिसचिन्हरुचिर भाजतअतिनूप
रवरमधुरमुखरकारी । किंकिनीविचित्रजालकंबुकंठललित-
माल उरविसालकेहरिनषकंकनकरधारी ॥ ३ ॥ चारुचिबु-
कनासिकाकपोलभालतिलकभृकुटि अवनअधरसुंदरद्विजळ
विअनूपन्यारी । मनऊअरुनकंजकोसमंजुलजगपांति प्रसव
कुंदकलोजुगुलजुगलपरमशुभ्रवारी ॥ ४ ॥ चिक्कनचिकुराव
लीमनोषडंघ्रिमंडलीवनीविशेषिगुंजतजनुबालककिलकारी
एकटकप्रतिबिंबनिरखिपुलकतहरिहरखिहरखिलैउळंगजन
नीरसभंगमनविचारी ॥ ५ ॥ जाकहंसनकादिसंभुनारदादि
शुकमुनिंद्रकरतविविधजोगकामक्रोधलोभजारी दसरथगृ
हसोइउदारभंजनसंसारभारली लाअवतारतुलसिदासचास
हारी ॥ ६ ॥ २५ ॥

टी० । सकल गुण समूह के धाम कृपाल ब्रह्म कौतुकी शिशुरूप
राम बकं ईआं है शोभत है रूप पद से यह जनाए की रूप मात्र
से शिशु है सकल गुण निधान से वात्सल्यादि सकल गुण संपन्न
जनाए अर्थात्केवल निर्गुणै नहीं कौतुकी ते स्वतंत्र जनाए कृपाल ते
यह जनाए कि है तो ब्रह्म पै लोगन के सुख देवे हेतु घुठुरुअन
ते चलत है नील कंज जलद पुंज मरकत मणि सदृश श्याम इहां
तीन उपमा दिए ताते मालोपमा अलंकार है वा कमल वत्कोमल
औ मेघवत् गंभीर मरकतवत् द्यति औ श्यामता तीनिउ की अपर

सुगम ॥ १ ॥ जेहि नृप को सदन सुवर्ण मणि रत्न से जडित औ रचित इंद्र मंदिर के सदृश लक्ष्मी को वा सख्यान विधाता ने संवारि कै रच्यौ तेहि नृप के आंगन मे अनुज सहित हरि विहरत हैं सो कैसे हैं बालकेलि मे कुशल हैं औ नील कमल सम लोचन हैं जिन को औ भारी भय के नाश निहारे हैं मणि रत्न का भेद मणि नागादि तें होत है औरत पर्वत ते वहरत शब्द श्रेष्ठ वाचक है रत्न स्वजाति श्रेष्ठेपि इत्यमरः अर्थात् श्रेष्ठ मणि ॥ २ ॥ लाल चरण है तामे अंकुश ध्वज कमल वज्र के सुंदर चिन्ह है औ मधुर शब्द करनि हारा श्रेष्ठ नूपुर अतिहीं शोभत हैं औ कटि मे विचित्र किंकिनिन को जाल कहै समूह औ शंखवत्कंठवारेखाचयाचिता ग्रीवाकंबुग्रीवितिकथ्यते । औ विशाल उर है तामे सुंदर माला औ वघनहां है हाथ मे कंकण धारण किए हैं ॥ ३ ॥ ठोठी नासिका कपोल भाल तिलक भौंह कान औ ओष्ठ सुंदर हैं औ सुंदर उपमा रहित दांतन की छवि न्यारी है मानो लाल कमल के कोश मे सुंदर दुइ पांति की प्रसवक है उत्पत्ति है तिन्ह मे परम शुभ्र वारी कहै छोटी कुंदकली दुइ दुइ हैं इहां लाल कमल के कोश मुख है तामे उपर नोचे के दंतस्थान अर्थात् डाढ़ तें युग पांति हैं तामे छोटी छोटी दुइ दुइ जो दंतुली तेई कुंदकली है ॥ ४ ॥ चिक्कन जे बालन की पांति है ते मानो विशेष बनी भई भंवरन की मंडली है औ जो बालक की किलकारी है सोई मानो तिन का शब्द है एक टक ते प्रतिविंब को द्वेषि हरषि हरषि कै पुलकत जो हरि तिन को माता रस भंग जिय मे विचारि कै गोद मे लै लिए भाव अत्रहीं तो हरषत है असन होइ की डरि उठै वा हरि तो हरषि हरषि पुलकत है पर माता ने डर तें पुलकना विचारा ताते उठाय लिए ॥ ५ ॥ लीला अवतार लीला के हेतु अवतार है जेहि को ॥ ६ ॥ ॥ २५ ॥

म० । रागकान्हरा । आंगनफिरतघुठुखनिभ्राए नीलजलदतनुस्याम
 रामसिसुजननिनिरषिमुषनिकटबुलाए ॥ १ ॥ बंधुकसुमन
 अरुनपदपंकजअंकसप्रमुषचिन्हबनिआए । नूपरजनुमुनिबर
 कलहंसनिरचेनीडदैवांहवसाए ॥ २ ॥ कटिमेपलवरहारग्री
 वदररुचिरवाङ्गभूषनपहिराए । उरओवत्समनोहरहरिनषडे
 समध्यमनिगनवङ्गनाए ॥ ३ ॥ सुभगचिबुकद्विजअधरनसि
 काश्रवनकपोलमोहिअतिभाए । भ्रूसुंदरकरुनारसपूरनलो
 चनमनङ्गजुगलजलजाए ॥ ४ ॥ भालविसालललितलटकन
 बरवालदसाकेचिकुरसोहाए । मनोदोउगुरुसनिकुजआगेक
 रिससिहिलिनतमकेगनआए ॥ ५ ॥ उपमाएकअभूतभईत
 बजवजननीपटपीतबोटाए । नीलजलदपरउडगननिरखतत-
 जिमभावमानोतडितछपाए ॥ ६ ॥ अंगअंगपरमारनिकरमि
 लिच्छिसमहलैलैजनुकाए । तुलसिदासरघुनाथरूपगुनतौ
 कहौजौविधिहोहिबनाए ॥ ७ ॥ २६ ॥

टी० । घुठुखनि वकैयां ॥ १ ॥ दुपहरि आके फूल समलाल चरण
 है तामे कमल अंकुश आदि चिन्ह बने हैं औ नूपर है मानौ रघु-
 वर ने नूपर रूप खोता रचे तेहि मे मनि बर रूप कल हंसनि कौ
 बांहदैवसाए भाव दूहां कोई भय नहीं होयगो दूहां बसना ध्यान क
 रना है अंकुशादि चिन्ह यथा महारामायणे । रेखोर्द्धावर्त्ततेमध्येदक्षि
 णस्यांधिपंकजे ॥ पादादौखस्तिकंज्ञेयमष्टकोणस्तथैवच ॥ १ ॥ श्रियं
 हलंचमुशलंमर्षीवाणांवरेतथा पद्ममष्टदलंचैवस्यंदनंवज्रमुच्यते ॥ २ ॥
 यवोगुह्ये तथाप्ये तारेखोर्द्धावामतस्थिताः । रेखोर्द्धादक्षिणेचैवखस्तिका
 धोजपादपः ॥ ३ ॥ अंकुशंचध्वजंचैवमुकुटंचक्रमेवच । सिंहासनंमृत्यु
 दंडंचामरंछत्रमुद्यतं ॥ ४ ॥ नृचिन्हंयवमालेमेचतुर्विंशतिलक्षणाः
 क्रमेणैवप्रवर्ततेआरामस्यांधिदक्षिणे ॥ ५ ॥ ऊर्ध्वरेखायथासव्येपसव्येसर
 पूतथागोष्यदंपादमूलेचतदधःसागरांवरा ॥ ६ ॥ कुंभंचैवपताकांचजम्बफ

लमथोद्यतं । अर्द्धचंद्रोदरश्चैवषट्कोणंचचिकोणकं ॥ ७ ॥ गदातथा
 चजीवात्माविंदुरंगुठमध्यागः । सरय्वादर्क्षिणेकोणेलक्षणंज्ञेयमुत्तमं
 ॥ ८ ॥ गोःपदाधस्तथाशक्तिःसुधाकुंडमथोद्यतं । त्रिवलीकामपंचचपू
 र्णःसिंधुसुतस्तथा ॥ ९ ॥ बीणावंसौधनुस्तुणोमरालश्चंद्रिकेतिक । चतुर्वि
 शतिरामस्यचरणेवामकेस्थिता ॥ चतुर्विंशतिरामस्येतिछान्दोदीर्वाभा
 वःस्थितेतिस्थितानीत्यर्थः । सुपांसुलगतिसुपोडादेशःपरमेव्योमन्सर्वा
 भूतानीत्यादिवत् ॥ १० ॥ तानिसर्वाणिरामस्यपादेतिष्ठंतिवामके । या
 निचिन्हानिजानक्यादर्क्षिणंचरणेस्थिता ॥ ११ ॥ यानिचिन्हानिरामस्य
 चरणेदर्क्षिणेस्थिता । तानिसर्वाणिजानक्याःपादेतिष्ठंतिवामके ॥ १२ ॥
 ऊर्द्धरेखारुणाज्ञेयास्त्रिकंपीतमुच्यते । सितारुणंचाष्टकोणंश्रीञ्चवा
 लार्कसन्निभा ॥ १३ ॥ हलंचमुशलंचैवस्वेतधूम्रमितिस्रुतं । सर्पोसित
 स्तथावाणःस्वेतपीतारुणोहरित् ॥ १४ ॥ नभोवदंबरंचज्ञेयमरुणंपंकजं
 स्मृतम् । रथंचिचित्रवर्णचयुक्तंवेदहयैःसितैः ॥ १५ ॥ वज्रंतडिन्निभं
 ज्ञेयंस्वेतरक्तंतथायवं । कल्पटंचहरिद्वर्णंचकुशांस्थामउच्यते ॥ १६ ॥
 लोहिताचध्वजातस्यांचित्रवर्णाभिधीयते । सुवर्णमुकुटंचक्रंरत्नसिंहास
 नाभकं ॥ १७ ॥ कांस्यवधमदंडंस्याचामरंधवलंमहत् । कूर्चंचिन्हंशि
 वंशुक्लंनृचिन्हंसितलोहितम् ॥ १८ ॥ बाणवज्जेचमालाचवामेचसरथं
 सिता । गोप्यदश्चसितारक्तोपीतरक्तसितामाही ॥ १९ ॥ स्वर्णवर्णोसितं
 किंचित्कुंभमेवंप्रवर्ततेचित्रवर्णापताकाचश्यामंजंबूफलंतथा ॥ २० ॥ धव
 लश्चार्द्धचंद्रोतिरक्तैषत्सितोदरः । षट्कोणंचमहास्वच्छंचिकोणोरुण
 एवच ॥ २१ ॥ श्यामलातुगदाज्ञेयाजीवात्मादोप्तिरूपकः । विंदुःपीतंतु
 थाशक्तीरक्तस्यामसितापिच ॥ २२ ॥ सितरक्तंसुधाकुंडंचिवलीचचि
 णिवत् । वर्ततेरौप्यवन्नोधवलःपूर्णसिंधुजः ॥ २३ ॥ पीतरक्तसित
 बीणावेणुश्चित्रचित्रकः । हरित्पीतोरुणश्चैवत्रिविधंधनुरुच्यते ॥ २४ ॥
 वेणुबद्धर्ततेतृणोहंसर्द्वेषत्सितारुणः सितपीतारुणाज्योत्स्नासर्वतोरंग
 मद्भूतं ॥ २५ ॥ २ ॥ कटि मे किंकिनी कंबु कंठ मे सुंदर हार श्री

सुंदर बाहु मे भूषण पहिराए हैं उर मे मनोहर श्री वस्त्र औ वज्र मणि गण युक्त सुवर्न के मध्य मे जो हरि नख सो उर मे है पीतं प्रदक्षिणावर्त विचिचरोभराजिकं । विष्णोर्वक्षसियद्दीप्तं श्रीवत्संतत्प्र कीर्तितम् ॥ ३ ॥ करुणा रस पूर्ण जो लोचन है सो मानो दुइ कमल है ॥ ४ ॥ सुंदर विशाल भाल है तामे संदर लटकन औ बाल दशा के सुंदर वार हैं मानो दोऊ गुरू अर्थात् बृहस्पति शुक्र औ शनैश्वर मंगल आगे करि के चंद्रमा के मिलिबे को तम के समूह आए हैं इहां पोखराज हीरा नीलम मानिक के जो चारो लटकन है सोई बृहस्पति शुक्र शनि मंगल हैं मुख चंद्र है बिख रे वार जे मुख पर परे हैं तेत मगन हैं आगे करि आदूबे को यह भाव कि अधकार से चंद्रमासे बैर है ताते चंद्रमा के मान्य वर्ग को आगे करि लिए अर्थात् बृहस्पति गुरू हैं शुक्र उपकारी हैं जब गुरू पत्नी से चंद्रमा ने कुचाल किया रहा तब शुक्र सहाय किए रहे भारत मे ख्यात है औ शनि ग्रह राज जे सूर्य तिन के पुत्र हैं ताते एऊ मान्य हैं औ मंगल मित्र हैं ॥ ५ ॥ जब जननी पट पीत ओढ़ाए तब एक अद्भुत उपमा भई अब सो उपमा कहत हैं कि मानो श्याम मेघ पर तारा गण को देखत मात्र चंचलता सुभाव छोड़ि के विजुरी ने छिपाय लिए अर्थात् तारा गण को भाव तारा गण की अयोग्यता करना देखिबे ते विजुरी ने भी अयोग्यता किआ ॥ ६ ॥ मानो अनेक काम मिलि के छवि समूह को लैलै के अंग अंग पर छावत भए गासांई जी कहत हैं को रूप गुण रघुनाथ को तौ कहों जौ ब्रह्मा के बनाए हौंई वा जौ रघुनाथ ब्रह्मा के बनाए हौंई तौ रूप गुण कहों ॥ ७ ॥ २६ ॥

मू० । राग केदार । रघुवरबालछविकहौवरनि सकलसुषकीसीवको टिमनोजआभाहरनि ॥ १ ॥ बसौमानहुचरनकमलनिअरु नतातजितरनि रुचिरनूपरकिंकिनीमनुहरनिरुनभुनकरनि

॥ २ ॥ मंजुमेचकस्यदुलतनुअनुहरतिभूषणभरनिजनसुभगसिं
गारसिसुतरुफस्यौहैअद्भुतफरनि ॥ ३ ॥ भुजनिभुजगसरोजन
यननिवदनविधुजित्यौलरनिरहैकुहरनिसलिलनभउपमाअ
परदुरिडरनि ॥ ४ ॥ लसतकरप्रतिविंबमनिआंगनघुटुरुअनि
चरनि जलजसंपुटसुछविभरिभरिधरतिजनउरधरनि ॥ ५ ॥
पुण्यफलअनुभवनिमुतहिविलोकिदसरधवरनि वसततुलसी
हृदयप्रभुकिलकनिललितलरघरनि ॥ ६ ॥ २७ ॥

टी० । रघुवर की बाल छवि वर्नन करि कहत हौं सो छवि कैसी
है कि सब सुख की मर्यादा है औ कोटि काम की शोभा हरनि
हारी है ॥ १ ॥ मानो अरुनता सूर्य को छोड़ि कै चरण कमलन मे
आय वसौ औ सुंदर नूपर औ किंकिनी की रन भुन करनि मन
हरति है ॥ २ ॥ सुंदर श्याम कोमल तनु के योग्य भूषणन की
भरनि है अर्थात् भराव है मानो सुंदर शृंगार रूप बाल तरु अद्भुत
फरनि से फस्यौ है इहां शृंगार रूप छोटा तरु रघुनाथ है औ भूषण
जे सरीर मे भरे है ते फल है अनुहरति कहिवे को यह भाव
कि श्याम तन मे जो रंग शोभा पावै शृंगार तरु कहिवे को यह
भाव कि शृंगार का रंग भी श्याम है अद्भुत कहिवे को यह भाव
कि छोटा तरु फरत नाहीं कदापि फरत भौ है तौ अनेक रंग का
फल नहैं ॥ ३ ॥ भुजो ने सर्प को औ नैनो ने कमल को औ मुख
ने चंद्रमा को समर मे जीतौ तें सब विल जल औ आकाश मे रहे
अर्थात् विल मे सर्प औ जल मे कमल आकाश मे चंद्रमा रहे औ
अपर जेती उपमा ते डरनिसे छपि रहीं भाव हमारी भी न दुर्दशा
होय ॥ ४ ॥ घुटुरुअनि चलनिसे मनि आंगन मे हाथ को प्रतिविंब
सोहत है सो प्रतिविंब नही है कमल को संपुट है तेहि मे सुंदर
छवि भरि भरि के मानो धरनी अपने उर मे धरति है इहां चाल
प्रबि जो परिछांहीं मेटात आवत है सोई उर मे धरना है ॥ ५ ॥ औ

कौशल्या जू पुत्र को देखि कै अपने पुन्य फल को अनुभव करति है औ तेहि समय की किलकनि औ लरखरनि प्रभु की तुलसी के हृदय मे बसति है ॥ ६ ॥ २७ ॥

मू० । नेकुबिलोकुधौरघुवरनि चारिफ तत्रिपुरारितोकोदियेकरन्ट पघरनि ॥ १ ॥ बालभूषनवसनतनुसुंदरकचिररजभरनि पर स्वरखेलनिअजिरटिचलनिगिरिगिरिपरनि ॥ २ ॥ भुकनि भांकनिछां हसोकिलकनिनटनि हठिलरनि तोतरीबोलनिबिलोकनिमोहनीमनहरनि ॥ ३ ॥ सखिवचनसुनिकौसिला लषिसुठरपासेठरनि लेतभरिभरिअंकसैततिपैतजनुदुङ्गकरनि ॥ ४ ॥ चरितनिरखतविबुधतुलसीओटदेजलधरनि चह तसुरसुरपतिभयोसुरपतिभयोचहतरनि ॥ ५ ॥ २८ ॥

टी० । कौशल्या जू को और काम मे लगी देखि सखी कहति है हे नृप घरनि चारो भैअन को नेकु देषु तो मानो त्रिपुरारि ने चारो फल तोको हाथ पर दिए हैं इहां लुप्तोत्पेक्षा है ॥ १ ॥ अजिर आंगन ॥ २ ॥ नटनि नाचनि ॥ ३ ॥ सखी के वचन सुनि कै औ सुंदर पासे की ठरनि लिखि के अर्थात् सुकृत को फल जानि कै कौशल्या जू चारो भैअन कां गोदी में उठाय उठाय लेत हैं मानो उठाय नहीं लेत हैं पैत कहैं दावता कोदोज हाथ से बटोरत हैं भाव जीत कै जब पासा देषत है तब खेलारी जो दांव पर द्रव्य धरा रहत है ताको दूनो हाथ से बटोरि लेत है ॥ ४ ॥ देवता इंद्र भयो चाहत है औ इन्द्र सूर्य भयो चाहत हैं भाव देवता हजार नेत्र तें देखिवे हेतु इन्द्र भयो चाहत है औ इन्द्र विश्व भरि के नेत्र तें देखिवे हेतु सूर्य भयो चाहत हैं अर्थात् सूर्य सब के नेत्र मे रहत हैं ॥ ५ ॥ २८ ॥

मू० । रागजैतथी । भूमितलभूपकैबड़ेभाग रामलषनरिपुदमनभर तसिसुनिरषतअतिअनुराग ॥ १ ॥ बालबिभूषनलसतपाइन्ट

दुमंजुल अंगविभाग दसरथसुदतमनोहरविरवनिरूपकरह
 जनुलाग ॥ २ ॥ राजमरालविराजतविहरतजेहरिहृदयत
 डाग तेन्दपञ्जिरजानुकरधावतधरनचटकचलकाग ॥ ३ ॥
 सिद्धिसिहातसराहतमुनिगनकहैसुरकिन्नरनाग ह्वैवरुविहंग
 विलोकियेवालकवसिपुरउपवनवाग । परिजनसहितराथरा
 निन्हकियोमज्जनप्रेमप्रयाग तुलसीफलचाख्यौताकेमनिमर
 कतपंकजराग ॥ २६ ॥

टी० । सुंदर कोमल अंगन के विभाग पाइ के बाल समय को
 विभूषण शोभत है मानों श्री दशरथ महाराज के सुदत रूपी म-
 नोहर विरवनिमेरूप रूपी करहा लगा विरवा बाल तरु को कहत
 हैं ॥ २ ॥ जे राज मराल हर के हृदय रूपी तडाग मे विहरत वि-
 राजत ते दशरथ महाराज के अंगन मे चंचल काग के धरन को
 बकैयां ते शीघ्र धावत हैं इहां चंचल काग भुशुंडी जी हैं किलकत
 मोहि धरन जब धावहिं चलों भागितव यूप देखेवाविहिं बाचटकगंवरा
 औ चंचल काग के धरन को धावत हैं ॥ ३ ॥ सिद्धि सिहात है भाव
 अस भा गहमारो न भयो औ मुनि गन सराहत है भाव कहत हैं
 कि महाराज सब तें धन्य हैं औ सुर किन्नर नाग कहत हैं वरु
 पुर के उपवन औ वाग मे विहंग ह्वै वसि बालकान को विलोकिए
 पुर के समीप सो उपवन औ दूरि सो वाग ॥ ४ ॥ परिवार सहित
 राजा औ रानिन्ह नेप्रेम रूपी प्रयाग मे मज्जन कियो तेहि मज्जन
 के फल चारिउ बालक हैं मरकत मणि औ पद्म राग मणि के सम
 अर्थात् नील मणि सम श्री राम जू औ भरत जू पंकज राग सम
 लक्ष्मण जू औ शत्रुघ्न जू हैं ॥ ५ ॥ २६ ॥

मू० । रागअसावरी । छंगनमगनअंगनषेलतचारुचाख्यौभाई सा
 नुजभरतलालखनरामलोनेलोनेलरिकालखिमुदितमातुस
 मुदाई ॥ १ ॥ बालवसनभूषनधरेनषसिखछविछाई नीलपीत

मनमिजसरमिजमंजुलमालनिमानोइन्हदेहनितेदुतिपाई ॥
 ॥ २ ॥ ठुमुकिठुमुकिप्रगधरनिनटनिलरपरनिसोहाईभजनिमि
 लनिरुठनिटूठनिकिलकनिअवलोकनिबोलनिवरनिनजाई ॥
 ॥ ३ ॥ जननिसकलचङ्गवोरआलवालमनिअंगनाई दसरथ
 सुकतविबुधविरवाविलसतविलोकिजनुविधिवरवारिवनाई ॥
 ॥ ४ ॥ हरविरंचिहरिहेरिरामप्रेमपरवसताई सुखसमाजरघु
 राजकेवरनतविमुद्दमनसुरनिसुमुनभूरिलाई ॥ ५ ॥ सुमिर
 तश्रीरघुवरनिकीलीलालरिकाई तुलसीदासअनुरागअवधआ
 नंदअनुभवततवकोसोअजङ्गअघाई ॥ ६ ॥ ३० ॥

टी० । सुगम ॥ १ ॥ काम को नील पीत कमल को मालौं ने
 मानज्जंदन देहन ते द्युति पाई है ॥ २ ॥ टूठनि प्रसन्न होनि ॥ २ ॥
 मणि का आंगन नहीं है थाल्ला है चारो भैयानही है दशरथ सुकत
 के बाल कल्पवृक्ष है ताको विलसत देखि कै ब्रह्मा ने माता रूपी
 अष्टवारि चारो ओर बनाई है वारि रूंधानि ॥ ४ ॥ शिव ब्रह्मा विष्णु
 राम की प्रेम तें परवसताई देखि कै दशरथ महाराज के सुख समा-
 ज को विशुद्ध मन तें वर्नत है औ देवतो ने कि फूलनि कि भूरिलाई है
 ॥ ५ ॥ श्रीमान् चारो भैयन की लरिकाई की लीला सुमिरत माच
 तुलसीदास अनुराग रूप अवध मे तब के ऐसो आनंद अजङ्ग अघाय
 कै अनुभव करत हैं ॥ ६ ॥ ३० ॥

मू० । रागविलावल । आंगनषेलतआनदकंदा रघुकुलकुमुदसुषद
 चारुचंदा ॥ १ ॥ सानुजभरतलघनसंगसोहै सिसुभूषनभूषि
 तमनमोहै ॥ २ ॥ तनुदुतिमोरचंदजिमिभलकै मनज्जंउम
 गिअंगअंगकविकलकै ॥ ३ ॥ कटिकिंकिनोपायपैजनवाजै पं
 कजपानिपङ्गचियाराजै ॥ ४ ॥ कठुलाकंठवघनहानीकेनयनस
 रोजमयनसरसीके ॥ ५ ॥ लटकनलसतललाटलटूरी दमक
 तद्वैदंतुरिआरूरी ॥ ६ ॥ मुनिमनहरतमंजुमसिबुंदा ललि

तवदनबलिवालमुकुंदा ॥ ७ ॥ कुलहौचिचविचिचभङ्गुली
निगषतमातुमुदितप्रतिफूली ॥ ८ ॥ गहिमनिषंभडिंभडिगि
डोलत कलबलबचनतोतरेबोलत ॥ ९ ॥ किलकतभङ्गिकिभां
कतप्रतिविंबनि देतपरमसुखपितुअरुअंबनि ॥ १० ॥ सुमिर
तसुषमाहियङ्गलसी है ग'वतप्रेममगनतुलसो है ॥ ११ ॥ ३१ ॥

टी० । १ । २ । ३ । पंजपणिकरकमल ॥ ४ ॥ मानोनेचकाम
के तड़ाग के कमल है वा काम रूप तड़ाग के ॥ ५ ॥ रूरी भती । ६ ।
। ७ । कुलहौ टोपी औ भंगुली अंगरखी मातु बलिहारी जालू
संते हर्षहिं बलि जो पूर्व पद मे है ताको अन्वय इहां करना ॥ ८ ॥
डिंभ बालक ॥ ९ ॥ १० ॥ सुषमा परमा शोभा ॥ ११ ॥ ३१ ॥
मू० । रागकान्हरा । ललितसुतहिलालतिसचुपायेकौसल्याकलक
नकअजिरमहंसिखवतचलनअंगुरिआलाये ॥ १ ॥ कटिकिंकि
नीपैजनिआपायेनवाजतरुनभुनमधुररिंगाए पङ्गुचीकरनि
कंठकठुलावन्यौकेहरिनखमनिजरितजराये ॥ २ ॥ पीतपुनी
तविचिचभङ्गुलियासोहतस्याममरीरसोहायेदंतिथाद्वैदैनो
हरमुखकविअरुनअधरचितलेतचुराये ॥ ३ ॥ चिबुककपोल
नासिकासुंदरभालतिलकमसिबिंदुवनाये राजतनयनमंजुअं
जनयुतखंजनकंजमीनमदुनाये ॥ ४ ॥ लटकनचारुभटकुटि
आंटेढीमेढीसुभगसुदेससुभाये किलकिकिलकिनाचतचुट
कौसुनिडरपतिजननिपामिकुटकाये ॥ ५ ॥ गिरिघुटुरुनिटें
किउठिअनुजनितोतरिबोलतपूपदेखाये बालकेलिअवल्लोकि
मातुसबमुदितमगनअनदअनमाये ॥ ६ ॥ देषतनभघनवो
टचरितमुनिजोगसमाधिविरतिविसराये तुलसिदासजेरसिक
नयेहिरसतेजनजड़जीवतजगजाये ॥ ७ ॥ ३२ ॥

टी० । लाल तिलक है दुखारति सचुपाए आनंद पाए कल सुंदर
॥ १ ॥ मधुर रिगांए धीरे धीरे चलाए औ इहां जो जड़ाए शब्द

है ताको रूढि लक्षणा करि पहिराये अर्थ करना ॥ २ ॥ ३ ॥ खंजन कमल मीनो के मद कों नीचे किए अंजन युत सुंदर नयन शोभत हैं ॥ ४ ॥ मेठी आदि को अर्थ पहिले तिखि आए पति छुटकाए हाथ छोड़ाए मे जननी डरपति है वा आप श्री राम डरपत है ॥ ५ ॥ पूष देखाए माता के मानपूआ देखाए से तोतर बोलत अर्थात् तोतराय कै मागत बालकेलि देखि कै माता सब हषित हैं औ अनमा एक हैं जो न अमाय अर्थात् अपार आनंद तेहि मे मगन हैं ॥ ६ ॥ विरति बैराग्य जाए वृथा ॥ ७ ॥ ३२ ॥

म० । रागललित । छोटीछोटीगोड़िआअंगुरिआंछोटीछवीलीन खजोतिमोतीमानोकमलदलनिपरललितआंगनखेलैठुमुकि ठुमुकिचलैभुभुनभुभुनपायपैजनसुदुमुखर ॥ १ ॥ किंकिनीकलितकटिहाटकरतनजटिमंजुकरकंजनिपङ्गचिआरुचिरतर पिअरीभीनीभंगुलीसांवरेसरीरखुलीबालकदामिनिओही मानोवारेवारिधर ॥ २ ॥ उरवघनहाकंठकठुलाभंगूलेकेसमेठीलटकनमसिबिंदुमुनिमनहर अंजनरंजितनैचिचिचौरैचि तवनिमुखशोभापरवारोअमितअसमसर ॥ ३ ॥ चुटकीवजावतिनचावतिकौसल्यामाताबालकेलिगावतिमल्हावतप्रेमसुभर किलकिकिलकिहंसैद्वैदतुरिआंलसैतुलसीकेमनसैतोतरेव वचनवर ॥ ४ ॥ ३३ ॥

टी० । सुदु मुखर कोमल शब्दसे ॥ १ ॥ कटिमेकिंकिनीशोभित है औ सोना रन्तन से जड़ी अति शय सुंदर पङ्गचियां सुंदर कर कमलनि मे हैं औ बालक के सांवरे सरीर मे खुलै बाली पीत रग की भीनी भंगुली है मानो बालक नहीं है छोटे मेघ हैं भिगुली नहीं हैं दामिनि है ताको ओढ़ि लई है ॥ २ ॥ भंडुले केश विखरे वार अस मसर कहै पंचवाण अर्थात् काम ॥ ३ ॥ प्रेम सुभर प्रेम मे सुंदर भरि ॥ ४ ॥

मू० । सादरसुमुखिविलोकिरामसिसुखरूपअनूपभूपलियेकनिआ सुं
 दरस्यामसरोजवरनतनसवअंगसुभगसकलसुषदनिआ ॥ १ ॥
 अरुनचरननखजोतिजगमगति रुनभुनकरतिपायपैजनिआं
 कनकरतनमनिजटितरटतिकटिकिंकिनिकलितपीतपटतनि-
 यां ॥ २ ॥ पङ्गुचीकरनिपदिकहरिनखउरकठुलाकंठमंजुगज
 मनिआं रुचिचिबुकारदअधरमनोहरललितनासिकालसति
 नथुनिआ ॥ ३ ॥ विकटभृकुटिसुखमानिधिआननकलकप्रो
 लकानननगफनिआ भालतिलकमसिबिंदुविराजतमोहतमी
 सलालचौतनिया ॥ ४ ॥ मनमोहनोतरीबोलनिमुनिमनह
 रनिहसनिकिलकनिआ बालसुभायविलोलविलोचनचौरति
 चितहिचारुचितवनिआं ॥ ५ ॥ सुनिकुलवधुभूरोषनिभांक
 तिरामचंद्रकृविचंद्रवदनिआं तुलसिदासप्रभुदेपिमगनभईप्रे
 सविवसककुसुधिनअपनियां ॥ ६ ॥ ३४ ॥

टी० । हे सुमुखि रूप है अनूप जेहि को तेहि राम शिशु को
 भूप गोंद मे लिए है तै देखु सखी को उक्ति है ॥ १ ॥ पीत पट
 तनीयां करि के कलि तक है युअ जो कटि तेहि मे रतन मणि
 से जडित जो कनक मयी किंकिनो सो रटति है पीत पट तनियां
 कहै पीत रंग के बखु की कछनी मारवाड़ मे लगौंटी को तनियां
 कहत है पर इहां राज कुमार है ताते कछनी जानना ॥ २ ॥ प-
 दिक धुक धुकी गज मनियां गज मुक्ता रद दांत ॥ ३ ॥ विकट टेढ़
 कल सुंदर नग फनियां कान को भूषण प्रसिद्ध है जाको काशी आदि
 देश मे दुर्विद्या भी कहत है चौतनिया टोपी ॥ ४ ॥ विलोल चंचल
 ॥ ५ ॥ यह सखी को बचन सुनि चंद्रवदनी कुल वधू भूरोखनि तें
 भाकति है यह कथा सत्त्यों पाख्यान मे स्पष्ट है ॥ ६ ॥ ३४ ॥

मू० । रागविलावल । सो हतसहजसोहायेनयन । खंजनमीनकम
 लसकुचततवजवउपमाचाहतकविदै न ॥ १ ॥ सुंदरसवअंग

निमिसुभूषनराजतजनुसोभाआयेलैन बडोलाभलालचीलो
भवसरहिहगएतषिसुषमावज्जमैन ॥ २ ॥ भोरभूपल्लिएगोदमो
दभरेनिरपतःदनसुनतकलवैन बालकरूपअनूपरामच्छविनि
वसतितुनमिदासउरअैन ॥ ३ ॥

टी० । सहज सोहाए अथीत् अंजनादि विना ॥ १ ॥ सुंदर सब
अंगन मे बाल भूषण शोभत हैं मानो भूषण नहीं है बज्ज काम है
ते शोभा लेवे को आवत भए पर सुषमा रूप बडो लाभ लखि
लालची काम लोभ बंस रहि गए ॥ २ ॥ निवसति उर अैन हृदय
रूपी गृह मे वसति ॥ ३ ॥ ३५ ॥

मू० । रागविभास । भोरभयो जागज्जरघुनंदन गतव्यलीकभगतनि
उरचंदन । ससिकरहीनछीनदुतितारे तमचरमुखरसुनज्जमे
रेप्यारे ॥ १ ॥ विकसतकंजकुमुदविलषाने लैपरागरसमधु
पउड़ाने । अनुजसखामवबो लनिआए बंदिन्हअतिपुनीतगुन
गाए ॥ २ ॥ मनभावतोकलेऊकीजै तुनमिदासकहजठन
दौजै ॥ ३ ॥ ३६ ॥

टी० । मता की उक्ति है हे रघुनंदन भोर भयो जागज्ज तुम
कैसे हो कि व्यलीक कहै कपट तेहि करि रहित जो भक्त तिन
के उर के चंदनहो अर्थात् सीतल करनि हारे ॥ १ ॥ चंद्रमा किरन
रहिब भए औ तारन की द्युति छीन भई औ मुरुगा बोलि रहे हैं
तेहि शब्द को सुनज्ज ॥ २ ॥ कमल फूले औ कोई संपुटित भई
औ कमलन की धूगी औ रस लैके म्मर उड़त भए ॥ ३ ॥ ४ ॥
॥ ५ ॥ ३६ ॥

मू० । प्रातभयोतातबलिमातुविधुवदनपरमदनवारोकोटिउठोप्रात
थारे सूतमागधवंदीवदतविरदावलीद्वारमिसुअनुजप्रियतम
तिहारे ॥ १ ॥ कोकगतसोकअवलोकिसमिछीनछविअरुनस
यगनराजतरुचिरतारे मनज्जरविबालस्रगराजतमनिकरक

रिदलितअतिललितमनिगनविधारे ॥ २ ॥ सुनहुतमचरमुख
 रकीरकलहंसपिककेकिरवकलितबोलतविहंगवारे मनहुंसु
 निवृंदरघुवंसमनिरावरेगुनतगुनआथमनिसपरिवारे ॥ ३ ॥
 सरनिविकमितकंजपुंजमकरंदबरसंजुतरमधुरमधुकरगुजारे
 मनहुंप्रभुजन्मसुनिचयनअमरावतीइंदिरानंदमंदिरसंवारे ॥
 ॥ ४ ॥ प्रेमसंमिलितवरवचनरचनाअकनिरामराजीवलोचन
 उधारेदासतुलसोमुदितजननिकरैआरतीसहजमुंदरअजि
 रपाउधारे ॥ ३७ ॥

टी० । जेतात प्रात भयो मै माता बलि जांउ औ तुम्हारे मुख चू
 द्र पर कोटि मदन वागों हे प्राण प्यारे उठौ पौराणिक कथक भाट
 विरदावली कहत हैं औ तुम्हारे अति शय प्रिय बालक और अनुज
 द्वार पर खड़े हैं ॥ १ ॥ चंद्रमा की छवि छीन देखिकै चक्र वाक शो
 क रहित भए औ लाल रंग मय आकाश मे सुंदर तारे राजत हैं
 मानो बाल रवि रूपसिंह ने तमममूह रूप हाथिन को विदारित
 करि अति सुंदर मणि गणनकों छितिराय दिये इहां मणि गणतारा
 हैं मुग्गा बोलत हैं औ सृगा औ राजहंस औ कोइलि औ मोर
 रवकलितक हैं शब्द युक्त हैं औ बच्चौ पच्छिन के बोलत हैं सो सु-
 नहु पक्षी औ पच्छिन के बच्चा नही बोलत हैं हे रघुवंसमनि मानो
 मुनिगन परिवार सहित आयमन मे आप के गुण बर्णत हैं इहां
 आयम षोता है ॥ ३ ॥ तड़ागन मे कमलन के समूह प्रफुल्लित हैं
 तिनमे श्रेष्ठ रस है तापर भ्रमर अतिसुंदर मधुर गुंजार करत हैं
 मानो भ्रमर गुंजार नही करत हैं प्रभु को जन्म सुनि के इन्द्र के
 पुरी मे चयन है अर्थात् देवता लोग नृत्यगान करत हैं प्रफुल्लित क
 मल नही है लक्ष्मी ने आनंद को मंदिर बनायो है ॥ ४ ॥ प्रेम
 युक्त श्रेष्ठ वचन रचना सुनि औ राम कमलसमनेत्र उधारत भए गो
 साइजी कहत हैं कि हरषित जननी आरती करति है औ सहज

सुंदर जो रघुनाथ सो आंगन में पधारत भए । ५ ॥ ३७ ।
 मूल । जागियेकृपानिधान जानिराय रामचन्द्र जननिकहै वारवार
 भोरुभयोप्यारे । राजिवलोचनविशालप्रीतिवापिकामराल ल
 लितकमलवदनउपरमदनकोटिवारे ॥ १ ॥ अहनउदितविग
 तसर्वरीससांकाकिरिनि होनदीनदीपज्योतिमलिनदुतिसमूह
 तारे । मनहुज्ञानधनप्रकासबीतेसबभौविलास आसचासति
 मिरते षतरनितेजजारे ॥ २ ॥ बोलतखगनिकरमुखरमधुर
 करिप्रतीत सुनहुअवनप्राणजीवनधनमेरेतुमवारे । मनहुवे
 दंबंदीमुनिष्टंदसूतमागधादि विद्वद्वदतजयजयजय जयतिकैट
 भारे ॥ ३ ॥ विकसितकमलावलीचलेप्रपुंजचंचरीक गुंजत
 कलकोमलधुनित्यागिकंजन्यारे । जनुविरागपादसकलसोक
 कूपगृह विहाइष्टत्यप्रेममत्तफिरतगुनतगुनतिहारे ॥ ४ ॥ सु
 नतवचनप्रियरसालजागेअतिसयदयाल भागेजंजालविपुलदु
 खकदंबटारे । तुनमिदामअतिअनंददेखिकैमुखारविंद छूटे
 अमफंदपरममंददंबंधारे । ५ ॥ ३८ ।

टी० । जननी वारवार कहति है हे कृपानिधान जानी जे ब्र-
 ह्मादि तिन के स्वामी लालकमल समविशाल लोचन प्रीति रूपी
 बाउती के हंस सुंदर कमल वदन ऊपर कोटि काम वारे गए भए
 मेरेथे रेरामचन्द्रभोरभयोजागिए इहां षट्विशेषण ते षट्ऐश्वर्य युक्त
 जनाए औ कृपानिधान जानि राय प्रीति वापि कामराल एती निवि
 शेषण ऐश्वर्य के दिए प्यारे राजीव लोचन विशाल ललित कमल व
 दन ऊपर कोटि मदन वारे एती निविशेषण माधुर्य के दिए तेहिते
 ऐश्वर्य माधुर्य दूनो मे अपनी रूचि जनाए औ कौशल्याजी को बर
 दान है ॥ मातृविवेकअनौकिकतारे । कवहुनमिटिहिअनुग्रहमारे ॥
 ताते विवेकन मिटेउ ॥ १ ॥ सूर्य उए रावि बीती चन्द्रमा किरण
 हीन औ दीप की ज्योति दीन अर्थात् शोभाहीन औ सब तारन

को ह्यति मलीन भई मानो सूर्य नही उए पूर्ण ज्ञान को प्रकाश भयो
 औ रात्रि नही बीती भवका विलास अहंता ममता दिवोत्यो औ आश
 चास रूप अंधकार को तोष रूप सूर्य के तेज ने जराय दिथे ॥ २ ॥
 हे प्रान जीवन धन मेरे वारे सधुर शब्द ते पक्षीन के समूह बोलत
 हैं हमारे वचन को विश्वास करि अवनतें तुम सुनऊ मानो पक्षी
 नही बोलत हैं वेद रूप बंदी औ मुनिहं द रूप सूत माग घादि जय
 जय जय जय जयति बैट भारे कहियस कहत हैं ॥ ३ ॥ कमल समू
 होंके फूलत माच कमलन के त्यागि के पृथक हैं भँवरन के समूह सुं-
 दर कोमल धुनि तें गुंजत चले भाव सायंकाल मे कमलन के संपु-
 टित होवेतें भीतर पड़ि गए रहे ते उड़ि चले ते अमर कमल वि
 हाय गुंजार करत नहीं उड़त हैं मानो वैराग्य पाय सब शोक रूप
 गृह कूप छोड़िके तिहारे सेवक गुण को गुणत प्रेम मे मत्त फिरत
 हैं संपुटित कमल का गृह कूप मे उत्प्रेच्छा करने का यह भाव कि
 संपुटित कमल से भी निकलना कठिन है औ गृहकूप से भी निक
 लना कठिन है औ संपुटित भए पर अमर को केवल कमलै देषि
 परत है तैसे गृहकूप मे जे पड़े हैं तिनको केवल घरै देखि पड़त है
 इहां कमल के प्रफुल्लित होए से अमर कुट्टी पावत है इहां प्रभु छ-
 पाकरि जब निकालै तब कुट्टी पावै ॥ ४ ॥ रसाल प्रिय वचन सुनत
 माच अति सय दयाल जे औ राम ते जागे जंजाल भागत भए औ
 अनेक दुःखन के समूहन के टारत भए गोसाईंजी कहत हैं कि दास
 मुखारविंद देषि कै अति अनंद भए तातें मया के परम मंद भारे
 अम फंद कूटे । ५ ॥ ३८ ।

मूल । बोलत अवनित कुमारठाढ़े नृपभवनद्वार रूपसोलगुनउदारजा
 गज्जमेरे प्यारे । बिलपितकुमुदिनिचकोरचक्रवाकहरष भोर
 करतसोरतमचरखगुंजतअलिन्यारे ॥ १ ॥ रुचिरमधुरभोज
 नकरिभूपनसजिसकल अंगसंगअनुजबालकसबविविधिविधि

सँवारे । करतलगहि तलितचापभंजनरिपुनिकरदाप कटित
टपटपीत वूनसायकअनिघारे ॥ २ ॥ उपवनमृगयाविहारका
रनगवनेकृपाल जननीमुखनिरिपुन्यपुंजनजविचारे । तुल-
सिदामसंगलीजैजानिदीनअभैकीजैदौजैमतिविमलगवैचरि
तवरतिहारे । ३ ॥ ३६ ।

टी० । राज भवन के दरवाजे पर राजन के बालक ठाढे भए बो-
लत हैं अर्थात् तुम्हारे जागवे की प्रत्यसा देखत हैं हे रूपशील
गुनउदार मेरे प्यारे जागड़ भोर भएते कोई औ चकोर बिलखात
हैं औ चक्राक कों हरष है मुरगा औ और पत्नी शोर करत हैं
और भ्रमर न्यारे गुंजार करत हैं एतना सुनि जागे यह शेष है १
अनुज औ बालक सब जे विवित्रि विधि सँवारे भए हैं तिनके सङ्ग
सुंदर मधुर भोजन करिके औ सकल अंगन मे भषन औ कटि देश
मे पीतपट औ तरकस चोखे सायक युक्त मजि के औ रिपु समूहन के
अहंकार भंजन करनिहारा सुंदर चापहस्ततल मे गहि के उपवन मे
सिकार खेतिवे के हेतु कृपाल गवने जननी ने मुख देखि के अपने
पुन्य का समूह विचारा कृपाल कहिवे को भाव मानस रामायन मे
स्पष्ट है ॥ जेमृगरामवानकेमारि । तेतनुतजिसुरलोकसिधारे ॥ गो-
साईजी कहत हैं कि हम को संग लीजे औ दीन जानि के अभै
कीजे औ निर्मल मति दीजे जाते तेहारे अष्ट चरिचन कों गावैं इहां
गोसाईजू आवे समे देहाध्यास भूलि प्रत्यक्ष सम कहे ॥ ३६ ॥

रागनट । खेलनचलिअैआनदकंद सखाप्रियमृपदारठाढे विपुलबाल
कवुंद ॥ १ ॥ तृषिततुम्हरेदरसकारनचतुरचातकदास बपुषवा
रिदवरषिच्छविजलहररुल्लोचनप्यास ॥ २ ॥ बंधुवचनविनीत
सुनिउठेमनरुकेहरिवाल ललितलघुसरचापकरउरनयनवा
रुविसाल ॥ ३ ॥ चततपदप्रतिविंवाजतअजिरसुषमापुंज प्रेम
बमप्रतिचरनमहिमानोदेतिअसनकंज ॥ ४ ॥ निरषिपरमवि

विचमोभा चकितचितवडिंमात हरषविवसनजातकहिनिजभ
वनविहरज्जतात ॥ ५ ॥ देषितुलसीदासप्रभुछविरहेसवपत्नरो
कि थकितनिकरचकोरमानज्जसरदईदुविलोकि । ई ॥ ४० ।

टी० । सषा औ प्रिय जे बालकन के अनेक युत्यै ते नृप द्वार में खडे
है वा सखा औ प्रिय औ बालकन के अनेक युत्यै नृप द्वार मे खडे है
तुह्यारे दरस के कारन चतुरदास रूप चातक जे चिपित है तिनको स-
गौर रूप मेघ तें छवि रूप जल वरषि कै नेचन को प्यास हरज्ज ॥ २
विनीतनम्ब के हरिबालक कहै सिंघ को बालक ॥ ३ ॥ परम शोभा
पुंज जो आंगन है तेहि मे चलत संते पद की परिछाहीं शोभति
है सो परिछाही नही है मानो प्रेम बस चरण प्रति पृथ्वी कम
लन के आसन देति है ॥ ४ ॥ हर्ष के विशेष बस है ताते नही
कहिजात है कि हे तात निज भवन मे विहरज्ज अर्थात बाहर न
जाज्ज ॥ ५ ॥ गोसाईजी कहत है कि प्रभु छवि देषि कै सब पलक
रोकि रहे मानो चकोरन के समूह सरदपूनो के चंद को देषि थ-
कित भए । ई ॥ ४० ।

सू० । विहरत अवधवीथिन्हराम संगअनुजअनेकसिसुनवनीलनीरद
स्यामतरुनअरुनसरोजपदवनिकनकमयपदचानपोतपटकाटि
तूनवरकरललितलघुधनुवान ॥ २ ॥ लोचननिकोलहतफलछ
विनिगषिप्रानरनारि बसततुलसीदासउाअवधेसकेसुतचारि
। ३ ॥ ४१ ।

टी० । नवीन स्याममेघसमस्याम श्रीराम अनुज औ अनेक शिशुन
के संग अवधि की गलिन मे विहरत है ॥ १ ॥ तरुण जो लालक-
मल तहत चरण है तामे सुवर्ण मयी पनहीं बनी है अर्थात पहिरे
है पीतपट औ तरकस काटि मे है अष्ट करनि मे सुंदर छोटे धनुष
औ बान है ॥ २ ॥ लोचनई० सु० । ३ ॥ ४१ । करतलसोहतवानधनु
हिया । यहपदछेपक है ताते न लिखा

भूल । जैसेरामललित तैसेलोनेलघनलालु तैतेईभगतसीलसुषमास
नेहनिधितैसईसुभप्रंगसत्रुसालु ॥ १ ॥ धरेंधनुसरकरकसेक
टितरकसीपीरेपटवोटेचलैचारुचालु अंगअंगभूषनजरायकेज
गमगतहरतजनकेजीकोतिमिरजालु ॥ २ ॥ खेलतचौहटाघाट
बौथीवाटकनिप्रभुमिवसुप्रेममानसमरालु मोभदानदैदैन
मानतजाचकजनकरतलोकलोचननिहालु ॥ ३ ॥ रावनदुरि
तदुखदलैसुखकहैअजुअवधनकलसुखकोसुकालु तुनमोसरा
हैमिद्वसुकृतकौसल्याजूकेभूरिभागभाजनभुआलु । ४ ॥ ४२

टी० । ललित सुंदरलोने सुंदर शील सुखमा सनेह निधि सील
औ परम सोभा औ खेह के समुद्र शत्रुगाल शत्रुहनजी ॥ १ ॥ त-
रकसी तरकस जराय के जड़ाऊ के तिभिरजाल अवकार समुह ॥ २
शिवजीके सुंदर प्रेम रूप मानसमर के हंम जो प्रभु हैं सो चौहटा
औ घाट गली औ फुलवारिन मे खेलत हैं औ लोक के लोचन रूप
जाचक जन के संभा दान दै दै के सनमानत है औ निहाल करत
हैं ॥ ३ ॥ देवता कहत हैं कि अवध मे सकल सुख को सुकाल है
पर रावन पाप रूप दुख को अजुअ मरै भाव अवध के मुख मे न
भूलै हमारे दुख को देखि सीघता करै वा देवता कहत हैं कि
आजु कहै वा समै मे रावन पाप रूप जो दुख है ताको मारैतो अ-
वध मे सकल सुख को सुकान होयभाव फेर दुकाल का भैन रहिजाय
गोसाई जी कहत हैं कि बड़े भाग्य के पाच जो महाराज दशरथ
औ कौशल्या जू तिन के सुकृत को मिद्व सराहत हैं ॥ ४ ॥ ४२ ॥

मू० । रागललित । ललितललितलघुलघुधनुसरकरतैसितरकमिक
टिकसेपटपिअरे ललितपनहिपायपंजनीकिंकिनिधुनिमुनिसु
षलहैमनुरहैनितनियरे ॥ १ ॥ पङ्गचीअंगदचारुहृदयपदिक
हारकुंडलतिलकछविगडीकविजियरेसिरसिटेपाटोलालनी
रजनयनविसालसुंदरवदनठाठेमृगतस्सियरे ॥ २ ॥ सुभगस

कलअंगअनजवालकसंगदेघेनरनागिरहैज्यौकुरंगदियरे षे
लतअवधखोरिगोलीभौराचकडोरिमूरतिमधुरवसैतुलसीके
हियरे ॥ ३ ॥

टी० । ललित० ई सु० ॥ १ ॥ अंगद विजायठ पदिक धुक धुकी
हार माला वा सात पदिक के माला का नाम पदिक हार है सिर
सिटे पारे लाल गिर मे लाल टोपी है नीरज कमल । सुरतक
सियरेकल्पदक्षकेछायामे ॥ २ ॥ ज्यौ कुरंग दियरे जैसे ष्टगा
दीपककोदेखिकैमंका ॥ ष्टग तो गान सुनि मोहित होत है
दीपक तें कैसे लिखे उत्तर ॥ व्याधादीपकवारिकेकुछगान । करत
हैं तब ष्टगा उहां आवत है यह प्रमिद्ध है चकडोरी चकई ॥ ३ ॥
॥ ४३ ॥

मू० । छोटिअधनुहिआपनहिआपगनिछोटीछोटिअकछौटौकटि
छोटिअंतरकसी लसतभंगलीभौनोदामिनिकोछविछीनीसुं
दरवदनसिरपगिआजरकसी । वयअनुहरतविभूषनविचिचअं
गजोहैजियआवतिसनेहकीसरकसी मूरतिकीसूरतिकहीन
परैतुलसीपैजानैसोईजाकेउरकसकैकरकसी ॥ २ ॥ ४४ ॥

टी० । कछौटी कछनी ॥ १ ॥ अवस्था के अनुहार विचिच भूषण
अंग मे है देखिवे तें जिय मे स्नेह की प्रबलताई आवति है तुलसी
पै मूरति की सूरति नही कहि परै है जाके हृदय मे कड़क ऐसी
कसकै है अर्थात् मूरति सोई जानै ॥ २ ॥ ४४ ॥

मू० । रागटोडो । रामलषनएकवोरभरतरिपुदमनलालएकओरभ
ए सरजुतीरसमसुषदभूमिथलगनिगनिगोइआवांटिलये ॥
॥ १ ॥ कंदुककेलिकुमलहयचटिचटिमनकमकसिठेकिठो
किखये करकमलनिविचिचचौगानैखेलनलगेखेलरिभये ॥
॥ २ ॥ व्योमविमाननिविबुधविलोकतखेलकपेपकछांहछये
सहितमसाजसगाहिदसरथिहिवरषतनिजतरकुसुमचये ॥३॥

एकलैबढ़त एक फेरत सब प्रेम प्रमोद विनोद मये एक कहत भद्र
 हाल रामजूकी एक कहत भद्र या भरत जये ॥ ४ ॥ प्रभुवकसतग
 जवाजिवमनमनिजयधुनिगगननिसानहये पादसख सेवकजा
 चकभरिजीवनदूसरेद्वारगये ॥ ५ ॥ नभपुरपरतनिछावरिज
 हतहंसुरसिद्धनिवरदानदये भूरिभागअनुरागउमगिजेगावत
 सुनतचरितनितये ॥ ६ ॥ हारेहरषहोतहियभरतहिजिते
 सकुचिभिरनयननएतुलसीसुभिरिसुभावसीलसुदतीतेदूजेए
 हिरंगरण ॥ ७ ४५ ॥

टी० । राम दू० सु० ॥ १ ॥ गेंदा के खेल मे जे कुशल है ते
 घोड़न पर चढ़ि चढ़ि कै मन को ठोकि ठोकि मजबूत करि करि
 के खड़े भए ठोकि ठोकि मजबूत करिवे को यह भाव कि हम हारै
 गे नही अवश्य जीतै गे अस निश्चै करि करि वा मन को फेरि फेरि
 के अर्थात् मिलाप छोड़ि छोड़ि के ताल ठोकि ठोकि के षड़े भए
 वा मन भरि घोड़न को किस किस के याल ठोकि ठोकि के चढ़ि
 चढ़ि खड़े भए हस्त कमलन मे विचिच दण्डा है रिभावन वाले
 खेल खेलन लगे यह खेल या भांति ते खेला जात है दूनो ओर
 गोइया खड़े होत है बीच मे एक सीवा बनावत है जमोन मे गेदा
 को धरि घोड़े पर से दंडा मारि मारि के गेंदा को सीवा के ओर
 बढ़ावत है औ दूसरे ओर से दंडा मारि मारि के गेंदा को फेरत
 है जेहि ओर से सीवा पार होय तेहि की हाल होय अर्थात् जीत
 होय ॥ २ ॥ आकाश तें विमानन पर देवता देखत है खेलने वाले
 और देखने वालों की छाया छाया रही वा खेलने वालों पर देखनेवालों
 की छाया छाया रही वा खेलने वालों की छायासम देखने वाले अर्थात्
 देवता छाजे समाज सहित राजा दशरथ को सराहि के अपना तरु जो
 कल्पवृक्ष ताको पुष्प समूहै वर्षत भए ॥ ३ ॥ सब प्रेम आनन्द औ कौतु-
 कभैजे है तिन मे से एक गेंदा को लै बढ़त औ एकरोकि कै फेरत

एक कहत है कि राम जू की जीत भई औ एक कहत है कि
 भैया भरत जीते ॥ ४ ॥ हृये कहै हने अर्थात् बजाए ॥ ५ ॥ जहं
 तहं पुर तें औ आकाश तें नेकावरि परति है अर्थात् आकाश तें
 देवता औ पुर तें पुरवासी नेवकावर करत देवता औ सिद्ध वरदान
 हेत भए अनुराग मे उमगि के जे ए चरित नित्य सुनत गावत है
 तिन के बडे भाग है ॥ ६ ॥ सिरजैननएसिरऔनैननीचेकेनबावतभ
 एरएकहैरंगे ॥ ७ ॥ ४५ ॥

सु० । खेलिखेलिसुखेलनिहारे उतरिउतरिचुचकारितुरंगनिसा
 दरजाइजोहारे ॥ १ ॥ बंधुसखासेवकसराहिसनमानिसने
 हसंभारे दिएबसनगजराजिसाजिसुभसाजिसुभातिसंवारे ॥
 ॥ २ ॥ सुदितनयनफलपाद्गाइगुनसुरसानंदसिधारे सहि
 तसमाजरारजसंदिक्कहंरामराउपगधारे ॥ ३ ॥ भूपभवनघर
 घरघसंडकल्यानकोलाइलभारे निरघिहरघिघारतीनिक्काव
 रिकरतसरीरबिसारे ॥ ४ ॥ नितनयेमंगलमेदअवधसबवि
 घिसबलोगसुखारे तुलसीतिन्हसमतेउजिन्हकेप्रभुतेप्रभुच-
 रितपियारे ॥ ५ ॥ ४६ ॥

टी० । सुंदर खेलने वारे खेल खेलि के ॥ १ ॥ बंधु सखा सेवक
 कों सराहि सनमानि के फिरि सनेह को सन्हारे अर्थात् सनेह मे
 आप जो विह्वल है गए रहे ताको सन्हारे पुनि बसन औ घोड़ा
 हाथो साजि कै औ सुंदर भांति ते संवारे जे सुभ साज भाव सुंदर
 पोसाक ते दिए वा कल्यान साजि के सुंदर भांति ते संवारत भए
 औ बसनादि दिए वा सनेह सन्हारे यह सब दिए भाव जेहि की
 जेतनी प्रीति तेतनी दिए वा सनेह को सन्हारे भए जो बंधु आदि
 है तिन कों सराहि सनमानि कै बसनादि दिए सनेह सन्हारे भए
 कहिवे को यह भाव कि सनेह को न सन्हारें तो देहाध्यास र-
 हित है जाइँ ॥ २ ॥ सुदित इ० सु० ॥ ३ ॥ भूपति के भवन मे

औ घर घर मे कल्याण को बंध है अर्थात् कल्याण प्ररि रहा है वा कल्याण को अडंकार है ॥ ४ ॥ गोसांई जी कहत हैं कि तिन्ह अवध वासो सम तेज हैं जिन्ह के प्रभु तें प्रभु का चरित पिआरा है ॥ ५ ॥ ४६ ॥

मू० । रागमारंग । चङतमहामुनिजागजयो नीचनिसाचरदेतदुस हदुप्रकसतनतापतयो ॥ १ ॥ सापेपापनयेनिदरतखलतवयह मंचठयो विप्रसाधुसुरधेनुधरनिहितहरिअवतारलयो ॥ २ ॥ सुमिरतश्रीसारंगपानिछनकैसवसोचुगयो चलेमुदितकौमिक कोमलपुरसगुननिसाथदयो ॥ ३ ॥ करतसनोरथजातपुलकि प्रगटतआनंदनयो तुलसीप्रभुअनुरागउमगिमगमंगलमूलभ यो ॥ ४ ॥ ४७ ॥

टी० । महामुनि जे विश्वामिच जू ते यज्ञ औ जय दोऊ चाहत हैं महामुनि कहिबे को यह भाव कि तप बल याही देइ अए क्षत्री तें ऋषि पति अस कोज मुनि नही भयो नीच निसाचर दुःसह दुःख देत हैं तातें तन तापन ते तयो औ कृष्ण भयो ॥ १ ॥ अब विश्वामिच जू का विचार कहत हैं शाप देइबे मे पाप है औ नवतई किए मे खल निरादर करत है अस विचारि कै तव यह मंच ठान्यो कि विप्रादि के हित हरि अवतार लियो है इहां और नाम न कहे हरिही कहे ताको यह भाव कि या काल मे अपना दुःख हराइबे पर दृष्टि है अर्थात् हरताति हरिः ॥ २ ॥ सारंग पानि कहिबे को यह भाव कि सारंग अस धनुष हाथ मे है तो क्यो न हमारे शत्रु को नाशै गे सगुननिसाथ दयो कहिले को यह भाव कि राह भरि सगुन होत आयो ॥ ३ ॥ पुलकि करि कै मनोरथ करत जात है औ नयो जो कबहूँ न भयो आनंद सो प्रगटत है गोसांई जी कहत हैं कि प्रभु अनुराग के उमग करि कै मग मंगल मूल भयो भाव जवताई यज्ञ कै ओर घर मे लगे रहे तवताई न भयो

औ प्रभु के ओर चलतै राह मे भयो आगे क्या जानै केतना होय
गो ॥ ४ ॥ ४७ ॥

मू० । आजसकलसुखतफलपाइहौं सुखकीसीवअवधिअनदकीअ
वधबिलोकिहौजाइहौं ॥ १ ॥ सुतहिंसहितदसरथहिदेपि
हौंप्रेमपुलकिउरलाइहौं रामचन्द्रमुपचन्द्रसुधाछविनयनच
कोरनिष्याइहौ ॥ २ ॥ सादरसमाचारनृपबूभिहैहौंसबक
थासुनाइहौं तुलसीहैछतकृत्यआश्रमहिरामलघनलैआइ
हौं ॥ ३ ॥ ४८ ॥

टी० । अब विष्णामित्र जी को मनोरथ कहत हैं सुख की सीमा
औ आनन्द की सीमा औसी जो अयोध्या जी हैं तिन कों जाय मैं
देखि हौं ॥ १ ॥ श्री रामचंद्र के मुख रूप चन्द्र को जो छवि रूप
अमृत है ताकों नैन रूपचकोरनकोपिआइ हौं ॥ २ ॥ सादर इ० सु०
दो० । बह्विधिकरतमनोरथ जातनलागीवार । करिमज्जनसरजूज
ल गएभूपदरवार ॥ चौ० । मुनिआगमनसुनाजबराजा । मिलनगए
उल्लैविप्रसमाजा ॥ करिदंडवतमुनिहिसनमानी । निजआसनवैठारि
न्हिआनी ॥ चरनपखाकिन्हअतिपूजा । मोसमआजुधन्यनहिद्रजा
विविधिभांतिभोजनकरवावा । मुनिवरहृदयहरषअतिपावा ॥ पुनिच
रननमेलेसुतचारी । रामदेपिमुनिदेहविसारी ॥ भयेमगनदेखतमु
खसोभा । अनुचकोरपूरनशशिलोभा ॥ इहां यतनी कथा छोडि
दिए प्रसंगमिलाइवे हेतु हम लिखि दिआ ॥ ३ ॥ ४८ ॥

मू० । रागनट । देपिमुनिरावरेपदआजु भयोप्रथमगनतीमैअवतहांज
हांलौसाधुसमाजु ॥ १ ॥ चरनवंदिकरजोरिनि होरतकहिय
छपाकरिकाजुअरेकछुनअदेयरामविनुदेहगेहसवराजु ॥ २ ॥
भलीकहीभूपतित्रिभुअनमैकोसुखतीसिरताजु तुलसीरामज
नमतेजनिअतसकलसुखतकोसाजु ॥ ३ ॥ ४९ ॥

टी० । देखि इ० पद सुगम ॥ ४९ ॥

मू० । राजनरामलघनजौदीजै जसरावरोलाभटोठनिङ्गमुनिसना
थमबकीजै ॥ १ ॥ डरपतहौसांचेङ्गसनेहवससुतप्रभावबिनु
जाने बूझियेवामदेवअरुकुलगुरुतमपुनिपरमसयाने ॥ २ ॥
रिपुनदलिमपराषिकुसलअतिअलपदिननिघरअैहै तुलसि
दासरघुबंसतिलककीकविकलकीरतिगैहै ॥ ३ ॥ ५० ॥

टी० । राजन ६० पद सुगम ॥ ५० ॥

मू० । रहेठगिसेन्दपतिसुनिमुनिवरकेबैन कहिनसकतकछुरामप्रेम
बसपुलकगातभरेनीरनैन । गुरुवसिष्टसमुभ्तायकछ्यौतवहिय
हरषानेजानेसेषसयन सौप्रेसुतगहिपानिपांयपरिभूसुरउर
चलेउमगिचयन ॥ २ ॥ तुलसीप्रभुजोहतपोहतचितसोहत
मोहतकोटिमयन मधुमाधवमरतिदोउसंगमानोदिनमनिग
मनकियोउत्तरअथन ॥ ३ ॥ ५१ ॥

टी० । रहेठगि सु० ॥ १ ॥ विश्वामित्र जू चैन कहै आनन्द से
उमगिचले ॥ २ ॥ गोसांई जी कहत है की कोटि काम के मोहत
जो प्रभु सोभत है सो देखत मात्र चित्त को पोहि लेत है अर्थात्
अपने मे लगाइ लेत है मानो चैत्र बैसाख रूप दोऊ मरति संग
लै विश्वामित्र रूप सूर्य उत्तर दिमा को गवन कियो भावचैत्र बैसा
ख पाय सूर्य अति प्रताप युक्त होत है तैसे इन दोऊ भैयन को
पाय विश्वामित्र जू भए ॥ ३ ॥ ५१ ॥

मू० । रागमारंग । रिषिसंगहरषिचलेदोउभाई पितुपदबंदिसीस
लियोआयसुसुनिसिषआसिषपाई ॥ १ ॥ नीलपोतपाथोजव
रनवपुवयकिसोरबनिआई सरधनुपानिपीतपटकटितटकसेनि
षंगवनाई ॥ २ ॥ कलितकंठमनिमालकलेवरचंदनघौरिसु
हाई सुंदरबदनसरोरुहलोचनमुखछविवरनिनजाई ॥ ३ ॥
पल्लवपंषसुमनसिरसोहतअ्यौकहौवेषलोनाई मनोमूरतिध
रिउभयभागभईत्रिभुअनसुंदरताई ॥ ४ ॥ पैठतसरनिसिल

निचटिचितवतषगस्रगवनरुचिराई सादरसभयसप्रेमपुलकि
मुनिपुनिपुनिलेतबोलाई ॥ ५ ॥ एकतीरतकिहतीताडकावि
द्याविप्रपटाई राघ्यौजज्ञजतिरजनीचरभइजगविदितवडाई
॥ ७ ॥ चरनकमलरजपरसिअहल्यानिजपतिलोकपटाई तु-
लसिदासप्रभुकेबूझेमुनिसुरसरिकथासुनाई ॥ ७ ॥ ५२ ॥

टी० । पिता की सिद्धा सुनि आन्ना शिर धरि लिए फिर पद कीं
बंदि आशिष पाइ कै ऋषि के संग हरषि कै दोऊ भाई चले ॥ १ ॥
श्याम पीत कमल के समान सरीर के बर्ण है औ किशोर अवस्था
बनि के आई अर्थात् भली भांति आई है वान धनुष हाथ मे है
औ कटि देश मे पीत पट है औ तामे तरकस बनाय कै कसे है
॥ २ ॥ कंठ मे मणि माल शोभित है औ सरीर मे सुंदर चंदन की
खौरि है सुंदर मुख औ कमल सम लोचन है मुष की छवि वरनी
नहीं जाति है ॥ ३ ॥ अपर पद सु० ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ५२ ॥
म० । रागनट । दोउराजसुवनराजतमुनिकेसंगनषपिषतोनेलोने

बदनलोनेलोधनदामिनिवारिद्वरवरनअंग ॥ १ ॥ सिरसिमि
षासुडाईउपवीतपीतपटधनुसरकरकसेकटिनिषंगमानोमख
रुजनिसिचरहरिवेकोसुतपावककेसाथपठयेप्रतंग ॥ २ ॥ क
रतकाहधनवरषेसुरसुमनछविबरणतअतुलितअनंगतुलसीप्र
भुविलोकिसगलोगषगस्रगप्रेमसगनरंगेरूपरंग ॥ ३ ॥ ५३ ॥

टी० । लोने सुंदर लोचन नेत्र दामिनि वरण अंग श्री लक्ष्मण जी
को औ मेघ वरण अंग श्री राम जी को है ॥ १ ॥ मानो मख
के रोग रूप निशाचर हरिवे को अग्नि के साथ पुत्र जो अश्वनी
कुमार तिन को सूर्य पठए है इहा पावक त्रिभामित्र जू है अश्वनी
कुमार रूप दोऊ भाई है सूर्य चक्रवर्ती महाराज है ॥ २ ॥ मेघ
छाहं करत है देवता फूल बर्षत है औ अनेक अनंग सम छवि
वरनत है वा छवि वरनते मे काम नहीं तुलित होत है वा अतुलित

जो छवि ताको काम बरनत है ॥ ३ ॥ पू३ ॥

मू० । रागकल्याण । मुनिकेमंगविराजतरीर काकपद्मधरकाकोदं
 लसरसुभगपीतपटकटिवनीर ॥ १ ॥ बदनइंदुअंभोरुहलो
 चनख्यामगौरसोभासदनसरीर पुलकतरिषिअवलोकितमित
 छडिरनसमातप्रेमकीभीर ॥ २ ॥ खेलतचलतकरतमगकौ
 तुकविलमतसरितसरोवतीर तोरतलतासुमनसरसीरुहपि
 यतमुधासमसीतलनीर ॥ ३ ॥ बैठतविमलसिलनिषिटपनि
 तरपुनिपुनिबरनतछांहसमीर देषतनटतकेकिकलगावतमधु
 पमरालकोकिलाकीर ॥ ४ ॥ नयननिकोफललेतनिरषिष्टग
 खगसुरभीव्रजवधुअहीर तुलसीप्रभुहिदेतसबआसननिजनि
 जमनस्टदुकमलकुटीर ॥ ५ ॥ पू४ ॥

टी० । काकपद्म कुलफ को इंड धनुष तू नीर तरकस ॥ १ ॥ इंदु
 चंद्रमा अंभोरुह कमल ॥ २ ॥ सर सीरुह कमल ॥ ३ ॥ नाचत
 जो मोर है औ सुंदर गावत जो अमर है औ हंस कोकिल सुआ
 जे है तिन को देषत है ॥ ४ ॥ ष्टग पत्तो गौ औ खगिन के रहै
 वाली जो स्त्री औ अहीर नयननि को फल लेत है गोसाईं जी
 कहत है कि सब प्रभु को अपने अपने मन रूप कुटी मे कोमल
 कमल को आसन देत है भाव अवर आसन को कठोर जानि अस
 भावना करत है ॥ पू४ ॥

मू० । रागकान्हरा । सोहतमगमुनिसंगदोउभाईतरनतमालचारु
 चंपकछविकविसुभायकडिजाई ॥ १ ॥ भूषनवसनअनुहरति
 अंगनिउमगतिमुंदरताई बदनमनोजसरोजलोचननिरही
 हैलोभाइलोनाई ॥ २ ॥ असनिधनुसरकरकमलनिकटिक
 सेहैनिषंगवनाई सकलभुवनसोभासरवसलघुलागतनिरखि
 निकाई ॥ ३ ॥ महिस्टदुपथघनछांहसुमनसुरवरषिपवनसु
 घटाई जलथलरुहफलफूनसलिलसवकरतप्रेमपडनाई ॥ ४ ॥

सकुचसभीतविनीतसाधगुरुबोलनिचलनिमुहाई षगमृगवि
 चित्रविलोकित बच्चविचलसतललितलरिकाई ॥ ५ ॥ विद्या
 दर्ईजानिविद्यानिधिविद्यल्ललहीवडाई ख्यातदनीताडकादे
 प्रिरिप्रिदेतअसीसअघाई ॥ ६ ॥ वूभतप्रभुसुरसरिप्रसंगक
 हिनिककुलकथासुनाईगाधिसुअनमनेहसुप्रसंपतिउरआस्त्र
 मनसमाई ॥ ७ ॥ वनवासीवडजतीजोगिजनसाधुसिद्धिसमु
 दाई पूजतपोषिप्रीतिप्रलकततननयनलाभलुटिपाई ॥ ८ ॥
 मप्रराष्यौखलदलदलिभुजबलवाजतविबुधवधाईनितपथचरि
 तसहिततुलसीचितबसतलघनरघुराई ॥ ९ ॥ ५५ ॥

टी० । सुंदर तरुण तमाल के वृक्ष सम श्री रघुनाथ की श्री
 चंपक सम श्री लक्ष्मण की छवि यह कवि सुभाव ते कहि जाति है
 कवि सुभाव कहिवे को यह भाव कि प्रायः जो न घटै सो घटावना
 कविन का सुभाव होत है ॥ १ ॥ अंगनि के अनुरूप भूषन वसन
 है अर्थात् श्री राम जी को पीत वसन श्री पीत मणि आदि को
 भूषन है श्री लक्ष्मण जी को नील वसन श्री नील मणि आदि
 को भूषण है श्री सुंदरताई उमगति है श्री मुखन पर काम की नैनन
 पर कमलन की शोभा लोभाय रची है ॥ २ ॥ अंसन कहै कांधन पर
 सरवस कहै सब ॥ १ ॥ पृथ्वी कोमल पथ से मेघ छाया से दे-
 वता फूल वरषि कै पवन सुष दाई से अर्थात् सीतल मंद सुगंध वहि
 के जल के वृक्षस्थल के वृक्ष फल फूल से श्री सलिल सब से अर्थात्
 आत्म निवेदन से प्रेम पूर्व कपड नाई करत है ॥ ४ ॥ गुरू के
 साथ मे सकुचता सभीतता श्री नम्रता युक्त बोलनि श्री चलनि
 सोहाति है श्री विचित्र पक्षी मृग जो देखत है सो बीच बीच
 मे सुंदर लरिकाई लसत है ॥ ५ ॥ खेलही मे ताडका कोदल
 ताको देषि कै ऋषि अघाय के असीस देत भए श्री विद्या निधि
 जानि विद्या दर्ई भाव विद्यान के रहिवे को स्थान एही है विद्याने

भी बढ़ाई लही भाव विद्या निधि जो सोऊ हम को सीखे यह
 बढ़ाई लही पहिले ताड़का का बध है फिर विश्वामित्र का विद्या
 देना है ताते पद का यहि भांति अन्वय किया ॥ ६ ॥ प्रभुगंगाजी
 की कथा ब्रह्मत भए ताको कहि के विश्वामित्र जू अपने कुल की
 कथा सुनाई बालकाण्ड वाल्मीकीय रामायण मे विश्वामित्र के कुल
 की कथा लिखी है विस्तर भय तें इहां नही लिखा विश्वामित्र जी
 को जो सनेह औ सुख रूप सम्पति है सो हृदय रूप आयम मे
 नही समाति है ॥ ७ ॥ वानप्रस्थ ब्रह्मचारी औ सन्यासी और
 अष्टांग योग साधन वारे जे जन औ साधु अर्थात् पर काज साधन
 कर निहारे औ सिद्ध अर्थात् जो साधन करि चुके हैं तिन की
 समुदाय देखि के पूजत हैं औ प्रीति तें तन पुलकत हैं औ नैनन
 ने लाभ को लटि पाई है ॥ ८ ॥ वाजत विबुध बधाई देवतन की ब-
 धाई वाजत है ॥ ९ ॥ ५५ ॥

सू० । मंजुलमंगलमयलपटोटासुनिमुनितियमुनिमिसुविलोकिकहै
 मधुरमनोहरजोटा ॥ १ ॥ नामरूपअनुरूपवेषवयरासलष
 नलाललोने इन्हतेंलहीहैमानोघनदामिनिदुतिमनसिजम
 रकतसोने ॥ २ ॥ चरनसरोजपीतपटकटितटतूनतोरधनुधा
 री केहरिकंधकामकरिकरवरिपुलवाङ्गवलभारी ॥ ३ ॥ दू
 षनरहितममयममभूषनपादुमुअंगनिसोहै नवराजीवनयनपू
 रनविधुवदनमदनमनमोहै ॥ ४ ॥ मिरनिमिषंडमुमनदनमं
 डनवालसुभायवनाये केलिअंकतनुरेनुपंकजनप्रगटतचरित
 चुगाये ॥ ५ ॥ मषराषवैलागिदसरथसोमागिअश्रमहिअ
 ने प्रेमपूजिपाङ्गनेप्रानप्रियगाधिसुअनसनमाने ॥ ६ ॥ साध
 नफलसाधकमिद्धनिकेलोचनफलसबहीके सकलमुअतंफत्र
 मातुपिताकेजीवनधनतुलसीके ॥ ७ ॥ ५६ ॥

टी० । मंदर मंगल मय लप बालक है मंजुल मंगल कहिवे को

यह भाव कि जोहि केनाम लेवे ते अमंगल नशि जात है मुनि औ मुनि की पत्नी औ मुनि के बालक कोमल अनोहर जोड़ी लेखि कै कहत हैं ॥ १ ॥ नाम औ रूप योग्य वेष औ अवस्था से श्री राम लषन अति लोने हैं मानां मेघ दामिनि काम सरकत मणि औ सेना ने इनही तें छवि लही है ॥ २ ॥ कमल सम चरण है कटि देशमेपीत पट औ तरकस औ वान धनु धारन किए हैं सिंह सम कांध हैं काम रूप हाथी के अष्ट सुंड सम विशाल भुजा औ पराक्रम भारी है ॥ ३ ॥ दूषन रहित जे समय सम भूषण ते सुअंगनि पाय सोभत हैं दूषण रहित कहिवे को यह भाव कि बज्रत मणि दोष सहि तो होत हैं नवीन कमल सम नेत्र हैं पूर्ण चंद्र सम मुख है सो मदन को मन मोहत है ॥ ४ ॥ शिर पर मोरपंख औ फूल दन को भूषण बाल सुभाय ते बनाए हैं खेल कै चिन्ह जो तनु से रेनु औ पंक सो मानहु चाराए चरित को प्रगटत है भाव विश्वामिच जी को जो आंख बचाय कै खेले कू देहैं ताकों प्रगटत हैं ॥ ५ ॥ विश्वामिच जू यज्ञ राषिवे के हेतु चक्रवर्ती महाराज सो मागि के आश्रम मे ले आए प्राण ते प्रिय जो पाहुन दोऊ भाई तिन्ह को प्रेम ते पूजि कै मन्वानत भए ॥ ६ ॥ साधन इ० सु० ॥ ७ ॥ ॥ ५६ ॥

सू० । रागसूहव । रामपदपदुमपरागपरी ऋषितियत्यागितुरतपाह
नतनरुविमयदेहधरी ॥ १ ॥ प्रवलपापपतिसापदुसहदवदा
कनजरनिजरी छपासुधासीचीविवुधवेत्तिज्यौफिरिसुषफरनि
फरी ॥ २ ॥ निगमअगममूरतिम हेमसतियुवतिवरायवरी सो
इमूरतिभइजानिनयनपथएकटकतेनटरी ॥ ३ ॥ बरनतहृद
यसरूपमीलशुनप्रेमप्रमोदभरी तुलसिदासअसेकेहिआरत
कीआरतिप्रभुनहरी ॥ ४ ॥ ५७ ॥

टो० । पराग धरि पाहुन पाषाण ॥ १ ॥ प्रवल पाप से जो पति

शाप रूप दुःसह अग्नि तेहि करि कठिन जगनि से जो जरी रही
 सो कृपा रूपी अमृत से सीची गई फेरि कल्पिता के समान मुख
 रूप फानि से फरी । पादो गच्छतस्तस्य रामस्य पादस्य शान्ताशिला का
 चिद्योषाभव सद्यो विच्छिन्नं मुनिव्रवात् । शापदग्ध पुगभर्त्तारामशक्रप
 राधतः अहल्याख्याशिनानज्जेयतस्त्रिगोत्रतः स्वगाट् त्वदंघ्रिस्पर्शनात्त
 स्यैशपाण्डं प्राह गोतमः तस्माद्वियंतेप दाजस्य शान्तुद्वाभवत्प्रभो ॥ २ ॥
 जो मरति बेद को अगम अर्थात् वरनन मे औ मदेश की मतिरूप
 युवती ने चुनि कै वरी है वराय वी कडिवे को यह भाव कि विश्नु
 षुसिंह वामनादि को तजि कै वरी मोई मूर्ति नयन गोचर भई
 जानिए कटक ते नटरी ॥ ३ ॥ रूप शील गुण के हृदय मे वानत
 भाव प्रेम औ आनंद मे भरत भई गोसाई जी कहत हैं कि प्रभु
 यहि प्रकार ते केहि आरत की आरति नहीं करी है भाव सब की
 करी है ॥ ४ ॥ ५७ ॥

मू० । परतपटपंकजरजगिपिरवनी भई है प्रगट् अतिदिव्य देह धरिमा
 नोचिभुवनकविछवनी ॥ १ ॥ देषिबडो अचरजपुलकितनक
 हतमुदितमुनिभवनी जौचलि है रघुनाथपयाटेसिलानरहि है
 अवनी ॥ २ ॥ परमिजोपायपुनी तमुरसगीमो है तो निपयगव
 नी तुलसिदासतेहिचरनरेनुकीमहिमाकहै मतिकवनो ॥
 ॥ ३ ॥ ५८ ॥

टी० । छवनी कन्या ॥ १ ॥ मुनि भवनी मुनि पत्नी ॥ २ ॥ तीनि
 पथ स्वर्ग मर्त्य पताल लोक ॥ ३ ॥ ५८ ॥

मू० । भूरिभागभाजनभई रूपरासिअवलोकिवंधुदोउप्रेमसुरंगरई
 ॥ १ ॥ कहाकैहैकेहिभातिसगहैनहिकरतूतिनई विनुकार
 नकरुनाकररघुवरकेहिकेहिगतिनदई ॥ २ ॥ करिवज्ज्विनिय
 राषिउरमूरतिसंगलमोदमई तुलसीहैविसोकपतिलोकहिप्र
 गुनगनतगई ॥ ३ ॥ ५९ ॥

टी० । भाजन पात्र सुरंग रई सुंदर रंग मे रंगी ॥ १ ॥ विनु
कारन विनु हेतु ॥ २ ॥ करि इ० सु० ॥ ३ ॥ ५६ ॥

मू० । रागकान्हरा । कौसिककेसखकेरखवारे नामरामअरुलघन
ललितअतिदसरथराकुदुलारे ॥ १ ॥ मेचकपे'तकमलकोम
लकलकाकपद्धधरवारे सोभासकलसकेलिमदनविधिसुकरस
रोजसवारे ॥ २ ॥ सहससमूहसुवाहुसरिसषलसमरसूरभ
टभारे केलिहूनधनुवानपानिरननिदगिनिसाचरभारे ॥ ३ ॥
ऋषितियतारिखर्यवरपेघनजनकनगरपगधारे मगनरनारि
निहारतसादरकहिबडभागहमारे ॥ ४ ॥ तुलमीसुनतएक
एकनिसोचलतपिलोकनिहारे मूकनिवचनलाहुमानोअंध
निलहेहैविलोचनतारे ॥ ५ ॥ ६० ॥

टी० । अब सग के नर नारिन की उक्ति लिखत है कौशिक इ०
सु० ॥ १ ॥ ए बालक श्याम पीत कोमल कमल सम है औ सुंदर
कुल्फ धारन किए है मानो सकल शोभा समेटि कै काम रूप
विधाता ने अपने कर कमल सेसंवारे है इहां लुप्तोत्प्रेक्षा है ॥ २ ॥
समर मे सूर बडे योहा सुवाहु सरिम षल अनेक सहख निशाचरन
की षेलवाड के तरकस औ धनुष वान जो हाथ मे है ताही सो रण
मे निगदर करि कै मारे ॥ ३ ॥ पेघन कहै देघन ॥ ४ ॥ मानो
मूकनि ने वचन लाभ औ अंधनि ने नेच न की पुतरी लहे हैं ॥ ५ ॥
॥ ६० ॥

मू० । रागटोड़ी । आएसुनिकौसिकजनकहरघानेहै । बोलिगुरु
भूसरसमाजसोमिलनचले जानिवडेभागअनुरागअकुलाने-
है ॥ १ ॥ नादमीसपगनिअसौसपाइप्रमुदितपांबडेअरव
देतआदरसोअनेहै अमनवसनवासकैसुपाससवविधिपूजिप्रि
यपाहुनेमुभायसनमानेहै ॥ २ ॥ विनयवडाईगिषिराजऊपर
स्वरकरतपुलकिप्रेसअनदअघानेहै देषेरामलघननिमिषेवि

यकितभईप्रानङ्गतेप्यारेलागेविनुपहिचानेहै ॥ ३ ॥ ब्रह्मानं
दहृदयदरससुषणोयननिअनुभएउभयसरसरासजानेहै तुल
मीविदहकीसनेहकीदसासुमिरिसेरेमनमानेराउनिपटसया
नेहै ॥ ४ ॥ ६१ ॥

टी० । कौशिक को आगमन मुनि अपने बड़े भाग जानि अनुराग
से विह्वल भए हैं औ इरघाने हैं जे जनक महाराज तें सचिव
आदि तिन के सहित मिलिवे को चले शंका गुरू को कैसे बोलाए
उत्तर । श्री जनक महाराज के गुरू जागवल्क जी हैं सतानंद जी
पुरोहित है पुरोहित को भी गुरू कहत हैं ॥ १ ॥ प्रिय पाऊने
विश्वामित्र जी ॥ २ ॥ विनय इ० सु० ॥ ३ ॥ ब्रह्मा नंद उरखे औ राम
दरमन सुष नेचन तें दूनो अनुभव किए तब सरस राम हैं यह जाने
अर्थात् नच सुष को अतिक माने गोसाईं जी कहत हैं विदेह के
स्नेह को दसा सुमिरि कै हमारे मन ने मान लिया कि महाराज
अत्यंत चतुर हैं भाव ज्ञान में न भूले । अथः श्रुतिं भक्तिं मद्स्यते विभो
क्लिश्यन्ति ये केवल बोधलब्धये तेषामसौक्लेशल एव शिष्यतेनान्यद्वयास्थू
लतुषावघातिनाम् ॥ ४ ॥ ६१ ॥

मू० । रागमलार । कोमलरायकेकुवरोटा राजतरुचिरजनकपुर
पैठतस्यामगौरनीकेजोटा ॥ १ ॥ चौतनीसिरनिकनककलि
काननिकटिपटपीतसोहाए उरमनिमालविसालविलोचनसौ
यस्वयंवरआए ॥ २ ॥ वरनिनजातमनहिमनभावतसुभगअव
हिवयथोरौ भइ हैमगनविधुवदनविलोकतनिताचतुरचको
री ॥ ३ ॥ कहुँमिवचापलरिकबनिभूतविहंसिचितैतिरछोहै
तुलसीगलिनभीरदरसनलगिलोगअटनिअवरोहै ॥ ४ ॥
॥ ६२ ॥

टी० । कुअरौटा कहैं कुअरैं जोटा जोड़ी ॥ १ ॥ चौतनी टोपी
कनक कली सोना को कलि का कार कुंडल वा पीत रंग के पुष्प

की कली कन पर खीसे है ॥ २ ॥ वरनि इ० मु० ॥ ३ ॥ अटनि
अवगो है अटारिन पर चढे, है ॥ ४ ॥ ६२ ॥

म० । एअवधिसकेसुतदोज चढिमंदिरनविलोकतसादरजनकनगर
सबकोज ॥ १ ॥ ख्यामगौरसुंदरकिसोरतनतूनवानधनुधारी
कटिपटपीतकंठमुकुतमनिभुजविसालवलभारी ॥ २ ॥ मुख
मयंकमरसौरहलोचनतिलकभालटेढीभौहै कलकुंडनचौ
तनीचारुअतिचततमत्तगजगौहै ॥ ३ ॥ विश्वामिचहेतुपठ-
एण्टपइन्हइताडिकामागी मषगाख्यौपिपुजीतिजानिजगमग
मुनिबधुधारी ॥ ४ ॥ प्रियपाऊनेजानिनरनारिन्हनयनन्हि
अयनदये तुलसिदासप्रभुदेखिलोगसबजनकसमानभये ॥ ५ ॥
॥ ६३ ॥

टी० । गज गौ है गज गति से अयन गृह जनक समान भए
विदेह भए अपर पद सुगम ॥ ५ ॥ ६३ ॥

म० । रागटोडो । वृभूतजनकनाथटोटादोउकाकेहै तरुनतमाल
चारुचंपकवरनतनुकौनेबड़भागीकेसुकृतपिपाकेहै ॥ १ ॥
सुषकेनिधानपायेहोयधेपिधनलायेठगकैसेलाडूखायेप्रेमम
धुक्काकेहै स्वारशरहितपरमारधीकहावतहैभेसनेहविवसविदे
हतविवाकेहै ॥ २ ॥ मौलसुधाकेअगारसुषमाकेपारावारपा-
वतनपरपारपौरपौरिथाकेहै लोचनललकिलागेमनअतिअनु-
रागेएकरसरूपचित्तसकलसभाकेहै ॥ ३ ॥ जियजियजोरत
सगाईरामलघनमोआपनेआपनेभायजैसेभायजाकेहै प्रति
कोप्रतीतिकोसुमिरवेकोसेइवेकोसरनकोसमरथतुलसीहूता
केहै ॥ ४ ॥ ६४ ॥

टी० । जनक महाराज वृभूत है कि हे नाथ ए दोज बालक
केहि के है ए जे नूतन तमाल औ सुंदर चंपा के वरन सम सरीर
ते कवने बडे भागी के सुकृत के फल है ॥ १ ॥ अब कविकी उक्ति

है सुष के रासि पाए हृदय को पिधान कहैं टपना लगावत भए भाव
जब कोऊ धन पावत है तब गुप्त ठौर मे तोपि कै धरत है इहां
गुप्त ठौर हृदय है ताको पिधान देहाध्याम भूलना है ठग के लडुआ
अस घात भए अर्थात् विष डरि कै लेडुआ ठग प्रवावत है तब पव-
दुआ अचेत है जात है तम भए औ प्रेम रूपी मदिगा मे छुकि गए
हैं कहावत तो रहे स्वारथ रहित परमार्थी पर सनेह के विशेष
बम भए तें विदेहता रहित है गए हैं भाव सनेह त्रिवस भए तातें
स्वारथ सहित औ विदेहता विवा के तातें परमार्थ रहित इहा
गासाईं जी यह जनाए कि परमाथर के फल रूप राम है ॥ २ ॥
सकल सभा के एक रस रूप मे चित्त हैं ताते लोचन ल लकिके
लागे औ मन अति अनुरागे ते लोचन मन शील रूप अमृत क
गृह परम शोभा के समुद्र को पैरि पैरि थाके हैं पर पार नाहीं
पावत है शील सुधाके अगार कहिवे को यह भाव कि समुद्र सुधा को
भवन है औ यह परम शोभा रूप समुद्र शील रूप अमृत को भवन
हैं थाके हैं कहिवे को यह भाव ति अघाते नही है पारावार समुद्र
का नाम है समुद्रोधि र कूपारः पारावारः सरित्पतिः जाके जैसे जैसे
भाव हैं तेहि भाव के अनुकूल अपने अपने जिय मे राम लघन
सो नाता जोरत है प्रीति करिवे को विश्वास करिवे को सुमिरिवे को
सेवन करिवे को औ सरन जाइवे को योग्य जो ताको तुलसिद्ध ने
ताके हैं ॥ ४ ॥ ६४ ॥

सू० । राग मलार । एकौनकहांतिआए नीलपीतपायो जवरनमन
हरनसुभायमुहाए ॥ १ ॥ मुनिसुतकिधौ भूपवालककिधौ ब्रह्म
जीवजगजाए रूपकलधिकेरतनसुक्वितियलोचनललितल
लाये ॥ २ ॥ किधौरविसुअनमदनअटुपतिकिधौ हरिहरवे
षवनाए किधौ आपनेसुद्धतमुरतरुकेसुफलरावरेहिपाये ॥ ३ ॥
भएविदेहविदेहनेहवसदेहदसाविमराए पुनकगातनसमात

हरष हियमलिलसुलोचनछाए ॥ ४ ॥ जनकवचनसुदुमंजु
मधुरभरेभगतिकौमिकहिभाये तु तसे अतिअनंदउभगिउ
ररामलघनगुनगाये ॥ ५ ॥ ईपू ॥

टी० । स्वामपीत कमल सम वरण औ मन के हरनि हारे स्वाभा
विक सुंदर जे एते कौन है औ कहां ते आए है ॥ १ ॥ कैधौ मुनि
सुत है कैधौ राजाके बालक है इहां मुनि के संगते मुनि पुत्र का
संदेह औ राज कुमार सम देषि राज पुत्र का संदेह वा विश्वाभिच
जी के कोई पहिले के संबंधी ता नहीं है यतें ज्ञानी का संदेह
कदापि अब के सम्बंधी होहि यत ब्राह्मण का संदेह है कैधौ जी-
वऔजगत को जो उल्लान्न किए जे सोई ब्रह्म है मानस रामाय
न मे स्पष्ट करि लिखा ॥ ब्रह्मजोनिगमनेतिकहिगावा । उभयवेष
धरि कौमोईआवा ॥ इहां अत्यंत सांत औ चमत्कार देषि ब्रह्म क-
हे काज अम अर्थ करत है कैधो ब्रह्म जीव ही तो नही जगत मे
जन्मे है कैधौ रूप रूपो समुद्र के मणि है कैधौ एललासुंदर छवि
रूप तिय के सुंदर लोचन है ॥ २ ॥ कैधौ रवि सुअन कहै हंस है
काज अम कहत कैधौ रवि सुअन कहै अश्वनीकुमार सो तो नहीहै
कैधौ काम वसंत है रूप जलधि के रत्न इहां से औ मनद रति
पति किधौ इहां लो अत्यंत रूप देषि संदेह है कैधौ वेष बनाएभए
हरि हर तो नही है इहां अति तेजस्वी देषि हरि हर का संदेह
है कैधौ अपने सुकृत रूप कल्पवृक्ष के सुंदर फल आपही ने पाए है
अर्थात् दोजभाइन के इहां विश्वाभिच जी को सर्वोत्कृष्ट तपस्वी जा-
नि तप के फल रूप मे संदेह है ॥ ३ ॥ नेह बस देह दसा को वि-
भराए ताते विदेह महाराज विदेह भए इहां भए विदेह विदेह क-
हिवे वो यह भाव कि अवतारि नाम साचरहा है सांके विदेह आ-
ज भए है वा अब तारि जगत से विदेह रहे अब ब्रह्मानन्द हते वि-
देह भए इहां स्वरूपा नन्द की बड़ाई जानना पुनकावली अंग से

हैं हृदय मे हरष नहीं समात है औ नेचन मे आंसू छाए भाव जब
 चर्ष हृदय मे न समायो तव नैन के राह बाहर भयो ॥ ४ ॥ जनक
 जी के सुंदर कोमल औ सीठे औ भगति भरे वचन कौशिक को
 भाए गोसाईं जी कहत हैं अति आनंद जो सो हृदय तें उमगि के
 श्री राम लखन के गुन गावत भए अर्थात् जनक महाराज से सब
 कहि देत भए ॥ ५ ॥ ६५ ॥

सू० । कौसिकछपालहूकोपलकिततनुभोउमगतअनुरागसभाकेस
 राहेभागदेषिदसाजनककीकहिबेकोमनभो ॥ १ ॥ प्रीतिके
 नपातकीदिएहसापपापबडोमखमिसिमेरोतवअवधगवनभो
 प्रानहतेप्यारेसुतमागेदियेदसरघसत्यसंधसोचसहैसूनोसो
 भवनभो ॥ २ ॥ काकसिखासिरकरकेलितूनधनुसरवालकवि
 नोदजातुधाननिसोरनुभो वूभक्तविदेहअनुरागआचरजवस
 ष्टपिराजजागभयोमहाराजअनुभो ॥ ३ ॥ भूमिदेवनरदेव
 सचिवपरस्परकहतहमकोसुरतरुसिवधनुभो सुनतराजाकी
 रीतिउपजीप्रतीतिप्रीतिभागतुलसीकेभलेसाहेबकोजनुभो ॥

॥ ४ ॥ ६६ ॥

टी० । छपाल जो विश्वामित्र तिनहू को तज रोमांच युक्त भयो
 अनुराग उमगत संते सभा के भाग सराहे औ जनकजी की दशा
 देषि के वृत्तान्त कहिबे को मन भो ॥ १ ॥ अब वृत्तान्त कहत हैं
 पातकी जे राक्षस ते प्रीति के नहीं हैं औ शाप दिए हू भंबडो पाप
 है तव मख के बहाने से मेरो अवध से गमन भयो भवन सूनोसो
 भयो शोच सहे पर सत्य प्रतिज्ञ जे दशरथ महाराज ते प्रान हूतें
 प्यारे सुत मागिबे ते दिए ॥ २ ॥ शिर विषे जुल्फ मात्र है अर्थात्
 कूंडो आदि नहीं तरकस औ हाथ से जे धन बान ते खेलवाड़ के
 हैं भाव युद्ध के नहीं औ बालविनोद से अर्थात् रोष से नहीं औ
 युद्ध निशाचरन के नायकन से भयो भाव साधारन से नहीं । जातू

निरक्षांसिद्धातिपुञ्जातीतिजातुधानःराक्षसनायकद्वयर्थः । अनुराग
 औ आश्चर्य के बस हैं विदेह महाराज बूझत हैं कि हे ऋषिराज
 यम्य भयो तव विश्वामित्रजु बोले कि हे महाराज अनुभो अर्थात्
 सम्यक् भयो वा महाराज अनुभो हे महाराज आपही अनुभव
 करिए जो यम्यनपूर्ण होता तो हम अनंद पूर्वक इहां कैसे आव-
 लें ॥ ३ ॥ सुनत मात्र रघुनाथ से राजा की रीति उपजी भाव निश्चय
 भयो कि राजकुमार हैं ताते उपजी औ प्रीति प्रतीति उपजी भाव
 ऐसे राक्षसन के सारे हैं तो क्यों न धनु तोरेंगे औ ब्राह्मण रा-
 जा संची परस्पर कहत हैं कि हम को शिव धनु कल्पवृक्ष भयो
 भाव एही शिव धनु के प्रसाद से यह दर्शन पाए राजा की रीति
 कहे व्यवहार सुनत मात्र प्रतीति औ प्रीति उपजी कि भाग तुलसी के
 हैं कि भले साहेब को गुलाम भयो भाव जेहिं साहब के पाए ते
 महाज्ञ जे जनक महाराज तेज अपने को छतार्थ माने ॥ ५ ॥ ६ ॥

म० । चाक्षौभलेबेटादेवदशरथरायके जैसेरामलघनभरतरिपुह
 नतैसेसीलसोभासागरप्रभाकरप्रभायके ॥ १ ॥ ताडकासंघा
 रिमखराखेनीकेपालेब्रतकोटिकोटिभटकिएएकएकधायकेए
 कवानवेगहीउड़ानेजातुधानजातऋषिगएगातहैपतउआभ-
 येवायके ॥ २ ॥ सिलाछोरकूवतअहल्याभईदिव्यदेहगुनपे
 धेपारसकेपंककहपायके रामके प्रसादगुरुगौतमखसमभयेरा
 वरेहसतानंदपूतभयेमायके ॥ ३ ॥ प्रेमपरिहांसपोषेवचनप
 रस्परकहतसुनतसुखसवहीसुभायके तुलसीसराहेभागकौ-
 सिकजनकजुकेबिधिकेसुठरहोतसुठरसुदायके ॥ ४ ॥ ६७ ॥

टी० । हे देव हे महाराज राजा दशरथ के चारों बेटा भले हैं
 जैसे राम लघन तैसे भरत शत्रुहन शील शोभाके समुद्र औ प्रताप
 के सूर्यहैं इहां चारो भाइन को बरनन करि यह जनाए किआपको
 अन्यत्र वर न दूढ़नो परैगो । १ । ताडका दिवध फेर कहत हैं ताडक

मारिकै यज्ञराखे औ प्रतिज्ञा भलेपाले कोटि कोटि भट एक एक चोट के किए तिनमे एक चोट के जातु धानै वान के वेगैसे उड़ाने जात है ताते तिन के गात्र सूषि गए ववंडर के पत्ता सम भए भावफिर भूतल मे नआए । २ । शिला के कोर कुञ्जत अहल्या दिव्य देह भई चरण कमल के पारस के गुणदेषे भाव जैसे पारस के छुए लोहा सोना होत तैसे जडतै दिव्य भई श्रीराम के प्रसाद ते रावरे गुरु जो गौतम जोतै खसम भए भाव रहुआ पन छूटा औ सतानंद अपने माता के पत भए भाव वे सह तारी के टुअर कहावत रहे सो छूटा । ३ । प्रेम औ परिहांस तैं पुष्ट भए जे सुंदर भाव के वचन परस्पर कहत है तै सुनत भाव सबही को सुख भयो गोसाईं जी कहत है की कौशिक जनक जी को भाग सराहे औ कहे विधि अनुकूल से सुंदर दांव के पास सुहार होत है इहाँ सुंदर पास परना रघुनाथ का आगमन है ॥ ४ ॥ ॥ ६७ ॥

स० । एदोजदसरथकेवारे । नामरामधनखामलखनलघु नप्रसि
 पञ्चगउज्यारे ॥ १ ॥ निजहितलागिमांगिअनेमै धरससे-
 तुरखवारे । धीरवोरविरुदैतवांजुरे महावाहुवलभारे ॥ २ ॥
 एकतौरतकिहतीताडका क्रियसुरसाधसुखारे । जज्ञराखि
 जगसाखितोषिरिषि निदरिनिमाचरभारे ॥ ३ ॥ मुनितिय-
 तारिख्यंवरपेषन आएसुनिवचनतिहारे । राउदेखिहैपिना
 कजेकजेहि नृपतिलाजजरजारे ॥ ४ ॥ मुनिसानंदसराहि
 सपरिजन वारहिबारनिहारे । पूजिसप्रे सप्रसंसिकौसिकहिं
 भूपतिसदनसिधारे ॥ ५ ॥ साचतसत्यसनेहविवसनिशि
 नृपहिगनतगएतारे । पठयेबोलिभोरगुरकेसंग रंगभूमिप-
 गुधारे ॥ ६ ॥ नगरलोगसुधिपाइमुदित सबहीसबकाजि
 सारे । मनहुंमवाजलउमगिउदधिकष चलेनदीनदनारे ॥
 ७ ॥ एकिसोरधनुषोरवहुत बिलखातबिलोकनिहारे । ठ

खौनचांपतिन्हतेर्जहसुभटनि कौतुककुधरउषारे ॥ ८ ॥
 एजानेविनुजनकजानियत करिपनभूपहंकारे । नतरुसुधा
 सागरपरिहरि कतकूपखनावतषारे ॥ ९ ॥ सुषमासीलसने
 हसानि मानोरूपविरंचिसँवारे । रोमरोमपरसोमकामसत
 कोटिवारिफेरिडारे ॥ १० ॥ कोउकहैतेजप्रतापपुंजचित ये
 नहिजातभियारे । छुअतसरासनसलभजरेगो येदिनकरवं
 सदियारे ॥ ११ ॥ एककहैकछुहोउसफलभए जीवनजनम-
 हमारै अवलोकेभरिनयनआजुतुलसीकेप्रानहुतेष्यारे ॥ १२
 ॥ ६८ ॥

टी० । उज्यारे कहै सुंदर ॥ १ ॥ धर्म सेतु के रक्षक धीर वीर
 विरदवाले वाकें आजानु वांछ और भारी बलवाले जे श्री राम
 लघन तिन कों निज हित लागि मै मागि आने ॥ २ ॥ ३ ॥
 धनु तोरै सोवरै जान की यह बचन सुनि नृपति लाज जरि-
 जारे लाज रूप ज्वर तें राजनि कों जिन्ह नेजारे हैं ॥ ४ ॥ सपरि
 जन परि वार सहित जनकजो ॥ ५ ॥ सत्य और सनेह के विवस तें
 सोचत हैं भाव नसत्य छोडत बनत न राम सनेहै राजा को ताराग
 न ते रात्रि गई भाव कव विद्यान होयगो ॥ ६ ॥ मानो मघा नक्ष-
 त्र के जल ते नदी नारें उमगि के समुद्र के और चले इहां सुधि
 पावना मघा को जल है उदधि श्रीराम को सरूप है नदी नद ना
 रे पुरवासी है ॥ ७ ॥ कौतुकमे कुधर कहै पर्वतको जिन्ह उखारे
 अर्थात् रावणादि ॥ ८ ॥ हकारे बोलाए इहां सुधा सागर रघुनाथ
 हैं और खारा कूप प्रतिज्ञा है ॥ ९ ॥ परम शोभा शील और स्नेह
 सानि कै मानो इनके रूप ब्रह्मा ने सवारे फिरि रोम रोम परसत
 कोटि चंद्रमा और काम नेवछावरि करि डारे ॥ १० ॥ कोज कहत
 है कि हे भैया तेज और प्रताप के पुंज हैं ताते चितए नहीं जात हैं
 एदिन कर बंस दीपक के छुअत मात्र सरासन रूप फनि गाजरैगो

॥ ११ ॥ गोसाईं जी कहत हैं आजु नयन भरि प्रान ऊंते प्यारे के
अवल्लोके ॥ १२ ॥ ६८ ॥

मू० । जनकविलोकिवारवाररघुवरको । मुनिपदमीसनायआयसुअ
सीसपाइएईवातेकहतगवनकियोघरको ॥ १ ॥

नीदनपरतरातिप्रेमपन एकभांतिसोचतसकोचतविरंचिहरि
हरको । तुम्हतेसुगमसबदेवदेखिवेको अबजसुहंसकियेजोग
वतजुगपरको ॥ २ ॥ ल्यायेसंगकौसिकसुनायेकहिगुनगन
आएदेषिदिनकरकुलदिनकरको । तुलसीतऊसनेहकोसु-
भाउवाउमानोचलदहकोसोपातकरैचितचरको ॥ ३ ॥ ६९ ॥

टी० । एई वाते कहत अर्थात् श्रीरामलक्ष्मण विषयक वाते कहत
॥१॥ राति से नींद नाही परत जाते प्रेम औ प्रतिज्ञा एक भांति है
भाव त्याग योग दूनो नाहीं ताते शोचत है औ ब्रह्मा विष्णु शिवको
सकोच देत है हे देव तुम ते सब सुगम सुनत आए सो अब देषि
बेको है अब कवि की उक्ति है कि श्री जनक महाराज अपने वस
को हंस किए ताके दो ऊपर के यो गवत हैं इहां दोऊ पर प्रेम
औ पन है ॥२॥ कौशिक ऐसे महात्मा अर्थत् अन होनी करनि
हारे ते संग ले आए औ रघुनाथ के गुन गन मारीचादि बध औ
अहल्या को पाषान ते चैतन्य करना कहि सुनाए औ आपो दिन
कर कुल दिन कर को देषि आए भाव जाके देखे ब्रह्मानंदो भूलि
गयो गोसाईं जी कहत हैं ताह पर सनेह को सुभाव मानो बापु
है सो पीपर के पात केसमान चित्त को चल करत है ॥ ३ ॥ ६९ ॥

मू० । रागकेदारा । रंगभूमिभोरेहीजाइकैरामलघनलषिलोगलू
टिहैलोचनलाभअघाइकै ॥ १ ॥ भूपभवनघरघरपुरवाहरइ
हैचरचारहीछाइकै मगनमनोरथभोदनारिनरप्रेमबिबसउ
टैगाइकै ॥ २ ॥ सोचतविधिगतिसमुक्तिपरस्परकहतबचन
बिलषाइकै कुअरकिशोरकठोरसरासनअसमंजसभयोआइ

कै ॥ ३ ॥ सुकृतसंभारिभनाइप्रितरसुरसीमईसपदनाइकै र
 घुवरकरधनुभंगचहतसवअपनोसोहितुचितुलाइकै ॥ ४ ॥ लेत
 फिरतकनसुईसगुनसुभबूक्षतगनकबुलाइकै सुनिअनुकूलमु
 दितमनमानऊधरतधीरजहिधाइकै ॥ ५ ॥ कौशिककथाए-
 कएकनिमोकहतप्रभाउजनाइकै सीयरामसंयोगजानियतर
 च्यौबिरंचिबनाइकै ॥ ६ ॥ एकसराहिसुवाऊमथनवरवाऊ
 उछाहबढाइकै सानुजराजसमाजविराजिहैरामपिनाकुचढा
 इकै ॥ ७ ॥ बडीसभावडोलाऊबडोजसुवडीबडाईपाइकै को
 सोहिहैऔरकोलायकरघुनायकहिबिहाइकै ॥ ८ ॥ गव-
 निहैगंवहिगवाइगरबगृहबृपकुलबलिहिलजाइकै भलीभां-
 तिसाहेबतुलसीकेचलिहैव्याहिवजाइकै ॥ ९ ॥ ७० ॥

टी० । रंग इ० सु० ॥ १ ॥ मनोरथ जनित आनंद मे नारि नर
 मगन है प्रेम के विशेष बस है ताते गाय उठे ॥ २ ॥ शोचत इ०
 सु० ॥ ३ ॥ अपनो सो हितु चितु लाय कै अपने हितसमान चित्त
 लगाय कै ॥ ४ ॥ कनसुई कानाफुसु की अर्थात् सलाह की बातें सु-
 नतफिरत औ ज्योतिषीबोलाय कै सुभसगुनबूक्षतअनुकूलसगुन
 सुनिमुदितहोंतहैंमानोसगुननाहीसुनतहैंधीरजकोंधाइकै
 धरतहैं ॥ ५ ॥ प्रभावजनायकैकौशिककीकथाएकएकनिमो
 कहतभावजो नहीहोनिहारताकेकरनिहारेविश्वामिचजी
 हैंतातेसीतारामजूकोसंयोगबिरंचिनेबनायकैरच्योयह
 जानियतहै ॥ ६ ॥ एकउछाहबढायकैसुवाऊकेमथनिहार
 जोरघुनायकीश्रेष्ठवाऊहैताकोसराहिकैकहतहैंकिपिनाक
 चढायकैअनुजसहितऔरामराजसमाजमेशोभिहैं ॥ ७ ॥
 बडीइ० सु० ॥ ८ ॥ नृपनकेकुलकहैंसमूहलजायकैऔर्गर्व
 बलकोगवायगर्वाहंसेअर्थात्बहानेसेगृहकोगवनिहैं ॥ ९ ॥
 ॥ ७० ॥

म० । रागटोड़ी । भोरफूलवीनवेकोगएफूलवाईहै सीमनिटेपारे
 उपवीतपीतपटकाटिदोनावासकरनिमलोनेभेमवाईहै ॥ १ ॥
 रूपकेअगरभूपकेकुमारसुकुमारगुरकेप्राणअधारसंगसेवका
 ईहै नीचज्योउटहलकरैरुषराषैअनुसरैकौसिकसेकोहीवस
 किदेदुज्जभाईहै ॥ २ ॥ सपिनसहिततेहिअसरविधिसंजो
 गगिरिजाजूपूजिवेकोजानकीजूआइहै निरखेलघनरामजा-
 नेअतुपतिकामसोहिमानोमदनमोहनीमूडनाइहै ॥ ३ ॥
 राघोजुअीजानकीलोचनमिलिवेकोमोदकहिबेकोजोगनमै
 बातैसीवनाइहै स्वामीसीयसखिन्हलघनतुलसीकोतैसोतैसो
 मनभयोजाकीजैसीअैसगईहै ॥ ४ ॥ ७१ ॥

टी० । भोरहीं फूल वीनवे को फूलवारी मे गये हैं शिरन पर
 टोपी हैं और पीत यज्ञो पवीत है और पीत पट काटि मे है इहा देहली
 दिपक न्याय करि के पीत का दूनो के संग करना औ वासहाथनमें
 दोना है औ सवाई सलोने भए है सवाई होवे को यह भाव कि अंग
 आवरणरहित है वा कदापि कोऊ आयअपने रूपसे दवाय न लेय ताते
 सवाई भए वा कुछ मदन महीप का भी रंग आय पड़ा है ताते वा
 बिदेह महाराज की वाटिका की ऊथीलीं फूनी कलीं न ते वाम अं
 ग भूषित है ताते सवाईं सलोने भए है सो जब कलिन ते एतना भ
 ए तव आगे नहीं जानते कि केतना होइंगे वा दोना लेने से एक
 मुद्रा विविच कही ताते सवाई कहे एक तो रूप के गृह हैं भाव रू
 प मात्र के आधार भूत हैं ताह पर भूप के कुमार हैं अर्थात् काह
 साधारन के नहि ताह पर सुकुमार है औ गुरु के प्राण आधार
 है तथापि संग मे सेवकाई करतहै कैसे करत सो लिखत है नीच
 जैसे टहल करै तस करत औ रुष राखे काम करत है कौमिकए
 से क्रोधी को दोऊ भाइ वस किए हैं ॥२॥ श्री लघन लाल श्रीराम
 नू को निरषे जाने कि यह राज कुमार नहीं है वसंत औ काम

हैं ताते मोहि गई मानो देखि न मोहीं काम नेमू डपर मोहनी नाई है ताते माहीं ॥३॥ श्रीराघव जू श्री जानकी जू के नजरि मिलवे को जो आनंद सो कहिवे योग्य नोह है हमने बनाई बातें ऐसी कही है रघुनाथ जी को श्री जानकी जू को सधिन को श्री लखन लाल जू को श्री तुलसी को जाकी जैसी सगाई है ताको तैसो मन होत भयो इहां आनंद से भूलि गोसाई जू अपने को प्रत्यक्ष सम कहे ॥४॥ ॥ ७१ ॥

मू० । पूजिपारवतीभलेभायपायपरिकैसजलसुलोचनसिधिलतन पुलीकृतआवेनवचनमनरक्षौप्रेमभरिकै ॥ १ ॥ अंतरजा मिनिभवभामिनिस्वामिनिसोहो कहीचहौवातमातुअंततौ हौलरिकै मूरतिरूपालसंजुमालदैबोलतभईपूजोमनकामना भावतोवरवरिकै ॥ २ ॥ रामकामतरुपाइवेलिज्यौवोड़ीबना इमागकोषिपोषिफैलिफूलिफरिफरि रहौगीकहौगीतवसांचो कहीअंबासियगहेपांयहैउठायमथेहाथधरिकै ॥ ३ ॥ मुदि- तअसीसमुनिसीसनाइपुनिपुनिविदाभईदेवीसोजननिडरड- रिकै हरषीसहेलीभयोभावतोगावतीगीतगौनीभवनतुलसी केप्रभुकोहियोहरिकै ॥ ४ ॥ ७२ ॥

टी० । पूजि इ० ॥ १ ॥ अंत तो हैं लरिकै कहिवे को यह भाव कि अंतर्जामिनी सो कुछ न कहा चाहिए क्योंकि सब जानतही हैं पर कहिवे को जो चाहत हैं सो लरिकाहों सो छपाला जो मूरति है सो सुंदर माला दै करि के बोलति भई कि मन भावतो वर वरि कै तुम्हारी मन कामना पूजि जाउ श्री रघुनाथ रूपकल्पवृक्ष पाइ कै फैली बेली के समान बनाय करि कै माग कोषि ते तुष्ट पुष्ट है फैलि फूलि फरि कै जबर होगी तब कहो गो कि अंबा ने साची कही यह मुनि जानकी जू चरन गहे तब है कहे भाव यह क्या करती है श्री माथे हाथ धरि कै उठाय लिए ॥ ३ ॥ ४ ॥ ७२ ॥

सू० । रंगभूमिआयेदसरथकेकिसोरहैं प्रेषनसोपेषनचलेहैंपुरनर
 नारिवारेबूढेअंधपंगुकरतनिहोरहैं ॥ १ ॥ नीलपीतनीरज
 कनकमरकतघनदामिनिवरनतनरूपकेनिचोरहैं सहजसलो
 नेरामलघनललितनामजैसेसुनेतैसेईकुअरसिरमोरहैं ॥ २ ॥
 चरनसगोजचारुजंघाजानुऊरूकटिकंधरविसालवाङ्गवडेवर-
 जोरहैंनीकेकैनिषंगकसेंकरकमकलनिलसैवानविसिषासनम
 नोहरकठोरहैं ॥ ३ ॥ काननिकनकफूलउपवीतअनुकूलपि-
 अरेदुकूलविलसतआच्छोरहैं राजिवनयनविधुवदनटेपारे
 सिरनषसिषअंगनिठगौरीठौरठौरहैं ॥ ४ ॥ सभासरवरलो
 ककोकनदकोकंगनप्रमुदितमनदेषिदिनमनिभोरहैं अबुधअ
 सेलैमनभैलेमहिपालभयेककुउलुककुमुदचकोरहैं ॥
 ॥ ५ ॥ भाईसोकहतवातकौसिकहिंसकुचातबोलघनघोरसे
 बोलतथोरथोरहैं सन्मुखसवहिविलोकतसवहिनीकेछपासो
 हेरतहंसितुलसीकीओरहैं ॥ ६ ॥ ७३ ॥

टी० । पुरके नर नारि तमासा सम देषन चले हैं औ वारे
 बूढे अंध पंगु निहोरा करत हैं भाव हम सब कों भी लैचलो
 शंका अंध काहे कों निहोरा करत हैं उत्तर युगल राज किशोर
 शिर मौर के बात सुनि बे हेतु ॥ १ ॥ श्याम कमल औ मरकत
 मणि औ मेघ के वर्ण सम तन औ राम जू को है औ पीत कमल
 औ कनक औ दामिनि के वर्ण सम तन औ लच्छण जू को है औ
 रूप को निचोर है अर्थात् उत्तमांस है औ सहज हीं दोऊ भाई
 सलोने हैं अर्थात् वनावट ते नहीं औ नामौ सुंदर है जैसे सुने
 रहे तैसे ई दोऊ भैया कुअरन के शिर मौर हैं ॥ २ ॥ सुंदर
 चरण कमल औ जंघा औ ठेंहन औ ऊरू औ कटि औ उन्नत
 स्कंध है औवाङ्ग वडे जो रावर हैं शंका बाहन की जो रावरीके
 से जाने उत्तर सुवाङ्ग आदि को बध सुनिबे तें जंघा ऊरू से पुन

बलि शंका नहीं करना क्योंकि जंघा नाम ठोड़, न के नीचे के भाग का है और ठोड़ के ऊपर के भाग को ऊरू नाम है जाको आज कालि लोग जंघा कहत हैं पर गोसाईं जी शास्त्र रीति ते लिखे जंघा तु प्रसूता जानू रूपवती शोवदस्त्रियाम् शक्यत्कीवेपमानरुस्तत्संधिपुंसिवंक्षणः इत्यमरः जंघा प्रसूता द्वे जंघायाः जानु उरुपर्व अष्टौ वत् जीणि जानु नः शक्यत् ऊरू द्वे ऊरोः ॥ भली भांति तरकस कसे हैं और कर कमलनि मे वान धनुष है ते देषि वे में तो मनो हर पर कठोर हैं ॥ ३ ॥ कानन से पुष्पा कार सोने के कुण्डल हैं और अनुकूल यज्ञो पवीत है अर्थात् जस छत्री को चाहिए और पीत रंग को बख है तामे आछे किनारे शोभत है अर्थात् मोती मणि आदि करि के कमल सम नयन और चंद्र सम मुख हैं टोपी मिरन से है नख तें शिष्या पर्यंत अंगन से ठौर ठौर ठगोरी अर्थात् जहां जाइ मन तहई लोभाइ ॥ ४ ॥ सभा जो सोई अछ तडाग और लोग सब जो हैं सोई कमल और चक्र वाक के समूह हैं ते भोर के दिन मणि रघुनाथ के देषि प्रसुदित भए मूढ मन से ले आशावाले जे महिपाल हैं तें कछु उल्लू अर्थात् घुघु आ कछु कुमुद कोई कछु क चकोर भए कोज अस कहत हैं महिपाल जे मूढ तें उलूक और जे नहीं सहने वाले तें कुमुद और जे मन बलै ते चकोर भए ॥ ५ ॥ यद्यपि बोल घन सम गंभीर है पर विस्वामित्र तें सकुवात है ताते भाई तें धीरे धीरे बात कहत हैं सब्बुख सब के हैं और सब के भली भांति देषत हैं और छपा से हसि के तुलसी के और हेरत है ॥ ६ ॥ ७३ ॥

सू० । एईरामलघन जेमनि संग आए हैं चौतनी चोलना काछे सखिसो है आगे पाछे आछे जे तें आछे आछे आछे भाव भाये हैं ॥ १ ॥

सांभरे गीरे सरीर महा बाहु महा बोर कटिलूनीर धरे धनुष मुहा ए हैं देषत कोमल कल अतुल विपुल बल कौसिक कोदंड कलाक

लितसिषाये है ॥ २ ॥ इन्ह हीताडिकामारीगौतमकीतीवता-
रीभारीभारीभूरिभट रनविचलाये हैं रिषिमषरखवारेदसरथ
केदुलाररंगभूमिपशुधारेजनकुबुलाये हैं ॥ ३ ॥ इन्हकेवि-
मलगुनगनतपुलकिततनसतानंदकौसिकनरेसहिंसुनाये है ।
प्रभुपदमनदियेसोसमाजचितकिएऊ लसिऊलसिहियेतुल-
सिऊगाये है ॥ ४ ॥ ७४ ॥

टी० । जे राम लषन सुनि संग आए हैं ते एई हैं हेसपी टोपी
औ कुहता पहिरे हैं औ आगे पाछे शोभत है अर्थात् आगे राम
जी पाछे लक्ष्मण जी सुंदर हूँ ते सुंदर सुंदर हैं औ भला भाव
जो कोई पदार्थ है ताऊ को भाए हैं वा भले यह भैया हैं ताते
हम सब के भाए हैं वा सुंदर हूँ ते जो सुंदर ताऊ ने सुंदर सुं-
दर भैया हैं ताते भाए हैं वा भला भाव है जेहि को अर्थात् विश्वा
मिच जी तिन के भाए भए है ॥ १ ॥ देषत मे सुंदर कोमल हैं
पर बड़े बलवान नहीं तुलत हैं वा बहूत बल है अत एव
अतुल हैं औ विश्वामिच जो ने सुंदर धनुर्विद्या की कला इन को
सिषाए हैं ॥ २ ॥ जनकजू के बोलाए तें रंग भूमि मे पग धारें हैं
इन के विमल गुन गन को पुलकित तन ते सतानंद औ विश्वामिच
जू नरेख को सुनाए हैं ॥ ४ ॥ ७४ ॥

मू० । रागकान्हरा । सौयस्वर्यंवरमाईदोउभाईआएदेषन सुनतच-
लीप्रमदाप्रमुदितमनप्रेसपुलकितनमनऊमदनमंजुलपेषन ॥
॥ १ ॥ निरषिमनोहरताईसुषपाइकहैएकएकसोभूरिभागह
मधन्यआलिएदिनएषन तुलसीसहजसनेहसुरंगसबसोसमा
जचित्तचित्तसारलागीलेषन ॥ २ ॥ ७५ ॥

टी० । प्रमदा स्त्री पेषन कहै देषन ॥ १ ॥ भूरि बहूत पनक हैं
क्षण गोसाईजी कहत हैं सो सब समाज नारिन को अपने सहज
सनेह रूपी सुंदर रंग से अपने चित्त रूपी चित्तसार मे लिषने लगीं

मू० । रागगौरी । रामलघनजवदृष्टिपरेरी अबलोकतसबलोकज-
नकपुरमनोविधिविधिविधिविदेहकरेरी ॥ १ ॥ धनुषयज्ञकम
नीयअवनितलकौतुकहीभएआयषरेरी छविसुरसभामनऊ
मनसिजकेकलितकल्पतरुहूपफरेरी ॥ २ ॥ सकलकामवर-
षतमुखनिरषतकरषतचित्तहितहरषभरेरी तुलसीसवैसरा-
हतभूपहिभलेपैतपासेसुढगररेरी ॥ ३ ॥ ७६ ॥

टी० । री सखी जब ते राम लघन दृष्टि परे तब ते जनक पुर के
लोग देषत है अर्थात् ए कटक देषत है मानो विधाता ने अनेकन
विदेह किए है भाव विदेह महाराज के डाह ते दूहा विदेह
कहिबे ते सब को देहाध्यास रहित जनाए ॥ १ ॥ धनुष यज्ञ के
सुंदर तल भूमि जो है तामे कौतुकही आय के षडे भए है मानो
धनुष यज्ञ की सुंदर भूमि नहीं है छवि युक्त सुरसभा जो सुधर्मा
सो है औ श्रीराम लघन नहीं है काम के शोभित कल्पवृक्ष है औ रा
मलघन का जो रूप है सो रूप नहीं है तेहि कल्पवृक्ष को फल है दूहा
दुइ कल्पवृक्ष जानना ॥ २ ॥ मुख निरषत माच मे सकल कामना को
बरषत है दूहा कल्पवृक्ष ते अधिक जनाए क्यों कि कल्पवृक्ष छाया
के नीचे गए फल दैत है औ ए देखतै माच औ हर्ष भरे जेहि
तन के चित्त तेहि को कर्षत है वा यद्यपि चित्त चोरावत है तथापि
हित मानि हर्ष भरे वा चित्त को तो चोरावत है पर हितते हर्ष
भरत है गोसाईं जी कहत है कि जनक महाराज के सब सराहत
है कि भले दाव के पासे सुंदर परे है भाव जो पन किए ताको
भलो फल पाए ॥ ३ ॥ ७६ ॥

मू० । नेकुसुमुषिचितुलाइचितौरी राजकुअरमूरतिरचिवेकीरुचि
सुचिविरंचिअमुकियो हैकितौरी ॥ १ ॥ नखसिषसुंदरताअव
लोकतकह्यौनपरतसुषहोततितौरी सांवररूपमुधाभरिवेकऊ
नयनकमलकलकलसरितौरी ॥ २ ॥ मेरेजानदून्हिहिल

वेकारनचतुरजनकठयोठाठइतोरी तुलसीप्रभुभंजिहैसंभुधनु
भूरिभागसियमातुपितोरी ॥ ३ ॥ ७७ ॥

टी० । अरी सुमुषि तनकचित लगाव कै देषु ब्रह्मा ने राज-
कुअर की मूगति रचिवे की सुचि रचि ते केतनो अम कियो है
नष ते सिष लों सुंदरताई के अवलोकत जेतना मष होत है तेतना
कहि नहि परत सांवर रूप जो कोई अमृत है ताको भरिवे को
सुंदर नयन कमल रूप कलश को घाली करो इहां और और न
देखना खाली करना है ॥ २ ॥ मेरे जान चतुर जनक ने इन्है बो-
लिवे कारन इतो ठाठ ठयो है तुलसी के प्रभु शंभु धनु तोरि हैं
भूरि भाग जानकी जू के माता औ पितो के हैं ॥ ३ ॥ ७७ ॥

मू० । रागसारंग । जबतेरामलघनचितयेरी रहैएकटकनरनारिज
नकपुरलागतपलककलपवितयेरी ॥ १ ॥ प्रेमविवसमागतम
हैससोदेपतहीरहियेनितएरी कैएसदावसज्जइन्हनयनन्हि
कैएनयनजाज्जितयेरी ॥ २ ॥ कोउसमुझाइकहैकिनभूपहिं
बड़ेभागआएइतयेरी कुलिसकठोरकहांसंकरधनुमृदुमूरति
किसोरकितएरी ॥ ३ ॥ विरचतइन्हहिंविंरिचिभुअनसबसुदर
ताषोजतरितएरी तुलसिदासतेधन्यजनमजनमनक्रमवचजि
न्हकेहितएरी ॥ ४ ॥ ७८ ॥

टी० । जब ते इ० सुगम ॥ ७८ ॥

मू० । सुनुसखिभूपतिभलोइकियोरी जेहिप्रसादअवधेसुकुअरदोउ
नगरलोगअवलोकजियोरी ॥ १ ॥ मानिप्रतीतिकहेमेरेते
कतसंदेहवसकरतहियोरी तौलौहैयहसंभुसरासनऔरघुवर
जौलोनलियोरी ॥ २ ॥ जेहिबिरंचिरचिसीयसंवारीअकरा-
महिअसोरूपदियोरी तुलसिदासतेहिचतुरविधातानिजकर
यहसंयोगसियोरी ॥ ३ ॥ ७९ ॥

टी० । सुन इ० सु० ॥ ७९ ॥

म० । अनुकूलनृपहिंस्रलपानि है नीलकंठकारुण्यसिंधुहरदीनबंधु
 दिनदानि है ॥ १ ॥ जोपहिलेहिपिनाकजनकौगएसौपिजि
 अजानि है बद्धरिचिलोचनलोचनकेफलसबहिंस्रलभकियेआ
 निहै ॥ २ ॥ मुनियतभवभाव तेरामहैसियभावतीभवानिहै
 परिषतप्रीतिप्रतीतिपयजपनुरहेकाजठटुठानिहै ॥ ३ ॥ भये
 बिलोकिविदेहनेहसवालकविनु पहिचानिहैहोतहरेहोने
 पिरबनिदलसुमतिकहतिअनुमानिहै ॥ ४ ॥ देषियतभूपभोर
 केसेउडगनगरतगरीवगलानिहै तेजप्रतापबटतकुअरनकोज
 दपिसकोचीवानिहै ॥ ५ ॥ बयकिसोरवरजोरवाङ्गवलमेरुमेलि
 गुनतानिहै असिरामराजीवबिलोचन संभुसरासनभानिहै
 ॥ ६ ॥ देषिहैव्याह उक्ताह नारिनर सकलसुमंगलषानिहै
 भूरिभागतुलसीतेउजेसुनिहैगाइहैवषानिहै ॥ ७ ॥ ८० ॥

टी० । नृप को शूलपाणि अनु कूल है भाव शूल जो लिये हैं
 तब शूलो को क्यों न कैंदेंगे नील कंठ हैं औ करुणा के समुद्र हैं
 भाव काल कूट नाम विष तें सुरा सुर को जगत देषि करुणा बसता
 विषकों पीए जब उदासीन पर एतना करना है तब ए तो प्रीति
 पाच हैं औहर हैं अर्थात् दुःख हरने का सुभाव है औ दीन बंधु हैं
 भाव हम सब पिनाक के औरतें दीन ह्वै रहे हैं सो क्यों न सहाय
 करैंगे औ दीनन के दानी हैं तो क्यों न दान देहिंगे ॥ १ ॥
 जो शिव जू पहिलही जनक जू को जिअ भोजानि के पिनाक सौपि
 गए हैं जिय जानि कहिवे को यह भाव कि आगे काम आवैगो
 फेर बिलोचन नें श्रीराम रूप लोचन के फल को सबही को सुलभ
 कियो है । श्रीमद्रामायणे विश्वामित्रं प्रति जनक वाक्यं । देवरातइ
 तिख्यातोनिमःषष्ठोमहीपतिःन्यासोयंतस्यभगवन्हस्तेदत्तोमहात्मनः
 ॥ २ मुनियत है कि श्री शिव को श्री रास सोहाते हैं औ भवानी
 जी को जानकी जू सोहाती है प्रीति विश्वास पै जपन परिषत है

ताते कार्य मे विलम्ब ठानि रहे है इहां अपने मे श्री राम जानकी के प्रीति प्रतीति को श्री धनु तोरै मे राजन के पैज को श्री विना धनु टुटे न विवाह करि वे मे जनक के पन को परिषत है ॥ ३ ॥ विनु पहिचाने जेन्है विलोकि के विदेह बस भए तेई ए बालक है होनिहार विरवन के हरे हरे पात होत है अनुमानि के हमार सुंदर मति कहति है इहां अनुमान यह है कि विदेह है के मे पहिचाने नेह बस भए तो होनिहार नोक है ॥ ४ ॥ श्री भार के तारागण सम राजन को देषियत है सारे ग्लानि के गरीब गले जात है श्री तेज प्रताप कुञ्जरन को बटत है यद्यपि संकोची बानि है अर्थात् कुछ अहंकार युक्त यद्यपि नहीं बोलत है ॥ ५ ॥ भानि है तोरि है ॥ ६ ॥ सकल सुमंगल के धानि है ताते नारि नर व्याह उछाह देषि है ॥ ७ ॥ ८० ॥

म० । राग केदारा । रामहिनीकैकैनिरषिसुनयनी । मनसङ्गअ-
गमसमुभियहअवसरुक्त सकुचतपिकवयनी ॥ १ ॥ बड़े भा
गमखभूमिप्रगटभई सीयसुमंगलअयनी । जाकारनलोचन-
गोचरभई मूरतिसवसुषदयनी ॥ २ ॥ कुलगुरतियके वचन-
मधुरसुनिजनकजुवतिमतिपयनी । तुलसिथिलदेहसुधिवु-
धिकरि सहजसनेहविषयनी ॥ ३ ॥ ८१ ॥

टी० । श्री मतानन्द की पत्नी सुनैना जू से कहति है कि श्री राम को नीके निरगुह हे पिकवैनी मनो ते अगम अर्थात् श्री राम है अस समुक्ति कै फिरकत सकुचति है ॥ १ ॥ सीय सुमंगल को गृह-बड़े भाग्य तें यज्ञ भूमि मे प्रगट होतो भई जा कारण ते सब सुख देनिहारी मूरति नैनन की विषै भई श्री मद्रामायणे विश्वा-
मित्रं प्रति जनक वाक्यं अथ मे क्षपतः क्षेचं लांगला दुल्यिता ततः
क्षेचं शोधयता लब्धा नाम्नासीते तिविश्रुता अथेति वृत्तान्तरा रम्भे
क्षेचं यागभूमिस समक्षपतः मयि कर्षति अग्नि चयनार्थ मितिशेषः

ऋषभेण कर्षती त्यादि शास्त्रात् लाङ्गला दुत्यिता आविर्भूतायज्ञ चैवं
 शोधयता सीतायाः लाङ्गल पङ्कतेर्मया लब्धा ततो नाम्नासीतेति प्रसिद्धा
 पाङ्के च अथलोकेश्वरी लक्ष्मी र्जनकस्य पुरेस्वतः शुभ क्षेत्रे हलोत्खाते
 तारेचोत्तर फाल्गुने अयोनिजा पद्मकरावाला केशशि सन्निभा सीता
 मुखे समुत्पन्नावाल भावेन सुंदरी सीतामुखोद्भवात् सीताइत्यस्या ना
 मचाकरोत् भविष्मत् ॥ सर्वर्तुनिकरश्रेष्ठेऋतौ तु कुसुमाकरे मासिपु
 ण्यतमे विप्रमाधवे माधवप्रिये नवम्यां शुक्लपक्षे च वासरे मंगले शुभे सा
 प्य ऋक्षे च मध्याह्ने जानकीजनकालये आविर्भूता स्वयं देवी योगेषु गति
 रूत्तमा ॥ २ ॥ श्री जनक जू की रानी जो सुनैना जू मति की चो-
 षी है सो कुल गुरु तिय के मधुर वचन सुनि के सहज सनेह
 विषैनी बुद्धि करि जो देह के और ते सिधिल भई रही सो तेहि
 की सुधि करत भईं भाव श्री राम के ध्यान मे जो लगी रहीं सो
 प्रत्यक्ष देषन लगीं ॥ ३ ॥ ८१ ॥

म० । मिलोवर सुंदर सुंदरि सीतहि लायक सावरो सुभग सो भाङ्ग
 को परमसिंगार मनह्रको मनमोहै उपमाको आनको है सुष-
 मासागरसंग्रनुजराजकुमार ॥ १ ॥ ललितसकल अगतनु
 धरैकी अनंगनैननिको फलकैधोसियको सुदतसार सरदसुधा
 सदनछविहिनिदैवदन अरुन आयतनवनलिनलोचनचार ॥
 ॥ २ ॥ जनकमनकी रीति जानि विरहित प्रीति औसी औमरति
 देषेरछौपहिलोविचार तुलसीन्दपहि औसो कहिनबुभावेको
 ऊपन औकुअरदोज प्रेमकी तुलाधौतार ॥ ३ ॥ ८२ ॥

टी० । सुंदरी सीतहि लायक सो भाङ्ग को परम सिंगार सुभग
 सावरो वर मिलो उपमा को उपमा देइवे को ॥ १ ॥ की अनंग
 कैधो कामदेव सार फल सुधा सदन चन्द्रमा आयत विखित न बन
 लिन नवीन कमल चार सुंदर ॥ २ ॥ श्री जनक के मन की रीति
 जान की प्रीति ते विशेष रहित है काहे ते कि ऐसीउ मरति देखे

पर पहिलो ही विचार रघ्यो भाव नेमिए रहे प्रेमी न भए महाराज को
ऐसों कहि के कोऊ नही बुझावत है कि प्रतिज्ञा औ रघुनाथकुअर इन
दोउन को प्रेम की तुला पर धरि कैतौलो भाव कौनगरू है ॥ ३ ॥ ८२ ॥

मू० । देषिदे२दो जराजसुअन गौरस्यामसलोने लोने लोयननिजिन्ह
कौसोभातेसोहैसकलभुअन ॥ १ ॥ इन्हहीताडकामारीमग
मुनितियतारौरिषिमखराख्यौरनदले हैदुअन तुलसीप्रभुकोअ
वजनकनगरनभसुजसविमलविधुचहतउअन ॥ २ ॥ ८३ ॥

टी० । इहां देषि देषि देषु देषु के अर्थ से है लोने लोयननि
सुंदर नेत्र ॥ १ ॥ दुअन दुष्ट जनक पुर रूप आकाश से प्रभु को
सुजस रूप विमल चंद्र अब उगा चाहत है ॥ २ ॥ ८३ ॥

मू० । रागटोड़ी । राजारंगभूमिआजुबैठे जाइजाइकै आपनेआपने
थलआपनेआपनेसाज आपनीआपनीवरवानिकवनाइकै ॥
१ ॥ कौसिकसहितरामलषन ललितनामलरिकाललामलोने
पठएबुलाइकै दरसलालसावसलोगचलेभायभले विकसतमुष
निकसतधाइधाइकै ॥ २ ॥ सानुजसानंदहिएआगेहैजनक
लियेरचनाकचिरसवसादरदेषाइकै दियेदिव्यआसनसुपास
सावकासअतिआकेआकेबौकेबौकेबिछौनाबिछाइकै ॥ ३ ॥ भूप
तिकिसोरदुङ्गओरबीचमुनिराउदेषिवेकोदाउदेषोदेषिवोबि
हाइकै उदयसथलसोहैसुंदरकुअरजोहैमानौभानुभोरभूरि
किरनिकुपाइकै ॥ ४ ॥ कौतुककोलाहलनिसानगानपुरनभ
वरषतसुमनसुविमानरहेछाइकै हितअनहितरतविरतबिलो
किशालप्रेमभोदमगनजनमफलपाइकै ॥ ५ ॥ राजाकीरजाइ
पाइसचिवसहेलौधाईसतानंदल्याएसियसिविकाचढाइकै रू
पदीपिकानिहारिस्टगष्टगीनरनारिविथकेबिलोचननिमेषेवि
सराइकै ॥ ६ ॥ हानिलाङ्गअनषउकाङ्गवाङ्गवलकहिबंदीबो
लेविरदअकसेउपजाइकै दोपदीपकेमहीपआयेसुनिपैजपनु

कीजैपुरुषारथकोऔसरभोआइकै ॥ ७ ॥ आनाकानीकठ
हँसीमुहाचाहीहोनलागीदेपिदसाकहतविदेहविलषाडकै ।
घरनिसिधारिऔसुधारिएआगिलैकाजपूजिपूजिधनुकीजैवि-
जयबजाइकै ॥ ८ ॥ जनकवचनछुएविरवालजारुकैसेधीररहे
सकलसकुचिसिरनाइकै तुलसीलघनमाषेरोषेराषेरामरुष
भाषेष्टदुषरुषसुभायनरिसाइकै ॥ ९ ॥ ८४ ॥

टी० । राजा इ० आपने आपने थल कहैं अपने अपने दरजाके
माफिक बानिक वेष ॥ १ ॥ ललाम सुंदर विकसत मुख प्रसन्न मुख
॥ २ ॥ सानुज कुश केतु सहित बीछे बीछे चुने चुने ॥ ३ ॥ देषिवो
बिहाय कै और और देषिवो छोड़ि कै मानो दिव्य आसन नही
हैं उदयाचल है ता पर सुंदर कुँअर जो हैं सो मानो भोर के
सूर्य हैं सो अपना सब किरिन छपाय कै सोभत हैं इहां किरिन
प्रताप है ॥ ४ ॥ रत अनुरागी बिरत विरामी ॥ ५ ॥ श्री जानकी
जु को रूप रूपी दीपक को देषि कै ष्टग ष्टगी सदृश नर नारि
ए कटक ह्वै थकित भए ॥ ६ ॥ न टूटिवे ते बल प्रताप वीरता की
हानि औ टूटिवे ते त्रिभुअन जै समेत बैदेही को लाभ जेहि पिना-
क विनु नाक किए नृप अनख धनु तोरै सो वरै जानकी उछाह
राज समाज आज जेहि तोरा बाहुं बल ए सब कहि कै रावन
बानासुरो भागि गए यह कहना अकस उपजावना है पै जपन अति
प्रतिज्ञा ॥ ७ ॥ आना कानी इसाग से अर्थात् पिनाक के ओर
बतावन लगे कठहँसी बेहँसी आएहँ सब को कहत हैं मुहां चाही
पहिले तुम उठो पहिले तुम उठो अस कहन लगे ॥ ८ ॥ छुए से
जैसे लजारू को विरवा सकुचै तैसे श्री जनक के वचन से सकल
वीर सिर नाथ के सकुचि रहे लक्ष्मिन ज अमरखे औ रोख युक्त
भए औरघुनाथ को रूष राखे स्वभाविकै रिसाय कै नही कठोर औ
कोमल वचन भाषे ॥ ९ ॥ ८४ ॥

मू० । भूपतिविदेहकहीनीकीअैजोभईहै बड़ेहीसमाजआजुराज-
निकीलाजपतिहांकआंकएकहीपिनाकछीनिलईहै ॥ १ ॥ मे
रोअनुचितनकहततरिकाईवसपनपरमितिऔरभांतिसुनिग
ईहैनतरुप्रमुप्रतापउतरुचढाएचांपढेतोपैदेपाइबलफलपाप
मईहै ॥ २ ॥ भूमिकेहरैआउषरईआभूमिधरनिकेविधिवि
रचैप्रभाउजाकोजगजईहै विहंमिहियहरपिहटकेलषनरा
मसोहतसकोचसीलनेहनारिनईहै ॥ ३ ॥ सहमौसभासक
लजनकभएविकलरामलषिकौंसिकअसीसअज्ञादईहै तुलसी
सुभायगुरुपायलागिरघुराजवटपिराजकीरजाइभाथेमानिलई
है ॥ ४ ॥ ८५ ॥

टी० । लल्लिमन जी की उक्ति है भूपति विदेह ने जो भई है सो
कही ताते ठीकै है आंक एक ही कहै निश्चय करि हांकि कहै ल-
लकारि कै ॥ १ ॥ प्रतिज्ञा की मर्जादा और भांति ते सुनि गई है अ-
र्थात् जो तोरे सो बरै कदापि यह नहीं होता तो भूमिके हरैआ औ
भूमि धरन के उषरै आ को जीत निहार जेहि को प्रभाव जगत
में विधि विरचे हैं तेहि उतरे चांप को प्रभु के प्रताप ते चढाइ कै
अपने बल को देखाय देते पर याको फल पाप मई है भाव बड़े के
रहते छोटे का प्रथम विवाह होना अनुचित है अर्थात् छोटा बड़ा
दोज देव पितर के काम लायक नहीं रहत तथाच स्मृतिः दाराम्नि
हाचसंयोगं कुरुतेयोग्रजेस्थिते । परिवेतासविज्ञेयः परिवित्तिस्तुपूर्व-
जः ॥ यह कहनो अनुचित रहा पर मेरो कहनो अनुचित नहीं है
क्योंकि लरिकाई वस कहत हौं ॥ २ ॥ हृदय में हरपि के मुसुकाय
के श्री रामः ज लषन को बरजे तब संकोच शील औ नेह ते श्री
लषन लाल की नारि कहै मर्दन नई भई सोही ३ ४ ॥ ८५ ॥

म० । सोचतजनकपोचपैजपरिमईहै । जोरि करकमलनिहोरिक-
है कौंसिकसोआयसुभोरामकोसोमेरेदुचितईहै ॥ १ ॥ वा

नजातुधानपतिभपदीपसातह्रके लोकपविलोकर्तापिनाकभूमि
 लई है । जोतिलिंगकथासुनीजाको अंतपायेबिनु आयेविधि-
 हरिहारिसोईहालभई है ॥ २ ॥ आपुहीविचारिएनिहारि
 येसभाकीगति बेदमरजादमानौहेतुवादहई है । इन्हकेजितौ
 हेमनसोभाअधिकानी तनमुषनकीसुखमासुषदसरसई है ॥
 इरावरोभरोसोबलुकैहैकोऊकियेकुलकैधौकुलकेप्रभावकैधौ
 लरिकइ है । कन्याकलकीरतिविजयविश्वकीबटोरिकैधौकर
 तारइन्हहीकोनिरमई है ॥ ४ ॥ पनकोनमोहनविसेषचिंता
 सीताह्रकीलुनिहैपैसोईसोईजोईजेहिवई है । रहैरघुनाथको
 निकाईनीकीनीकीनाथहाथसोतिहारेकरतूतिजाकीनई है पू
 कहिसाधुसाधुगाधिसुअनसराहेराउमहाराजजानिजियठी-
 कभलीदई है । हरषेलखनहरखानेबिलघानेलोगतुलसीमुदि
 तजाकोराजाराजमजई है ॥ ६ ॥ ८६ ॥

टी० । सोचत इ० । जनकजू सोचत है कि कठिन पंच परि गई
 है भाव यह प्रतिज्ञा जो किया सो भला नहीं किया जनक मच्चा-
 राज हस्त कमल जोरि कै निहोरा करि विश्वामित्र जू सो कहत
 है कि आपने जो रघुनाथ को आज्ञा दिया तामे हमको दुचिताई
 है अब दुचिताई को हेतु कहत है ॥ १ ॥ बाणा सुर रावण औ
 सातो दीप के राजा औ लोक पालन के देषत ही पिनाक ने भूमि
 को लई है अर्थात् भूमि को पकडि लई है जोति लिंग को अंत
 नही है यह कथा सुनि के अंत लेइ वे को ब्रह्माजू ऊपर को गये
 ओ विष्णु जू पाताल को गये पर तेहि लिंग को अंत न पाये ब्रह्मा
 विष्णु हारि फिरि आए सोई हाल इहां भई है भाव पिनाक केतना
 भारी है याको अंत कोऊ नहीं पावत है ब्रह्मा विष्णु हारि गए
 लिंग का अंतन मिला यह काशीखंड में लिखा है ॥ २ ॥ हमारही
 कहने पर नहीं आप भी विचारिए और सभा की दसा देखिए कि

कि कैसी है रही है जैसे वेद के मर्जाद कोनास्तिक बाद नासत है भा
वतसपिनाक ने ओहत करि दिआ है अब श्रीराम का वर्णन करत
हैं कि श्रीराम के मन जितौ हैं है औ तन मे सोभा अधिकाय रही
है औ मुख की सुषद सोभा सरसाय रही है इहा इन्ह के औ
मुख नए जो बड वचन शब्द हैं सो आदर मे हैं वा दोऊ भाइन मे
लगाय लेना । ३ । सो जितौ हैं मन आदि आप के भरोसा के बल
सों है कैधौ कोऊ देवता है छलते मनुष्य बने है कैधौ अपने कुल
के प्रभाव से अर्थात् सूर्य वंशी हैं तैहिते ते ज युक्त हैं कैधो लरिका
इ अर्थात् कुछ आगे पीछे को विचार नहीं है कन्या मुंदर कीर्ति
औ विश्वकी विजय बटोरिवेकों कैधौ विधाता ने इनही को निर्मान
कियो है ॥ ४ ॥ हे नाथ हमकों अपने प्रतिज्ञा करने की मोह नहीं
है और कोको क है सीता हू की विशेष चिंता नहीं है कदापि
विश्वामित्र ज प्रहैं कि क्यों नहीं है तापर कहत हैं सोई सोईकाटि
हैं जोई जोई जैहि ने बोया है भाव जीव कर्म बस दुष सुष भागी
है पर नीकी नीकी जो रघुनाथ की निकाई है सो वनी रहै यह बात
की विशेष चिन्ता है सो आप के हाथ है आप कैसे हैं कि करनी
नई है भाव आजुलो ब्रह्मा छोडि सृष्टि कोऊ न करि सके सो
आप किए तो यह कौन बडी बात है वा आप अन होनी करनि
हार हैं ॥ ५ ॥ विश्वामित्र जू ने आप की बात साधु है साधु है
अस कहि के राजा कों सराहे फिर कहे कि हे महाराज आप के
जिय को जानी आप ने भला ठहराय राखा है भाव रघुनाथ
की निकाईए मे सब की भलाई है यह श्री जनक श्री विश्वामि-
त्र को सम्बाद सुनि लषन हर्ष औ बिलखाने भए जो लोग रहे
सो हर्षाने गोसाई जी कहत हैं कि यह आश्चर्य नहीं है जाको
जई राजा राम हैं सोई मुदित होत हैं भाव और के रोअतै रोअत
जन्म बीतत है ॥ ६ ॥ ८६ ॥

मू० । सुजनसराहीजोजनकवातकहीहै रामहीसुहानीजानिसु-
 निमनमानीसुनिनोचमहीपावलीदहनविनुदहीहै ॥ १ ॥ क
 हैगाधिनंदनमुदितरधुनंदनसोन्दपगतिअगहगिरानजातिग-
 हीहै देषेसुनेभूपतिअनेकभूठेभूठेनामसाचेतिरज्जतिनाथसा
 षीदेतमहीहै ॥ २ ॥ रागउविरागभोगजोग २ वतमनुजोगी
 जागवलिकप्रसादसिद्धिलहीहै तातेनतरनितेनसीरेसुधाक
 रहूतेसहजसमाधिनिरुपाधिनिरवहीहै ॥ ३ ॥ अैसेउअगा
 धबोधरावरेसनेहवसविकलविलोकिथतदुचितईसहीहैकाम
 धेनुकपाङ्गलसानीतुलसीसउरपनसिसुहेरिमरजादावांधीर-
 हीहै ॥ ४ ॥ ८७ ॥

टी० । जो श्री जनक जू की कही बात है ताको सुजनो ने स-
 राही श्री मुनि की मन मानी भई बात है अस जानि श्री राम को
 सोहात भई पर सो बात सुनि के नीच जो मडिपावली है सो विनु
 अग्नि के जरिजात भई ॥ १ ॥ गाधिनंदन रधुनंदन सो हर्षित कहत
 हैं कि मिथिलेस की गति गहिबे जोग नही है ताते बातहू नही
 गही जात है नाम साच के भूठे भूठे अनेक भूपति देखे पर सांचे
 भूपति तिरज्जति नाथही है या बात की साक्षी पृथ्वी देति है भाव
 कन्या उपजाय कै ॥ २ ॥ प्रीति औ वैराग्य भोग औ जोग सब मह
 राज के मन को जोगवत हैं भाव जेहि के ओर तनिक दृष्टि करत
 सो सौध हाजिर हू जात है जोगो जागवलिक के प्रसाद ते यह
 सिद्धता को लही है ताते सूर्य ते तप्त नही होत है औ और को
 कोकहै चन्द्र मोते सीतल नही होत है उपाधि रहित स्वाभाविक
 समाधि को निर्वाह करत है वायु आदि बस करि जो समाधि सो
 उपाधि सहित ॥ ३ ॥ हे श्री राम जू आप के सनेह के बस ऐसेज
 अमाध बोध वाले जनक महाराज को विकल विलोकिअत है ताते
 अस जानि परत है कि इन के मन मे निअै दुचितई है यह सुनि

के प्रतिज्ञा रूपी बहुरा को देषि के कृपा रूपी काम धेनु रघुनाथ के उर मे झलसानी पर विश्वामित्र जू कौ आज्ञा रूप सर्जादा मे बांधी है ताते ठहर गई ॥ ४ ॥ ८७ ॥

म० । ऋषिराजराजाआजुजनकसमानको आपएहिभांतिप्रीतिसहितसराहियतरागीऔविरागीबड़भागीऐसोआनको ॥ १ ॥ भूमिभोगकरतअनुभवतजोगसुषमनिमनअगमअलपगतितानको गुरहरपदनेहगेहवसिभोविदेहअगुनसगुनप्रभुभजनसयानको ॥ २ ॥ कहनिरहनिएकविरतिविवेकनीतिबेदबुधसंमतपथीननिरवानको विनुगुनकीकठिनगांठजड़चेतनकीछोरीअनायाससाधुसोधकअपानको ॥ ३ ॥ सुनिरघुवीरको वचनरचनाकीरीतिभएभिथिलेसमानोदीपकविहानको मिथ्यौमहामोहजीकोछूटोपोचसोचसीकोजान्यो अवतारभयोपुरुषपुरानको ॥ ४ ॥ सभानृपगुरनरनारिपुरनभसुरसवचितवतमुखकरननिधानको एकहिएककहतप्रगट एकप्रेमवसतुलसीसतोएिसरासईशानको ॥ ५ ॥ ८८ ॥

टी० । श्री रघुनाथ की उक्ति ऋषि ६० हे ऋषिराज आजु श्री जनक समान राजा को है काहे ते कि आप एहि भांति ते प्रीति सहित सराहियत है तो रागी औ विरागिन के मध्य मे बड़ भागी ऐसो आन को है ॥ १ ॥ भूमि भोग करत अर्थात् राज भोग तो करत है पर वाही मे जोग सुष को अनुभवत है इन की गति मन न सील जे मुनि तिनहूँ के अगम है और को जानै गुरु औ हर के पद मे नेह है जाको घर मे रहि के विदेह है रहे है निर्गुन औ सगुन रूप प्रभु के भजन मे अस आन कौन सयान है ॥ २ ॥ कहनि रहनि सब एक भांति की है बैराग्य ज्ञान औ राजनीति सब बेद बुध संमत है इन को औ मोक्ष के पथिक है अर्थात् स्वर्गादि के नही जो विनु गुन की कठिन गांठ जड़ चेतन की है

ताको वे परिश्रम छोड़ि डारी है औ अपने स्वरूप को साधु कहैं
भली भाँति सोध कहैं ॥ ३ ॥ दीपक बिहान को कहिवे को यह
भाव कि अपनी बड़ाई सुनि सकुचे ॥ ४ ॥ नृप जनक महाराज
गुरू विश्वामित्र जू औ पुर के नर नारि ॥ ५ ॥ ८८ ॥

मू० । राग मारू । सुनोभैआभूपसकलदैकानवज्वरेषगज
दसनजनकपनवेदविदितजगजान ॥ १ ॥ घोरकठोरपुरारि
सरासननामप्रसिद्धिपिनाकु जोदसकंठदियोवावोजेहिहरगि
रिकियोमनाकु ॥ २ ॥ भूमिभालम्बाजतनचलतसोंज्योविरंचि
कोआंकुधनुतोरैसोद्वरैजानकीराउहोंदकीरांकु ॥ ३ ॥
सुनिआमर्षिउठेअवनोपतिलगेवचन जनुतोरटरैनचांपकरो
अपनोसोमहामहाबलवीर ॥ ४ ॥ नमितसीससोचहिंसलज्ज
सवश्रीहतभएसरीर बोलेजनकविलोकिसीयतनदुषितसरोष
अधीर ॥ ५ ॥ सप्तदीपनवखंडभूमिकेभूपतिष्टंदजुरे । बडो
लाभुकन्याकीरतिकोजहंतहमहिपसुरे ॥ ६ ॥ उग्योनधनु
जनुवीरविगतमहिकींधौकज्जसुभटदुरे । रोषेलघनविकटभृ
कुटीकरिभुजअरुअधरफुरें ॥ ७ ॥ सुनज्जभानुकुलकमलभा
नुजोअवअनुसासनपोवी । कोवापुरोपिनाकुमलिगुनमंदर
मेरुनवावों ॥ ८ ॥ देखोनिजकींकरकोकौतुकक्योंकोदंडच
ठावों ॥ लैधावोंभंजोमनालज्यौतौप्रभुअनुगकहावों ॥ ९ ॥
हरषेपुरनरनारिसचिवनूपकुअरकहेवरवैन । सृदुसमुकाद
रामवरज्योप्रियबंधुनयनदैसेन ॥ १० ॥ कौसिककह्यौउठज्ज
रघुनंदनजगवंदनवलज्जैन । तुलसिदासप्रभुचलेमृगपतिज्यौं
निजभगतनिसुषदैन ॥ ११ ॥ ८९ ॥

टी० बंदी की उक्ति सुनो ६० । वज्र पर की रेखा जैसे नही मिटति
है औ हाथी के दात जैसे फेर भीतर नही जात तस जनक महाराज
की प्रतिज्ञा है वेद मे विदित है औ सब जग जानत है कि पुरारि

को सरासन अति कठोर है जाको पिनाकअस नाम प्रसिद्ध है जो
 पिनाक को रावन वा बं दियो अर्थात् सम्मुख न भयो जेहि रावन
 ने कैलास को लघु कियो अर्थात् टेला सम उठाय लियो ॥ १ ॥ २ ॥
 भाल पर भ्राजत जो विरंचि को अंक है सो जैसे नही चनत तैसे
 भूमि ते नही चलत है तेहि धनु को जो तोरै सो राजकुमारो को
 वरै चाहै राजा होय चाहै रंक होय ॥ ३ ॥ महा महा बल बोर
 जो रहे सो अपनो सो किए अर्थात् जेतना पराक्रम रहा तेंतना
 किए पर चांप न टरेउ महा महा बल बोरन को चांप अपनो सो
 कियो अर्थात् जड ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ जह तह महिप मुरे कहैं जहां
 ते उठे रहते हैं फेरि आइ बैठे ॥ ६ ॥ फुरे फुरके ॥ ७ ॥ ८ ॥
 क्यों कहैं कैसे मृनाल कमल दण्ड अनंग सेवक ॥ ९ ॥ १० ॥ अ-
 यन गृह मृगपति सिंह ॥ ११ ॥ ८९ ॥

सू० । जबहिसवमृपतिनिरासभए गुरुपदकमलबंदिरघुपतितवचांप
 समीपगये ॥ १ ॥ ख्यामतामरसदामवरनवपुत्रभुजनयनवि
 साल । पीतवसनकाटिकलितकंठसुंदरसिंधुरमनिमाल ॥ २ ॥
 कलकुंडलपल्लवप्रसूनसिरचारु चौतनीलालकोटि मदनकृषि
 सदनवदनविधुतिलकमनोहरभाल ॥ ३ ॥ रूपअनूपविलो-
 कतसादरपुरजनराजसमाजु लषनकक्षौधिरहोहिंधरनिधर
 धरनिधरनिधरआजु ॥ ४ ॥ कमठकोलदिगदंतिसकलअंग
 सजगकरज्जप्रभुकाजु । चहतचपरिसिवचांपचढावनदसगथको
 जुवराजु ॥ ५ ॥ गहिकरतलमुनिपुलकसहितकौतुकहिउठा
 इलियो । मृपगनमघनिसमेतनमितकरिसजिसुषसबहिदियो
 ॥ ६ ॥ आकरष्यौसियमनसमेतहरिहरष्यौजनकहियो ।
 भंज्यं भृगुपतिगर्वसहिततिड्डलोकविमोहकियो ॥ ७ ॥
 भयोकठिनकोदंडकोलाहलप्रलपयोदसमानचौकेशिवविरंचि
 दिसिनायकरहेमूटिकरकान ॥ ८ ॥ सावधानहैचढेविमान

नचलेषजादुनिसान । उमगिचल्यौआनंदनगरनभजयधुनिमं
गल्लगान ॥ ६ ॥ विप्रवचनसुनिमषीसुआसिनिचलीजानकि
हिल्याइ । कुअरनिरषिजयमालमेलिउरकुवरिरहीसकुचाइ
॥ १० ॥ वरषहिंसुमनअसीसहिंसुगमुनिप्रेमनहृदयसमाइ
। सीयरामकीसुंदरतापरतुलसिदासवलिजाइ ॥ ११ ॥ ६०

टी० । जबहिंइ ० ॥ १ ॥ तामरस कमल दाम समूह कटि कलित
कटि मे धारन किए सिंधुर मनि गज मुक्ता ॥ २ ॥ कल सुंदर चौतनी
टोपो कोटि मदन छवि सदन कोटि काम के छवि के गृह ॥ ३ ॥
धरनि धर शेष धरनी पृथ्वी धरनि धर पर्वत ॥ ४ ॥ कच्छप शूकर
भगवान दिग्गज सकल अंग तेस जग होय के प्रभु के काज करहु
भाव कोई अंग तें ढीला हो जे तो नस ल्हारि सको गे चपरि
उत्साह करि ॥ ५ ॥ गहिंइ ० आकर्षण ० यह दूनो तुकन को
भाव नाटक के अनुमार है । उत्क्षिप्तं सहकौशिकस्यपुलकैः सार्द्धमुषर्णा
मितंभूपानांजनकस्यसंशयधियासाकंसमास्तालितम्बैदेहीमनसासमंच
सहसाकृष्टंततोभार्गवप्रौढाहंक्रतिदुर्मदेनसहितंतद्गमनमैशंधनुःअस्यार्थः
अथधनुर्भगेनानारसानुभावात् चिचरसंदर्शयितुंपद्यमवतारयति उत्क्षि
प्तमितिकौशिकेवत्सलरसोजातःअचर्षःसंचारीहर्षात्पुलकाः सात्विक
दृतिज्ञानमभूपेभयानकरसःअचदैव्यंसंचारीदैव्यादेवमुखनमनंअचभौ
षण्यचिघातचप्रभावेनैवरामेभीषणत्वंजनकेकरुणारसोजातः अचग्लानिः
संचारीसाचाधेर्जाताआध्यनुभावःसंशयदृतिज्ञानंबैदेह्यामधुररसो
जातः मनआकर्षणमेवाचानुभावः रामेवीररसःअचखर्द्वीहोपनंसापरसु
रामागतोतिज्ञानंअचसर्वरसानामुद्दीपनविभावोरामएव ॥ ६ ॥ ७ ॥

कोलाहल महाशब्द पयोद मेव दिसि नायक दिक्पाल ॥ ८ ॥ नि-
सान नगारा ॥ ९ ॥ विप्र सतानंद ॥ १० ॥ ११ ॥ ६० ॥
मू० । राग मलार । जबदोउदसरथकुअरबिलोके । जनकनगरनर
नारिमुदितमननिरषिनयनपलरोके । बयकिसोरघनतडित

वरनतननषसिषअंगलुभारे । देचितुकैहितुलै सबछविवितु
विधिनिजहाथसवारे ॥ २ ॥ संकटनृपहि सोच अति सीतहि भूप
सकुचिसिरनाए । उठे राम रघुकुलकलके हरि गुरु अनु सासन
पाए ॥ ३ ॥ कौतुकही को दंड खंडि प्रभु जय अरु जानहि पाई ।

तुलसिदासकी रतिरघुपतिकी मुनिन्हतिहपुरगाई ॥ ४ ॥ ६१ ॥

टी० । जब ६० । जब दोऊ चक्रवर्ती कुमार कों देषे तब देषि करि
जनक पुर के नर नारि अपने निमेष कों रोके औ मुदित मन भए
॥ १ ॥ ते दोऊ राजकुमार कैसे है कि किशोर अवस्था औ भेष
औ तडिता सम तन को वरण है औ नप ते सिष लों सब अंग लो
भाव निहारे है कै हितु कहै प्रीति करि सब जगतके छवि रूप धन
लैकै चित्त दै कै ब्रह्मा ने अपने हाथ ते संवारे है जिनको २ दे-
षि कै औ जनक महा राज कों लोस भयो अर्थात् काहे को अस-
प्रख किआ औ औ जानकी जी को अति सोच भयो औ राजा सब
मकुचाय के सिर नवाये भाव ए दोऊ भाई बडे तें जखी देषि परत
हैं कदापि इन से धनु उठा तो हम लोगों के मुह से मसि लगी
तब गुरु अनु सासन पाए तें सुंदर जो रघु कुल है तिन मे अष्ट
जो श्रीराम सो उठे ॥ ३ ॥ ४ ॥ ६१ ॥

मू० । राग टोडी । मुनिपदरे नुरघुनाथमाधेधरी है रामरुषनिरपि
लषनकीरजाद्रुपाद्रुधराधरधरनि सुभावधानकरी है ॥ १ ॥
सुमिगिनेसगुरगौरिहरभूमि सुरसोचतसकोचतसकोचीवा
नखरी है । दीनबंधुकुपासिंधुसाहसिकसीलसिंधुसभाकोसको
चकुलह्मकीलाजपरी है ॥ २ ॥ पेषिपुरुषारथपरखिपनप्रेमनेस
सीयहीयकीविशेषिबड़ीखरभरी है दाहिनोदियोपिनाकुसह
मिभयोमनाकुमहाव्यालविकलविलोकिजनुजरी है ॥ ३ ॥ सुर
हरषतबरषतफूलवारवारसिद्धमुनिकहतसगुनशुभधरी है । रा
मवाङ्गवितपविसालबोडी देखियतजनकमनोरथकलपवेलिफ-

ली है ॥ ४ ॥ लख्योनचढावतनतानतनतोरतङ्गघोरधुनिसुन
मिवकीसमाधिठरी है । प्रभुकेचरितचारुतुलसीसुनतमुखएक
हीसुलाभमवर्हाकीहानिहरी है ॥ ५ ॥ ६२ ॥

टो० । विस्वामित्र जू के चरण की धूरी रघुनाथ ने साथे पर धरी
है रघुनाथ की रुष देषि कै श्री लक्ष्मिन जू आज्ञा दिए ॥
दिसिकुंजरङ्गकमठअहिकोला । धरङ्गधरनिधरिधीरनडोला ॥ सो
आज्ञा पाय कै धराधर जो कच्छपादि सो भूमि को धिर करी है
भाव लघुतरनी सीडगम गाय उलटि न जाय ॥ १ ॥ अब जानकीनू
की घर भरी कहत है कि गणेश गुरुगौरि हर भूमिसुर को सुमिरि
कै सोचत है कहंधनु कुलिसङ्गचाहिकठोरा कहंख्यामलमृदुगातकि
सोरा । विधिकेहिभांतिधरौउरधीरा सिरससुमनकनवेधिअहीरा ॥
औ देवतन को संकोच देत है की आप लोगन की सुइ संकोची
वान है भाव संकोच मे परि के जे न होनि हार ताह के करनि
हारे है हे दीनबंधु छपासिंधु हे साहसिक अर्थात् सीघ्र कार्य सिद्ध
करैया औ हे सील के समुद्र हमको सभा को संकोच औ कुल ह
को लाज परी है भाव चित्त तो चाहत है कि विनु धनु तोरे जय
माल डार देउ पर आजु लों अस हमारे कुल मे काह कन्या ने
नही किया है यह जो मिय हिय की विसेष घर भरी है ताको औ
राजन को पुरुषारथ देषि के औ श्री जनक जू को प्रेम को नेम
औ प्रतिज्ञा की परिच्छा करि के श्री राम जू ने पिनाक को दाहिना
दियो अर्थात् प्रदक्षिण कियो डरि कै पिनाक लघु है जात भयो
जैसे जरी को देषि कै सर्प विकल ही य सिकुर जात देवता हर्षत
संते बार बार फूल वर्षत है औ सिद्ध सगुन औ मुनि सुभ घरी
कहत है पुनि सिद्धादि कहत है कि श्री राम बांङ्ग रूप विशाल
वृक्ष मे श्री जनक जू की मनोरथ रूपी कल्प लता जो फैली रही
ताको फरी देषिअत है ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ एकही सुंदर लाभ ने

सबही को ज्ञान को हरन करी है ॥ ५ ॥ ६२ ॥

मू० । रागसारंग । रामकामरिपुचांपचढायो । मुनिहिपुनकञ्चानं
दनगरनभनिरषिनिमानवजायो ॥ १ ॥ जेहिपिनाकविनुनाक
कियेनृप सबहिषिषादवठायो । सोईप्रभकरपरसतपूख्यो जनु
ऊतोपुरारिपठायो ॥ २ ॥ पहिराईजयमालजानकी जवति-
न्हमंगलगायो । तुलसीसुमनवरषिहरषेसुर सुजसतिहूपर
छायो ॥ ३ ॥ ६३ ॥

टी० । रामदू० ॥ १ ॥ ऊतोपुरारिपठायो भाव श्री शिव जी प-
ढाय दिए रहे कि श्री राम के कृअतै टूटि जाना ॥ २ ॥ ३ ॥ ६३

मू० । राग टोड़ी । जनकमुदितमनटूटतपिनाकके । बाजेहैवधाव
नेसुहावनेमंगलगानभयो सुखएकरसरानीराजाराँकके १ ॥
दुंदुभीवजादूगादूहरषिवरषिफूलसुरगन नाचेनाचेनायकह
नाकके । तुलीमहीसदेखिदिनरजनी सजैसेखनेपरेखनेसे
मनोमिटायेअंकके ॥ २ ॥ ६ ॥ ६४ ॥

टी० । जनकदू० राँक दरिद्र ॥ १ ॥ नाक के नायक इन्द्र दिन में
जैसे चंद्रमा देखि परत है तैसे राजा सब देषि परे अब दूसरो उ-
पमा कहत है जैसे अंक के मिटाए सुन्न सूना परत है अर्थात्
बे हिसाब है जात है तस भए ॥ २ ॥ ६४ ॥

मू० । लाजतोनसाजिसाजाराजाराउरोषेहै । कहाभौचापचढाएव्या
ऊहैहैवडेखायेबोलैखोलैसेलअसिचमकतचोषेहै ॥ १ ॥
जानिपुरजनचसेधीरदैलघनहसेबलदून्हकेपिनाकनीकेनापे
जोषेहै । कुलहिलजावैवालबालिसबजावैगालकैधोकूरकाल
बसतमकिचिदोषेहै ॥ २ ॥ कुअरचढाईभीहैंअवकोबिलोकै
सौहैजहाँतहाँभेअचेतषेतकेसेधोषेहै । देषेनरनारिकहैंसाग
पादूजाएमायवाऊपीनपावरनिपीनाखावपोषेहै ॥ ३ ॥ प्रमुदि
तमनलोककोकनटकोकगनरामकेप्रतापरविसोचसरसोषेहै ।

तत्रकेदेषैः आतोषेतत्रकेलोगनिभलेत्रत्रकेसुनैः आसाधुतुलसीह्र
तोषेहै ॥ ४ ॥ ६५ ॥

टी० । लाजदू० । लाज तो नहीं है पर राजा जे राड है ते युद्ध
के साज साजि के क्रोध युद्ध भए हैं आपस मे कहत हैं चाँप चढ़ाये
तें कहा भयो यह विवाह बडे खाए ते होइगो अस बोले मिअन
चोखे तरवार खींचि लिए औ सांग लिए चमकि रहे हैं अर्थात्
राजा सब ॥ १ ॥ बाल बालि समूर्खोते मूर्ख तमकिचि दोखे हैं त्रिदो-
ष के बस अक बक करि रहे हैं ॥ २ ॥ ३ ॥ रघुनाथ के प्रताप रूपी
सूर्य ने सोच रूपी सर को सोखि लिए ताते लोक रूप कमल औ
चक्र वाक गन हर्षे ॥ ४ ॥ ६५ ॥

मू० । जयमालजानकीजलजकरलईहै । सुमनसुमंगलसगुनकोव-
नार्दमंजुमानह्रमदनमालीआपुनिरमईहै ॥ १ ॥ राजरुषल
विगुरभूसुरसुआसिनिन्हिसमयसमाजकीठबनिभलीठईहै ।
चलीगानकरतनिसानवाजेगहगहेलहलहेजोयनसनेहसरस
ईहै ॥ २ ॥ हनीदेवदुंदुभीहरषिवरषतफूलसुफलमनोरथभो
सुखसुचितईहै । परजनपरिजनरानीराउप्रमुदितमनसाअ-
नूपरामरुपरंगरईहै ॥ ३ ॥ सतानंदसिषसुनिपायपरिपहिरा
ईमालसियपियहियसोहतसोभईहै । मानसतेनिकसिधिसा
लसुतमालपरमानह्रमरालपांतिवैठीबनिगईहै ॥ ४ ॥ हित
नकोलाहकीउछाहकीबिनेदसोभाकीअवधिमहींअव-
अधिकईहै । यातेविपरीतिअनहितनकोजानिलीवीगतिकहै
प्रगटधुनसखासोखईहै ॥ ५ ॥ निजनिजवेदकीसप्रेमओगछे
ममईमुदितअसीसविप्रविदुषनिदईहै । क्वितेहैकालकीक-
पालसीतादूलहकीह्रलसतहिएतुलसीकेनितनईहै ॥ ६ ॥ ६६

टी० । जयमालदू० । जलजकर करकमल जयमालामह्रआ औ
दूव की है एवंतयोक्तेतमवेत्यकिंचिद्विस्त्रंसिदूवीकामधकमाला ऋजुप्र-

शामक्रिययैवतन्वीप्रत्यादिदेशै नमभाषमाखादृतिरघुवंशे ॥ १ ॥ लह
लहेअनंदयुक्त ॥ २ ॥ ३ ॥ इहां श्री रघनाथ तमाल हैं मराल पां
ति जय माल है ॥ ४ ॥ खुनुसखांसीखई है क्रोध रूप छईवालीखां-
सी रोग है ॥ ५ ॥ निज निज वेद के आसांवाद् के मंच से आसि-
वाद् दिए ॥ ६ ॥ ६ ॥

मू० । रागकेदार । लेङ्गरीलोचननिकोलाङ्ग कुवरसुंदरभावरोस
सखिसुमुखिसादरचाङ्ग ॥ १ ॥ खंडिहरकोदंडठाढेजानुलं
वितवाङ्ग । रुचिरउरजयमालराजतिदेतमुखसबकाङ्ग ॥ २ ॥
चितैचितहितमहितनषिसखअंगअंगनिवाङ्ग । सुकृतनिजसि
यरामरूपविरंचिमतिहिसराङ्ग ॥ ३ ॥ मुदितमनवरवदनसो-
भाउदितअधिकउछाङ्ग । मनङ्ग दूरिकलंककरिससिसमररू
थोराङ्ग ॥ ४ ॥ नयनसुखमाअयनहरतसरोजसुंदरताङ्ग । व
सततुलसीदासउरपुरजानकीकोनाङ्ग ॥ ५ ॥ ६७ ॥

टी० । लेङ्ग ६० । हेसख हे सुमुख आदर सहित चाङ्गकहै दे
खु ॥ १ ॥ जानु लंघित बाह्य आजानुवाङ्ग ॥ २ ॥ नखतेसखलोंजो
सब अंग अंग का निवाह है अर्थात् सब अंग जस चाहीत सहै ति
नको प्रीति सहित चित है चितै के अपना सुकृत औ सियराम को
रूप औ ब्रह्मा की बुद्धि कोस राहना करू ॥ ३ ॥ हर्षित मन है
औ उछाह करि अष्ट वदन की सोभा अधिक प्रकाशित है मानो
शशि ने कलंक को दूरिकरि समर मेराङ्ग कोमाख्यो है इहां राङ्ग
पिनाक है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६७ ॥

मू० । राग सारंग । भूपकेभागकीअधिकाई । दूख्यधनुषमनोरथ
पूज्योविधिसबवातबनाई ॥ १ ॥ तबतेदिनदिनउदोजनकोज
बतेजानकिजाई । अवयहव्याहसुफलभयोजोवनचिभुअनवि
दितवडाई ॥ २ ॥ बारबारअहैपङ्गनाईरामलघनदोउभाइ ।
एहिअनंदमगनपुरवासिन्हदेहदसाविसराई ॥ ३ ॥ सादर

सकलत्रिलोकतरामिहिकामकोटिक्विविद्धाई । एहसुषसमउस
माजएकमुखक्यौतुलसीकहैगाई ॥ ४ ॥ ६८ ॥

टी० । भूप ६० । सुगम ॥ ६८ ॥

० । राग सोरठा । मेरेवालककैसेधोमगनिवहहिगे । भूषपिया-
ससीतखमसकुचनिक्यौकौसिकहिकहहिगे ॥ १ ॥ कोभोर-
हीउवटिअन्हवैहैकाठिकलेऊदैहै । कोभूषनपहिराइनिका
वरिकरिलोचनसुपलैहै ॥ २ ॥ नयननिमेषनिज्योजोगवैनि
तपितुपरिजनमहतारी । तेपठएरिषिसाथनिसाचरमारनमष
रषवारी ॥ ३ ॥ सुंदरसुठिसुकुमारसुकुमलकाकपछधरदो
ऊ । तुलसीनिरषिहरषिउरलैहौविधिह्वैहैदिनसोज ॥ ४ ॥
॥ ६६ ॥

टी० । माता की उक्ति मेरे ६० । सकुचनि संकोच ते ॥ १ ॥ २ ।

॥ ३ ॥ काक पत्त जुलुफ ॥ ४ ॥ ६६ ॥

मू० । ऋषिन्धपसीसठगौरीसीडारी । कुलगुरसचिवनिपुननेवनिअ
वरेवनसमुभिसुधारी ॥ १ ॥ सिरिससुमनसुकुमारकुअरदो
उसूरसरोषसुरारी । पठएबिनहिसहाएपयादेहिकेलिबानध
नुधारी ॥ २ ॥ अतिसनेहकातरिमाताकहैलपिसपिवचनदु
धारी । वादिवीरजननीजीवनजगकूत्रजातिगतिभारी ॥ ३ ॥
जोकहिकहैफिरेरामलषनघरकरिमुनिमखरषवारी । सोतुल-
सीप्रियमोहिलागिहैज्यौसुभायसुतचारी ॥ ४ ॥ १०० ॥

टी० । ऋषि६० । वशिष्ठ जू औ मंत्री सब विचार मे विचच्छन
रहे पर अब रेव को काहने समुक्ति के न सुधारी ॥ १ ॥ सुरारी
राक्षस ॥ २ ॥ कातरि विह्वल ॥ ३ ॥ ४ ॥ १०० ॥

म० । जबतेलैमुनिसंगसिधाये । रामलषनकेसमाचारसपित
वतेककुअनपाये ॥ १ ॥ विनुपानहीगवनफलभोजनभूमिस
यनतरुछाही । सरसरिताजलपानसिसुनकेसाथसुसेवकना

ही ॥ २ ॥ कौसिकपरमकृपालपरमहितसमरथसुखदसुखा
ली । बालकसुठिसुकुमारसकोचीसमुभिसोचमोहिआली
॥ ३ ॥ बचनसप्रेमसुभिक्षाकेसुनि सबसनेहवसरानी । तुल
सीआइभरततेहिआसैर कहीसुमंगलवानी ॥ ४ ॥ १ ॥

टी० । जवतेइ० ॥ १ ॥ २ ॥ सकोची कहिवेको यह भाव कि सं-
कोच ते कछु न कहैगे ॥ ३ ॥ ४ ॥ १०१ ॥

म० । सानुजभरतभवनउठिधाए । पितुसमीपसवसमाचारसुनिमु
दितमातुपहिआए ॥ १ ॥ सजलनयनतनपुलकअधरफरक-
तलखिप्रीतिमुहाई । कोसल्यालिएलाइहृदयवलि कहौक
छुहैसुधिपाई ॥ २ ॥ सतानंदउपरोहितअपने तिरज्जतिना
थपठाए । प्रमकुसलरघुवीरलखनकी ललितपत्रिकाल्याए ॥
दलिताइकामारिनिमिचरमधराषिविप्रतियतारी । दैविद्या
लैगएजनकपुरहै गुरुसंगसुपारी ॥ ४ ॥ करिपिनाकुपनसुता
स्वयंवरसजिन्हपकटकवटोख्यौ । राजसभारघुवरवृनालज्यौ
संभुसरासनतोख्यौ ॥ ५ ॥ योंकहिसिधिलसनेहबंधुदोउअं
बुअंकभरिलीह्ये । बारवारमुखचंचिचारमनिवसननिह्यारि
कीह्ये ॥ ६ ॥ सुनतसुहावनिचाहअवधधरघरआनंदवधा-
ई । तुलसिदासरनिवांसरहसवससखीसुमंगलगाई ॥ ७ ॥
॥ १०२ ॥

टी० । सानुज इ० । पद सुगम ॥ १०२ ॥

म० । राग कान्हारा । रामलषनसुधिआईवाजैअवधवधाई । ललि
तलगनलिषिपत्रिकाउपरोहितकेकरजनकजनेसपठाई ॥ १ ॥
कन्याभूपविदेहकीरूपकीअधिकाई । तामुखयंवरसुनिसबै
आएदेसदेसकेलपचतुरंगवनाई ॥ २ ॥ पनपिनाकपविमेरुते
गरुताकठिनाई । लीकपालमहिपालवानवानइतदसमुखस-
केनचांपचढाई ॥ ३ ॥ तेहिसमाजरघुराजकेवृगराजजगाई ।

भंजिसरासनसंभुकोजगजयकलकीरतितियतियमनिसियपा-
ई ॥ ४ ॥ पुरघरघरआनंदमहासुनिचाहसुहाई । मातुमुदि
तमंगलसजैकहैमुनिप्रसादभएसकलसुमंगलमाई ॥ ५ ॥ गुरु
आयसुमंडपरच्यौसवसाजसजाई । तुलसिदासदसरथवरा-
तसजिपूजगनेसहिचलेनिसानवजाई ॥ ६ ॥ १०३ ॥

टी० । राम इ० । जनेस राजा ॥ १ ॥ २ ॥ प्रतिज्ञा किआ भया
जो पिनाक है सो मेरु ते अधिक गुरु है औ बल्य ते अधिक
कठिन है वान वानासुर ॥ ३ ॥ तेहि समाज मे रघुराज के नृगराज
जो श्री राम तिन को जगावत भए अर्थात् उखाह बड़ावत भए बीर
विहीन मही मै जानी इत्यादि वचन ते तिन्हो ने शंभु को सरासन
तोरि के जगत मे जय आदि पाई ॥ ४ ॥ इहां चाह को अर्थ
वांचित है ॥ ५ ॥ इहां गनेश के पूजन हेतु मंडप बनाए ॥ ६ ॥
॥ १०३ ॥

मू० । राग केदार । मनमेमंजुमनोरथहोरी । सोहरगौरिप्रसाद
एकतेकौसिकछपाचौगुनोभोरी ॥ १ ॥ पनपरितापचापचिं
तानिसिसोचसकोचतिभिरनहियोरी । रविकुलरविअवलो
किसभासरहितचितवारिजवनविकसोरी ॥ २ ॥ कुअरकुअ
रिसमंगलमूरतिनृपदोउधरमधुरंधरधोरी । राजसमाजभू
रिभागीजिन्हलोचनलाज्जलह्यौइकठोरी ॥ ३ ॥ व्याहउछा
हरामसीताकोसुकृतसकेलिविरंचिरचोरी । तुलसिदासजा
नैसोईयहसुषजाकेउरवसतिमनोहरजोरी ॥ ४ ॥ १०४ ॥

टी० । मन इ० । मिथिला के सखिन की उक्ति है री सपी जो
मन मे एक मनोरथ रह्यो अर्थात् श्री जानकी जी को विवाह को
सो हर गौरी के प्रसाद औ कौसिक के छपा ते चौगुनो भयो भाव
चारो राज कुमारिन को व्याह देखिवे मे आयो ॥ १ ॥ प्रतिज्ञा
करिवे को जा परिताप औ चांप की गरुआई की जो चिंता सोई

रात्रि रही औ तेहि करि जो सोच औ संकोच सोई तेहि राति
की घनी अधिआरी रही तेहि करि हितनि के चित रूपी कमल
सभा रूपी तडग मे संपुटित भए रहे ते रविकुल रवि जो श्री राम
तिन को देखि कै प्रफुल्लित भए ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ १०४ ॥

म० । राजतरामजानकीजोगी । ख्यामसरोजजलदसुंदरवर दुल
हिनितडितवरनतगोरी ॥ १ ॥ व्याहसमयसोहतिवितानत
रउपमाकङ्कनलहतिमतिमोगी । मनङ्कमदनमंजुलमंडपम
हंछविभिंंगारसोभासोजथोरी ॥ २ ॥ मंगलमयदोउअंगम
नोहरग्रथितचूनरीपीतपिछोरी । कनककलसकङ्कदेतभां
रीनिरषिरूपसारदभईभोरी ॥ ३ ॥ मुदितजनकरनिवासरहस
वसचतुरनारिचितवहिटनतोरी । गाननिसानवेदधुनिसुनि
सुरवरघतसुमनहरषकहैकोरी ॥ ४ ॥ नयननकोफलपाइप्रेम
वससकलअसीमतईसनिहोरी । तुलसीजेहिआनंदमगनम
नक्यौरसनावरनैसुषसोरी ॥ ५ ॥ १०५ ॥

टी० । राज इ० ॥ १ ॥ व्याह के समै मे दूलह दुलहिन मंडप
मे सोभत है तिन की उपमा हमारी मति कतह नही पावति है
मानो काम रूप सुंदर मंडप के तरे छवि रूप दुलहिन औ शृंगार
रूप दूलह है पर एह कहते नही बनत है क्यों कि इन की सोभा
थोरी है अर्थात् जानकी राम सम नहीं ॥ २ ॥ दुलहिन दूलह को
सब अंग मंगल मै औ मनोहर है पीत पट को चूनरी के संग
ग्रंथि बंधन भयो है ॥ ३ ॥ रहस आनंद ॥ ४ ॥ री सखी जेहि
आनंद मे मन डूवि गयो ताको जिह्वा कैसे वरनै ॥ ५ ॥ १०५ ॥
म० । दूलहरामसियादुलहीरी । घनदामिनिवरवरनहरनमनसुं
दरतानघसिषनिवहीरी ॥ १ ॥ व्याहविभूषनवसनविभूषित
सखिअवलीलषिठगिसिरहीरी । जीवनजनमलाङ्कलोचनफ
लहैइतनोइलछ्योआजुसहीरी ॥ २ ॥ सुपमासुरभिंंगार

छोरदुहिमयनअभियमयकियोहैदहीरी । मथिमाखनसिय
रामसंवादेसकलभुवनछविमनज्जमहीरी ॥ ३ ॥ तुलसिदास
जोरीदेष्टतसुषसोभाअतुलनजातिकहीरी । रूपरासिविर
चौबिरंचिमानोसिलालवनिरतिकामलहीरी ॥ ४ ॥ १०६ ॥

टी० । दूल्ह इ० ॥ १ ॥ २ ॥ सुखमा रूप धेनु ते सिंगार रूप
दूध कों दुहि के काम रूप अहीर ने अष्टत रूप दही जमायो ते-
हि दही को मथि के माघन काव्यो ताको श्री सीता राम को बना
यो श्री सकल भुवन की छवि मानो माटा है अर्थात् निकाम जा-
नि जो बहाय दियो सो है ॥ ३ ॥ रूप रूपी रासि मानो ब्रह्मा ने
सीता राम को बिरची श्री काटे पीछे की जो विनिआ सो रति
काम ने पाई शिला जो बालि तेहि के कनन रति काम पाई उच्छः
कण्ठ आदानं कण्ठिणां द्युर्जनं शिलं इति यादव कोशे ॥ ४ ॥
॥ १०६ ॥

मू० । जैसेललितलषनलाललोने । तैसिअैललितउर्मिलापरस्पर
लषतसुलोचनकोने ॥ १ ॥ सुषमासाहसिंगारुमारुकरिक-
नकरचेहैतेहिसोने । रूपप्रेमपरमितिनपरतकहिविथकिर-
होहैमतिमौने ॥ २ ॥ सोभासीलसनेहसुहावनोसमउकेलि
गृहगोने । देषितिअनकेनयनसफलभयेतुलसिदासहकेहो
ने ॥ ३ ॥ १०७ ॥

टी० । जैसे इ० ॥ १ ॥ परम सोभा को सारांस श्री शृंगार को
सोना करि के तेहि सोना ते लषनलाल श्री उर्मिलाजू को बनाए
भाव सुषमा के सारांस ते लषनलाल को श्री शृंगार के सारांस ते
उर्मिलाजू को रूप श्री प्रेम के अवधि है ताते कही नहीं परति
है विशेष थकि के मति मौन है रही है श्री उर्मिलाजू को श्याम
वरण है ताते शृंगार को सारांस कहे हिरण्य वर्णा सीता श्यामां-
डवी पाटल प्रभाउर्मिला श्यामवर्णाभा स्तुतिकीर्तिसमप्रभा इतिवार-

दपंचरात्रे पाटलः खेतरक्तमिथितोवर्णः ॥ २ ॥ केलि गृह क्रीड वर-
जावे को समै को सोभा सील औ सुंदर सनेह जो है ताको देखि
कै तिअन के नैन सुफल भए तुलसीदास को अब होनिहार है
॥ ३ ॥ १०७ ॥

मू० । राग विलावल । जानकीवरसुंदरमाई । इंद्रनीलमनिस्थाम
सुभंगअंगअंगमनोजनिवज्जुविछाई ॥ १ ॥ अहनचरनअंगु
लीमनोहरनषटुतिवंतककुकअहनाई । कंजदलनिपरमनहु
भौमदसवैठेअचलसुसदमिवनाई ॥ २ ॥ पीनजानुउरचारु-
जडितमनिनूपरपदकलमुषरसोहाई । पीतपरागभरेअलिग
नजनुजुगलजलजलषिरहेलोभाई ॥ ३ ॥ किंकिनिकनककंज
अवलीवटुमरकतसिषरिमध्यजनुजाई । गईनउपरसभौतन-
मितमुषविकसिचह्णदिसिरहीलोनाई ॥ ४ ॥ नाभिगभीरउ
दररेखावरउरभृगुचरनचिन्हमुषदाई । भुजप्रलंबभूषनअने
कयुतवसनपीतसोभाअधिकाई ॥ ५ ॥ जज्ञौपवीतविचिचहे
ममयमुक्तामालउरसिमोहिभाई । कंदुतडितविचजनुसुरप-
तिधनुनिकटवलाकपातिचलिआई ॥ ६ ॥ कंबुकंठचिबुकाध
रसुंदरक्यौकहौदसननकीरुचिराई । पटुमकोसमहंवसेवज्ज
मानोनिजसंगतडितअहनरुचिलाई ॥ ७ ॥ नासिकचारुल
लितलोचनभ्रुकुटिलकचनिअनुपमकविपाई । रहेधेरिराजी
वउभयमानोचंचरीकककृहृदयडेराई ॥ ८ ॥ भालतिलककंच
नकिरीटसिरकुंडललोलकपोलनिभाई । निरखहिंनगरिनि-
करविदेहपुरनिमिष्टपकौसरजादमिटाई ॥ ९ ॥ सारदसेस
संभुनिसिवासरचिंततरूपनहृदयसमाई ! तुलसिदाससठक्यौ
करिवरनेयहकृविनिगमनेतिकहिगाई ॥ १० ॥ १०८ ॥

टी० । जानकी ६० ॥ सषी प्रति सखी की उक्ति अरी माई जा-
नकी वर सुंदर है मरकत मणि सस खाम है औ सुंदर सब अंग

अंगनि मे अनेक कामन की छवि छाया रह्यो है ॥ १ ॥ लाल चरण
 है अंगुरी मन हर निहारी है नख दुतिवंत जे है ते कछुक अरु
 नाई लिए है मानो कमल दल निके ऊपर सुंदर अचल सभा बनाइ
 के दश संगल के तारा बैठे है ॥ २ ॥ जानु पुष्ट है औ सुंदर अंघा
 है औ चरण मे मनिन ते जडित सुंदर सोने के नूपुर है सो सुंदर
 शब्द करत है सो नूपुर नही है पुष्पन के पीत धूरो तें भरे भँवर
 के समूह है मानो युगल चरण रूप युगल कमल को देखिके लो-
 भाइ के रडि गए है ॥ ३ ॥ सोनन की किंकिनी नही है कमल
 कलिन की पांति है सो मरकत सिषर के मध्य मे मानो उत्पन्न भई
 है इहां मरकत सिषर औ रघुनाथ है मध्य भाग कटि देश है ते
 किंकिनी रूप कली सब डर तेज पर न गई नोचे मुष करि बिकसीं
 तिन के बिकसने की सुंदराई चहुं दिशि छाया रह्यो ॥ ४ ॥ ५ ॥
 उर में बिचित्र सुवर्ण मय जनेऊ औ मोतिन की माला जो है सो
 हम को भाई मानो स्याम मेघ औ बिजुरी के बीच इन्द्र धनुष है
 तेहि के निकट बकुलनि की पांति चली आई है इहां मेघ औराम
 है औ पीत वसन बिजुरी है सुरपति धनु यज्ञोपवीत है मोतो की
 मालावक पांति है ॥ ६ ॥ शंख सम कंठ है ठोड़ी औ ओठ सुंदर
 है औ दांतन की रुचिराई कैसे कै कह्यो अर्थात् कहिये योग्य
 नही है मानो कमल के कोश मे हीरा गण अपने संग मे बिजुरी
 औ सूर्य को सुंदराई लिए बसे है वा सुंदर ललाई रूप तडिता
 को लिए बसे है लाल रंग की बिजुरी भी लिषी है ॥ ७ ॥
 सुंदर नासा सुंदर लोचन टेडी भौंह औ जुलुफन ने उपमा रहित
 छवि पाई है मानो नेत्रे नही है युग कमल है भौंह औ जुलुफ
 नही है भौरन के समूह है ते श्वमर गण कछु हृदय मे डेराइ के
 युगल नेत्र रूप कमल को घेरि रहे है भाव ताते वदूठत नही है
 इहां डेरावनि हारो पलक रूप पंघा है ॥ ८ ॥ लोल चंचल भाई

परिच्छांही निकर समूह निमिकुल की मरजादा मिटाई अर्थात् ए
कटक ते निरषाहँ ॥ ६ ॥ १० ॥ १०८ ॥

मू० । राग कान्हूरा । भुजनिपरजननीवारिफेरिडारी । क्यौंतोख्यौ
कोमलकरकमलनिसंभुसरामनभायी ॥ १ ॥ क्यौंमारीचसुवा
ज्जमहावलप्रवलताडकामारीमुनिप्रसादमेरे रामलषनकीवि
धिवडिंकरवरटारी ॥ २ ॥ चरनरेनुलैनयननिलावति क्यौंमु
निवधुउधारी । कहोधौंतात क्यौंजीतिसकलनृपवरीहैविदेह
कुमारी ॥ ३ ॥ दुसहरोषमूरतिभृ गुपतिअतिनृपतिनिकर
षयकारी । क्यौंसौख्यौसारंगहारिहियकरिहैवज्जतमनुहारी
॥ ४ ॥ उमगिउमगिआनंदविलोकतिवधुनसहितसुतचारी
तुलसिदासआरतीउतारति प्रेममगनभहतारी ॥ ५ ॥ १०९

टी० । भुजनइ० हाथ चहुं ओर भुजन पर फिराय के जननी ने
नेवछावरि करी ॥ १ ॥ जब रघुनाथ सकोच बस उत्तर न दिए तब
आपही समाधान करति हैं कि मुनि के प्रसाद तें मेरे राम लखन
की विधाता ने अनेक अल्पायुटारी ॥ २ ॥ चरण रेणु को नयनन में
रूगादूवे को यह भाव कि विरह करि नेच संतप्त रहे तिनको सी-
तल करति हैं अब फेरि अधिक प्रेम करि पूछति हैं कि कैसे अहल्या
को तारी ॥ ३ ॥ षयकारी ज्यकारी मनुहारी मनावन ॥ ४ ॥

मू० । मुदितमनआतीकरैमाता । कनकवसनमनिवारिवारिवरपुल
कप्रफुल्लितगता ॥ १ ॥ पालागनिदुलिङ्गिनिहिसिषावतिसरि
ससासुसतसाता । देहँअसीसतेवरिसकोटिलगिअचलहोउ
अहिवाता ॥ २ ॥ रामसीयछविदेपियुवतिजनकरहँपरस्पर
बाता । अवजान्यौसांचेज्जसुनोसखिकोविद्वडोविधाता ॥ ३ ॥
मंगलगाननिसाननगरनभआनंदकह्यौनजाता । चिरंजीवहु
अवधेससुअनसवतुलसिदासमुषदाता ॥ इति श्री रामगीता
बल्यां बालकांडः संपूर्ण ॥ ४ ॥ ११० ॥

टी० । सुदित इ० ॥ १ ॥ श्री कौशल्या जू दुलहिनिन को अपने सरिस सातो सै सासुन को पैतगी करिवे को सिखावति हैं ॥ २ ॥ विधाता बड़ा प्रण्डित है कहिवे को यह भाव कि समान जोड़ी मिलाय दियो ॥ ३ ॥ नगर औ आकाश मे मंगल गान होत है औ नगरे वाजत है दोऊ ठौर को आनन्द कहा नही जात है सब असोस देत है कि अवधेस के सब मुअन तुलसीदास के सुषदा ता चिरंजीअज्ज ॥ ४ ॥ ११० ॥

दो० । मंगलश्रीसरजसरित मंगलविपिनप्रसोद । मंगलसीताराम जू जोमोदज्जकोमोद ॥ १ ॥ युगलचन्दपरिकरयुगल चरनरेनुसिरना य । हरिहरसममतिमंदहं टीकालईवनाय ॥ २ ॥ इतियो रामगी तावली प्रकाशिकाटीकायां श्रीसीतारामकृपापात्र श्रीसीतारामौयह रिहरप्रसादकृतौबालकांण्डः समाप्तः श्रीसीतारामाभ्यांनमः ॥

श्रीसीतारामाख्यानमः दो० । जिनके अंगप्रसंगते भूषितभूषणहोत ।
होतसुगंधसुगंधयुत पोतामोतीहोत ॥ सोभाह्लसोधाह्लहत जिनके
अंगप्रसंग । विधिहरिहरबाखीरमा उमाहोहिलपिटंग ॥ तिन्हसिय
सियबल्लभचरण वारवारशिरनाथ । चरणरेखुपरिकरजंगल नयननमा
भल्लगाय ॥ अवधकाण्डटीकारचत हरिहरमतिअनुजागि । दिगरीसु
मतिसुधारिहै बालकअज्ञविचारि ॥

सू० । राग सोरठ । नृपकरजोरिकह्यौगुरुपांहीं । तुन्हरीकपात्र
सीसनाथमेरीसवैनहेशनिवाहीं ॥ १ ॥ रासहोहियुवराज
जियतमेरेयहलालचमनमाहीं । बज्जुरिमोहियिथवेमरिले
कोचितचिंताककुनाहीं ॥ २ ॥ महाराजभलोकाजविचाह्यौ
बेगिबिलंबनकीजै । विधिदाहिनोहोइतोसबमिजिनमला
ऊलुटिलीजै ॥ ३ ॥ सुनतनगरअनंदवधावनकैकेईबिलषा
नी । तुलसीदासदेवमायावसकठिनकुटिलताठानी ॥ ४ ॥ १ ॥

टी० । नृप इ० । निवाही कहैं पूर्ण किए ॥ १ ॥ २ ॥ विधिटा-
हिनो होय तो या कथन तैं अनारथ के लाभ से संदेह जनाए
॥ ३ ॥ ४ ॥ १ ॥

सू० । राग गौरी । सुनह्यराममेरेप्रानपियारे । वारोसत्यवचनशु
तिसम्मत जातेहौबिहुरतचरनतिहारे ॥ १ ॥ विनुप्रयासस
वसाधनकोफल प्रभुपायेसोतौनहौसभारे । हरितजिधर्म-
सोलभयौचाहत नृपतिनारिवससरवसहारे ॥ २ ॥ रुचिर
कांचमनिदेषिमूढज्यौ करतलतेचिंतामनिहारे । सुनिलो
चनचकोरससिराघव सिवजीवनधनसोऊनविचारे ॥ ३ ॥ ज
द्वापिनाथतातमायावस सुषनिधानसुततुन्हहिबिसारे । तद
पिहमहिल्यागज्जनिरघुपतिदीनबंधुदयालमेरेवारे ॥ ४ ॥ अ
तिसयप्रोतिविनीतवचनसुनि प्रभुकोमलचितचलननपारे ।
तुलसिदासगौरहौमातुहित कोसुरभूमिप्रभयठारे ॥ ५ ॥

टो० । औ कौशिल्या जी की उक्ति है सुनहु इ० । श्रुति मन्वत जो सत्य वचन है ताकीं वारीं कहैं फूकि देउं कहेते कि जेहि सत्य वचन करि तुह्यारे चरण ते हम विकुरत हैं ॥ १ ॥ सब साधन को फल रूप जो प्रभु आप ताको पाए पर नहो संहारि सकै ॥ २ ॥ ३ ॥ तात माया वश तुह्यारी माया वश ॥ ४ ॥ चलन न पाए चलै कै इच्छा न किए पर केरि विचारे सो अगिले तुक मे स्पष्ट है ॥ ५ ॥ ॥ २ ॥

सू० । रहिचलिये सुंदर रघुनायक । जो सुततात वचनपालनरत जन नीउतातमानिवेलायक ॥ १ ॥ वेदविदितयहवानितुह्यारी रघुपतिमदासंतसुषदायक । राखहुनिजमरजादनिगमकी हैवितिजाउं धरहुधनुसायक ॥ २ ॥ सोककूपपरपरिहिनरि हिन्दुप सुनि संदेसरघुनाथभिधायक । यहदूषणविधित हि होतअवरा मचरणवियोगउपजायक ॥ ३ ॥ मातुवचनसुनि श्रवतनयनजलककुसुभाउजनुरतनपायक । तुलसिदासमुर काजनसाध्यौतौते दोषहोइमहिआयक ॥ ४ ॥ ३ ॥

टो० । रहि इ० । रहि चलिए कहैं रहि जाइए ॥ १ ॥ रघुपति सदा संतन के सुषदाता हैं यह वानि तुह्यारी वेद मे प्रसिद्ध है वेद सिद्ध जो अपनी मर्जाद है ताको राषड भाव अजोध्या वासी सब संत हैं तिन को दुख मति देहु मै बलि जाउं धनुष वान को धरि देहु भाव चलन के साजसब उतारि डारहु ॥ २ ॥ अब ब्याकुलता ते विधाता प्रति कहति हैं कि रघुनाथ के जाइवे वाला संदस सुनि कै सोक रूपो कूप मे अजोध्या वासी परैं गे औ महाराज मरै गे औ राम चरण वियोग उपजावनि हारा जो यह दूषण से तुह कहुं होत है ॥ ३ ॥ पायक कहैं पाए कै आयक कहैं आए कै ॥ ४ ॥ ३ ॥

सू० । सो० । रामहौं कौनयतनघररहिहौं । बारबारभरिअंकगो दलैलखनकौनसोकहिहौं ॥ १ ॥ इहिआंगनविहरतमेरेवा

रेतुमजोसंगनिसलीन्हे । कैमेप्रानरुहृतसुभिरतसुत बड्डवि-
मोदतुमकीन्हे ॥ २ ॥ जिन्हयवननिकलवचनतिहारि मुनि
मुनिहौअनरागी । तिन्हखवनन्हवनगवनमुनतिहौ मोतेक
बनअरागी ॥ ३ ॥ जुगनमनिमिषत्राङ्गिघुनंदन बदन
कमलविनुदेखे । जौतनरहेवगघीतेनि कहाप्रोतिइहिले
खे ॥ ४ ॥ तुनसीदामप्रेमरसथीहरि देखिविकलमहतारी ।
गदगदकंठनयमजलफिरफिरि आवनकहेउमुरारी ॥ ५ ॥ ४ ॥

टी० । रामइ० हे राम मै कवने जतन ते घामें रह्योगी ॥ १
२ ॥ ३ ॥ इहां वरष पद ते चौदह वरष लेना ॥ ४ ॥ फि-
रि कहै बारंवार ॥ ५ ॥ ४ ॥

मू० । राग विजावल । रहड्ड भवन हमरे कहेकामिनि । सादर
सामुचरनसेवड्डनित जोतुन्हरेअतिहितगृहस्वामिनि ॥ १ ॥
राजकुमारिकठिनकंठकमग क्यौचलिहौबट्टपदगजगामिनि
दुसहबातवरषाहिमआतप कैसेमहिहौअगनितदिनजामि-
नि ॥ २ ॥ हौपुनिपितुअज्ञाप्रमानकरि ऐहौवेगिसुनइदु-
तिदामिनि । तुलसिदासप्रभुविरहवचनमुनि सहिनसकीमु
रक्षितभईभामिनि ॥ ३ ॥ ५ ॥

टी० । श्री जानकी जू प्रति रघुनाथ जी की लक्ष्मि है । रहड्ड०
गृहे मे स्वामिनि है यह कहिवे को यह भाव कि तुमको अन्यथा
जाना न चाहिए ॥ १ ॥ जामिनि राति ॥ २ ॥ ३ ॥ ५ ॥

मू० । क्षपानिधानसुजानप्रानपति संगविपिनहौआवौगी । गृहते
कोटिगुनितसुखमारग चलतसाथसचुपावौगी ॥ १ ॥ थाके
चरनकमलचापौगी स्वमभयेवालडोलावौगी । नयनचकोर
निमुखमयंकछवि सादरपानकरावौगी ॥ २ ॥ जौइठिनाथ-
राषिहौमोकहं तौसंगप्रानपडावौगी । तुलसिदासप्रभुनि
जीवतरहि क्यौ फिरिबदनदेखावौगी ॥ ३ ॥ ६ ॥

टी० । श्री जानकी जू की उक्ति है छपा इ० । सच्चु मुख ॥ १ ॥
अपने नैन रूपी चकोरन को तुम्हारे सुष रूप चन्द्र के छवि रूप
किरण को आदा सहित पान कराओगी ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ ॥

म० । कहौतुम्हविनुग्रहमेरोकौनकाजु । विपिनकोटिसुरपुरसमा-
नसोकौजौपैप्रियपरिहछौराजु ॥ १ ॥ बलकलविमलदुक्कल
सनोहरकंदमूलफलअमियनाजु । प्रभुपदकमलविलोकिहौं
किनुछिनुइहिलेअधिककहासुषसमाजु ॥ २ ॥ हौरहौंभव-
नभोगलोलुपह्वैप्रतिकाननकियोसुनिकोसाजु । तुलसिदास
जैसेविरहवचनसुनिकठिनहियोविहछोनआजु ॥ ३ ॥ ७ ॥

टी० । कहौ इ० ॥ १ ॥ अमिय नाजु अमृत सम अन्न ॥ २ ॥
एमे विरह वचन अर्थात् तुम सुकुमारि हौ वन योग्य नहीं यह
वचन सुनि के मेरो हृदय कठिन है सो न फर्यो ॥ ३ ॥ ७ ॥

म० । प्रियनिठुरवचनकहेकारनकवन । जानतहौसबकेमनकीगति
बदुचितपरमज्ञपालुरवन ॥ १ ॥ प्राननाथसुंदरसुजानमनि
दीनबंधुजनआरतिदवन । तुलसिदासप्रभुपदसरोजतजिरहि
हौकहाकरौंगीभवन ॥ २ ॥ ८ ॥

टी० । प्रिय इ० । रवन स्वामी ॥ १ ॥ सुजान मनि सुजानन से
श्रेष्ठ ॥ २ ॥ ८ ॥

म० । एतुमसेसतिभायकहीहै । वृक्षतऔरभांतिकतभामिनिकान-
नकठिनकलेमसहीहै ॥ १ ॥ जौचलिहौतौचलौचलिएवन
सुनिसियमनअवलंबलहीहै । बूढ़तविरहवारिनिधिमानहु
वचननाहमिसिवांहगहीहै ॥ २ ॥ प्राननाथकेसाथचलीउ
ठिअवधसोगसरिउमगिबहीहै । तुलसीसुनिनकवहुकाहुक
ऊंतनुपरिहरिपरिछांहरहीहै ॥ ३ ॥ ९ ॥

टी० । श्री रघुनाथ की उक्ति है भै इ० । हे भामिनि हम तुमसे
जस है तस कही है ताको तुम और भांति काहे वृक्षति हौ वचन

मे सांचों कठिन कलेश है ॥ १ ॥ मानो विरह रूप समुद्र मे बूडत
संते खामी ने वचन के वहाने तें बांइ गहिलई है ॥ २ ॥ सरिमदो
सरीर ते पृथक् परिछांही को रहते काहू ने नही सुनी है भाव
तव जानकी जू कैसे रहैं ॥ ३ ॥ ६ ॥

मू० । जवाहररुपतिसंगसीयचली । विकलबियोगलोगप्रतियकहै
अतिअन्याउअली ॥ १ ॥ कोउकहैमनिगनतजतकांचलगि
करतनभूपभली । कोउकहैकुलकुवेलिकैकेईदुषविषफलनि
फली ॥ २ ॥ एककहैवनजोगजानकीविधिवडविषमवली ।
तुलसीकुलिसडकीकठोरतातेहिदिनदलकिदली ॥ ३ ॥ १० ॥

टी० । जब ६० । हे सखी अति अन्याव है ॥ १ ॥ इहां कांच
खानी सत्य वचन है कुवेलि विष खता ॥ २ ॥ क्या जानकी ज वन
ने जोग है अर्थात् नही पर विधाता अति कठिन बलवान है गोसांई
जी कहत है कि तेहि दिन और को को कहै कुलिसड की कठो-
रता दलकि के फटि गई ॥ ३ ॥ १० ॥

मू० । ठाढ़ेहैलपनकमलकारजारे । उरधकधकीनकहतकछूसकुच
निप्रभुपरिहरतसवनचिनतोरे ॥ १ ॥ कृपासिंधुअवलोकिवं
धृतनप्रानकृपानवीरसीछोरे । तातविदामागिअैमातुसोवनि
हैवातउपाइनऔरे ॥ २ ॥ जाइचरनगह्निआयसुजाच्यौजन
निकहतवहुभांतिनिहारे । मियरघुवरसेवासुचिहैहौतौजा-
निहौसहोसुतमोरे ॥ ३ ॥ कीजऊइहैविचारनिरंतररामस
मीपसुकृतनहिथोरे । तुलसीमुनिशिषचलेचकितचितउड्यौ
मानोविहगवधिकभयभोरे ॥ ४ ॥ ११ ॥

टी० । ठाढ़े ६० । संकोच ते कछु कहत नाही है हृदय मे धक
धकी है काहे ते कि प्रभु या काल मे सब को तोरे टहन सम त्याग
करत है ॥ १ ॥ प्राण रूप जो तरवार है ताको बीर के समान छोरे
अर्थात् दस्तगी धोले बंधु के तन को देषि के कृपासिंधु बोले कि है

तात माता सो विदा मंगिए और उपाय से न बनि है अर्थात् वे
माता के कहे हम न ले चलव ॥ २ ॥ सुचि छल रहित ॥ ३ ॥ एही
विचर निरंतर करेऊ कि थोरे सुत्रत से रघुनाथ के निकट प्राप्ति
नही होत है यह सिधावन सुनि के चकित वित ते चलत भए मानो
बधिक के गाफिल भए से पच्छी उडेउ ॥ ४ ॥ ११ ॥

मू० । राग सारठ । मोकोविधुवदनविलोकनदीजै । रामलषनमे-
रीएहीभेटवलिजांडभोहिभिनिलीजै ॥ १ ॥ सुनिपितुवच
नचरनगडेरघुपतिभूपञ्जकभरिलीहै । अजङ्गअवनिविहर-
तिदगारभिससोअवसरसुधिकीन्है ॥ २ ॥ पुनिसिरनाइगव
नकियोप्रभुमुरछितभयोभूपनजाग्यौ । करमचोरनृपपथिक
मारिमानोरामरतनलैभाग्यौ ॥ ३ ॥ तुलसीरविकुवरविरध
चहिलेतेकिदिसिदषिनसुहाई । लोगनलिनभएमलिनअव
धसविरहविषमहिमआई ॥ ४ ॥ ११ ॥

टी० । श्री राम प्रति श्री चक्रवर्ती महाराज की उक्ति है मोको
इ० ॥ १ ॥ २ ॥ कर्म रूप चोर ने महाराज रूप पथिक को मारि
कै मानो राम रूप रत्न को लूटि कै लै भाग्यो ॥ ३ ॥ गोसांई जी
कहत है कि सूर्य कुल कं सूर्य जो श्री राम सो रथ पर चढ़ि के
सुंदर दक्षिण दिसा के ओर चलत भए सूर्य दक्षिणायुन मे हिम
रितु आवति है सो इहां कठिन विरह रूप हिम रितु आई ताते
अजोध्या रूप सर मे लोग रूप कमल मलीन होत भए ॥ ४ ॥ १२ ॥

मू० । राग बिलावल । कहैसोविपिनहैधौकेतिकदूरि । जहंगमु
कियोकुंवरकोसलपतिबुभक्तिसियपियपतिहिविस्तरि ॥ १ ॥
प्राननाथपरदेसपयादेहचलेमुषसकलतजेहनतूरि । करीब
यारविलंबिएविटपतरभाएहीचरनसरोरुहधूरि ॥ २ ॥ तु
लसिदासप्रभुप्रियावचनसुनिनीरजनयननीरआएपूरि । का-
ननकहांअवहिसुनसुंदरिरघुपतिफिरिचितयेहितभूरि ॥ ३ ॥

टी० । श्री राम प्रति श्री जानकी जी की उल्लास है कछो दू० ।
श्री जानकी जू प्रिय पति जो श्री राम तिन सों विस्वरि कहैं विल-
खाय कै बभूति हैं हे कोशल पति कुंवर जहां को गमन कियो ह्यौ
सोवन धौं केतिक दूरि है हम ते कह्यो ॥ १ ॥ हे प्राणनाथ सब
सुष को हनवत तोरि कै तजे श्री परदेस को पयादे चले स्वमित
भए होइ गे ताते तरु तर विलम्ब कीजिए भै बयारि करौं श्री
चरण कमल की धूरि झारौं भाव जाते स्वम उतरि जाय ॥ २ ॥
श्रीआ के यह वचन सुनि के प्रभु के नैन कमल मे जल भरि आए
कहत भए कि हे मुंदरि सुनो अबहो बन कहां है अस कहि के अति
हित सें फेर देखत भए ॥ ३ ॥ १३ ॥

मू० । फिरि फिरि गमभीयत न हेरत । दृषित जानि जल लेन लपन गए
भुजा उठाए ऊँचे चढि टेरत ॥ १ ॥ अबनि कुरंग विहग डूम डार
निरूपनि हारत पलकन प्रेरत । मगन न डरत निरषिकर कमल
निसुभग सरामन मायक फेरत ॥ २ ॥ अबलोकत मगलोग चहुँ
दिसि मन जंचकोर चंद्रमहि घेरत । तेजन भूरि भाग भूतल परतु
लसोराम पथिक पद जेरत ॥ ३ ॥ १४ ॥

टी० । फिरि दू० । श्री राम जू ऊँचे पर चढि के भुजा उठाय
लपन लाल को टेरत हैं श्री श्री जानकी जू के ओर फिरि फिरि
देखत हैं ॥ १ ॥ भूमि ते हरिन श्री वृत्तन के डारन तें पक्षा रूप
को एक टक देखत हैं यद्यपि श्री राम जू कर कमल निसे सुंदर
धनुष बान फेरत हैं तथापि ऐसे मगन हैं कि देखि डरत नहीं हैं
॥ २ ॥ जैसे चन्द्रमा को चकोर घेरत हैं तैसे मग लोग चहुँ ओर
ते देखत हैं अर्थात् पलक रोकि ॥ ३ ॥ १४ ॥

मू० । दृषित कुंअर राजत मग जात । सुंदर बदन सरोरुह लोचन मरक
तकन ककवरन मृदु गात ॥ १ ॥ अंसनिचाप तून कटि मुनिपट
जटामुकुट विचनूतन पात । फेरत पानि सरोरुज निमायक चोरत

चित्तिहिसहजमुसकात ॥ २ ॥ संगनारिसुकुमारिसुभगमुठि
राजतिविनुभूषननवसात सुषमानिरषिग्रामवनितनिकेननिन
नयनविगसतमानोप्रात ॥ ३ ॥ अंगअंगअगनितअनंगकृविउ
पमाकहतसुकविसकुचात । सियसमेतनिततुलसिदासचितव-
सतकिशोरपथिकदोउभ्रात ॥ ४ ॥ १५ ॥

टी० । सुंदर मुख औ कमल सम नेत्र औ कोमल अंग हैं मर-
कत वरण औ राम औ कनक वरण औ लछिमन जी हैं ॥ १ ॥
अंसनिचांप कान्हनपरधनु मुनिपटवल्कलादि ॥ २ ॥ सुभगमुठि अति
सुंदरिभूषननवसात सौरहृष्टंगार परम सोभा देषि कै ग्राम युवतिन
के नेत्र कमल विकसे जैसे प्रातः काल में कमल विकसत हुआ मुखमा
स्वर्ण है ॥ ३ ॥ ४ ॥ १५ ॥

मू० । तू देषि देषिरीपथिकपरमसुंदरदोज । मरकतकलधौतवरन
कामकोटिकांतिहरनचरनकमलकोमलअतिराजकुंवरकोज
॥ १ ॥ करसरधनुकटिनिषंगमुनिपटसोहेसुभगअंगसंगचंद्र
बदनिबधूसुंदरिसुठिसोज । तापसवरवेषकिएसोभासवलूटि
लिएचितकेचोरवयकिशोरलोचनभरिजोज ॥ २ ॥ दिनकर
कुलमनिनिहारिप्रेममगनग्रामनारिपरसपरकहैसषिअनुरा
गतागपोज । तुलसीयहृद्धानसुधनजानिमानिलाभसधनऊ
पिनज्योसनेहसोहियसुगेहगोज ॥ ३ ॥ १६ ॥

टी० । ग्राम वधुन की उक्ति है देषिइ० । कनधौतस्वर्ण ॥ १ ॥
जोज देखु ॥ २ ॥ परस्पर कहति है कि हे सखी इन दोऊ कुंअर
रूप मणिन को अनुराग रूपता गमे पोज यह ध्यान को सुंदर धन
जानि कै अति लाभ मानि कै हृदय रूप सुंदर गृह मे सनेह पूर्वक
कृपाउ जैसे कृपिन धन कृपावत है ॥ ३ ॥ १६ ॥

मू० । कुंअरसांवरोरीमजनीसुंदरसवअंग । रोमरोमकृविनिहारि
आलिबारिफेरिडारिकोटिभानुसुअन सरदसोमकोटिअनंग

॥ १ ॥ वामअंसलसतचापरौलिमंजुजटकलापसुचिसरकर
मुनिपटकटितटकसेनिषंग । आयतउरवाङ्गनयनमुषसुषमाको
लहैनउपमाअबलोकिलोकगिरामतिगतिभंग ॥ २ ॥ यौकहि
भईमगनबालविषकीमुनिजुवतिजालचितवतचलेजातसंगमधु
पष्टगविहंग । वरनोकिमितिन्हकीदसहिनिगमअगमप्रेमर
सहितुलसीमनवसनरंगेरुचिररूपरंग ॥ ३ ॥ ७ ॥

टी० कुअर ई० । री सजनी यह सांवरो कुवर सब अंग ते सुंदर
हैं हे आली इनकी रोम रोम की छवि देखिकै कोटिन अश्वनी कु
मार औ सरद पूनो के चंद्र औ कोटिन काम कां फेरि कै नेवछा
वरि करि डारु ॥ १ ॥ वाम कांधे मे धनु औ माथे मे पवित्र सुंदर
जटन कै समह औ हाथ मे वाण सोभत है बल कल पहिरे है औ
कटि देश मे तरकस कसे है छाती वाहु औ नयन बिसाल है औ
मखकी परम शोभाको कोऊ नही पावत है लोक मे उपमा खोजि
कै सारदा की मति औ गति नष्ट है गई है मति भारती पंगु भई जो
निहारि बिचारि फिरी उपमानपवै ॥ २ ॥ वह कह निहारी वाला अ
स कहि प्रेम मे डूवि जात भई औ ताकी कहनि और सब युवती
मुनि धकित होत भई औ भ्रमर ष्टग पक्षी चितवत संग मे चले
जात हैं मन रूप वसन कां सुंदर रूप रंग में रंगे हैं तिन्ह की द
शा कैसे वरनो काहे ते कि बेदन को भी अगम प्रेम रस है ॥ ३ ॥
॥ १७ ॥

मू० । राग कल्याण । देप्रिकोउपरमसुंदरसखिवटोही । चलतम
हिसृदुचरनअरुनवारिजनयन भूपसुतरूपनिधिनरिषिहौमों
ही ॥ टेक अमलमरकतखामसौलसुखमाधामगौरतनसु-
भगसोभासुमुखिजोही । जुगलविचनारिसुकुमारिसुठि सुं
दरीइंदिराइं दुहरिमध्यजनुसोही ॥ १ ॥ करनिबरधनुतीर
रुचिरकटितुनीरघोरसुरसुखदमर्दनअवनिद्रोही । अंबुजा-

यतनयनबदनकृबिबद्धमयनचारुचितवनिचतुरलेतचितयोयो
हो ॥ २ ॥ वचनप्रियसुनिखवनरामकरनाभवनचितै सबअ
धिकहितसहितकछुओही । दासतुलसीनेहबिबसविसरीदे
हजाननहि आपुतेहिकालधौकोंही ॥ ३ ॥ ॥ १८ ॥

टी० । देषु ६० । लाल कमल के रंग कोमल चरण तें जे भूमि
मे चलत हैं ते रूप निधि भूप सुतन्ह को देषि भै मोहि गई ॥ १ ॥
हे सुमुषि निर्मल मरकत सम ख्याम औ शील परम शोभा के धाम
एक कुवर औ गौर तन सुंदर सोभा वालो दूसरो कुवर कों देषु
औ दूनो कुवरन के बोच अति सुंदर सुकुमारि नारि है मानो चंद्रमा
औ विष्णु के मध्य मे लक्ष्मी सोभी ॥ २ ॥ तू नीर तरकस अरुनि
द्रोही राक्षसादि अंबु जायत नयन कमल वत् विस्तृत नेचलेत पोही
गूथ लेत ॥ ३ ॥ सब कों चितए पर अधिक हित सहित ओहि
कहनि हारि कों कोही कहैं कवन हौ ॥ ४ ॥ १८ ॥

मू० । राग केदारा । सपिनीकेकैनिरषिकोउसुठिसुंदरबटोही मधु
रमूरतिमनमोहनजोहनजोगवदनसोभासदनदेषिहोमोही
टेक । सावरेगोरेकिशोरसुरमुनिचितचोरउभयअंतरएकना
रिसोही मनहुवारिदबिधुबोचललितअतिराजतितडितनिज
सहजबिछोही ॥ १ ॥ उरधीरजधरिजनमसुफलकरिसुन
हिसुमुषिजिनिबिकलहोही । कोजानैकौनेमुद्रतलछ्यौहैलो
यनलाजताहीतेंवारहिवारकहतिहौतोही ॥ २ ॥ सपिही
सुसीषदईप्रेममगनभईसुरतिविसरिगईआपनीओही । तुल
सीरहीठाढीपाहनऐसीगढिकाढीनजानेकहांतेआईकौनको
कोही ॥ ३ ॥ १९ ॥

टी० । सखी ६० । हे सखी भली भांति करि देखु कोऊ अति सुं-
दर बटोही हैं दून मन मोहन पथिकन की सोहावनि मूरति दे-
खिवेयोग्य हैं सोभा के सदन इनके मुख हैं जाके देखि के मैमोहि

गई ह्रीं ॥ १ ॥ दोउन के बीच एक नारि सोहि रही है मानो
मेघ औ चन्द्रमा के बीच मे अनो चंचल सुभाव त्यागि कै अति
सुंदर बिजुरी सोहि रही है ॥ २ ॥ हे सुमुखि सुनु विकल मतिहों
हि धीरज धरि के अपना जन्म मुफल करु को जाने कौने सुखतन
से नेचन ने यह लाभ प्रायो है ताते मै बारहि बार तोसो कहति
हौं ॥ ३ ॥ पाहन सी गढ़ि काठी गढ़ी भई पारथ की मूरति सी
कौन की कोही केहि की हौ औ कौन हौ ॥ ४ ॥ १६ ॥

मू० । माईमनकेमोहनजोहनजोगजोही । धोरिहित्रयसगोरे
सांवरेसलोलोलोपनललितविधुवदनबटोही । सिरनिज
टामुकुटमंजुलसुमन जुततैसियैलसतिनवपल्लवखोही । क्रियेमु
निषेधबीरधरेधनुतूनतीरसोहै मनकोहैलखिपरेनमोही ॥ १ ॥
सोभाकोसांचोसंवारिरूपजातरूपठारि नारिविरचीविरंचि
संगसोसोही । राजतरुचिरतनसुंदरखुमकेकनचाहेचकचौ-
धीलागैकाकहौतोही ॥ २ ॥ सनेहसिथिलसुनिबचनसकल
सियचितईअधिकहितसहितओही । तुलसीमानहुप्रभुकृपा
कीमूरतिफिरिहेरि कैहरषिहियलियोहैपोही ॥ ३ ॥ २० ॥

टी० । माई १० । हेमाई देषिवे जोग्य मन के मोहन बटोही को
मै देषी ते बटोही कैसे है कि जिन्ह की अवस्था धोरी है एक स-
लोलोने गोरे है एक लोने सांवरे है सुंदर आप्रै है चंद्र सम मुषै है
॥ १ ॥ नव पल्लव षोही नए पत्र न जुत डौंगी को है कौन है
॥ २ ॥ ब्रह्मा ने सोभा को सांचा बनाइ कै तामे रूप रूपी सोना
को ठारि कै नारि बनाई सो नारि संग मे सोहि रही है चाहै कहै
देषे ॥ ३ ॥ वह जो सनेह ते सिथिल है ताकी सब बातै श्री जानकीजु
सुनि कै अधिक प्रीति सहित वाको देखत भई मानो जानकीजु न
देषीं प्रभु की कृपा की मूरति ने फिरि के देषि हरषि के चित्त को
गूथि लई ॥ ४ ॥ २० ॥

म० । सषिसरटविमलविधुवदनवधट्टी । असीललनासलोनीनभईनहैन
 होनारतैरचीविधिजोछोलतछुविछूटी । टेकः । सांवरेगोरे
 पथिकबीचसोइतिअधिकतिहुँतिभुअनसोभामानजलूटी ।
 तुलसीनिरषिसियप्रेमनसकहैतियलोचनसिसुन्हदेहुअभियधूं
 टी ॥ १ ॥ २१ ॥

टी० । सखीइ० । हे सखी निर्मल सरद के चन्द्र सम या वधूटी को
 मुख है असी सलोनी ललना न भई है न कहं है नहो निहार है
 विधाता ने याके सुधारत मे जो छवि छूटि परी ताते रति को बनाई
 ॥ १ ॥ तिहुंक है तीना जने लोचन सि सुन्ह देहु अभिय धूटी लोचन
 रूप बालकन को पथिक रूप रूपी अस्त को घेटी देहु ॥ २ ॥ २१ ॥

म० । सोहैसांवरोपथिकपाछेललनालोनी । दाभिनिवरनगोरीलषि
 सषितनतारीवीतीहैवयकिशोरीजोवनहोनी । टेक । नीके
 कैनिकाईदेषिजनमसुफलले षिहमसीभूरिभागिनिनभनछो
 नी । तुलसीस्वामीस्वामिनिजोहेसोहीहैभामिनिसोभासुधा
 पियैकरिअंघियांदानी ॥ १ ॥ २२ ॥

टी० । सो हैइ० ॥ १ ॥ न भन छोनीन आकाश न पृथ्वी मे अं-
 षिअं दोनी अंषिन को दोना बनाय ॥ २ ॥ २२ ॥

म० । पथिकगोरेसांवरेसुठिलोने । संगसुतियजाकेतनतेलहीहैहु
 तिखर्नसरोरहसोने । टेक । वयकिशोरसरिपारमनोहरव
 यससिरोमनिहोने । सोभासुधाअलिअंचवहुकरिनयनमंजु
 हृदुदेने ॥ १ ॥ हेरतहृदयहरतनहिफेरतचारुविलोचनको
 नेतुलसीप्रभुकिधौप्रभुकेप्रेमपढेप्रगटकपटविनुटोने २ ॥ २३ ॥

टी० । पथिक इ० ॥ १ ॥ किशोर अवस्था रूप नदी से पार है के
 मनोहर युवा अवस्था होनि हार है ॥ २ ॥ सुंदर नैनन सो तिरछे
 दृषतहीं मन को हरि लेत है फेर फेरत नाही गोसांई जी कहत
 है कि प्रभु कै धौ प्रभु के प्रेम ने बिना कपट के टोना प्रगट पढे है

भाव टोना कपट करि छिपाय के किया जात है इहां सामु हे मन
हरे ताते प्रगट कहे ॥ ३ ॥ २३ ॥

मू० । मनोहरताकेमानोअैन स्यामलगौरकिशोरपथिकदोउसमुषि
निरषिभरिनैन । टेक । बीचवधूविधुवदनिविराजतिउपमाकहुं
कोउहैन मानङ्गरतिरितुनाथसहितमुनिवेषवनायौहैमैन ॥
॥ १ ॥ किधौसिंगारसुषमासुप्रेममिलिचलेजगचितवितलैन ।
अङ्गतचईकिधौपठईविधिमगलोगनिसुषदै ॥ २ ॥ मुनिसुचि
सरलसनेहसुहावनेग्रामवधुन्हकेवैन । तुलसीप्रभुतरुतरवि
लंबकियेप्रेमकनौडेकैन ॥ ३ ॥ २४ ॥

टी० । मनो ह० ॥ १ ॥ है ननहीं है ॥ २ ॥ कै धौं शृंगार रस
औ परम सोभा औ प्रेम मिलि के जगत के चित्त रूपी धन को
लेइवे को चले हैं शृंगार थी राम जू सुखमा औ जानकी जू प्रेम
औ लछिमन जू हैं कै धो विधाता ने भग लोगन के सुष देइवे हेतु
अङ्गत इन्ह तीनों मूर्ति के एकच करि पठए हैं वा विचित्र वेद चई
॥ ३ ॥ प्रेम करि के कनौड़ा केहि के नही भए भाव सब के भए ॥ ४ ॥ २४ ॥

मू० । वयकिशोरगोरेसांवरेधनुवानधरेहैं । सबअंगसहजसुहाव-
नेराजिवजीतेनयननिवदननिविधुनिदरेहैं । टेक । तनसुमुनि
पठकरिकसेजटामुकुटकरेहैं । मंजुमधुरस्टुमूरतिपानछौन
पायनिकैसेधौपथविचरेहैं ॥ १ ॥ उभयबीचवनितावनीलखि
मोहिपरैहैं । मदनसप्रियासप्रियसषामुनिवेषवनाएलियेस-
नजातहरेहैं ॥ २ ॥ मुनिजहंतहंद्देषनचलेअनुरागभरेहैं ।
रामपथिककृविनिरषिकेतुलसीभगलोगनिधामकामविसरेहै
॥ ३ ॥ २५ ॥

टी० । बैय ह० । राजीव कमल निदरे हैं निरादर किए हैं १ ॥
सुंदर मनोहर मूर्ति कोमल ताह्ल में पनही पगन मे नही ॥ २ ॥
दोउन के बीच मे बनिता वनी है अस हमको लखि परत है किर-

ति सहित वसंत सहित काम मुनि बेष बनाये सब के मन हरे लिए
जात है ॥ ३ ॥ ४ ॥ २५ ॥

मू० । कैसेपितृमातकैसेतेप्रियपरिजनहैं । जगजलधिललामलोने
लोनेगोरेश्याम जिन्हपठयेऐसेबालकनवनहैं ॥ टेक ॥ रूप
केनपारावारभूपकेकुमारमुनि बेषदेषतलोनाईलघुलागतम-
दनहैं । सुषमाकीसरतिसीसाथनिसिनाथमुखीनखसिखअं-
गसवसोंभाकेसदनहैं ॥ १ ॥ पंकजकरनिचांपतीरतरकसक
टि सरदसरोजहूतेसुंदरचरनहैं । सीतारामलखननिहारि
ग्रामनारिकहै हेरिहेरिहेरिहेलीहियेकेहरनहैं ॥ २ ॥ प्रा
नहकेप्रानसेमुजीवनकेजीवनसे प्रेमहूकेप्रेमरंकछापिनकेध
नहैं । तुलसीकेलोचनचकोरनिकेचंद्रमासे आछेमनमोरचि
तचातककेधनहैं ॥ ३ ॥ २६ ॥

टी० । कैसेइ० । जगत रूप समुद्र के रत्न ॥ १ ॥ इहां पारा
वार अर्वाध के अर्थ मे है अर्थात् रूप की सीमा नहीं है निसिनाथ
मुखी चन्दमुखी ॥ २ ॥ सरद सरोज सरद के कमल हेरि हेरि हे-
रि हेली कहैं हे सखी देखु देखु देखु इहां अति हर्ष मे बीप्सा इ
रंक छपिन के दरिद्र छपिनि के मन रूप मोर औ चित्त रूप
चातक के आछे कहैं नवीन सजल मेघ हैं ॥ ४ ॥ २६ ॥

मू० । राग भैरव । देषिद्वैपथिकगोरेसांवरेसुभगहैं सुतियसलोनी
नीसंगसोहतसुभगहैं । टेक । सोभासिंधुसंभवसेनीकेनीके
नगहैं मातृपितृभागबसगएपरीफगहैं ॥ १ ॥ पायनपनह्यौन
रुदुपंकजसेपगहैं । रूपकीमोहनीमेलिमोहेअगजगहैं ॥ २ ॥
मुनिवेषधरेधनुसायकसुलगहैं । तुलसीहियेलसतलोनेलोने
डगहैं ॥ ३ ॥ २७ ॥

टी० । देखि इ० ॥ १ ॥ सोभा समुद्र से उत्पन्न आछेआछे मणि
हैं माता पिता के भाग बस फांदा मे परि गए है ॥ २ ॥ पायन

चरनन मे मेलि डारि अग अस्थावर जंगम ॥ ३ ॥ सुलग है सुंदर
लागत है डग फाल जाको कोऊ देश मे डेग कहत है ॥ ४ ॥
॥ २७ ॥

सू० । पथिकपयादेजातपंकजसेपायहैं । मारगकठिनकुसकंटकनि-
कायहै टेक ॥ सखिभूखेप्यासेपैचलतचितचायहैं । इन्हकेसु-
छतसुरसंकरमहायहैं ॥ १ ॥ रूपसोभाप्रेमकैसेकमनीयका
यहै । मुनिवेषकियेकिधौ ब्रह्माजीवमायहै ॥ २ ॥ बीरवरि-
आरधोरधनुधररायहैं । दशचारिपुरपालआलिउरगायहैं ॥
३ ॥ मगलोगदेषतकरतहायहायहैं वनइनकोतौवामविधि
केवनायहैं । धन्यतेजेमीनसेअवधिअंबुआयहैं । तुलसीप्रभु-
सोजिन्हकेभलेभायहैं ॥ ४ ॥ २८ ॥

टी० । पथिक दू० निकाय समूह ॥ १ ॥ चाय आनन्द ॥ २ ॥ रूप
श्रीरामजी सोभा श्रीजानकीजू प्रेम श्रीलछिमनजू माय माय ॥ ३ ॥
राय राजा हे सखी चौदहो भुअन के पालक उरगाय हैं परमेश्वर
हैं ॥ ४ ॥ इनको जोवन तो विधाता बनाय के वाम है ॥ ५ ॥ आय
है यह जो अवधि रूपी जल है तेहि मे जेमीन से ह्वै रहे हैं ते ध
न्य हैं औं जिन्ह के भले भाव इनसे हैं तेज धन्य ॥ ६ ॥ २८ ॥

सू० । राग असावरी । सजनीहैंकोउराजकुमार । पंथचलतस्टदुप
दकमलनदोउसीलरूपआगार । आगेराजिवनयनस्यामतन
सोभाअमितअपार । डारोवारिअंगअंगनिपरकोटिकोटिस
तमार ॥ १ ॥ पाछेगौरकिशोरमनोहरलोचनवदनउदार ।
कटितनोरकसेकरसरधनुचलेहरनकितिभार ॥ २ ॥ जुगल
बोचसुकुमारिनारिएकराजतिबिनहिंसिंगारदूंद्रनीलहाटक
मुकुतामनिजनुपिहरेमहिहार ॥ ३ ॥ अवलोकज्जभरिनय
नविकलजनहोज्जकरज्जसुविचार । पुनिकह्यहसोभाकहं
लोचनदेहगेहसंसार ॥ ४ ॥ सुनिप्रियवचनचितैहितकैरधु

नाथप्रपासुखसार । तुलसिदासप्रभुहरेसवनिकेभनतनरहिन
सँभार ॥ ५ ॥ २८ ॥

टी० । सजनीइ० ॥ १ ॥ २ ॥ उदार कहैं सुंदर ॥ ३ ॥ इहां म
रकत मनि श्रीराम सोना श्रीलक्ष्मिनजी मोती श्री जानकीजी है
॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ २९ ॥

मू० । राग टोड़ी । देखिगीसखीपधिकनखसिखनीकेहैं । नीलेपीरे
कमलसेकोमलकलेबरनितापसङ्गवेषकियेकामकोटिफ्रीकेहैं
टेकः । सुदतसनेहसीलसुखमासुखसकेलिबिरिचेविरचिकि
धौअभियअमीकेहैं । रूपकीसीदामिनीसोभामिनीसहृदिसं
गउमङ्गरमातेआछेअंगअंगतीकेहैं ॥ १ ॥ वनपटकसेकटितू
नतीरधनुधरेधीरबीरपालकछापालसबहीकेहैं । पानह्यौनच
रनसरोजनिचलतमगकाननपठाएपितुमातुकैसेहीकेहैं ॥ २ ॥
आलीअवलोकिलेऊनवननिकोफूलएऊलांभके सुलाभसुख
जीवनसेजीकेहैं । धन्यनरनारिजेनिहारिविनुगाहकह्लंआप
ने २ मनमोलविनुबीकेहैं ॥ ३ ॥ त्रिवुधवरखिफूलहरखिहि
येकहतग्रामलोगमगनसनेहसियपीकेहैं । जोगीजनअगमद
रसपाथीपावरनिमुदितवचनसुनिचुरपसचीकेहैं ॥ ४ ॥ प्रीति
केसुवालकसेलालतसुजनमुनिमगचारुचरितलघनरामसीके
हैं । जोगनविरागजागतपनतीरथत्यागएहीअनुरागभागखु
लेतुलसीकेहैं ॥ ५ ॥ ३० ॥

टी० । देखिइ० । रूप कीसी दामिन दामिन की ऐसो रूप है
॥ २ ॥ वन पट वल्क लादि ॥ ३ ॥ बीके हैं विकाए हैं ॥ ४ ॥ सिय
पीके सनेह मेग्राम लोग मगन हैं श्री देवता हिय मे हरषि फूल
वरषि कहत हैं कि जोगी जन को जो दरस अगम सोपा वरन पा
यो यह देवतन के जे वचन हैं ते सुनि के इन्द्र औ इन्द्रानी मुदित
भए ॥ ५ ॥ मग के सुंदर चरिच जे ओलखन श्री राम श्री जानकी

जीके हैं तेई प्रीति के सुंदर बालक समान हैं बालक कों जैसे पिता माता दुलारत तैसे इहां सुंदर जन मुनि ते दुलारत औ एनही चरिच न के अनुराग ते जो गादि बिना तुलसी के भाग खुले हैं ॥
॥ ६३० ॥

म० । रीतिचलिवेकीचाहिप्रीतिपहिचानिकै आपनीआपनीकहैप्रे मपरवसअहैमंजुष्टदुवचनसनेहसुधासानिकै । सांवरेकुंअर कैचरनकेवराद्चिन्हबधूपगधरतिकहाधौजियजानिकै । जुग लकमलपदअंकजोगवतजातगोरे गातकुंअरसहिमामहामा निकै ॥ १ ॥ उन्हकीकहनिनीकीरहिनिलखनसीकीतिन्हकी गहनिजेपथिकउरआनिकै । लोचनसजलतनपुलकमगनमन होतभरिभागीजसतुलसीबखानिकै ॥ २ ॥ ३१ ॥

टी० । रीति ६० । अोजानकी रामलषनकी चलिवेकी रीतिचा हि कहै देखि कै औ प्रीति पहिचानिकैजे नरनारिप्रेम ते प्रवस हैं ते सुंदर कोमल वचन न कों खेह रूपी अमृत मे सानिकै आपनीआपनी उक्ति कहत हैं ॥ १ ॥ २ ॥ उनकी कहनि नीकी है औ लखन सीकी रहनि नीकी है औ जे पथिक ओराम आदि के उर मे आनि कै लोचन सजल तन पुलक मगन मन होत तिन्ह की ग हनि नीकी है औ तुलसीउ यस बखानिकै बड़भागे है ॥ ३ ॥ ३१ ॥

म० । राग के द्वारा । जेहिजेहिमगसियरामलखनगएतहूतहँनर नारिबिनुछरनिछरिगे निरखिनिकाईअधिकार्इविथकितभई वचबपुनयनसरसोभासुधाभरिगे । जोतेविनुवयेविनुनिफननि रायेविनुसुखतसुखेतसुखसालिफूलिफरिगे । मुनिऊंमनोरथ कोअगमअलव्यलाभसुगमसोरामलघुलोगनिकोकरिगे ॥ १ ॥ लालचीकौडीकेकूरपारसपरेहै पातेजानतनकोहै कहाकी वोसोविसरिगे । बुधिनविचारनविगारनसुधारसुधिदेहगेह नेहनातेमनतेनिसरिगे ॥ २ ॥ बरषिसुमनसुरहरषिहरषि

कहै अनायासभव निधिनीचनीकेतरिगे । सोसनेहसमउ
सुमिरितुलसिह्लसेकेभलीभांतिभलेपैतभलेपासेपरिगे ॥ ३ ॥

॥ ३२ ॥

टी० । जेहि दू० जेहि जेहि राह से श्रीजानकी राम लघन गये
तहां तहां नर नारि बेटो ने छरि गये अधिक सुंदराई देखि कै
वचन सरीर विशेष थकित भए औ नैन रूपी तडाग मे सोभा रू-
पी मिष्ट जल भरि गए वा सुधा अमृत ॥ १ ॥ विना जो ते विना वा
एनिफन कहै अंकुर निराए विना अर्थात् मोह्ये विना सुकृत रूप
सुंदर खेत मे सुख रूप धान फलिके फरि गयो इहां जौतना आदि
कर्ष उपासना ज्ञान है जो लाभ मुनिह्ल के मनोरथ को अगम आ
अलभ्य है सो लाभ श्रीराम छोटे लोगन को भी सुगम करि गए
॥ २ ॥ जे कूर कौड़ी के लांलची रह्ये तिनके पारस सम श्रीरामदि
पथिक पाले परे है ताते अध्यास रहित भए नहीँ जानत हैं कि हम
कौन हैं औ कहा करनो है सो विसरि गए न बुद्धि है न विचार है न
विगार सुधार की सुधि है देह गृह नेह नाता सब मन ते निकल
गये ॥ ३ ॥ सम उसमें पैत दांव ॥ ४ ॥ ३२ ॥

मू० । बोले राजदेनकोरजायसुभोकाननकोअननप्रसन्नमनमोद
बडोकजुभो मातुपितुबंधुहितआपनोपरसहितमोकोवोस-
ह्लकैईसअनकूलआजुभो । टेक । असनअजीरनकोसमुक्ति
तिलकतज्यौविपिनगवनभलेभूषेकौमोनाजुभोधरमधुरीनधी
रबीररघुबीरजूकोकोटिराजसरिसभरतजूकोराजुभो ॥ १ ॥
औसौवार्तेकहतसुनतमगलोगनकीचलेजातभ्वातदोउमुनिको
सोसाजुभो । ध्याइवेकोगाइवेकोमेइवेसुमिरिवेकोतुलसीको
सवभांतिमुषदससाजुभो ॥ २ ॥ ३३ ॥

टी० । बोले दू० । राज देइवे के लिए तो बोलाए औ आज्ञा
दिए कानन को पर रघुनाथ को मुष प्रसन्न औ मन मे आनन्द बडो

काज बन जावो विचारि होत भयो औ अस गुनत भए कि माता कैकेई को औ पिता को बंधु भरत को हमारे बन जावे मे हित है औ अपना तो परम हित है सो पर बीमोविश्वे आजु ईश्वर अनुकूल भयो परम इत कहिवे को यह भाव कि पितु वचन पालिवे ते बे परिश्रम परम धरम सुलभ भयो वा इहां माता आदि को हित औ बन मे मुनि आदि के दरसन ते आपन हित ताते वा जेहि हेतु अवतार लिए सो कार्य बन जावे ते होय गो ताते परम इत ॥ १ ॥ अजौरन पर को भोजन सम राजतिलक को समुक्ति के त्याग दियो औ निपट भूषे को अनाज प्राप्ति होना सम बन गमन भयो भाव जैसे अन्न मिलिवे ते भूषा प्रसन्न होत तस प्रसन्न भए धर्म रूपी बोझा को धरनि हार धीर वीर जो रघुवीर जूतिन को अपने एक राज को को कहै कोटि राज सम भरत जू को राज पाइवो भयो ॥ २ ॥ मुनि के समान साजु भयो है जेहि दोऊ भा-
दून को ते मग लोगन की ऐसी बाते जे ते कहत सुनत चले जात है ध्याइवै आदि को तुलसी को सब भांति ते सुख दाता यह पद्य को समाज भयो ॥ ३ ॥ ३३ ॥

सू० । सिरिससुमनसुकुमारिसुषमाकीसीवसीयरामबडेहीसकोच संगलईहै भाईकेप्रानसमानप्रियाकेप्रानकेप्रानजानिवानिप्री तिरीतिरुपासीलमईहै । अलंवालअवधसुकामतरुकामवे-
निदूरिकरिक्केईविपतिबेलियईहै आपुपतिपूतगुरजनप्रिय परिजनप्रजाह्णकोकुटिलडुसहदसादईहै ॥ २ ॥ पंकजसेप-
गनिपानह्यौनपरुषपंथकेमेनिवहेहैनिवहैगेगतिनईहै । ए
हीसोचसंकटमगनमगनरनारिसवकीसुमतिरामरागरंगरई
है ॥ ४ ॥ एककहैवामविधिदाहिनोहमकोभयोउतकीन्ही
पीठिइतकोसुडीठिभईहै । तुलसीसहितवनवासीमुनिहम-
रिऔअनायासअधिकअघाद्वनिगईहै ॥ ४ ॥ ३४ ॥

टी० । सिरसद् । भाई जो श्री लघन लाल तिन के प्रान समान
 श्री प्रिया जो श्री जानकी जू तिन के प्रान के प्रान श्री कृपा सील मई
 जो श्री राम सो सिरिम के फूल सम सुकुमारि श्री परम सोभा की
 मर्यादा जो श्री जानकी जू तिन की बानि कहैं सुभाव श्री प्रीति
 रीति जानि कै बड़ेही संकोच सें संग मे लई है ॥ १ ॥ थाल्हा रूप
 श्री अवध है तेहि मे सुंदर कल्पवृक्ष श्री कल्पलता के समान श्री
 राम जानकी हैं तिन कों कैकेई ने दूरि करि के कै विपति की
 बंवरि बोई है तेहि विपति बौर करि कुटिल कैकेई ने अपने को
 श्री महाराज आदि कों दुसह दसा देति भई ॥ २ ॥ एक तो कम
 ल से कोमल चरन है ताहू पर जू तो नाही श्री राह कठोर है
 तेहि मे कैसे निवहे है श्री कैसे निवहै गे यह नई गति है भाव
 आजुलों अस नही देषा एही सोच श्री संकट मे मग के नर नारि
 डबे है श्री सब की सुंदर मति श्री राम को प्रीति रूपी रंग मे
 रंगी है ॥ ३ ॥ पुर नर नारि कहत है कि बन बासी मुनि सहित
 हम सब कै अनाआस अधिक अघाय कै बनि गई है ॥ ४ ॥ ३४ ॥

मू० । राग गौरी । नीकेकैमैन बिलोकनपाए सषिणहिमगजगपथि
 कमनोहरवधुविध्वदनि समेतसिधाए । नयनसरोजकिशोर
 बयसबरसीसजटारचिमुकुटवनाए कटिमनिवसनतूनधनुसर
 करख्यामलगौरसुभायसुहाए ॥ १ ॥ सुंदरवदनविमालबां-
 ऊंउरतनुक्किटिमनोजलजाए । चितवतमोहिलगीचौधो
 सीजानोनकौनकहांतेधौआए ॥ २ ॥ मनगधौसंगसोचवस
 लोचनमोचतवारिकितोसमुक्काए । तुलसिदासलालसादरस
 कीसोईपुरबैजेहिआनिदेषाए ॥ ३ ॥ ३५ ॥

टी० । नीके ६० ॥ ३५ ॥

मू० । पुनिनफिरेदोउबीरबटाऊ ख्यामलगौरसहजसुंदरसषिवार
 कवडरिविलोकिवेकाऊ । करकमलनिसरसुभगसरासनक-

टिमनिवसननिषंगसुहाए भुजप्रलंबमवअंगमनोहरधन्यसो
जनकजननिजेडिजाए ॥ १ ॥ सरदविमलविधुवदनजटासि-
रमंजुलअरुनसरोरुहलोचन । तुलसिदासमारगमैराजतको
टिमदनमदमोचन ॥ २ ॥ ३६ ॥

टो० । पुनि ६० ॥ ३६ ॥

म० । राग केदारा । आलीकाहूतोबूभेनपथिककहांधौमिधैहै क
हांतेआएहैकोहै कहानामस्यामगोरेकाजकैकुसलफिरिए-
हिमगअैहै टेक । उठतवयसममिभीजतसलोनेशुठिसोभा
दिषवैयाबिनुवितहिबिकैहै हियेहेरिहरिलेतलीनोललना
समेतलोयननिलाहूदेतजहांजहजैहै ॥ १ ॥ रामलषनसि
यपथिककीकथापृथुलप्रेमविथकीकहतिसुमुषिमवैहै । तुल
सीतिन्हसरिसतेउभूरिभागजेउसुनिकैसुचिततेहिसमैसमैहै
॥ १ ॥ २ ॥ ३७ ॥

टो० । आली ६० ॥ १ ॥ उठत वैस चढ़ती अवस्था ममिभीजत
रेख उठान ॥ २ ॥ पृथुल विस्तृत तेहि समै समै है वनवास के स
मै की कथा मे समाडिंगे ॥ ३ ॥ ४ ३७ ॥

म० । बडतदिनवीतेसुधिकछुनलही गएजेपथिकगोरेसांवरेसलो
नेसपिसंगनारिसुकुमारिरही । टेक । जानिपहिचानिविनु
आपुतेआपनेहुतेप्राणहुतेप्यारेप्रियतमउपही । सुधाकेसने
हहूकेसारुलेसंवारेविधिजैसेभावतेहैभांतिजातनकही ॥ १ ॥
बडरिगिलोकिवेकवडंकहततनपुलकिनयनजलधारवही ।
तुलीप्रभुसुमिरिग्रामजुवतीसिथिलविनुप्रयासपरीप्रेमसहो ॥
॥ २ ॥ ३८ ॥

टो० । बडत ६० ॥ १ ॥ बिना जान पहिचान के उपही कहें प
रदेसी है पर अपने सरीर ते औ पुत्रादि हुते औ प्राणहुं ते प्रिय
तम प्यारे है ॥ २ ॥ ३ ॥ ३८ ॥

मू० राग गौरी । आलीरीपथिकजेएहिपथपरवसिधाए । तेतोरा
मलखनअवधतेआए संगसियसवअंगसहजसुहाए । रतिका
मरितुपतिकोटिकलजाए ॥ १ ॥ राजादशरथरानोकोसिला
जाए । कैकेईकुचालिकरिकाननपठाए ॥ २ ॥ वचनकुभामिनि
केभूपहिअ्यौभाए । हायहायरायवामविधिभरमाए ॥ ३ ॥
कुलगुरसचिवकाऊनसमुभाए । कांचमनिलैअमोलमानिक
गवांए ॥ ४ ॥ भागमगतोगनिकेदेखनजिनपाए । तुलसीस
हितजिन्हगुनगनगाए ॥ ५ ॥ ३६ ॥

टी० । आली ६० । इहां कांच मणि सत्य है ॥ १ ॥ ३६ ॥

मू० । सखिजबसेसीतासमेतदेखेदोउभाई तवतेपरैनकलकछुनसु-
हाई । नखसिखनीकेनीकेनिरखिनिकाईतनसुधिगईमनअ
नतनजाई ॥ १ ॥ हेरनिविहसनिहियेलियेहैचुराई । पावन
प्रेमविवसभईहौंपराई ॥ २ ॥ कैसेपितुमातुप्रियपरिजनभाई
जीवतजीवकेजीवनवनहिपठाई ॥ ३ ॥ समउसुचितकरिहि
तअधिकार्ई । प्रीतिग्रामवधुन्हकीतुलसीहंगार्ई ॥ ४ ॥ ४० ॥

टी० । सखि ६० समौ सुचित करि हित अधिकार्ई । अधिक हि
त तेसो समै सुंदर चित्त मे करि के ग्राम वधुन की प्रीति तुलसिउ
ने गार्ई ॥ ४० ॥

मू० । राग केदारा । जवतेसिधाएएहिमारगलखन रामजानकी
सहिततवतेनसुधिलहीहै । अवधगएधौंफिरिकैधौंचढेबिंधु
गिरिकैधौंकहूंरहेसोकछुनकाऊकहीहै । टेकः । एककहै
चिचकूटनिकटनदीके तीरपरनकुटीरकरिबसेवातसहीहै ।
मुनियतभरतमनाइवेकोआवतहै होइगीपैसोइजोविधाता
चित्तचहोहै ॥ १ ॥ सत्यसंधधरमधुरीनरघुनाथजुकोआप-
नीनिवाहिवेनूपकीनिरबहीहै । दशचारिवरषविहारवनप
दचारकरिवेपुनीतसैलसरसरिमहीहै ॥ २ ॥ मुनिसुरसुज

नसमाजकेसुधारिकाज विगरिविगरिजहांजहांजाकीरही-
है । पुरपांडधारिहैउधारिहैतुलसीह्लसेजनजिन्हजानिकैग
रोवीगादेगहोहै ॥ ३ ॥ ४१ ॥

टी० । जवतेइ० ॥ १ ॥ २ ॥ महाराज की तो निबहि गई है पर
श्री रघुनाथ जू को आपनी निबाहिबे को है सर तजाव सरि नदी
३ ॥ ४ ॥ ४१ ॥

मू० । राग सारंग । एउपहीकोउकुंअरअहेरी । ब्यामगौरधनु
वानतूनधरचित्रकूटअवआइरहेरी । टेक । इन्हहिबज्जतआ
दरतमहामुनि समाचारमेरेनाहकहेरी । वनिताबंधुसमत
बसतवन पितुहितकठिनकलेसमहेरी ॥ १ ॥ बचनपरसपर
कहतिकिरातिनि पुलकगातजलनयनवहेरी । तुलसीप्रभुहि
विलोकितिएकटक लोचनजनुविनुपलकलहेरी ॥ २ ॥ ४२ ॥

टी० । एउपहीइ० । महामुनि अचि वाल्मीक आदि ॥ ४२ ॥

मू० । चित्रकूटअतिविचित्रसुंदरवनमहि पवित्रपावनपयसरितस
कलमलनिकंदिनी । सानुजजहंवसतरामलोकलोचनाभि-
रामबामअंगवामावरविश्वंदिनी । टेक । रिषिवरतहंछंद
वासगावतकलकोविल्हासकिं तनउनमायकायक्रोधकंदिनी
बरविधानकरतगानवारतधनमानप्राण भरनाभरतभिगंभिं
गंभिंजलतरंगिनी ॥ १ ॥ बरविहारचरनचारुपांडरचंपक
चनार करनहारवारपारपुरपुरंदिनी । जोवननवठारतठार
दुत्तमत्तमृगमराल मंजुमंजुगंजतहैअलिअलिंगिनी ॥ २ ॥ चि
तवतमुनिगनचकोरबैठैनिजठौरठौर अछयअकलंकसदरचं-
दचंदिनी । उदितसदावनअकासमुदितवदततुलसिदासजयज
यरघुनंदनजयजनकंदिनी ॥ ३ ॥ ४३ ॥

टी० । कलंक रहित चंद श्री रघुनाथ है औचंदनी श्री जानकी
जू है औ इहां आकाश बन है ॥ ४३ ॥

म० । फटिकसिलामृदुविसालसंकुलसुरतरुतमालललितलताजाल
हरतिच्छबिबितानकी मंदाकिनितटनितीरमंजुलमृगविहंगभी
रधीरमुनिगिरागंभीरसामगानकी । मधुकरपिकवरहिमुषर
सुंदरगिरिनिरभरभरजलकनघनछांङ्कन्दप्रभाभानकी स-
बरितुरितुपतिप्रभाउसंतवहैत्रिबिधवाउजनुविहारवाटिकान्द
पपंचवानकी ॥ १ ॥ विरचिततङ्परनसालअतिविचित्रलप-
नलालनिवसतजहंनितकृपालरामजानकी । निजकरराजी
वनयनपल्लवदलरचितसयनप्यासपरसपरपियूषप्रेमपानकी २॥
सियअंगलिषैधातुगमसुमननिभूषनविभागतिलककरनिक्यों
कहौकलानिधानकी । माधुरीविलासहासगावतजसतुलसि
दासवसतहृदयजोरौप्रियपरमप्रानकी ॥ ३ ॥ ४४ ॥

टी० । कोमल औ विसाल फटिक सिला है इहां सीता राम के
बैठवे ते सिला कोमल है गई है ताते मृदु कहे अवहीं ताईं चि-
न्ह बना है औ तहां सबन कल्पवृक्ष औ तमाल है औ सुंदर ति-
न्ह वृक्षन पर लतन के समूह है ते चंद्र वा आदि की छवि कों हरति
हैं सो सिला मंदाकिनी नामा नदी के तीर मे है तहां सुंदर मृग
औ पक्षिन की भीर है औ धीर जो मुनि है तिन की गम्भीरवानी
सामवेद के गान की है वा मृग विहंग धीर जो है सोई धीर मुनि
है औ तिन की गिरा जो है सोई गम्भीरता साम गान की है
॥ १ ॥ म्बर औ कोइल औ मयूर शब्दायमान हैं औ सुंदर पर्वत
न ते भरना भरत हैं सोई जल के दूंद है औ वृक्षादि के छांड़ हैं
सो मेघ हैं औ तिन्ह भरनन पर सूर्य की प्रभा जो पड़े है सो
छन प्रभा कहे विजुली है इहां प्रभा शब्द को देहली दीपक न्याय
करि दूनो ओर लगावना औ सब ऋतु मे वसंत ऋतु को प्रभाव है
ताते निरंतर सीतल मंद सुगंध वायु बहत है मानो महाराज
कामदेव के विहार करने की वाटिका है ॥ २ ॥ ३ ॥ धातु जो मन

सिला आदि तिन्ह बे श्री जानकी जी के अंग मे लिखे श्री फूलनि करि विशेष भाग भूषनन को किए अर्थात् अनेक भूषन बनाए श्री कला कारीगरी ताके निधान जो रघुनाथ तिन की तिलक करनि क्यों कहीं भाव कहा नही जात है ॥ ४ ॥ ४४ ॥

म० । रागकेदारा । लोनेलाललषनसलोनेरामलोनीसियचारुचि चकूटबैठेसुरतरुतरहै गोरेसांवरेसरीरपीतनीरनीरजमेप्रे-
मरूपसुषमाकेमनसिजसरहै । लोनेनषसिषनिरूपमनिरषि
वेजोगवड़ेउरकंधरविसालभुजवरहै लोनेलोनेलोचनजटनि
केसुकुटलोनेलोनेबदननिजीतेकोटिसुधाकरहै ॥ १ ॥ लो-
नेलोनेधनुषविषिषकरकमलनिलोनेमुनिपटकटिलोनेसरध
रहै । प्रियाप्रियबंधुकोदेषावतविटपवेलिमंजुकुंजसिलातल
दलफूलफरहै ॥ २ ॥ रिषिन्हकेआश्रमसराहैष्टगनामकहै
लागीमधुसरितभरतरनिरभरहै । नाचतवरहीनीकेगावतम
धुर्पापकबोलतविहंगनभजलथलचरहै ॥ ३ ॥ प्रभुहिंबिलो-
किमुनिगनपुत्रकेकहतभूरिभागभएसबनीचनारिनरहै । तु
लसीसोसुषलाहलूटतकिरातकोलजाकोसिषिकतसुरविधि-
हरीहरहै ॥ ४ ॥ ४५ ॥

टी० । प्रेम औ रूप औ सुषमा के सरौर जे गोरे सांवरेते काम देव के तड़ाग के पीत नील कमल सम है ॥ १ ॥ कंधर कांधा सु-
धाकर चंद्रमा ॥ २ ॥ विषिष कहै वास सरधर कहै तरकस पहिले
तुक में तीनों मूर्ति को वरनन किए फिर दोऊ भाइन के अब के-
वल रघुनाथ को प्रिया बंधु को देषाउव लिषत है ॥ ३ ॥ ऋषिन
के आश्रमन को ब्रह्मानत है औ ष्टगन के नाम कहत है अर्थात्
यह सांवर है यह चीतर है औ इहां मधु लगी है यह नदी है
ए भरना भरि रहे है अछी भांति ते मोर नाचत है अमर गान
करत है कोइल और नभचर जरचर थलचर विहंगन बोलत है

अस श्री रघुनाथ प्रिया श्री अनुज सन कहत हैं ॥ ४ ॥ सिंसिकत
कहे ललचत ॥ ५ ॥ ४५ ॥

म० । रागसारंग । आदूरहेजवतेदोउभाई तवतेचिचकूटकाननछ-
विदिनदिनअधिकअधिकअधिकाई । सीतारामलघनपदअं
कितअवनिसोहावनिवरनिनजाई मंदाकिनिमज्जनअवलोक
तत्रिविधपापचयतापनमाई ॥ १ ॥ उकठेउहरितभयेजलय-
लरुहनिननूतनराजीवसोहाई । फूलतफलतपल्लवतपलुहत
बिटपबेलिअभिमतसुषदाई ॥ २ ॥ सरितभरनिसरसीरुहसं
कुलसदनसंवारिरमाजनुछाई । कूजतविहंगमंजुगुंजतअलि
आतपथिकजनुलेतबोलाई ॥ ३ ॥ त्रिविधसमीरनीरभरभर
ननिजहंतहरहेरिषिकुटीवनाई । सीतलसुभगमिलनिपरता
पसकरतजोगजपतपमनुलाई ॥ ४ ॥ भएसबसाधुकिरातकि-
रातिनिरामदरसमिटिगईकलुषाई । षगढगमुदितएकसंग
विहरतसहजविषमबडबैरविहाई ॥ ५ ॥ कामकेलिवाटिका
विबुधवनलघुउपमाकविकहतलजाई । सकलभुवनसोभासके
लिमानोरासविपिनिविधिअनिबसाई ॥ ६ ॥ वनमिसुमुनि
मुनितियमुनिवालकवरनतरघुवरश्मिलबडाई । पुलकिनिधि
लतनुसजलधिलोचनप्रमुदितमनजीवनफलपाई ॥ ७ ॥ क्वीं
कहींचिचकूटगिरिसंपतिमहिमामोदमनोहरताई । तुलसी
जहंबसिलपनरामसियअनंदअवधिअवधविसराई ॥ ८ ॥
॥ ४६ ॥

टी० । त्रिविध पाप कायिक वाचिक मानसिक चयताप दैहिक
दैविक भौतिक नसात है । महाभारते वनपर्वणि ततोगिरिवरश्रेष्ठे
चिचकूटेविशांपते मंदाकिनी समासाद्य सर्वपापप्रनासिनीम् तत्राभि
षेकंकुर्वीणः पितृदेवार्चनेरतः अश्वमेधमवाप्नोति गतिंचपरमाव्रजेत् ।
जल थल रुह जल के दृक्षथल के दृक्ष राजीव कमल अभिमत

सुषदाई बांझित सुष देनि हारे भाव कल्पवृक्ष समान ॥ ३ ॥ नदिन
 औ तलावन मे सघन कमल है मानो कमल नही है घर बनाइ के
 लक्ष्मी छाई है पत्नी बोलत हैं भंवर गुंजार करत हैं सो बोलत
 गुंजार नही करत है मानो चले जात पथिक को बोलाय लेत है
 ॥ ४ ॥ ५ ॥ कलुषाई मलिनता ॥ ६ ॥ काम की बिहार बाटिका औ
 विबुध बन नंदन चैत्र रथादि ए लघु हैं ताते उपमा कहत मे कवि
 लजात हैं बनमिसुवन के वरनन के व्याज से ॥ ८ ॥ ९ ॥ ४६ ॥

मू० । रागगौरी । द्वेषतचित्रकूटवनमनअतिहोतज्जलास सीतारा-
 मलषनप्रियतापमदंनिवास । सरितसुहावनिपावनिपापह
 रनिपयनाम सिद्धसाधुसुरसेवितदेतिसकलमकाम ॥ १ ॥
 बिटपवेलिनवकिसलयकुसुमितसघनसुजाति । कंदमूलजल
 थलरुहअगनितअनवनभांति ॥ २ ॥ वंजुलमंजुवकुलकुलसु
 रतरुतालतमाल । कदलिकदंबसुचंपकपाटलपनसरमाल ॥
 ॥ ३ ॥ भूरुहभूरिभरेजनुक्खविअनुरागसुभाग । वनविलोकि
 लघुलागाहिंविपलविबुधवनवाग ॥ ४ ॥ जादूनवरनिरामवन
 चितवतचितहरिलेत । ललितलताद्रुमसंकुलमनज्जंमनोज-
 निकेत ॥ ५ ॥ सरितसरनिसरसोरुहफूलेनानारंग । गंजत
 मंजुमधुपगनकूजतविविधविहंग ॥ ६ ॥ लघनकहेउरघुनंद-
 नदेधियविपिनसमाज । मानज्जंचयनमयनंपुरआयउप्रियरि
 तुराज ॥ ७ ॥ चित्रकूटपरराउरजानिअधिकअनुरागु । सषा
 सहितजनुरतिपतिआयेउषेलनफागु ॥ ८ ॥ भिल्लिभांभभा
 रनाडफपनवष्टदंगनिसान । भेरिउपंगभृंगरवतालकौरकल
 गान ॥ ९ ॥ हंसकपोतकवृतरबोलतवक्त्रचकोर । गावतमन
 ज्जंनारिनरमुदितनगरचज्जंओर ॥ १० ॥ चित्रविचित्रविबि-
 धिष्टगडोलतडोगरडांग । जनुपरवीथिन्हविहरतकैलसंवारे
 स्वांग ॥ ११ ॥ नटहिमोरपिकगावहिंसुस्वररागबंधान । नि

लजतदनतदनतदनोजनुषेलहिंसमयसमान ॥ १२ ॥ भरि
 भरिसूँडकरनिकहंजहंतहंडारहिंवारि । भरतपरसपरपिच-
 कनिमनज्जंमुदितनरनारि ॥ १३ ॥ पीठचढादूसिसुन्हकपि
 कूदतडारहिंडार । जनुमुडलादूगोरूमभिभएषरनिअसवार
 ॥ १४ ॥ लिएपरामसुमनरसडोलतमलयसमोर । मनहुंअर
 गजाक्षिरकतभरतगुलालअवीर ॥ १५ ॥ कामकौतुकीएहिधि
 धिप्रभुहितकौतुककीन्ह । रीभिरामरतिनाथहिजगविजई-
 वरुदीन्ह ॥ १६ ॥ दुषवज्जदासमोरजनिमानेज्जमोरिरजाइ
 भलेहिनाथमाथेहिधरिआयसुचलेउवजाइ ॥ १७ ॥ मुदित
 किरातकिरातिनिरघुवररूपनिहारि । प्रभुगुनगावतनाचत-
 चलेजोहारिजोहारि ॥ १८ ॥ देहिंअसीसप्रसंसहिमुनिमु
 रवरघाहिंफूल । गवनेभवनराषिउरमूरतिमंगलमूल ॥ १९ ॥
 चिचकूटकाननकविकोकविंवरनैपार । जहंसियलपनसहित
 नितरघुवरकरहिंविहार ॥ २० ॥ तुलसिदासचांचरिमिसिक
 हेरामगुनग्राम । गावहिंसुनहिंनारिनरपावहिंसवअभिराम
 ॥ २१ ॥ ४७ ॥

टी० । पय कहै पय खनी ॥ २ ॥ नव किसलै नवीन पल्लव अन
 वन भांति अनेक भांति ॥ ३ ॥ वंजुल वेंत वकुल कुल मौल सरिन
 के समूह पाटल कहै पांडर पनस कटहर रसाल आम ॥ ४ ॥ भू-
 रुह वृक्ष ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ लपन कहत भए की रघुनंदर विपिन
 को समाज देषिए मानो आनद युक्त कामदेव के पुर मे प्रिय रित्त
 राज आयो अब दूसमर उत्प्रेक्षा कहत है ॥ ८ ॥ ९ ॥ भित्तो भौ-
 गुंर पनव टोल भेरी नगारा उषंग मुरचंग ॥ १० ॥ कपोत यद्यपि
 कबूतर का नाम है पर इहां कुमरी जानमा काहे ते कि कबूतर
 पृथक लिषा है चक्र चकवा ॥ ११ ॥ डोगंर डांग पर्वत कैराह ॥ १२ ॥
 नटहिं नाचहिं समै समान फागुन मास के अनुकूल ॥ १३ ॥ क

निकर हंथिनी हाथी वारि जल ॥ १४ ॥ इहां खर के स्थान मे बां
 दर है औ बच्चा जो पीठ पर चढ़े हैं सो सवार के स्थान मे हैं
 लाल मुंह वाले बच्चा मानो गेरू लगाए हैं काले मुख वाले बच्चा
 मानो मसी लगाए हैं ॥ १५ ॥ मलय चल को जो दक्षिण वायु
 है सो फूलन को पराग औ रस लिए डोलत है मानो रस नञी
 है घोरा भया अरगजा है ताको छिरकत है औ पराग नञी है
 गुलाल अघोर हेंतासे भरत है ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
 ॥ २१ ॥ चांच मिस्र कडै होरी मे चारं गायो जात है तेहि के बहा
 ना से ॥ २२ ॥ ४७ ॥

मू० । रागवसंत । आजुवन्यो है विपिनिदेशोरामधीर । मानोषेलत
 फागमुदमदनवीर ॥ बटबकुलकदंबनसरसाल । कुसुमित
 तरुनिकरकुरवक्रतमाल ॥ मनोविविधप्रेषधरेकैलजुथ । वि-
 चवौचलताललनावरूथ ॥ १ ॥ पनवानकनिरभरअलिउपं-
 ग । बोलतपारावतमानोडफस्टंग ॥ गायकसुककोकिलभि
 ल्लिताल । नाचतवज्रभातिवरहिमराल ॥ २ ॥ मलयानिल
 सीतलसुरभिमंद । वहसहितसुमनरसरेनुष्टं ॥ मानोछि-
 रकतफिरतसवनिसुरंग । आजतउदारलीलाअनंग ॥ ३ ॥
 ओड़तजीतेसुरनरअसुरनाग । इठिसिद्धमुबिन्हकेपंथलाग
 कहतुलसिदासतेहिछाडुमैन । जेहिराषरामराजीवनैन ॥
 ॥ ४ ॥ ४८ ॥

टी० । निकर समूह कुरवक्र को रैया ॥ २ ॥ आनक कहै नगा-
 रा आनकः पटहेभेयीं स्टंगेध्वनदम्बुदे इत्यभिधानात् ढोल भरना
 ढोल औ नगारा है अमर उपंग है ॥ ३ ॥ रेनु पराग ॥ ४ ॥ ओ-
 डत जिते पेलवाड़ मे जीत लिए ॥ ५ ॥ ४८ ॥

मू० । रितुपतिआंधोभलोवन्योवनसमाजु । मानोभएहैमदनमहा
 राजआज ॥ मानोप्रथमफागमिसकरिअनीति । होरीमिस

अग्निपुरजारिजीति ॥ मारुतमिसपत्रप्रजाउजारि । नएनग
 रवसाएविपनिभ्कारि ॥ १ ॥ सिंहासनसैलसिलासुरंग ।
 काननछविरतिपरिजनकुरंग ॥ सितछत्रसुमनवल्लीवितान ।
 चामरसमीरनिरभरनिसान ॥ २ ॥ मानोमधुमाधवदोउअ
 निपधीर । वरविपुलविटपवानैतवीर ॥ मंधुकरशुककोकिल
 बंदिट्टंद । वरनहिंविशुद्धजसविविधिछंद ॥ ३ ॥ महिपरत
 सुमनरसफलपराग । जनुदेतदूतरन्दपकरिविभाग ॥ कलिस
 चिवसहितनयनिपुनमारि । कियोविश्वविवसचारिह्प्रका
 र ॥ ४ ॥ विरहिनपरनितनदूप्रदूमारि । डांठिअहिसिद्धि
 साधकप्रचार ॥ तिन्हकोनकामसकैचापिछाहं । तुलसीजेव-
 सहिरघवीरवाहं ॥ ५ ॥ ४६ ॥

टी० । बसंत ऋतु के आए से बन समाज भलो बन्यो मानो का-
 मदेव महाराज आज भए हैं मानो फाग के बहाना ते प्रथम अनीत
 करि के डोगी के बहाने सत्रु पुर को जारि करि जीति करि वायु
 के बहाने पत्र रूपी प्रजाको उजारि के फिदि सकल बन से नया
 नगर बसाए ॥ १ ॥ सुंदर रंग बालो पर्वत की सिला सिंहासन है
 औ कानन की जो छवि सो काम की पत्नी रति है औ कुरंग ह-
 रिन निकट बर्तीजन है खेत सुमन खेत छत्र है लता मंडप है
 चमर वायु है भ्रमना नगारा है ॥ २ ॥ मानो चैत्र औ वैसाख दोऊ
 धीर सैना परि है अष्ट जे अनेक पिटपै ते तेहि सैना बाने बंदवीर
 है भ्रमर सुआ कोइल ए भाट गन है अनेक छंद मे विशुद्ध यस
 को वरनत है ॥ ३ ॥ महि मे फूल रस फल धूरि परत है सो मानो
 आन राजा विभाग पूर्वक कर देत है कलिकाल रूप सचिव सहित
 नीत मे निपुन जो काम है सो विश्व को चारिउ प्रकार ते अर्थात्
 साम दान भेद दंड करि विशेष वश किए ॥ ४ ॥ विरहिन के ऊपर
 निति नई मारि परति है औ सिद्ध औ साधक प्रचारि करि विशेष

डाटे जात हैं काम तिन्ह की छांड़ को नहीं दब य सकत है जे
रघुवीर के वाहं ते बसत है ॥ ५ ॥ ४६ ॥

मू० । सवदिनचित्रकूटनीकोलागत । बरषागितुप्रवेशविशेषगिरिदे
षतमनअनुरागत ॥ चङ्गदिसिबनसंपन्नविहंगमद्वगबोलतसो
भापावत । जनुखुनरेसदेसपुरप्रभुदितप्रजासकलसुषछावत ॥
॥ १ ॥ सोहृतस्यामजलदद्वदुघोरतधातुरगमगेष्टंगनि । म-
नङ्गंआदिअंभोजविराजतसेवितसुरमुनिभृंगनि ॥ २ ॥ सि
षरपरसिघनघटहंमिलतवगपांतिसोछवि कविबरनी । आदि
बराहबिहरिबारिधिमानोउख्योहैदसनिधरिधरनी ॥ ३ ॥
जलजुतविमलसिलनिभक्तकतनभवनप्रतिविंबतरंग । मान-
ङ्गंजगरचनाविचित्रविलसतिविराटअंगअंग ॥ ४ ॥ मंदाकि
निहंमिलतभरनाभक्तिभरिभरिभरिजलआछे । तुलसीस-
कलसुकृतसुषलागेमानोरामभगतिकेपाछे ॥ ५ ॥ ५० ॥

टी० । । चङ्गं ओरवन पुष्प फलादि करि सम्पन्न है औ पत्नी
द्वग बोलत मे सोभा पावत है मानो सुंदर नरेस ते देश औ पुर
के प्रजा प्रसुदित है सकल सुष छावत हैं ॥ २ ॥ पर्वत के ऊपर
स्याम मेघ सोभत है औ ददु घोरत कहे मधुर धुनि ते गरजत हैं
औ सिषरनि से धातु गेरु मन सिलादि रगमगे कहै बहि चले
हैं मानो परवत नहीं है आदि कमल है अर्थात् जाते ब्रह्मा उत्प
न्न भए इहां अत्यंत दीर्घ करि आदि कमल की उपमा दिए सो सु
र मुनि रूप भृंगनि करि सेवित है इहां भृंग रूप स्याम जलद
जानना ॥ ३ ॥ शृंगनि को छुद्र के बकुलनि की पांति सघन जो
घटा तिन को मिलत है सो छवि कवि बरनी हैं मानो आदि बरा
ह समुद्र मे विहार करि के दांत घर धरनी धरि के उख्यो है इहां
आदि बराह पर्वत है वर्षा को जल जो नीचे लगा है सो समुद्र है
वश पांति दसन है घटा धरनी है वा जो मेघ पर्वत ते मिलि रछ्यो

है सो आदि बाराह है ताके ऊपर से वग पांति जो ऊपर को निकली है सो दमन है दूमरी घटा जो ऊपर है सो भूमि है ॥ ४ ॥
निर्मल सिलनि मे जल युक्त आकाश बन औ तरंग को प्रतिबिंब भलकत है मानो विराट के अंग अंगनि मे जग की रचना विचित्र विशेष लसति है ॥ ५ ॥ ६ ॥ ५० ॥

म० । रागसोरठः । आजुकोभोरुऔरसोमाई । सुन्योनद्वारवेद बंदीधुनिगुनिगनगिरासोहाई ॥ निजनिजपतिसुंदरसदन-नितेरूपसीलछविछाई । लेनअमीससीसआगेकरिमोपैसुत बधूनआई ॥ १ ॥ बूझीहोनविहंसिमेरेरघुवरकहासुमित्रा माता । तुलमीमनऊंसहांसुषमेरेदेपिनसक्योविधाता ॥ २ ॥
॥ ५१ ॥

टी० । अवधमे श्री कौशल्या जी की उक्ति कहत हैं निज निज पति अपने अपने पति के सुंदर गृहनि ते रूप शील छवि ते छाई जे सुत बधू है ते सता के अगे करि अमीस लेद्वे हेतु हमारे पास न आईं ॥ ३ ॥ ५१ ॥

म० । जननीनिरिषतिबालधनुहिंआ । बारबारउरनयननिलावति प्रभुजुकिललितपनहियां ॥ कबहुं प्रथमज्योजाइजगावति कहिप्रियवचनसकारे । उठहुतातबलिमातुवदनपरअनुजसषा सबदारे ॥ १ ॥ कबहुंकहतिवडवारभईज्योजाहुभूपैभैया बंधुबोलिजेदूयैजोभावैगईनेछावरिभैया ॥ २ ॥ कबहुंसमु-भिवनगसनरामकोरहिचकिचिलिषीसी । तुलसिदासयह समयकहेतेलागतिप्रीतिसिषीसी ॥ ३ ॥ ५१ ॥

टी० । प्रीति सिषीसी कहिवे को यह भाव कि जो स्नेह सत्य हो तोतो कहतही मे सरीर छुटि जातो ॥ ५२ ॥

म० । माईरीमाहिनकोउसमुभावे । रामगमनसांचोकिधौसपनौ मनपरतीतनआवे ॥ लगेरहतिमेरेनयननिअगेरामलषन

अरु सीता । तदपिनमिटतनदाहयाउरकोविधिजोभयोविपरी
ता ॥ १ ॥ दुषनरहैरघुपतिहिविलोकततनुनरहैविनुदेषे ।
करतनप्रानप्रयानसुनहुसपिअरुभिपरीएहिलेषे ॥ २ ॥ कौ-
सल्याकेविरहवचनसुनिरोदूउठीसवरानो । तुलसिदासरघु
बीरविरहकीपीरनजातिवषानी ॥ ३ ॥ ५३ ॥

टी० । सु० ॥ ५३ ॥

सू० । जबजबभवनबिलोकतिसूनो तबतबविकलहोतिकौसल्यादिन
दिनप्रतिदुषदूनो । सुभिरतबालबिनोदरामकेसुंदरमुनिमन
हारो । होतिहृदयअतिशूलसमुक्तिपदपंकजअजिबिहारो ॥
॥ १ ॥ कोअवप्रातकलेऊमागतछूठिचलैगोमाई । स्यामात
मरसनयनअवतजलकाहिलेउंउरलाई ॥ २ ॥ जिअतौवि-
पतिसहैनिनिसबासरमरौतौमनप्रछितायौ । चलतविपिनिभरि
नयनरामकोबदननदेषनपायौ ॥ ३ ॥ तुलसिदासयहविरह
दसाअतिदारुनविपतिघनेरो । दूरिकरैकोभूरिकुपाविनुसो-
कजनितरुजमेरो ॥ ४ ॥ ५४ ॥

टी० । पद पंकज अजिर विहारो कहिवे को यह भाव कि चरण
कमल सम कोमल है औ आंगन से बाहर न निकले सो वन में
कैसे निर्वाह है ॥ ४ ॥ ५४ ॥

सू० । मेरोयहअभिलाषविधाताकवपुरवैसपिसानुकूलहैहरिसेवक
सुषदाता । सीतासहितकुसलकोसलपुरआवतहैसुतदोज
अवनसुधासभवचनसपीकवआदूकहैगोकोज ॥ १ ॥ सुनि
संदेसप्रेमपरिपूरनमंअमउठिधावोंगो । बदनबिलोकिकी
लीचनजलहरषिहियेलावोंगो ॥ २ ॥ जनकसुताकवमासु-
कहैमोहिरामलषनकहैमैया । बांहजोरिकवअजिरचलैगे
स्यामगौरदोउभैया ॥ ३ ॥ तुलसिदासएहिभांतिमनोरथक
रतप्रीतिअतिवाढी । थकितभईउरआनिरामछविमनहुंविच

लिषिकादौ ॥ ४ ॥ ५५ ॥

टी० । सुगम ॥ ५५ ॥

मू० । सुन्यौजत्रिफिरिसुमंतपुरआयो कहि हैकहाप्राणपतिकीगति
नृपतिविकलउठिवायो । प्रायपरतमंचीअतिव्याकुलनृपउठा
यउरलायो दसरथदसादेषिनकह्योककुहृगिजोसंटेसपठायो
॥ १ ॥ वृभिनसकतकुसलप्रीतमकीहृदययहैपकृितायौ । सा
चेऊसुतवियोगसुनिवेकऊंधिगविधिमोहिंजिआयौ ॥ २ ॥
तुलसिदासप्रभुजानिनिठुरह्यौन्यायनाथविसरायो । हारघुप
तिकहिपख्यौअवनिजनुजलतेमीनविलगायो ॥ ३ ॥ ५६ ॥
मुएऊनमिठैगोमेरोमानसिकपकृिताउ नारिवसनभिचारकी
न्होकाजसोचतराउ । तिलककोबोलेदियोवनचौगुनोचि
तचाउ हृदौदारिमज्यौनविहख्योमभुक्तिसीजसुभाउ ॥ १ ॥
सीघरघुवरलपनविनुभयभभरिभग्योनआउ । मोहिबृभक्तिपरत
नयातेकवनकाठिनकुषाउ ॥ २ ॥ सुनिसुमंतकिआनसुंदरसु-
वनसहितजिआउ । दासतुलसीनतरुमोकहंमरनअमियपि-
आउ ॥ ३ ॥ ५७ ॥

टी० ॥ १ ॥ दाडिम अनार ॥ २ ॥ भग्योन आउ आरुदायन भा-
ग्यो ॥ ३ ॥ हे सुमंत सुनो कि सुंदर पुत्र आनि कर हित सहित
जिआउ भाव पुत्र बिना जिआवना अहित सहित है इहां महाराज
अति पीड़ित है ताते सुनु के स्थान मे सुनि कहे ॥ ४ ॥ ५७ ॥

मू० । अबधत्रिलोकिहो जीवतरामभद्रविहोन कहाकरिहैआइसा
नुजभरतधरमधुरीन । रामसोकसमेहसंकुलतनुविकलमन
लीन टूटितारागननमगज्यां होतछिनछिनकीन ॥ १ ॥ हृद-
यमभुक्तिमनेहसादरप्रेमपावनमीन । करीतुलसीदासदसर-
थप्रीतिपरिमितिपीन ॥ २ ॥ ५८ ॥

टी० । राम भद्र के बिना अबध देषि करि के हम जीवत है अ-

नुज सहित धर्म धुरीन जो भरत सो आय करि के कहा करि है
 भाव प्रथम जो आए होते तो अस मोक्त भोगिवे को परत अर्थात्
 कैकेई को डांठि देते क्योंकि धर्म धुरीन है वा भरत धर्म धुरीन है
 यह अन्याय जनित दुष को न सहि सकि हैं ताते आइ के कहा
 करि हैं अर्थात् जिन आवैं ॥ १ ॥ श्री राम के शोक से तन विकल
 है औ सनेह ते पूर्ण है ताते मन लीन भयो जात है तारा टूट के
 आकाश के मग में जैसे छिन छिन छीन होत जात है तस होत
 है ॥ २ ॥ नेह सहित आदर सहित सैन के प्रेम को हृदय मे
 पवित्र समुक्ति के गोसांई जी कहत हैं कि दशरथ महाराज प्रीति
 को मर्यादा को पुष्ट करत भए भाव जैसे जल बिना मछरी शरीर
 त्यागत तस त्यागे ॥ ३ ॥ ५८ ॥

मू० । रागगौरी । करतरायमनमोअनुमान सोकविकलमुषवचन
 नआवैविकुरेकपानिधान । राजदेनकहंबोलिनारिवसमैजोक
 ह्योवनजान आयसुसिरधरिचलेहरषिहियकाननभवनसमा
 न ॥ १ ॥ असेसुतकेविरहअवधिलौजौराषीयहप्रान । तौ-
 मिटिजाईप्रीतिफीपरिमितिअजससुनौनिजकान ॥ २ ॥ रा
 मगएअजहं होजोवतसमुभक्तहींअकुलान । तुलसिदासतन
 तजिरघुपतिहितकियौप्रेमपरवान ॥ ३ ॥ ५९ ॥ सोरठ ।
 असोतैक्योंकटुवचनकह्योरी रामजाऊकाननकठोरतेरोकैसे
 धौहृदउरह्योरी । दिनकरवंसपितादसरथसोरामलघनसे-
 भाई जननीतूजननीतोकहाकह्योविकेहिषोगिनलाई ॥
 ॥ १ ॥ हौलहिहौसुपराजमातुहैसुतसिरकूचधरैगो । कुल
 कलंकमलमलमनोरथतोबिनुकेनकरैगो ॥ २ ॥ अहैरामसु
 षीसबहैहैईसअजममेरोहरिहै । तुलसीदासमोकोवडोसो
 चतूजनमकवनविधिभरिहै ॥ ३ ॥ ६० ॥

टी० । वशिष्ठ जू को काशीर दूत भेजव औ भरत जू को आउव

आदि कथा छोड़िए अब भरत जी की उक्ति कैकेई प्रति लिखत है
 १ ॥ दिनकर ऐसो वंस भयो औ दसरथ महाराज सम पिता औ
 श्री राम लषन से भाई भए तहां हैं जननी तू जननी भई तो कहा
 कहीं विधाता ने केहि को खोटाई नहीं लगाई है वा हे जननी तूं
 अपने जननी सम भई यह कथा बाल्मीकी रामायण मे स्पष्ट है
 ॥ २ ॥ कुल को कलंक मल को मूल अस मनोरथ तो विना कौन
 करैगो कि पुत्र सिर पर छत्र धारण करैगो हम राजा की माता है
 कै सुष पावों गी ॥ ३ ॥ भरि है वितदू है ॥ ४ ॥ ६० ॥

मू० । तातेहोद्वैतनदूषनतोऊ रामविरोधीउरकठोरतेप्रगटकियो
 विधिभोळ्ळ । सुंदरमुषदमुसीलसुधानिविजरनिजायजेहिजो
 ए विषवारुनीबंधुकहिद्यतविधुनातोमिटतनघोए ॥ १ ॥ हे
 तेजौनसुजानसिरोमनिरामसबकेमनमाहीं । तौतेरीकरतू-
 तिमातुसुनिप्रैतिप्रतीतिकहांही ॥ २ ॥ स्टदुमंजुलसांचीस-
 नेहमुचिसुनतभरतवरवानी । तुलसीसाधुसाधुसुरनरमुनिक
 हतप्रेमपहिचानी ॥ ६१ ॥

टी० । राम विरोधी जे कठोर उर ताते विधाता ने हमहूँ को
 प्रगट कियो भाव तब दोषी हमहूँ ठहरे ताते तोहूँ को दोष नहीं
 देत हौं ॥ १ ॥ सुंदर सुखदाता सुमील अमृत की राह जेहि की
 देखिबे ते तपनिजात है ऐसे विधु को भी विख और बरुणी को भी
 बंधु कहियत है तो निश्चै भयो कि नाता घोयबे तें नहीं मिटत है
 ॥ २ ॥ सुजाननि में सिरोमणि और सब के मन माहीं श्री राम
 जो न होते तो हे माता तेरी करतूति सुनि के हमारी प्रैति प्रती
 ति कहां रही अर्थात् कहीं नहीं रही ॥ ३ ॥ कोमल सुंदर सां-
 ची नेह सहित औ शुद्ध ऐसी जो भरत की श्रेष्ठ बानी ताको सुनत
 मात्र सुर नर मुनि प्रेम पहिचान कै ठीक है ठीक है कहत हैं ॥
 ४ ॥ ६१ ॥

मू० । जौपेहौंमातुतुमतेमज्जहैहौंतौजननीजगमैयामुखकीकहां
कालिमाध्वैहौ । क्यौंहौंआजुहोतशुचिसपथनिकौनमानि
हैसांची । महिमासृगीकौनसुकतीकीषलवचनविसिषतेवां-
ची ॥ १ ॥ गहिनजातिरसनाकाहकीकहौंजाहिजोईसूभै ।
दीनबंधुकारुन्यसिंधुबिनुकौनहृदयकीबूभै ॥ २ ॥ तुलसीरा
मवियोगविषमविषविकलनारिनरभारी । भरतसनेहसुधा
सीचेसबभयेतेसमयसुखारी ॥ ३ ॥ ६२ ॥

टी० । कौसल्याजी के प्रति भरतजी की उक्ति ॥ १ ॥ आजु सपथ
नि से हम कैसे सुझ ह्वै सकत है हमारे बात को कौन साचो मा
नैगो कवने सुकती की महिमा रूप सृगी षल के वचन रूप वान
ते बची है भाव नहीं बची है ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ६२ ॥

मू० । काहेकोषोरिकैकहिलावो धरज्जधीरबलिजांउतातमोकोआजु
विधातावांभो । सुनिबेयोगवियोगरामकोहोनहोउमेरेप्यारे
सोमेरेनयननिआगेतेरघुपतिबनहिंसिधारे ॥ १ ॥ तुलसि-
दाससमभाइभरतकहँआंसुपोछिउरलाए ॥ २ ॥ ६३ ॥

टी० । कौसल्या जी की उक्ति है ॥ ६३ ॥

मू० । मेरोअवधधौंकहज्जकहाहैकरज्जराजघुराजचरखतजिलैल-
टिहोगुरहाहै । धन्यमातुहौधन्यलागिजेहिराजसमाजठ-
हाहै ॥ तापरमोसोप्रभुकरिचाहतसबबिनुदहनदहाहै ॥ १ ॥
रामसपथकोजकछुकहैजनिमेदूखदुसहसहाहै । चित्रकूटच
लिहौंप्रातहिवलिछमिऐमोहिहहाहै ॥ २ ॥ योंकहिभोर
भरतगिरवरकोमारगवूभिगहाहै । सकलसराहतएकभरत
जगजनमिसुलाज्जलहाहै ॥ ३ ॥ जानिहिसियरघुनाथभरत
कोसीलसनेहमहाहै । कैतुलसीजाकोरामनामसोंप्रेमनेम
निबहाहै ॥ ४ ॥ ६४ ॥

टी० । श्री भरत जी की उक्ति है मेरो अयोध्या जी से कहो तो

क्या है अर्थात् कुछ नहीं है रघुराज को चरण छोड़िके राज करड्ड
 अमलै लगानू के लोग लठि कहै रटि रचा वा मालै में लोग लठि
 रहाहै ॥ १ ॥ हमारी माता धन्या है औ हम धन्य हैं काहे ते कि जे
 हि के निमित्त राज समाज ठहा है कहै विगिरि गया है ताहू पर
 हमारे ऐसे को स्वामी करि के बिना अग्नि के सब जरा चाहत है
 ॥ २ ॥ मेरी हहा कहै बिनता है छमा कीजिये हम प्रातःकाल च
 लैगे आप सब चलिये ॥ ३ ॥ गिरवर कामदनाथ जगत में जनमि
 के एक भरतैने सुंदर लाभ को लहा है अस सकल सराहत है ॥
 ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६४ ॥

मू० । भाईहौ अवधकहारहिलहिहौ । रामलघनसियचरनबिलो
 कनकालिकाननिजैहौ ॥ जट्टपिमोतैकैकुमातुतेहैआईअति
 पोची । सनमुखगयेसरनराखहिंगेरघुपतिपरमसकोची ॥ १ ॥
 तुलसीयो कहिचलेभोरहीलोगविकलसंगलागे । अनुवनज
 रतदेखिदाहनदवनिकसिविहंगमगभागे ॥ २ ॥ ६५ ॥

ठौ० । सुगम ॥ ६५ ॥

मू० । शुकसौंगहबरहियकहैसारे । बीरकीरसियरामलघनविनुला
 गतजगअंधियारो । पापिनचेरिअथानिरानिद्वपहितअनहि
 तनविचारो । कुलगुरसचिवसाधुभोचतविधिकोनवसाइउजा
 रो ॥ १ ॥ अबलोकेनचलतभरिलोचननगरकोलाहलभा
 रो । सुनेनचनकरुनाकरकेजवपुरपरिवारसँभारो ॥ २ ॥
 भैयाभरतभावतेकेसंगवनसबलोगसिधारो । हमपरपाइपौ
 जरनतरसतअधिकअभागहमारो ॥ ३ ॥ सुनिषगकहतअं
 भौगीरडसमुक्तिप्रेमपथन्यारो । गणतेप्रभुपडंचावफिरेपु
 निकरतकरमगुनगारो ॥ ४ ॥ जीवनजगजानकीलघनकोम
 रनमहीपसँवारो । तुलसीऔरप्रीतिकीचरचाकरतकहाक-
 कुरेचारो ॥ ५ ॥ ६६ ॥

टी० । मैना सुआ सो व्याकुल हृदय कहै है हे भाई सुआ श्री
 सीताराम लछमन बिना जगत अंधियारो लागत है ॥ १ ॥ पापिन
 जो चरी औ बुद्धि हीन रानी और महाराज ने हित अनहित न
 हीं विचार किया वशिष्ठजी और सुमंत्रादि मंत्री और साधुजन सोचत
 है कि विधाता ने वसाय के कौन को नहीं उजारेउ अर्थात् सब को उ
 जारेउ ॥ २ ॥ चलत कै नेत्र भरि देखे नहीं और जब परपरिवार को
 संहार श्री राघव कियो तब नगर में महत शब्द रह्यौ ताते कहुना कर
 के बचन न सुने ॥ ३ ॥ प्रिय जो भैया भरत तिन के संग वन मे
 सब लोग गए औ हम पंख पाय कै पींजरन मेतरसत है भाव जिन
 के पंष नाही ते गए औ हम नाही ताते अधिक अभाग हमारो
 है ॥ ४ ॥ सुआ सुनि के कहत है कि हे अश्व मैनी प्रेम को पथ
 न्यारो है यह समुक्ति कै मौगी कहै मौन रज्जु जे प्रभु के संग गए
 ते पङ्कचाय कै कर्म के करतव को निंदा करत पुनि फिरे ॥ ५ ॥
 जीवन तो जग मे श्री जानकी औ लषन लाल को है औ महाराज
 ने मरन बनायो है और प्रीति की चरचा काहे को करत हैं काहे
 ते कि कुछु है सकत नाही भाव न मरतै बना न संग जातै बना
 ॥ ६ ॥ ६६ ॥

मू० । कहैसुकसुनिहंसिषावनसारो विधिकरतवविपरीतवामगति
 रामप्रेमपथन्यारो । कोजरनारिअवधषगमृगजेहिजीवनरा
 मतेष्यारो विद्यमानसबकेगवनेवनवदनकरमकोकारो ॥ १ ॥
 अंबअनुजप्रियसषासुसेवकदेषिविषादविसारो पत्नीपरवसप
 रेपींजरनिलेषौकौनहमारो ॥ २ ॥ रहिन्दपकीविगरीहैसब
 कीअवएकसंवारनहारो । तुलसीप्रभुनिजचरनपीठमिसभरत
 प्राणरषवारो ॥ ३ ॥ ६७ ॥

टी० सुक कहत है कि हे मैना सिषावन सुनो विधि के विपरीत
 करतव से वक्र गति है औ श्री राम के प्रेम को पथ न्यारो है ॥ १ ॥

अवध में कवन नरनारि खगमृग अस है कि जेहिके राम ते प्यारो
जीवन है परंतु सबके रहत जो श्री राम बन को गए तो करम को
मुहकारो है ॥ २ ॥ माता औ बंधुवर्ग औ प्रियसखा औ सुसेवक
देपि के विषाद को विसरायो वा अनुज प्रियसखा औ सुसेवकों को
देपि के माता सब विषाद को विसरायो तो हमतो पज्जि है ताळ
मे परबस पीजरन में परे है तो हमारो कवन लेषो है ॥ ३ ॥ एक
महाराज की तो रही और सबकी विगरी अब एक सवारनिहारो
है जो प्रभु निजचरण पादुका के बहाना ते भरत के प्रान को रष
वारो है ॥ ४ ॥ ६७ ॥

मू० । तादिनशृंगवेरपुरआए रामसपातेसमाचारमुनिवाग्विलो
चनछ ए । कुससाथरीदेपिरघुपतिकीहेतुअपनपौजानी कह
तकथासियरामलषनकीवैठेहिरैनविहानी ॥ १ ॥ भोरहिभ
ग्द्वजआअमहैकरिनिषादपतिआगे । चलेजनुतअनडागत
षितगजघोरघामकेलागे ॥ २ ॥ बूभक्तचिचकूटकहंजेहितेहि
मुनिबालकनिवतायो । तुलसीमनहुंफनिकमनिदूंदतनिरषि
हरषिहियधायो ॥ ३ ॥ ६८ ॥ पदसुगम ॥ ६८ ॥

मू० । विलोकेदूरितेदोउबीर उरआयतआजानुसुभगभुजस्यामल-
गौरसरीर । सीसजटासरसीरुहलोचनवनेपरिधनुमुनिचीर
निकटनिषंगसंगसियसोभितकरनिधुनतधनुतीर ॥ १ ॥ मन
अगङ्गडतनपुलकिसिथिलभयोनलिननयनभरेनीर । गडत
गोड़मानोसकुचपंकमङ्कठतप्रेमबलधीर ॥ २ ॥ तुलसीदास
दसादेपिभरतकीउठिघायेअतिहीअधीर । लिएउठादूर-
लाइकपानिधिविरहजनितहरिपोर ॥ ३ ॥ ॥ ६९ ॥

टी० । आयतविमाल आजान भुज जानु पर्यंत बङ्ग ॥ १ ॥ बने
परिधन मुनिचीर मुनिचीर जे बल्लु ते परिधन कहै बल्लु बने है
२ ॥ अगङ्गड अग्रवती ॥ ३ ॥ हरि कहै हरि लिए ॥ ४ ॥ ६९ ॥

मू० । रागकेदारा । भरतभण्टाढेकरजोरि ह्वै नमकतसामुहेसकुच
वससमुक्तिमातुञ्जतघोरि । फिरिह्वैकिधौफिरन कहिह्वैप्रभु
कलपिकुठिलताभोरि हृदयसोचजलभरोबलोचनदेहनेह
भईभोरि ॥ १ ॥ बनवासौपुरलोगमहामुनिकियेह्वैकाठके
मेकोरि । दैदैअवनसुनिबेकोज हंतडंरहेप्रेममनबोरि ॥ २ ॥
तुलसीरामसुभाउसुमिरिउरधरिघोरजहिवहोरि । बोलेव
चनविनीतउचितहितकरनारसहिनचोरि ॥ ३ ॥ ७० ॥

टी० । कलपि कल्पना करिके अर्थात् विचारि के देह नेह भई
भोर देहाध्यास रहित भए ॥ २ ॥ काठ कैसे स्वरूप से बनाए भए
ह्वै भाव सबजड़ से ह्वैरहे ह्वै प्रेम मन बोरि प्रेम मे मन को बोरि
रहे ह्वै ॥ ३ ॥ ७० ॥

मू० । जानतहौसबह्वैकेमनकी तदपिऊपालकरौविनीसोईसाद
रसुनहुटीनहितजनकी । एसेवकमंततअनन्यअतिज्यौंचात
कहिएकगतिघनकी यहविचारिगवनहुंपुनीतपुरहृगहुदुस
हअरतपरिजनकी ॥ १ ॥ मरोपुनिजीवनजानिएअसो
दुजियजैसोअहिजासुगईमनिफनकी । भेटहुकुलकलंकको
सलपतिअज्ञादेहुनाथमोहिवनकी ॥ २ ॥ सोकोजोईजोई
लाइएलोगैसोईसोईजौउतपतिकुमातुतेयातनकी । तुलसी
दासबदोषदूरिकरिप्रभुअबलाजकरहुनिजपनकी ॥ ३ ॥ ७१ ॥

टी० । एअवधवासी सब निरंतर अति अनन्य सेवक है जैसे चा-
तक को एक भेष की गति है भाव तैसे इन जनन को एक आप की
गति है ॥ २ ॥ पुनि हमारो जीवन असजानिए कि जेहि सर्प के
फाण की मणि गई जैसे सोजीयै हे कोशलपति कुल को कलंक मे-
टहु हे नाथ सोको बन जावे की आज्ञा देहु इहां कुल को कलंक
छोटे को राज्य होनो बड़े को बन जानो है ॥ ३ ॥ जो यातन की
उतपत्ति कुमातु से है याते सोको जोई जोई दोष लगाए सोई सोई

लागै निज पन की कहै सरना गत पालिबे की लज्जा ॥ ४ ॥ ७१ ॥

मू० । तातविचारौधौहौं क्यों आवों तुम्हशुचिसुहृदसुजानसकलवि-
धिवज्जतकहाकहिहिकहिसमभावों । निजकरपालधैचियातन
तेजौपितुपगपानहींकरावों होउनउरिनपितादमरयतेकैसे
ताकोबचनमेटिपतिपावों ॥ १ ॥ तुलसिदासजाकोसुजसति-
ह्रंपुरक्योंतेहिकुलहिकालिमालावों । प्रभुरूपनिरपिनिरास
भरतभएजान्यौहैसबहिकृभातिविधवावों ॥ २ ॥ ७२ ॥

टी० । हे तात भरत विचारो तोकि मै क्यों बन को आवों ॥ १ ॥
करावों कहैं बनवावों प्रति पावों कहैं मर्यादा पावों ॥ २ ॥ कुलहिक
कालिमालांको कहिवे को यह भाव सत्य प्रतिज्ञ कुल है ॥ ३ ॥ ७२ ॥

मू० । रागसोरठ । बज्जरोभरतकल्योककृचाहै सकुचसिंधुवाहित
बिवेककरिबुधिवलवचननिवाहै । छोटेजतेछोहकरिआएमै
सामुहेनहेरो एकहिवारआजुविधिमेरोसीलसनेहनिबेरो ॥
१ ॥ तुलसीजौफिरिवोनवनेप्रभुतौहौंआयसुपावों । घरफेरि
यैलपनलरिकाहैनाथसाथहोंआवों ॥ २ ॥ ७३ ॥

टी० । फेरि भरत कछु कहा चाहत है सकुच रूप समुद्र मे
अपने बिवेक को जहाज करि के तेहि जहाज को बुद्धि औ बचन
के बल तें निवाहत है अर्थात् कुठौर मे नहीं परै देत है वा बुद्धि
औ वचन रूप सैना लो तेहि जहाज पर निवाहत है ॥ २ ॥ निबे
रो कहैं दूरि कियो हौं आवों हम चलै ॥ ३ ॥ ७३ ॥

मू० । रघुप्रतिमोहिसंगकिनलीजै बारबारपुरजाऊनाथकेहिकारन
आयसुदीजै । जद्यपिहौंअतिअधमकुटिलमतिअपराधनि
कोजायो प्रनतपालकोमलसुभाउजियजानिसरनतकिआयो
॥ १ ॥ जौमेरेतजचरनआनगतिकहौंहृदयककुराषी । तो
परिहरज्जदयालदोनहितप्रभुअभिअंतरसाषी ॥ २ ॥ ताते
नाथकहौंमैपुनिपुनिप्रभुपितुमातुगोसाई । भजनहीननरदेह

दृष्टापरस्वानफेरूकीनाई ॥ ३ ॥ बंधुवचनसुनिश्रवननयनराजी
वनौरभरिआए । तुलसिदासप्रभुपरमज्ञपागहिवांइभरतउ-
रलाए ॥ ४ ॥ ७४ ॥

टी० । जो मोकों चरन छोड़ि के आन गति होय औ हृदय में
कछु राषि के कहत होउं तौ है दयाल है दीनहित है प्रभु है अं
तरजामी त्याग देऊ ॥ ३ ॥ फेरू शृंगाल ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७४ ॥

सू० । काहेकोमानतहानिहियेहे प्रीतिनीतिगुनसीलधरमकहंतु
मअवलंबटियेहे । तातजातजानिवेनएदिनकरिप्रमानपितु
बानी । औहौबेगिधरऊधीरजउरकठिनकालगतिजानो ॥ १ ॥
तुलसिदामअनुजहिप्रबोधिप्रभुचरनपीठिनजदीन्हे । मनऊं
सवनकेप्रानपाऊरुभरतसीसधरिलीन्हे ॥ २ ॥ ७५ ॥

टी० । हेा भरत काहे को हानि हृदय मे मानत हौ प्रीति औ
नीति औ गुण औ सील औ धर्म को तुमहीं अवलंब दिएहौ ॥ १ ॥
हे तात एजे चौदह वर्ष के दिन हैं तिनके जाते न जानागे ॥ ३ ॥ ७५ ॥

सू० । विनतीभरतकरतकरजारे दीनबंधुदीनतादीनकीकवऊं परैज
निभारे । तुम्हसेतुम्हहिननाथमोकोमोसेजनतुम्हकोबऊतेरे
यहै जानिपहिसानिप्रीतिक्रमिवेअघऔगुनमेरे ॥ १ ॥ यौक
हिसीयरामपायनपरिलषनलाडूउरलीन्हे । पलकसधीरनौर
भरिलोचनकहतप्रेमपनुकीन्हे ॥ २ ॥ तुलसीनीतेअवधप्रथम
दिनजौरदुबीरनअैहौ । तौप्रभुचरनसरोजसपथजीवतपरि
जनहिनपैहौ ॥ ३ ॥ ७६ ॥

टी० । सू० ॥ ७६ ॥

सू० । अरसिहौंआयमुपायरहौंगो जनमिकैकर्तुकोषिकुपानिधि-
कोंकछुचपरिकहौंगो । भरतभूपसियरामलखनवनसुनिसा
नंदसहौंगो पुरपरिजनअवलाकिमातुसबसुषसंतोषलहौंगो
॥ १ ॥ प्रभुजानतजेहिंभांतिअवधलोवचनपालिनिवहौंगो ।

आगेकी विनती तुलसीतब जब फिर चरन गहौंगे ॥ २ ॥ ७७ ॥

टी० । चपरि चाव पूर्वक ॥ १ ॥ भरत राजा है श्री सीता राम लखन बन मे है यह बचन सुनि के आनंद सहित सहौंगे पुर परिजन औ सब मातन को देखि के अर्थात् विकल देखि के सुष औ संतोष को पावोंगे ॥ २ ॥ जेहि भांति अवधि लो बचन पालि के निवहेंगे सो प्रभु जानत है जब फेरि चरन गहौंगे तब आगे की विनता करैगे भाव आप सिंहासन पर बैठिए यह विनती करैगे ॥ ३ ॥ ॥ ७७ ॥

मू० । प्रभुसौ बैठी खौ बज्जत दुई है कीबीकुमानाथ आरति ते कही कुजु गुति नई है । यौ बह्वारवार पायन परि पावरि पुल कि लई है अपना अदिन देखि हों डर पत जेहि विषवेलि बई है ॥ १ ॥ आ-यो सदा सुधारि गोसायी जन ते विग रि गई है । थके बचन पैर तस नेह सरि पछो मानो धोर घई है ॥ २ ॥ चिचकूट तेहि समय सब निकी बुद्धि विषाट हई है । तुलसी राम भरत के विकुरत सिलास प्रेम भई है ॥ ७८ ॥

टी० । प्रभु सों बै बज्जत टिठाई करी है श्री आरति ते नई कु-जुगुति कही है हे नाथ ताको कुमा कीजिए गा ॥ १ ॥ पांवरि पा-दुका हौं कहै हम ॥ २ ॥ हे गोसाईं जो जन ते विग रि गई है ताको आप सदा सुधारत आए हौ एतना कहि बचन थकित भए मानो सनेह रूप नदी के पैरत मे धोर प्रवाह मे पछो है ॥ ३ ॥ तेहि सभै चिचकूट मे सबनि के बुद्धि को विषाट ने नासी है गोसाईं जी कहत हैं कि श्री भरत जू को विकुरत मे और को को कहै सि-ला प्रेम सहित भई है भाव पधिलि गई है ॥ ४ ॥ ७८ ॥

मू० । जब ते चिचकूट ते आए नंदिग्राम धनि अवनि डामि कुसपरन कु-टो करि छाए । अजिन वसन फल असन जटा धरे रहत अवधि चि-त दीन्हे प्रभुपद प्रेमने सबत निरषत मुनिन्हन भित मुषकीन्हे ॥

१ ॥ सिंहासनपरपूजिपादुकावारहिंवारजोहारे । प्रभुअनु
रागमागिअयसुपुरजनसवकाजसंवारे ॥ २ ॥ तुलसीज्यौ
अधौघटततेजतनुत्यौत्यौप्रीतिअधिकार्दे । भएनहैनहोहिगे
कवळभुअनभरतसेभाई ॥ ३ ॥ ७६ ॥

टी० । अजिन षट्ग चर्म मुनिन्ह नमित मप्र कीन्हे कहिवे को
यह भाव कि राज कुमार होय के जस तप ए करत हैं तस हम
नहीं करि सकत हैं ॥ २ ॥ अनुराग पूर्वक प्रभु जो चरन पादुका
तिन्ह से आज्ञा मागि करि के पुरजनन के सब काज संवारें हैं ॥ ३ ॥
॥ ४ ॥ ७६ ॥

मू० । रागरामकली । राषीभगतिभलीभलाईभलीभांतिभरत स्वा
रथपरमाधपथीजयजयजगकरत । जोब्रतमुनिवरनिकठिनमा
नसआचरत सोब्रतलियोचात्रिकज्योसुनतपतकहरत ॥ १ ॥
सिंहासनसुभगरामचरनपीठधरत । चालतसवराजकाजआ-
यसुअनुसरत ॥ २ ॥ आपुअवधविपिनिबंधुसोचजरनिजरत ।
तुलसोसमविषमसुगमअगमलषिनपरत ॥ ३ ॥ ८० ॥

टी० । भली भांति ते भरत ने भली भगति औ भली भलाई रा-
षी है वा भली भलाई ते भली भांति भरत ने भगति राषी भरतज
स्वारथ औ परमारथ के पथी हैं अस कहि जगत जैजै कहत है
वा जगत मे जेतने स्वारथ औ परमारथ के पथी हैं ते जैजै करत
हैं ॥ १ ॥ कठिन मानस हठ योगादि ते वा कठिन करि मन को
अर्थात् रोकि के ॥ २ ॥ चरन पीठ के आज्ञानुसार सब राज काज
चलावत हैं ॥ ३ ॥ आप तो अवध मे हैं औ बन मे भाई हैं ताते
सोच रूप जरनि ते जरत हैं गोसाईं जी कहत हैं कि भरत जी
को सम विषम सुगम अगम कछु नहीं लषि परत है अर्थात् अ-
त्यंत सोच है ताते वा सम औ सुगम ठौर मे भरत जू औ विषम
औ अगम ठौर मे राम जू है पर लषि नहीं परत कि के कहां है

भाव भरत जू जद्यपि सम सुगम ठौर मे है पर जब सोच जरनि मे
जरत है तब विष मे अगम मे है औ श्रीराम जू यद्यपि विषम अ-
गम मे है पर सोच रहित है तो समै सुगम मे है ॥ ४ ॥ ८० ॥

मू० । मोहिभावतिकहिआवतिनहिंभरतजूकीरहनि सजलनयन-
सिथिलवयनप्रभुगुनगनकहनि । असनवसनअयनसयनधरम
गरुअगहनि दिनदिनपनप्रेमनेमनिरूपधिनिरवहनि ॥ १ ॥
सीतारघुनाथलघनविरहपीरसहनि । तुलसीतजिउभयलोक
रामचरनचहनि ॥ २ ॥ ८१ ॥

टी० । असन भोजन वसन वस्त्र अयन गृह औ सैन औ भारी
धर्म का ग्रहण करना ॥ २ ॥ ३ ॥ ८१ ॥

मू० । जानीहैशंकरहनुमानलघनभरतरामभगति कहतअगमक-
रतसुगमसुनतमीठीलगति । लहतसकृतचहतसकलजुगजुग
जगमगति रामप्रेमपथतेकवहूंछोलतनहिंडगति ॥ १ ॥ रि
धिसिधिविधिविचारिसुगतिजाविनुगतिअगति । तुलसीतेहिंस
नसुषविनुविषयठगनिठगति ॥ २ ॥ ८२ ॥

टी० । श्री शंकर श्री हनुमान श्री लघनलाल श्रीभरतजू ने
राम भक्ति को जानी है वह राम भक्ति कैसी है कि कहिवे मे सुगम
है औ करिवे मे अगम है औ सुनत मे मीठी लगति है ॥ १ ॥
तेहि भक्ति को सकल चाहत है पर कोऊ एक पावत है औ जुग
जुग मे जगमगाति रहति है भाव कबहूं मलानि परत नाहीं औ
श्री राम के प्रेम रूप पथ तें कबहूं डोलति औ उगति न हीं है ॥२॥
रिद्धि सिद्धि औ चारो भांति की मोक्ष कहै उपाय सो जा बिना
अगति है तेहि भक्ति के सन्मुख बिना विषे रूपा ठगनि ठगति है
॥ ३ ॥ ८२ ॥

मू० । रागगौरी । कैकेईकरीधौचतुराईकौनरामलघनसियवनहिं
पठायेपतिपठयोसुरभौन । कहाभलोधौभयोभरतकोलगेतरु

नतनदौन पुरवासिनकेनैननीगविनकवह्णतोदेषतिहौन ॥

॥ १ ॥ कौसल्यादिनरातिबिस्वरतिवैठिमहिंमनसौन । तुल-
सीउचितनहोइरोद्वोप्राणगएसंगजौन ॥ २ ॥ ८३ ॥

टी० । कौसल्या जी की उक्ति है ॥ १ ॥ टवन कहै विरहानल
॥ २ ॥ बिस्वरति चिंता करति प्राण गण संग जौन जो प्राण संग न
गए ॥ ३ ॥ ८३ ॥

मू० । हाथेमीजिवोहाथरह्यो लगीनसंगचिचकूटउतेह्यांकहाजात
बह्यो । पतिसुरपुरमियरामलषनवनमुनिव्रतभरतगह्यो हौं
रहिवरमसानपावकज्योमरिवोईन्हतकदह्यो ॥ १ ॥ मेरोई
हियोकठोरकरिवेकड्डंविधिकड्डंकुलिसलह्यो । तुलसीव-
नपड्डंचार्याफिगीसुतक्योककुपरतकह्यो ॥ २ ॥ ८४ ॥

टी० । ह्यांकडां जात बह्यो इहां का बहा जात रहा भाव जेहि
सन्हारै हेतु आए ॥ १ ॥ हम घर रहि के मसान को पावक जैसे
न्हतक को जरावत है तैसेई मरिवोई रूप न्हतक को जराय दियो
॥ २ ॥ हमारही हिय कठोर करिवे के लिए विधाता ने कतहं
कुलिस पायो है भाव वाही को हमारो हृदै बनायो है ॥ ३ ॥ ८४ ॥

मू० । हौतोसमुभरहीअपनोसो रामलषनसियकोमुषमाकड्डंभ-
योसषीसपनोसो । जिन्हकेविरहबिषादवटाउन्हषगह्यगजी
वदुषारी मोहिकहासजनीसमुभावतिहौंतिन्हकीमहंतारी
॥ १ ॥ भरतदसासुनिसुभिरिभूपगतिदेषिट्रोनपुरवासी ।
तुलसीरामकहतहौंसकुचतिह्यैहैजगउपहांसी ॥ २ ॥ ८५ ॥

टी० । सखी समुभावति है ता प्रति श्री कौशल्या जी कहति है
कि हे सखी मै तौ आपै समुभि रही हौं भाव तव समुभाइवे को
क्या प्रयोजन है ॥ १ ॥ २ ॥ कौशल्या ज कहति है कि राम कहत
मे हम सकुचत है भाव लोग कहि है कि कैसा माता है कि एसे
पत्र के बिछरे पर भी बोलतै है बोल नो हमारो जग मे उपहांस

करावनि हारो होयगो ॥ ३ ॥ ८५ ॥

मू० । आलीहोंदून्हिबुभावोंकैसे खेतहियेभरिभरिपतिकेहित
मातहेतसुतजैसे । बारबारहिहिनातहेरिउतजौबोलैकोउ
हारे अंगलगाइलियेवारेतेकरनामयसुतप्यारे ॥ १ ॥ लो
चनसजलसदासावतसेषानपानविसराए । चितवतचौकिनाम
सुनिसोचतिरामसुरतिउरआए ॥ २ ॥ तुलसिप्रभुकेविरहबधिक
हठिराजहंससेजारे । औसेउदुषितदेषिहोंजीवतिरामलघन
केघोरे ॥ ३ ॥ ८६ ॥

टी० । हे आली दून घोडन के मै कैसे समुभांवा अपने स्वामि
जे श्री राम लघन तिन के हित अपने हृदै मे सोक को भरि भरि
खेत है जैसे महतारि के हेतु पुत्र ॥ १ ॥ जो कोऊ हारे बोलत है
तब द्वार के बोर ताकि के बार बार हिहिनात है भाव श्री राम
लघन जो नहीं बोलत है करनामय हमारे प्यारे पुत्र लरिक-
ई ते दून घोरन को अंग लगाइ लिए है ॥ २ ॥ सदा लोचन सज
ल रहत है औ पान पान जस सोअत मे विसरि जात है तस वि
सराए रहत है औ श्री राम लक्षण को नाम सुनि चहुँकि के
देषत है जब नाम सुनिवे ते श्री राम की सुरति उर मे आय जा
ति है तब सोच करत है ॥ ३ ॥ गोसाईं जी कहत है कि प्रभु के
विरह रूप बधिक ने राम लघन के घोडे जो राज हंस के जोडे स
म है तिन को हठि करि के दुषित किए सो भी देषि के मैजि अ
त हौं ॥ ४ ॥ ८६ ॥

मू० । राघाएकवारफिरिआवा एवरवाजिविलोकिआपनेबहुरोवन
हिंमिधावो । जेपयप्याइपोषिकरपंकजवारवारचुचुकारे क्यो
जीवहिंमेरेरामलाडिलेतेअवनिपटविसारे ॥ १ ॥ भरतसैगु-
नीसारकरतहैअतिप्रियजानितिहारे । तदपिदिनहुंदिनहोत
भांवेरेमनहुंकमलहिममारे ॥ २ ॥ सुनहुंपधिकजौराममि

लडिंबनकहिद्योमातुसंदेसो । तुलसीमोहिऔरसवहिजनते
इन्हकोबडोअंदेसो ॥ ३ ॥ ८७ ॥

टी० । १ सार कहै पालन ॥ ८७ ॥

स० । राग कैदारा । काहूसोकाहूसमाचारअनपाए । चिचकूटते
रामधनसियसुनिधतअनतसिधाए । सैलसहितनिरभरवन
मुनिथलदेषिदेषिसवआए । कहतसुनतसुभिरतसुषदायक
मानससुगमसुहाए ॥ १ ॥ बडिअवलंबवामविधिविषटितवि
षमविषादबढाए । मिरससुमनसुकुमारमनोहरबालकविंध
चढाए ॥ २ ॥ अवधसकलनरनारिविकलअतिअकनिबचन
अनभाए । तुलसीरामवियोगसोगवससमुभतनहिंससुभाए
॥ ३ ॥ ८८ ॥

टी० । परवत नदी भरना बन मुनिन के आश्रम हम सब देषि
देषि के आए है सुगम औ सुंदर है बसिबे को को कहै कहत सु
नत सुभिरत मे मन के सुष दायक है बडि अब लंब को वाम विधा
ताने तोडे औ तीक्ष्ण विषाद को बढाए सिरिस के सुमन सम सुकु
मार मनोहर बालकन को विंध्य परवत पर चढाए ॥ २ ॥ ३ ॥ अ-
कनि सुनि अनभाए अप्रिय ॥ ४ ॥ ८८ ॥

स० । सुनीमैसधीमंगलंचाहेसुहाई । शुभपत्रिकानिषादराजकीआजु
भरतपहंचाई । कुंअरसोकुशलघमतेहिअवसरकुलगुरुकह
पहुंचाई गुरुजपालसंभमपुषरघरसादरसवहिसुनाई ॥ १ ॥
बिधिबिराधसुरसाधुसुधीकरिरिषिसिषआमिषपाई । कुंभजसि
धिसमेतसंगसियसुटितचलेदोउभाई ॥ २ ॥ रेवाविंधवीचसु
पासथलवसेहैपरनगृहछाई । पंथकथारधुनाथप्रथिककीतुल
सिदाससुनिगाई ॥ ३ ॥ ८९ ॥

टी० । १ ॥ सी कुशल छेम तेही अवसर कुंअर भरत ने वशिष्ठ
जु कहैपहुंचाई है ॥ २ ॥ कुंभज शिष्य सुतीक्ष्ण ॥ ३ ॥ रेवा नर्मदा

॥ ४ ॥ सांख्य न्याय वैदांत को छोड़ि छाड़ि सब जंग । सीता रघुपति चरण मंडं हरि हर करज उमंग ॥ इति श्री राम गीतावली प्रकाशिका टीकायां श्री सीताराम दयापात्र श्री सीता रामीय हरिहर प्रसाद कृतौ अयोध्या काण्डः समाप्तः ॥

श्रीसीतारामाभ्यांनमः । बरवा । रत्नरत्नरघुनायकश्रुतिप्रथपाल ।
प्राहिपाहिकक्षणाकरदुर्जनकाल ॥

मूल । रागमल्लार । देखे रामप्रथिकनाचतमुदितमोरमानतमनज्ज
सतडितललितधनधनुसुरधनुगरजनिटंकोर ॥ कस्यैकलापव
रवरहिफिरावतगावतकलकोकिलकिशोर । जहंजहप्रभुविच
रततइंतहंसुपदगुडकवनकौतुकनंधोर ॥ सधनकांहृतमरुचि
ररजनिभ्रमवदनचन्दचितवतचकोर । तुलसीमुनिखगस्टग-
निसराहतमयेहैसुकृतसबइनकीओर ॥ १ ॥

टी० । देखे ० कवि की उक्ति है कि श्री राम प्रथिक के देखिने
ते हर्षित मोरनाचत है भागी श्री राम को तडिता संहित सुंदर
धन मानत है इहां तडिता श्री जानकी जी है वां पीत पट है श्री
सगरज धनु जो सो इन्द्र धनु है श्री ताको टंकोर जो सो गरज है
॥ १ ॥ बरहो कहै मयूर सो कलाप कहै पत्त को कंपाय के फिरा-
वत है श्री युवा कोकिल जो सो मधुर गावत है जहां जहां दगुड
कवन मे प्रभु फिरत है तहां तहां सुख श्री कौतुक थोर नही है
॥ २ ॥ सधन कांह के अंधेरी मे सुंदर रात्रि के ममते श्री मुख
चन्द को चन्द के ममते चकोर चितवत है गोसई जी कहत है
कि खग स्टगनि को मुनिसराहत है श्री कहत है कि सब सुकृत
इन के ओर भए है ॥ ३ ॥ १ ॥

मू० । रागकल्याण । सुभगसरासनसायकजोरे खिलतरामफिरत
स्टगपावनवसतिसोस्टदुमूरतिमनमेरे । पीतमसनकटिचाक
स्ररिसरचलतकोटिनटसोदिसारे श्यसलतनअसकणराज

तज्योनवघनसुधासरोवरखारे ॥ ललितकंधवरभुजविशालउ
रलोहिकगुटरैषैचितचारे अवलोकतमुखदेतपरमसुखलेतसर
दशशिकौछुविकारे ॥ जटामुकुटसिरसारसनयननिगोहैतक
तसुभौहसकारे शोभाअमितसमातिनकाननउमगिचलीच-
हुंदिशिमितिफारे । चितवतचकितकुरङ्गकुरङ्गिनिःसवभयेम
गनमदनकेभारे तुलसिदासप्रभवाणनमोचैतसहजसुभायप्रेम
वसथारे ॥ २ ॥

टी० । सुभग इ० । नृगया सिकार ॥ १ ॥ कटिं चारु चारिसरं
कटि मे चारि वान धरे है नव घन सुधा सरोअर खारे माने नवीन
मेव अमृत के तालाव मे स्नान किए ॥ २ ॥ ३ ॥ जटा को मुकुट
सिर पर है औ सारस कहै कमल ता सम नैन है सुंदर भौह
को सकारे भए घात ताकत है सोभा मिति रहित है ताते वन मे
समाति नहीं है मयीद को फोरि के चहुं दिसि उमगि चली ॥ ४ ॥
नृगा नृगी चकित चितवत है मदन के स्वम ते सव मगन भए है
भाव मदन के पांच वाण है एऊ एक वाण हाथ मे औ चार वाण
कटि मे धरे है गोसाईं जी कहत है कि प्रभु वाण नही छोड़त
है काहे से कि प्रभु को यह सहज सुभाव है अर्थात् वनावट करि
नही कि थारे प्रेम के वस जात है ॥ ५ ॥ २ ॥

मू० । रागसारठ । बैठे हैरामलक्षणअहसाता पञ्चवटीवरपरणकु-
कुशीतरकहैककुथपुनीता । कपटकुरङ्गकनकमणिमयलपि
प्रियेसोकहतिहंसिबाला पाइपालिवेयोगमञ्जुनृगमारैहमं-
लुकनोला ॥ प्रियावचनसुनिविहंसिप्रेमवसगंधहैचापसर
लीन्हो चलीसोभाजिफिरिफिरिहेरतमुनिमखरषवारेचीन्हो
सोहतिमभ्रमनोहरमूरतिहेमहरिणकेपाछे।धावनिनवनि-
विलोकनिविथकनिवसतुलसीउरआछे ॥ ३ ॥

टी० । वैदेह० । प्रद सं० ॥ ३ ॥

म० । रागकल्याण । करसरधनुकाटिकचिरनिषङ्ग प्रियाप्रौतिप्रेरितवनवीथिनविचरतकपटकनकभृगमङ्ग । भुजविशालकमनीयकभ्रउरथमसीकरसोहैसावरेअङ्ग मनोमुक्तामणिमरकतगिरिप्ररलशतलन्तितरविकिरणप्रसङ्ग ॥ नैननलिनशिरजटा मुकुटविचशुभनमालमानोशिवशिरगङ्ग । तुलसिदासअसिमरतिकीवल्लिछविबिलोकिलाजैअमितअनङ्ग ॥ ४ ॥

टी० । करदू० । भुजा विसाल है औ कंध छाती सुंदर है औ अम कण सांवरे अंग पर सोहत है मानो मुक्ता मणि मरकत के परवत पर सुंदर रवि किरन के प्रसंग ते सोभत है नैन कमल सम है सिर मे जटा को मुकुट है बीच मे खेत सुमन की माला है सो मानो शिव के सिर पर गंगा है गोसांई जी कहत है कि ऐसी मूर्ति कि छवि देखि कै एक को को कहै अनेक काम लाजत है ॥ ३ ॥ ४ ॥

म० । रागकेदारा । राघोभावतिमोहि विपिनकीविधिन्हैषवनि अरुणकञ्जवरनचरणशोकहरण अंकुशकुलिशकेतुअङ्कितअवनि ॥ १ ॥ सुन्दरश्यामलअङ्गवसनपीतसुरङ्गकटिनिषङ्गपरिकरभिरवनि । कनककुरङ्गमङ्गसाजेकरसरचापराजिवनयनदूतउतचितवनि ॥ २ ॥ सोहतशिरमुकुटजटापटलनिकरशुभनेलतासहितरचीवनवनि । तैसेईअमसीकरकचिरराजतमुखतैमिअैललितभृकुटिन्हकीनवनि ॥ ३ ॥ देखतखगनिकरभृगरवनिह्वयुतथकितविसारिजहंतहंकीभवनि । हरिद्वरशनफलपायेहैज्ञानविमलजाचतभक्तिमुनिचाहतजवनि ॥ ४ ॥ जिनकेमनमगनभयेहैरससगुणतिनकेलेखेअगुणभक्तिभवनि अवरुमुखकरणिभवसरितातरणिगावततुलसिदासकीरतिपवनि ॥ ५ ॥

टी० । राघोदू० । राघो की विपिन वीथिन की धावनि सोकी भावति है

जेहि घाद्वे ते सोक हरन लाल कमल समजो अष्ट चरण में अंकुश कुलिश ध्वज है ताते अंकित अरुनि ह्वै गई है ॥ १ ॥ औ सुंदर स्यामल अंग औ सुंदर पीतरंग को बसन औ कटिमें जो तरकस औ पटुका तें फोट को बांधनि मोको भावति है औ कनक मृग के संग मे जो हाथ मे सर चांप साजे हैं औ कमल सम नैन मे जो दूत उत देखत हैं सो मोको भावति है ॥ २ ॥ औ सिर में जटा समूह को मुकुट जो सोहत है औ अनेकन पुष्प लता ते जो बनावरी रची है सो मोको भावति है औ तैसेई सुंदर अम कण जो मुख पर मोभत औ तैसेई सुंदर जे भृकुटिन की नवनि है सो मोको भावति है ॥ ३ ॥ खगन औ मृगिन युत मृग जहां तहां कि भ्रमनि बिसारि के थकित देखत हैं हरि के दरसन को फल विमल ग्यान पायो है ताते भक्ति जाचत है जेहि भक्ति को मुनि चाहत हैं ॥ ४ ॥ कदापि कोऊ कहै कि सब ते दुर्लभ ग्यान है तेहि पाए पर भक्ति क्यों जाचत है ता पर कहत हैं जिन्ह के मन सगुन के प्रेम में मगन भए है तिन्ह के ल्पे निर्विशेष मुक्ति क्या है अत एव गीता मे कहा । ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्कामाद्योचितनकांचति । समस्तुर्वेषुभूतेषु । भतेपराम् ॥ पवनि कहै पावनि ॥ ५ ॥ ५ ॥

सू० । सोरठ । रघुवरदूरिजादृष्टगमाद्यो लक्षणपुकास्त्रामहर्षे कश्चि मरते दुर्बयरसंभास्यो ॥ १ ॥ सुनहतातकोउतुमहिंपु-
कास्तप्रभणनायकीनाई । कक्ष्योलषणहत्योहरिणकोपि
सियहठिप्रठवेरिअर्द्ध ॥ २ ॥ बन्धुविलोकिकहततुलसीप्र-
भुभाईभलीनकीक्षी । मरेजानजानकीकाहखलकतकरिह
रिलीन्हौं ॥ ६ ॥

टी० । रघुद० । हरण धीरे अपर पद सु० ॥ ६ ॥

सू० । अरतवचनकहतिवैदेही विलपतिभृगिविस्तरिदूरिगयेमृगसं-
गमहससनेही । कहेकहुवचनरेखनाघीमैतातक्षमासोकीजै

देषिबधिकबसराजमरालिनिलखणलालकिनिनीजै ॥ वन-
 देवनिमियकहनकहृतियोंकूलकरिवीचहरीहौं । गोमरकर
 सुरधेनुनाथज्यौंत्थोपरहाथपरीहौं ॥ तुलसिदासरघुनाथना
 मधुनिअकनिगौधधुकिधायो । पुत्रिपुत्रिजनिडरहिनजैहैनी
 चमौचहोआयो ॥ ७ ॥

टौ० । आरतदू० । भूरिबिस्तरि बड़ चिंता करि वा बड़तउसास
 लेइ ॥ १ ॥ २ ॥ वन देवतनि सो सीता जू आ राम जू सो यों
 कहिवे को कहति है कि मोंको कूल करि के नीच नेहरी है गो-
 मर कहै कसाई तेहि के कर सुर धेनु जैसे परै तैसे पर हाथ परी
 हौं ॥ ३ ॥ धुकि कहै वेग करि नीच मीच हौं आयों नीच जो
 रावण ताके मृत्यु सम मै आयो ॥ ४ ॥ ७ ॥

मू० । फिरतनवारहिंवारप्रचाख्यो चपरिचोचचंगुलहयहतिरथष-
 षडषडकरिडाख्यो । विरथविकलकिथोकोनलीन्हिसिधघन
 घायनिअकुलान्यो तवअसिकाठिकाठिपरपांवरलैप्रभुअग्रियंप
 रान्यो ॥ रामकाजखगराजआजलख्योजियतनजानकित्यागौ
 तुलसिदाससुरसिद्धसराहतधन्यविहगबडभागी ॥ ८ ॥

टौ० । चपरि चटकई करि ॥ १ ॥ घन घायन बड़त घावन से
 ॥ २ ॥ ३ ॥ ८ ॥

मू० । रागगौरी । हेमकोहरिणहनिफिरेरधुकुलमणिलषणल-
 लितकरालियेष्टगकाल । आश्रमआवतचलेसगुननभयेभलेफ
 रकेवामबाडलोचनविशाल ॥ १ ॥ सरितजलमलिनमरनि-
 स्तूखेनलिनअलिनगुंजतकेलकूजेनमराल । कोकिलनिकोल
 किरातजहंतहंवलषातवननबिलोकितखगष्टगमाल ॥ २ ॥
 तरुजेजानकीलायेज्यायेहरिकरिकपिहेरैनहुंकरिभारेफल-
 नैरशाल । जेशुकसारिकापालेमातुज्यौललकिलालतेजमप-
 दतनपटावैमुनिबाल ॥ ३ ॥ समुभिसहमेसुठिप्रियातेन

आई उठितुलसीविवरणपरनदृशान्त । औरै सो सबममा-
जुकुशलनदेखौं आजुगहवरिहियेकहैं कोशलपाल ॥ ४ ॥ ६ ॥

टी० । हेम को हरिन जो मारीच ताको मारि के रघुकुल मनि
फिरे ताको सुंदर छाल लषन लाल हाथ मे लिए अतएव हनुम
न्दाटकलंका काण्ड मे एही मृगचर्म पर रघुनाथ को बैठव लिखे ।
अंकुखोत्तसांगंल्लवगवलपतेः पाटमल्लस्यहंतुर्भूमौविस्तारितायांत्वचि
कनकमृगस्यांगशेपंतिधायवाणंरजः कुलप्रंगप्रगुणितमनुजेनार्पितंतीक्ष्ण
मच्छोः कोणेनोद्दीव्यमाणस्त्वदनुजवचनेदत्तकर्णायमास्ते ॥ १ ॥
माल ममूह ॥ २ ॥ ज्याए जे हरि करि कपि सिंह हाथी वानर जे
जानकी जी जिआए रहीं ॥ ३ ॥ ४ ॥ ६ ॥

मू० । आशमनिरखिभूलेद्रमनफलेफूलेअलिखगमानोकवहुंनरहे ।
मनिनमनिवधूटीउजरीपरणकुटीपञ्चवटीपाहचानिठादेईर
हे ॥ उठिनशलिललियेप्रेमप्रमदितहियेप्रियानपुलकिप्रियव
चनकहे । पल्लवशालनहेरीप्राणवल्लभानटेरीविरहविथकिल
खिलप्रणगहे ॥ देखेरघुपतिगतिविबुधविकलअतितुलसीगह
नधिनदहनदहे । अनुजदियोभरोसोतौलोहैसोचखोसोसि
यसमाचारप्रभुजौलोनलहे ॥ १० ॥

टी० । आशस ३० । नहे कहैं नही रहे ॥ १ ॥ पल्लव साल कहे
प्रण साल ॥ २ ॥ गहन विनु दहन दहें वनवे आगि को जरि गयो
हे प्रभु सीध को समाचार जब लो ल लहे तब लो सोच परो सो
कहैं पेर के समान अर्थात् तनिक है ॥ ३ ॥ १० ॥

मू० । रागसोरठा । जबहिंसियसुधिसवसुरनिसुनाई । भयेसुनिह-
मगविरहसनिपैरतथकथहसीपाई ॥ कसितुखीरतीरधनुधर
धरधोरतीरहौभाई । पञ्चवटीगेदहिप्रणामकरिकुटीदाहि
कीलाई ॥ बलवभूतवनबेलिविठपखगमृगअलिअतलिमुहा
ई ॥ प्रभुकोदशसोसकोकहियेकोकविउरआहनआई ॥

रटनि अकनिपह्चिचानिगोधफिरेकरुणामथरघुराई । तुल-
सीरामहिप्रियाविसरिगईसुभिरिसनेहसगाई ॥ ११ ॥

टो० । जवहिंदू० ॥ १ ॥ धुर धीर धीरन मे अग्रवती गोदाहिं
गोदावरी को ॥ २ ॥ ता समै में प्रभु की दसा कहिवे को कवि के
उर मे आह न आई भाव कहिवे मे कवि जो समर्थ भए हैं सो
बड़ी आश्चर्य को बात है वा सो दसा कहिवे को कवि के उर मे आह
कहैं समर्थता न आई ॥ ३ ॥ अकनि सुनि ॥ ४ ॥ ११ ॥

मू० । मेरेएको हाथनलागी गयोवपुवीतिवादि काननज्यो कल्पलता
दवदागी । दशरथसोन प्रेमप्रतिपाल्यो ऊतौ सकलजगसाखी व
रवसहरतनिशाचरपतिसोहठिनजानकीराखी ॥ मरतनमैर
घुबीरबिलोकेतापसवेषवनाये । चाहतचलनप्राणपांवरविनुसि
यसुधिप्रभुहिमुनाये ॥ बारबारकरमीजशीसधुनिगोधराजप
छिता ई । तुलसीप्रभुजपालतेहिऔसरआइगयेद्वौभाई ॥ १२ ॥

टो० । मेरेदू० । अब गोधराज को परताप कहत है कि मेरे
एको बात हाथ न लागी नाहक हमार सरीर समाप्त भयो जैसे
वन मे कल्प लता अग्नि ते जरि जाइ ॥ १ ॥ सब जग जानत रह्यो
कि महाराज दशरथ से औ जटायु से प्रेम है पर सो प्रेम महा-
राज दशरथ सो न प्रति पाल्यो भाव महाराज दशरथ की इच्छा
रही कि सीराम राजा होहिं तेहि मे हम सहाय न किया । नाटके
नमैत्रीनिर्घूदादशरथनूपेराज्यविषयानवैदेही जाताहठहरणतोराल
सपतेः नरामस्यास्येन्दुर्नयनविषयोभूत्सुकृतिनोजटायोर्जम्बेदं वितथम
भवद्भाग्यरहितम् ॥ याही श्लोक के अनुसार यह पद है ॥ १२ ॥

मू० । राघोगोधगोदकरिलीन्हो नयनसरोजसनेहसलिलसुचिम
नऊअर्हजलदीन्हो । सुनऊलपनखगपतिहिमिलेवनमैपितु
मरणनजान्यो सहिनसक्योसोकठिनविधासाबडोपक्षत्राज-
भान्यो ॥ वडुनिधिरामकह्योतनराखनपरमधीरनहिडोल्या

रोकिप्रेमअवलोकिवदनविधुवचनमनोहरबोल्हो ॥ तुलसी
प्रभुभूटे जीवनलागिसमयनधोखेलै हौं । जाकोनाममरतसु
निदुल्लभतुमहिंकहांपनिपैहौं ॥ १३ ॥

टी० । राघोद० । खगपति गीधराज भान्यो तोह्यो अपर पद
सू० ॥ १३ ॥

मू० । नीकेकैजानतरामहियोहौं प्रणतपालसेवककपालचितपितु
पटगरहियेहौं । तजगजोनिगतगीधजनमभरिखाइकुज
न्तुजियोहौं । महाराजसुदतोसमाजसबजपरआजकियोहौं
अवणवचनमुखनामरूपचपरामउकड़लियोहौं । तुलसीमो
समानबड़भागाधोकहिसकैवियोहौं ॥ १४ ॥

टी० । नीकेद० । अपने हृदय मे श्री राम को नीके कै जानत
हौं वायों कहै एहि भांति ते नीके कै जानत हौं ॥ १ ॥ २ ॥ अ-
वन सों श्री राम को वचन सुनत हौं श्री सुष से नाम लेत हौं
नेच सो रूप देखत हौं श्री देह को श्री राम गोद मे लिए है तो
मो समान बड़भागी वियो कहै दूसरे को को कहि सकै गो
॥ ३ ॥ १४ ॥

मू० । मेरेजानतातकहुदिनजोजै देखियेआपुसुअनसेवासुखमोहि
पितुकौसुखदीजै । दिव्यदेहइच्छाजीवनजगविधिमनाइमां-
गिलीजै हरिहरसुयशसुनायदरशदेलोगकृतारथकीजै ॥
देखिवदनमुनिवचनअभियतनरामनयनजलभीजै । बोल्हो-
विहंगविहमिरधुवरबलिकहौंसुभायपतीजै ॥ मेरेमरिवेसम
नचारिफलहौंहितोअोनकहीजै । तुलसीप्रभुदियोउतरमो
नहींपरिमानोप्रेमसहीजै ॥ १५ ॥

टी० । मेरेद० । पुत्र की सेवा को सुख आप देखिए श्री हम को
पिता का सुष दीजिए ॥ १ ॥ पिघाता को मनाइ के दिव्य देह श्री
जग मे इच्छा जीवन मांगि लीजिए हरिहर को जस सुनाय के

औ आपन दरसन देइ के लोगन को कृतार्थ किजिए ॥ २ ॥ रघुनाथ के मुख को देखि कै औ बचनामृत कीं सुनि कै औ श्री राम के नैन जल से तन को भिजै कै ॥ ३ ॥ मौनै रूप उत्तर औ राम दियो मावों प्रेम मे सही परी भाव रघुनाथ ऐसे वक्ता निरुत्तर भए ॥ ४ ॥ १५ ॥

मू० । मेरो सुनिवैतातसन्दे शो सीयहरणजनिकहेडुपितासोह्वै है अधिकअन्दे शो रावरेप्रणयप्रतापअबलमहंअल्पदिननिरिपु-दहिहै । कुतसमेतमुरसभादशाननसमाचारसबकहिहै ॥ मुनिप्रभुवचनआनिउरमूरतिचरणकमलशिरनाई । चल्योन भगुनतरामकलकीरतिअरुनिजभामवडाई ॥ पितृज्योंगीध क्रियाकरिरघुपतिअपनेधामपठायो । असेप्रभुविसारितुलसी घाठतूंचाहतसुखपायो ॥ १६ ॥

टी० । पद सु० ॥ १६ ॥

मू० । रागसूहव । सेवगीसोइउठीफरकतवामविलोचनबाहु सगुण सुहावनेसूचतमुनिमनअगमउछहु । छन्द । मुनिअगमउर आनन्दलोचनसजलतनुपुलकावली । दृणपर्यशालननाइजल भरिकलशफलचाहनचनी ॥ मञ्जुतमनोरथकरतिसुभिरति विप्रवरबाणीभली । ज्योंकल्पवेतिसकेलिसुश्रुतमुफुलफुलीसु खफली ॥ १ ॥ प्राणप्रियपाहुनेअैहैरामलपनमेरेआजु । जानतजनजियकोस्टदुचितरामगरीवनेवाजु । छन्द । स्टदुचि तगरीवनिवाजुआजुविगजिहैगृहआइकै । ब्रह्मादिशङ्करगौ रिपूजितपूजिहौअवजाइकै ॥ लहिनाथहोगुनाथवानोपति तपावनपाइकै । दुहंआरलाऊअवाइतुनसीतीमरेऊगुणगा इकै ॥ २ ॥ दानारुचिरचेपूरणकन्दमूलफलफूल । अनुपम अमियऊतेअस्त्रकअत्रलोक्तअनुकूल ॥ छन्द । अनुकूलअ-स्त्रकअस्त्रज्योनिजहिम्बहिंसवअनिकै । सुंदरसनेहुसु-

धासहसजनससरखासानिकै ॥ क्षणभवनक्षणवाहिरवि-
 लोक्तपन्यभूपरिप्राणिकै ॥ द्वौभाद्रायेसवरिकाकेप्रेम
 पणपहिचानिकै ॥ ३ ॥ अत्रणहिंसुनतचलीआवतदेखि
 लपनरघुराउ । सियलमनेहुकहेहैसपनोविधिकैधौसति-
 भाउ ॥ छन्द । सतिभाउकैसपनोनिहारिकुमारकोश्लराय
 के । गहेचरणजेअधहरणनतजनवचनमानसकायके ॥ ल
 घुभागभाजनउदधियउमयेलाभमुखचितचायके । सोजननि
 ज्यौआदरीमानुजरामभूखेभायके ॥ ४ ॥ प्रेमपट्टांवरदेहेत
 सुअर्धबिलोचनवारि । आश्रमलैदियेआसनपङ्कजपायपखा-
 रि ॥ छन्द । पदपङ्कजातपखारिपूजेपन्यश्रमविरहितभये ।
 फलफूलअंकुरमूलधरेसुधारिभरिदोनानये ॥ प्रभुखातपुल-
 कितगातखादसराडिआदरजनुजये । फलचारिहंफनचारि
 देतपरचारिफलसेवरीदये ॥ ५ ॥ शुभनवर्षिहर्षेसुरमुनिमु-
 दितमराहिसिहात । केहिक्विकेहिल्लधसानुजमांगिमांगि
 प्रभुखात ॥ छन्द । प्रभुखातमांगतदेतिसेवरीरामभोगीयाग
 के । बालकसुमिचाकौशिलाकेपाऊनेफलसागके ॥ पुलकतप्र
 शंशतसिद्धशिवशनकादिभाजनभागके । सुनिसमुभितुलसी
 जानिरामहंसअमलअनुरागके ॥ ६ ॥ रघुवरअंचदउठेसे-
 वरीकरिप्रणामकरजोरि । हौबलिबलिगईपुरइमञ्जुमनोरथ
 मोरि ॥ छन्द । पुरइमनोरथस्वारथऊपरमारथहंपूरणकरी ।
 अथऔगुणनकौकोठरीकरिकुपामुदमङ्गलभरी ॥ तापसकिरा
 तनिकोलखंदुमूरतिमनोहरचितधरी । शिरनाइआयसुपाइ
 गवनैपरमनिधिपालेपरी ॥ ७ ॥ सियसुधिसवकहीनखशि
 धनिरषिनिरषिद्वौभाद्र । दैदैप्रदक्षिनाकरतप्रणामनप्रेमअ-
 धाइ ॥ छन्द । अतिप्रेममानसराखिरामहिरामप्रामहिसो
 गई । तेहिमातुज्यौरडुनाअपनेहाथजलअञ्जलिदई ॥ ७

लसीभनतसेवगीप्रणतिरधुवरप्रकृतिकरुणामई । गावतसुनत
समुभूतभगतिहियहोइप्रभुपदनितनई ॥ १७ ॥

इतिश्रीरामगौतावल्यांआरण्यकांडःसमाप्तः ॥

टी० । सेवरीइ० । सेवरी सोय उठी वा काल मे वाम नेत्र औ
बाज फरकत जे ते सोहावनेसगुन मुनि मन अगम उछाज को
सूचन करत हैं मुनिन को जो अगम सो आनन्द उर मे है नेत्र
सजल हैं तन मे रोमांच है एसी जो सवरी सो लन औ परन के
गृह को सवारि के अर्थात् भारि बटोरि कै औ कलम मे जल भरि
कै फल लेइवे के अभिनाष से चली चलत मे सुंदर मनोरथ करति
है औ विप्रवर जो मतंग षट्पि तिन की जो भली बानी ताको
सुमिर्गति है जो बानी रूप कल्पवैनि सुकृत बटोरि कै सुंदर फूल
फूली रही सो अब सुख रूप फल फली ॥ १ ॥ अब सवरी को म-
नोरथ कहत हैं सवरी कहति है हमनाथ पाइ कै अघाय के लाज
लहव औ श्री रघुनाथ पतित पावन वाना पाय कै अघाइ कै लाज
लहव याते दूनो ओर लाभ अघाइ के है औ तुलसी से तीसरो
गुन गाइ कै अघाय लज लहव अपर सु० ॥ २ ॥ दोना सुंदर रचे
ताको कंद मूल फल फूल ते पूरन किए ते मूलादि कैसे हैं कि अ-
मृतज ते अनूप है औ अखक कहै नेत्र तासे देखतो मे अनुकूल
हैं अर्थात् सुंदरो हैं नेत्रन के प्रिय जो फल है जैसे माता अपने
बालक के हित आनै तैसे मत्र आनि के सुंदर मनेह जो है मो
हजार गुन अमृत से सरस है मानो तासो स नि राखे छन भौन
छन बाहर भूमि पर हाथ दे कै राह देखति है सवरी के प्रेम की
प्रतिज्ञा पहिचानि कै टोऊ भाई आए छन भौन कहिवे को यह
भाव कि जो फल आदि भौन मे घरा है ताको कोऊ जंतु आदि
मिर्गि न देइ ॥ ३ ॥ रघुनाथ आवत है अम अवन सुनत चलत
भई ते राम लघन के आवत देखि सनेह से सिधिल है कहै है कि

हे विधाता सपना है कि सांच है भाग्य रूप पाच छोटी है औ लाभ सुख औ आनन्द के समुद्र उमग्यो अपर सु० ॥ ४ ॥ प्रेम रूप पट के पांवडे देत औ नेच जल को अर्घ देत औ आश्रम मे ले जाय के आसन टिए फेर चगन कमल पषारि के पूजे औ राम पंथ अम ते विशेष रहित भए फल फूल अंकुश मूल नए नए टोना मे सुधारि के भरि भरि के धरे पलकित गात संते सराहि के प्रभु फल खात है मानो सराहत नही है आदर उत्पन्न करत है सवरी ने चारि भांति के फल दिए भाव बैर आदि भक्त्य सरीफा आदि भोज्य अम आदि चोष्य नारि केल रस आदि प्रेय सो फल कैसे है कि चारि फल को प्रचारि कहें ललकारि देत है ॥ ५ ॥ निहात कहिबे को यह भाव कि ह्यहम सवर न भए वस अमल अनुराग के निर्मल अनुराग के वस है वा अनुराग रूप अमल के वस है अपर पद सुगम ॥ ६ ॥ परम निधि पाले परी राम भक्ति पाइ गई ॥ ७ ॥ तुलसी अनित गावत सवरी प्रनति सुनत करुना मई रघुवर प्रकृत समुभक्त प्रभु पद भक्ति नित्य नई हिय मे होइ ॥ ८ ॥ १७ ॥

रिपुमोहेमोहेमुनिउ ठगिसरहेकिरात । सुंदरनहिकोउरामसम
हरिहरकहुकहिजात ॥ १ ॥

इति श्रीरामगौतावली प्रकाशिकाटीकायां श्रीसीतारामकृपापाचयी
सीतारामीय हरिहरप्रसादकृतौ आरण्यकाण्डः समाप्तः ॥

अथ किष्किंधाकाण्ड । सोरठा । त्यागिठालिवलवान दानपीनसुग्री
वकहं । सीतकियोभगवान कोऊप्रालअसहेतुविनु ॥ १ ॥

मू० । रागकेदारा । भूषनवसनविलोकितमियके प्रेमविवममनवेपपु-
लकतननीरजनैननोरभरेपियके ॥ सकुचतकहतसमुभितउरउ
मगतशीलसनेहसगुनगनुतियके । स्वामिदशालखिलपनसखा
कपिपविलेहैसांठआंचमानोवियके ॥ सोचतहानिमानिमन
गुनिगुनिगयेनिघटिफलसकलसुकियके । वरण्यामवन्ततेहि

अवसरवचनविवेकवीररसवियके ॥ धीरवीरसुनिसमुक्तिपर
स्वरवलउप्रायउघटतनिजिह्वियके । तुलसिदासयहसमउकहे
कविलागतनिपटनिठुरजड़जियके ॥ १८ ॥

टी० । भूषणदू० । ऋष्य मूक पर्वत पर सुग्रीव ने श्री जानकीजी
को भूषण वसन श्री रामजी को दिए तेहि विलोकत मात्र श्री राम
जु को मन प्रेम के विशेष बस भयो औ तन कंप औ पुलकावनी
युक्त भयो औ कमल नैन मे आंखू भरि आए ॥ १ ॥ सखा कपि
सुग्रीव और बांदर माठ मठुका ॥ २ ॥ मन मे हानि मानि के गु-
नि गुनि के सोचत है कि सुकिय कहै सुकृत के सकल फल विघटि
कहै बीति गए है वीर रस विय के वीर रस के बीज के ॥ ३ ॥ उ-
घटत प्रगट करत ॥ ४ ॥ १ ॥

मू० । प्रभुकपिनयकबोलिकह्यो है वरषागईसरदऋतुआईअवलौ
नहिमियसोधुलह्यो है ॥ जाकारणतजिलोकलाजतनुराखिवि
योगसह्यो है । ताकोतो कपिराजुआजुलगिकछुनकाकुनिबह्यो-
है ॥ सुनिसुग्रावमभीतनमितमुखउतरुनदेनचह्यो है । अइ
गयेहंगिजुष्टदखिउरपूरिप्रसोदह्यो है ॥ पठयेवदिबदिअवधि
दशहुंदिशिचलेवत्सवनिगह्यो है । तुलसीसियलगिभवदधि
मानोकिहिचिह्नहृतमह्यो है ॥ १६ ॥

इतिश्रीरामगीतावल्यांकिष्किन्दाकाण्डःसमाप्तः ॥

टी० । प्रभुदू० ॥ १ ॥ २ ॥ हरि वानर ॥ ३ ॥ अवधि बदि बदि
पठए अवधि चौपई रामायण मे स्पष्ट है । माम दिवस मह आयेहु
भाई । दसो दिसा को चलत भए पराक्रम को सबने गह्यो है गोसाई
जी कहत है कि जानकी जी के लागि संसार रूप समुद्र को मानो
मेर हरि मछा चाहत है ॥ ४ ॥ २ ॥

इतिश्री रामगीतावली प्रकाशिका टीकायांश्रीसीताराम कृपापाच
श्रीसीतारामोय हरिहर प्रसादकृतौ किष्किन्दाकाण्डः समाप्तः ॥

मू० । रागकेदारा । रजायसुरामकोजवपाथो गालभेलिमुद्रिकामु-
दितमनपवनपूतशिरनाथो ॥ भालुनाथनलनीलसाथचलेवली
वालिकोजायो फरकि सुअङ्गभयेमगणकइतमानोमगमुदमङ्ग
लकायो ॥ देखिविवरुसुधिपाडूगोधसोसवनिअपनोवलमाथो ।
सुभिरिरामतकितरकितोयनिधिलङ्कलुकसोआयो ॥ खोजत
घरघरजनुदग्दिमनिफिरतलागिधनुधायो । तुलसीसियविला
किपुलक्योतनुभूरिभागभयोभायो ॥ २० ॥

टी० । रजासुइ० ॥ १ ॥ २ ॥ मायो कहैं तौल्यौ तरकि कहैं कूदि
लंक लक सो आयो लंका मे लूक सम आयो भाव लूक उत्पात सू-
चक होत है ॥ ३ ॥ श्री हनुमान जू श्री जानकी जू को घर घर
खोजत हैं जैसे दग्दि को मन धन लागि धायो फिरत है भायो
कहैं मन भायो ॥ ४ ॥ १ ॥

मू० । देखीजानकीजवजाडू परमधीरसमीरसुतकेप्रेमउरनमसाडू ।
कशशरीरसुभायशोभितलगीउडिउडिधूनि मनहुमनमिज-
मोहनीमण्णगयोभारेभूलि ॥ रटतिनिमिवासगनिरन्तररा
मराजिवनयन । जातनिकटनविगहिनीअरिअकनितातेवयन
नाथकेगुणगायकहिपिदईमुदरीडारि । कथासुनिउठिल-
ईकरवररुचिरनामनिहारि ॥ हृदयहर्षविषादअतिपतिमुद्रि
कापिहचानि । दासतुलसीदशसोकेहिभातिकहैवखानि ॥ २१ ॥

टी० । देखोइ० ॥ १ ॥ स्वाभाविक सोभित जो श्री जानकी जू
तिन को छामित जो सरीर है तामे धूरि उडि उडि लगी है मानो
काम अम से अपने मोहनी मण्ण को भूलि गया है ॥ २ ॥ राति
दिन निरंतर श्री राम राजिव नैन रटति हैं तात गरम बानो सुनि
के विगहिनी अरि जो वायु सो निकटनही जात है भाव जरि जावे
के डर ते ॥ ३ ॥ करवर अष्ट कर मे ॥ ४ ॥ ५ ॥ २ ॥

मू० । रागसोरठ । बालिवलिमुदरीसानुजकुशलकेशलपालु अमि

यवचनसुनादूमेटिहिविरहज्वालाजालु । कहतिहितअपमान
नमैकियोहोतहियसोदृशानु रोषक्षमिसुधिकरतकवह्लंल-
लितकलिमनलालु ॥ परस्परपतिदेवरहिकाहोतिचरचाचा
लु । देविकहूकेहैहेनुबोलेविप्रलवानरभालु ॥ शीलनिधि
समयमुमाहिवदीनबंधुदयालु । दासतुलसीप्रभुहिकाहुन-
कह्योमरोहालु ॥ २२ ॥

टी० । बोलिदू० । श्री जानकी जू मुदरी से पूछति हैं कि हे
मुदरी अनुज सहित कोशल पाल को कुशल बोलु ॥ १ ॥ लषन
लाल के हित कहते मे मैं अपमान कियो सो मुमिर हूदे मे माल
होत है ॥ पति जो श्रीराम श्री देवर जो लषनलाल तिन्हके आपुस
मे कहि चाल की चरचा होति है हे देवि बहुत वानर भालु कहि
हेतु बोलाए । संका । वानर भालु के बोलाइव श्री जाकी जू कैसे
जानी । उत्तर । मुदरी डारते मे हनुमान जी कहे रहे नाथ के
गुन गाथ कहि कपि दियो मुदरी डारि ॥ ३ ॥ ४ ॥ ३ ॥

मू० । सदलसलखन हैकुशलछपालुकोशलराउशीलसदनसनेहसाग
रमहजसरलमुभाउ ॥ नौदभूखनदेवरहिपरिहरेकोपकिता-
उधोरधुरघुवीरकोनहिसपनेहचितचाउ ॥ सोधविनुअनु
रोधनपकोबोधविहितउपाउ । करतहैसोदूसमयसाधनफ-
लतिवनतिवन उ ॥ पठैकपिदिशिदशहुंजेप्रभुकाजकुटिलन-
काउ । बोलिलियोहनुमानकरिसनमानजानिसमाउ ॥ दई
होमङ्केतकहिकुशलातसियहिसुनाउ । देखिदुर्गाविशेषिजा
नकिजानिगिपुगतिआउ कियोसीधपबोधमुदरादियोकपिहि
लपाउ । पदूअवसरनादृशितुलसीशगुणगणगाउ ॥ २३ ॥

टी० । सदलदू० । मुदरी को उक्ति की दन सहित लषनलाल स
हित छपाल जू कोशलराव सो कुशल है ॥ १ ॥ देवर जो लषन
लाल तिन का न नौद है भूष है श्री छोडि के जावे को पछिताव

है भाव मर्म वचन सहि लेते उहां से न जाते तो काहे को यह दु-
ख भोगते वा दूर नाहक गए नगीचै कृप काहे न रहे औ धीरन मे
अग्रवर्ती जे औ रघुवीर तिन के चित्त मे मपनों मे आनंद नही
है ॥ २ ॥ रिपु को प्रवर पाए बिना अनुरोध कहैं रोक रहत है
अर्थात् कुछ बनत नाही तब रिपु के बोध मे जो विहित उपाय ता-
को लोग करत हैं सोई उपायरूपसाधनसथम के फलति है औ वनाव
बनत है एही न्याय के अनुसार प्रभु ने रिपुके जानिबे हेतु दसो दिसा
मे वानरों को पठए ते वानर प्रभु के काज कुटिल कोज नही हैं ह
नुमान में समाई जानि के बुलाय लियो पुनि सनमान करिके संकेत
की बात कहिके हम को दर्ई औ कहत भए कि हमारी कुशलात
जानकीजी को जाय सुनाओ औ लंका गढ़कों औ विशेष जानकीजी को
देखि कै औ रिपु की पराक्रम जानि कै हमारे टिग आओ ॥ ३ ॥ ४
॥५॥ एहि प्रकार ते मुदरी ने औ जानकीजी को विशेष बोध कियो
औ हनुमान को देखाय दियो औ हनुमान जू अवसर पाय सिर-
नाय कै श्रीराम के मुन समूह कहन लगे ॥ ६ ॥ ४ ॥

म० । सुअनसमीरको धीरधुरीणवीरवडोइ । देखिगतिसियमुद्रि-
काकीवालज्योदियोरोइ ॥ अकनिकटुबाणौकुटिलकीक्रोध
विंध्यवटोइ । सकुचिसमभयोईशत्रायसुकलशभवजियजोइ ।
बुद्धिवलसाहसपराक्रमअकतराखेगोइ । सकलमाजसमाजसा
धकसमउकहसवकोइ ॥ उत्तरितरुतेनमतपदसकुचातसोचत
सोइ । चुकेअवसरमनहुसुजनहिंसुजनसनमुखहोइ ॥ कहे
बचनबिनीतिप्रतीतिनौतिनिचोइ । सीयसुनिहनुमान
जान्योभलीभांतिभलोइ ॥ देविबिनकरतूतिकहिवोजानिहै
लघुलोइ । कहौगोमुखकीसमरसरिकान्तिकारिखधोइ ॥
करतकृच्छ्रनिबनतहरिहियहरखगोकसमोइ । कहतमन
तुलसीश्लङ्काकरोसघनमोइ ॥ २२४ ॥

टी० । सुअनद० । धीरन मे अग्रवती बडो बीर जो पवन को पत सो श्री जानकी जू औ मुद्रिका की कुगति देखि कै जैसे बालक गौवै तैसे रोय दियो ॥ १ ॥ कुटिल रावन की कटुबानी सुनि कै हनुमान जी को क्रोध रूप बिंध्य पर्वत बढत भयो पर श्री रामकी आज्ञा रूप अगस्ति को देखि कै सकुचि कै सम ह्वै जात भयो ॥ २ ॥ बुद्धि बल साहस पराक्रम के रहते इन सब के छपाय राखे काहे ते कि सकल साज समाज के साधक सभै है अस सब कोई कहत है ॥ ३ ॥ वृक्ष ते उतरि के श्री जानकी जू के पद मे नमस्कार करत भए श्री सो बात ते सकुचात श्री सोचत भए भाव जब रावन कटु कहत रहा तब कुछ न बन्यो अवसर के चुके पर मानो सुजन के सन्मुख सुजन होय ॥ ४ ॥ प्रीति विस्वास नीति में निचोरि के नम्र बचन बोले श्री जानकी जू सो बचन सुनि के हनुमान को जान्यो श्री यह विचार्यो कि अब भलाई भली भांति ते है ॥ ५ ॥ हनुमान जू बोले कि हे देवि विना करतूति किए कहिये ते लोग लघु जानि है ताते काल्हि समर रूपी नदी मे मुख की करिषा धोइ के तब कहों गो ॥ ६ ॥ हरख सोक मे हृदै मिलि रह्यो है ताते हनुमान जू सो कुछ करत नहीं बनत है इहां हरख दर्शन करि श्री सोक दसा देखि तुलसी के ईस जे हनुमान ते मन मे कहत है कि लंका मे सघन घमोइ करौंगो भाव अस चौपट करौंगो कि कांटे जामै गो घमोइ को कोऊ देशवाले भंड भंड कोऊ देसवाले घमोइ कोऊ देशवाले कटीला कोऊ देशवाले सत्यानासी कोऊ देशवाले बंग कहत है ॥ ७ ॥ ५ ॥

मू० । रागकेदार । हीरघुवंशमनिकोटत मातुमानुप्रतीतिजान-
 किजानुमारुतपत ॥ मैसुनीवातैअशैलीकहिजेनिअरनीचाक्यों
 नमारैगालवैठोकालडाटनिबोच ॥ निदरिअरिघुबीरबल्लै
 जाउंजौंहठिआजु । डरौंआयसुभङ्गतेअरुबिगरिहैसुरकाजु

बाधिधारिधसाधिरिपुदिनचारिमेद्वौबीर । मिलहिंमेकपिभालुदलसंगजननिउरधरुधीर ॥ चित्रकूटकथाकुशलकहिशीशनायोकीश । सुहृदसेवकनाथकोलखिदईअचलअशीश ॥ भयेसीतलअवणतनमनसुनेवचनपियूष । दासतुलसीरहीनयननिदरशहीकीभष ॥ २२ ॥ ५ ॥

टी० । होइ० ॥ १ ॥ बातें असैली अमर्जाद की बातें काल के मुख मे जो चौभरि है ताके बीच मे बैयो है तब ल्यों न गाल मारै भाव गाल नही मारत हैं सन्निपात करि जल्पत है ॥ २ ॥ श्रीरघुबीर के बल ते अरि को निरादर करि कै हठि करि जो आप को ले जाउं तो श्रीराम जू की आज्ञा भंग ते डरत हौं औ देवतन को काज विगरेगो ताते डरत हौं ॥ ३ ॥ इहां चारिदिन अल्पदिन को बोधक है ॥ ४ ॥ चित्रकूट की कथा अर्थात् जयंत की कथा औ श्री राम को कुशल कहि के हनुमान ने सोस नवाए चित्रकूट की कथा जो कहे ताको यह भाव कि तुम्हारे हेतु इन्द्र के बेटा की कैसी दुर्दसा किए तब और की कहा चली ॥ ५ ॥ ६ ॥

मू० । ताततोह्लसोंकहतहोतिहियेगलानि मनकोप्रथमप्रणामसमुभित्तअक्षततनलखिनइगतिभइमतिमलानि ॥ प्रियकोवचनपरिहख्योजियकेभरोसेसङ्गचलीवनबडोलाभजानि।प्रियतुमविरहतौसनेहसरवससुतऔसरकोचूकियोसरिसनहानि ॥ आरजसुअनकेतौदयादुअनज्जपरमोहिसोचमोतेसबविधिनसानि । आपनीभलाईभलोक्रियोनाथसबहोकोमेरेहीअदिनवसविसरीवानि ॥ नेमतौपपीहाहीकेप्रेमष्यारीमीनहीकेतुलसीकहीहेनीकेहृदयआनि । इतनीकहीसोकहीसीयज्योंहीत्वोंहौरहीप्रीतिपरिसहीविधिसोनवसानि ॥ २२ ॥ ६ ॥

टी० । तातइ० । हे तात तुमहें से कहव हृदय मे गलानि होति है मन को जो प्रथम पन रह्यो भाव श्री राम बिनुहम जिअव

नाही सो तन को बिद्यमान समझि के यह नई गति देखि कै ह-
 मारी गति मलान भई ॥ १ ॥ प्रिय कहत रहे कि तुम घर मे रहो
 तेहि वचन को त्याग्यों जिअवे के भरोसे से औ बन मे बड़ा लाभ
 जानि के संग चलिउं पर सनेह को सरवस जो पीतम तिन को
 विरह भयो तब हे सुत अवसर चूकवे सरिस हानि नही है भाव
 विकुरतै सरीर छोडि देना रहा वा प्रीतम विरह ते सनेह सर्वस
 पाठ होय तो अस अर्थ करना कि बडो लाभ बन मे जानी कौन
 लाभ जानी कि प्रीतम के विरह ते प्रीतम को सनेह सरवस है
 भाव ताते संग चलनो चाडिण सो प्रीतम को विरह बन मे भयो
 ताको हम संहे याते अवसर चूकियो सरिस हानि नही है भाव
 तन त्यागि देना रहा ॥ २ ॥ आर्ज जो अष्ट दशरथ महाराज तिन
 के पुत्र को दशा दुष्टो पर है भाव तब जो सरनागत हैं तिन को
 को कहै सोते सब विनसाय गई है याते हम को सोच है आपने
 भलाई ते नाथ सब को भलो कियो है पर मेरीही अदिन तस नाथ
 हू की भलाई को वानि विभरि गई है ॥ ३ ॥ नेम तो पपी है को
 ठीक है भाव वाको पीतम मेघ केतनो निरादर करत है ताको न-
 ही मानत है औ प्यारी मोनही को प्रेम है भाव पीतम जो जल
 तेहि विनु नही जोअत है नीके हृदय मे आनि के जानको जू ने
 यह कही है यतनी कही सो कही जानको जू ज्यों कै त्यो रहो
 भाव काष्टवत है रही प्रीति की तो सही परी अर्थात् अपन पो
 भूलि गई पर विधाता सों कुछन वसान ॥ ४ ॥ ७ ॥

सू० । मातृका हेकों कहति अतिवचनदीन तबकी तुहीं जानति अवकी
 होहि कहत सबके जियको जानत प्रभु प्रवीन । अैसे तो सोचि हिं
 न्यायनि ठुरनाय करत शलभकुरङ्गप्रगकमलमौन करुणानिधा
 नको तो ज्यों ज्यों तनु छोण भयो त्यों त्यों मन भयो तेरे प्रेमपीन ॥
 सियको सनेह रघुवरकी दशासुमिरिघवनपूत देख्यो प्रीतिलीन ।

तुलसीजनको जननिह्नप्रबोधकियोसमुभितातजगद्विधिअधी
न ॥ २२ ॥ ७ ॥

टी० । मातृदू० । हे मातृ काहे को अति दीन वचन कहति ह्यौ
तब की तुमहीं जानति ह्यौ भाव कैसी प्रीति तुम्हारे मे रही औ
अब जैसी है तस हम कहत हैं औ सब के जिय की प्रभ प्रवीन
जानत हैं भाव तुमको विरहिनी जानि क्यों विरही होंहि गो
॥ १ ॥ जस तुम सोचति ह्यौ तस निठुर नायक मे जेरत हैं ते सोच
हिं तो न्याय कहैं युक्त है जैसे पतंग पपोहा हरिन कमल सीन
को निठुर नायक दीप सिखा मेघ राग सूर्य जल ए सब हैं ते सो-
चहिं औ करुना निधान श्रीराम को तो ज्यौं ज्यौं तन क्यौन भयो
ल्यौं ल्यौं तुम्हारे प्रेम मे मन पीन भयो ॥ २ ॥ श्री जानकी जू को
नेह औ रघुबर की दसा सुमिरि के जब पवन पत प्रीति मे लीन
भयो तब जानकी जू देखि हनुमान जी को प्रबोध कियो कि हे
तात विधाता के आधीन जग जाने ॥ ३ ॥ ८ ॥

मू० । रागजयतिश्री । कहोकपिकवरघुनाथपाकरिहरिहैनिज
वियोगशस्त्रवदुख । राजिवनयनमदनअनेककृतिरविकुलकुमु
दसुखदमयंकमुख ॥ विरहअनलसहायसमीरनिजतनुजरि-
बेकहंरहीनककुशक । अतिखलजलवरखतद्वौलोचनदिनअ-
ररइनिरहतयेकहितक ॥ सुदृढज्ञानअवलेखिसुनऊसुतरा
खतिप्राणविवारिदहनमत । सगुणरूपलीलाविलाससुखसु-
मिरणकरतेरहेतअज्ञतरगत ॥ सुनुहनुमन्तअनन्तबंधुकहंणा
सुभावसुशीलकोमलअति । तुलसिदासएहिवासजानिजियव
रदुखसह्यौप्रगटनकहिसकति ॥

टी० । कहोइ० । निज वियोग संभव अपने वियोग ते उत्पत्ति
॥ १ ॥ निज स्वप्न रूप वायु के सहाय युक्त जो विरहानल तामे तन
के जरिबे कहं ककु संदेह न रही पर दिन औ राति एकै तार से

दोज लोचन प्रवल जल वर्षत है भाव नैन रूप मेघ जरिवे नहीं
 देत है ॥ २ ॥ हे सुत संदर दृढज्ञान को अवलम्बन करि के भाव
 राघो जाको अपनावत है ताको त्यागते नहीं एहि ज्ञान के अवल
 म्बन करि जरादूवे के मत ते विचारि के प्रान को राषति हौ औ
 भीतर सगुन रूप के लीला विलास को सुख सुभिरन करत रहत
 हौ ॥ ३ ॥ हे हनुमंत लषनलाल के भाई कारुण्य सुसील औ अति
 कोमल है एहि चास ते प्रगट नहीं कहि सकति हौ भाव तुम जब
 जाय कहो गे तब विकल होय जाहिगे ताते बह दुख सहत हौ
 ॥ ४ ॥ ६ ॥

म० । रागकेदारा । कवळककपिराघोआवहिंगे मेरेनयनचकोर
 प्रीतिवसराकाशशिमुखदेखरावहिंगे ॥ मधुपमरालमोरचात
 क है लोचनवज्जप्रकारधावहिंगे । अंगअंगकृविभिन्नभिन्नसुख
 निरषिनिरखितहंतहंकावहिंगे ॥ विरहअग्निजरिरहीलता
 ज्योत्स्नापाट्टिजलप्रलुहावहिंगे । निजविधोगदुखजानिदया
 निधिमधुरवचनकहिसंभुभावाहिंगे ॥ लोकपालसुरनागम-
 नुजसवपरेवन्दिकवमुक्तावाहिंगे । रावणवधरघुनाथविमल
 यशनारदादिमुनिजनगावाहिंगे ॥ यहअभिलाषरदुनिदिनमे
 रेराजविभीषणकवपावाहिंगे । तुलसिदासप्रभुमोहजनितम
 मभेदवृद्धिकवविसरावाहिंगे ॥ २२ ॥ ६ ॥

टी० । कवळहं० । हमारे प्रीति वस नैन रूप चकोर को मुख
 रूपपूर्ण चंद्र को कव देषरावैगे राका नाम पूर्णवांसी को है ॥ १ ॥
 लोचन जोसो म्बमर हंस मोर पपीहा है के वज्जत प्रकार ते कव
 धावें गे औ अंग अंग की कृवि मे भिन्न भिन्न सुष देषि देषि के
 तहां तहां कव छांय रहै गे भाव म्बमेर है सुष नेत्र करपट रूप
 कमलन मे औ हंस है के नाभी रूप सर मे औ मोर है के गं-
 भीर गिरा रूप गर्जन मे औ पपीहा है ख्याम सरीर रूप वन मे

कव छवैं गे ॥ २ ॥ ३ ॥ मुक्तावहिंगे छोड़ावहिंगे ॥ ४ ॥ गोसाईं जी कहत है कि जानकी जी कहति है की प्रभु हमारे मोह जनित भ्रम को अर्थात् कनक मृग विषयक जो भ्रम भयो ताको औ भेद बुद्धि को अर्थात् लक्ष्मणजू मे जो आनि भांति की बुद्धि भई ताको कव विसराइ देहिं गे भाव यह दूनो दोष हमारे कव भूलि जाहिं गे ॥ ५ ॥ १० ॥

मू० । सत्यवचन सुनुमातु जानकी जनके दुखरघुनाथ दुखित अतिसह जप्रकृतिकरुणानिधानकी ॥ तुववियोगशंभवदारुणदुखविसरि गईमहिमा सुवाणकी । नतकङ्क कहरघुपतिसायकरवितमअनीककहजातुधानकी ॥ कहं हमपशुसाखा मृगचञ्चलवात कहौंमैविद्यमानकी । कहंहरिशिवअजपूज्यज्ञानघननाहिं विसरतिवहलगनिकानकी ॥ तुवदर्शनसन्देससुनिहरिको बद्धतभईअवलम्बप्राणकी । तुलसिदासगुणसुमिरिरामकेप्रेममगननहिंसुधिअपानकी ॥ २ ॥ ३० ॥

टी० । सत्यवचन ६० ॥ १ ॥ तुम्हारे वियोग ते उत्पन्न जो कठिन दुःख ताते सुंदर जो वान की महिमा सो विसरि गई नाही तो तुम हीं कहो कहां रघुपति को शायक सूर्य सम कहां राक्षसी की सेना तम सम ॥ २ ॥ कहां हम पसुन मे चंचल बांदर औ कहां विष्णु शिव ब्रह्मा करि के पूज्यज्ञान स्वरूप औ राम बात कहौं मै विद्यमान की हमारे पर जो बीती है सो बात कहत हौं जेहि प्रकार ते हमारे कान मे लगि बात कहे सो विसरत नाहीं इहां औ राम की अति करुना जनाए । तथाचस्मृतिः ब्रह्मविष्णुमहेशाद्यायस्त्र्यंशालोकसाधकाः तमादिदेवंश्रीरामं विशुद्धस्मरसुम्भजे ॥ १ ॥ ३ ॥ तुम्हारे दर्शन तुम्हारे संदेसा सुनि के हम जानक है कि श्रीराम को प्रान की बद्धत अवलंब भई हनुमान जो श्रीराम को गुनगन सुमिरि के प्रेम मे मगन भए ताते अपन पो भूलि गए ॥ ४ ॥ ११ ॥

मू० । रागकानरा । रावण जौपैरा मरण रोषे को सहिसकै सुरासुर
 समरथविशिषकालदशननितेचोषे ॥ तपवल भुजवलकैसनेह
 बलशिवविरञ्चिनोकेविधितोषे सोफलराजसमाजसुअनजन
 अघननासआपनेपोषे ॥ तुलापिनाकसाङ्गटपत्रिभुअनभटव-
 टोरिसवकेवलजोषे । परशुरामसेसूरशिरोमणिपलमेभयेखेत
 केसेधोषे ॥ कालिकीवातवालिकीसुधिकरिसमुष्मिहिताहित
 खोलिभगोषे । कह्योकुमंचिनकोनमानियैबड़ीहानिजियजा
 निचिदोषे ॥ जोसुप्रसादजन्मिजगपुरुषनिसागरसृजेखनेअ-
 रुसोषे । तुलसिदाससोखामिनसूभयो नयनसौशमन्दिरके
 सेसोषे ॥ २ ॥ ॥ ३१ ॥

टी० । रावनइ० । अब श्री हनुमान जी श्री रावन को संवाद
 लिखत है ॥ १ ॥ तप बल ते कै भुज बल ते कै सनेह बल ते शिव
 विरंचि को नीको विधि से प्रसन्न किए ताको फल राज समाज औ
 पुत्र सेवक पाए सो आपने घोषे को आपहि मति नासो ॥ २ ॥
 राजा जनक रूप साङ्ग ने त्रिभुवन के भट बटोरि के सब के बल को
 पिनाकरूप तेराजुपर जोषे भाव सब का पलरा उठि गया श्रीरामहि
 का पलरा न उठा औ जेहि श्रीराम के आगे सूर सिरोमनि परसु
 राम से पल मे घेत के घोषे से भए भाव देषही मात्र के रहि गए
 ॥ ३ ॥ अबही बाल की बात कालि की है भाव थोडे दिन की है
 ताको सुधि करि के हृदय रूप भगोषा को पट घोलि के हित अ-
 हित समुष्मि कुमंचिन को चिदोषे जानि अर्थात् काल वस जानि
 इन को कह्यो न मानिए कोहि ते की बड़ी हानि है ॥ ४ ॥ जेहि
 के प्रसाद ते जगत मे पुरुष जनम के समुद्र को उत्पन्न किए औ
 षंडे औ मोषे समुद्र को सृजे प्रियव्रत ने औषोदे संगर महाराज के
 पुत्र ने सोषे अगस्ति ने मोषे कहे करोषे ॥ ५ ॥ १२ ॥

मू० । रागमाह । जौहोप्रभुअथमुलैचलतो तोषेहिगिसितोहिस

हितदशाननजातुधानदलदलतो । रावणसोरसराजसुभटर-
ससहितलङ्कखलखलतो कम्पिपुटपाकनाकनायकहितघनेघने
घरघलतो ॥ बडेसमाजलाजभाजनभयोबडोकाजविनुछलतो
लंकनाथरघुनाथवयरतरुआजुफैलिफुलिफलतो ॥ कालकर्म
दिग्पालसकलजगजालजासुकरतलतो । तारिप्रमोपरभूमि
रारिरणजीवनमरणसुथलतो ॥ देखीमैटशकगुसभासवमो
तेकोउनसबलतो । तुलसीअरिउरआनिअैकअवएतीगला-
निनगलतो ॥ २ ॥ ३२ ॥

टी० । जौदू० । जो हम प्रभु की आग्यां युद्ध के हेतु लैके चले
होते तो हे दसानन एहि रिसि ते तोहि सहित राजस दल को
दलि डारते ॥ १ ॥ रावन ऐसो रसराज कहैं पारद को तामो सु-
भट रूप बूटिन के रस सहित करि के लंका रूप षल मे षलते
फिर पुट पाक बनाइ के इन्द्र के हित घने घने घर को घालते भाव
और जे अनेक रोग रूप राजस तिन्है नासते ॥ २ ॥ हे लंकनाथ
रघुनाथ को वैर रूप दृक्ष जो आज फैलि फूलि कै फलत तो विनु
छलै ते बडो काज होत सो न भयो ताते बडे समाज मे लाज के
पात्र हम भए भावविना करतूति बचन माचकहे ॥ ३ ॥ काल कर्म
इन्द्रादि दिग्पाल सब औ जगत समूह जाके करतल मे है ताके
रिपु सो परभूमि कहैं शत्रु के भूमि मे औ रन की लड़ाई ऐसे सं-
जोग मे जीवन मरन दोऊ सुथल को रह्यो ॥ ४ ॥ हे दसकंध मै
देखी तेरे सब सभा मे मोते कोऊ सबल नही है उर मे अरि को
अंदाजा आनि कै एती गलानि मे नही गलते जो रघुवीर की आ-
जा होति ॥ ५ ॥ १३ ॥

मू० । तौलोंमातुआपुनिकेरहिवो । जौलोंहौल्यावौरघुवीरहिदिनहै
औरदुसहदुखमहिवो । सोषिकैखेतकेवांधिखेतुकरिउतरि-
वोउदधिनवोहितचहिवो । प्रबलदनुजदलदलिपलआघमेजी

वतदुरितदशाननगहिवो ॥ बैरिट्टन्दविधवावनितनिकोदेखि
वोवारिविलोचनवहिवो । सानुजसैनसमेतस्वामिपदनिरधि
परममुद्मंगललहिवो ॥ लंकदाहउरआनिमानिवोसांचरा-
मसेवककोकहिवो । तुलसीप्रभुसुरसुयशगाइहैमिटिजैहै
सकलसोचदौदहिवो ॥ २ ॥ ३३ ॥

टी० । तौली० । अब श्री जानकी जू प्रति हनुमानजूकी उक्ति
है तौली० । इहां दस दिन अल्पदिन को वाचक है ॥ १ ॥ स-
मुद्र को सोषि कै घेत कहै सम करि कै अथवां सेतुवांधि कै समुद्र
उतरव जहाज को चाहना न करव दुरित दसानन पाप रूप दसा-
नन ॥ २ ॥ रिपु गन के विधवा स्त्रिन को नेचन ते जल वहिवो दे-
षव ॥ ३ ॥ लंका को दाह उर मे आनि के राम सेवक को कहव
सांच मानव भाव हम एक राम सेवक अस किआ तव अनेक राम
सेवक रहै गे जस हम कहे तस क्यों न करै गे दव कहै अग्नि
॥ ४ ॥ १४ ॥

मू० । कपिकेचलतसियकोमनगहवरआयो । पुलकसिथिलभयोश्री
रनीरनयनन्हछायो । कहनचह्योसन्दे शनहिकह्योपियके-
जियकीजानिहृदयदुसहदुखदुरायो देखिटशाव्याकुलहरिसु
ग्रीषमकेपथिकज्योधरणितरणितायो ॥ मीचतेनीचलगीअ-
मरताकुलकोनवलकोथलनिरधिपरुषप्रेमपायो । कैप्रबोधमा
तप्रीतिसोमनअशोसदौन्हीहैहैतिहागेईभायो ॥ करुणाको
पलाजभयभख्योकियोगौनमोनहींचरणकमलशीसनायो ।
यहसनहसरवसुसमौतुलसीरसनारूखीताहितेपरतगायो ॥

टी० । कपि० । गहवरि आयो कहै भरि आयो ॥ १ ॥ संदेस
कहिवे के चाहत भई पर न कहीं पिय की कहना मै हृदय जानि
कै कठिन दुख अपने हृदय मे छपाई भाव सुनि कै रघुनाथ और
अति दुखी ह्वै जाहिं गे दसा देखि के हरीस जो श्री हनुमान ज

सां ग्रीष्मरितुको पथिक जैसे सूर्य करि तपी भूमि से व्याकुल होत
 तस भए ॥ २ ॥ हनुमान जू को अपनी अमरता श्लथु से भी नि-
 काम लगी छल को औ बल को थल नहीं देखि कै भाव इहां न
 छलै काम आवत है न बलै काम आवत है अस देखि कै अपने प्रेम
 को कठोर पावत भए भाव जो तन न छूटा तो कहा प्रेम ॥ ३ ॥
 कर्णा श्री जानकी जू की दसा देखि कोप रावण पर लाज जस
 चाहिए तस न करने को भय विनु आज्ञा लंका जराइवे को तासो
 भयो चरण कमल सिर नाथ के मौनहीं कपि गमन कियो यह
 समै स्नेह को सर्वस्व है औ तुलसी की रसना रूषी है ताही ते
 गायो परत है भाव सरस होती तो बन्धि जाती ॥ ४ ॥ १५ ॥

मू० । रागवसंत । रघुपतिदेखो आयो आयो हनुमन्त लङ्के शगनरखे
 ल्योवसन्त । श्रीरामराजहितसुदिनसोधि । साथीप्रबोधिलां-
 घोपयोधि ॥ सिधपायपूजिअशिषापाय । फलअभियसरिस
 खायेअध्वान ॥ काननदलिहोरोरचिबनाय । इठितेलवसन
 बालधिबंधाय ॥ दिवढोलचलेसंगलोगलागि । बरजोरदर्ईच
 ऊंओरआगि ॥ आखतआऊतिकियेजातुधान । लखिलपट
 भभरिभागेविमान ॥ नभतलकौतुकलङ्गाविलाप । पग्निनाम
 पचिंहिंपातकौपाप ॥ हनुमानहांकसुनिवरषिपूल । सुरवार
 वारवरखिंहिलंगूल ॥ भरिभुअनसकलकल्याणधूम । परजारि
 वारिनिधिवोरिलूम ॥ जानकीतोषिपोषेउप्रताप । जैपवन
 सुअनदलिदुअनदाप ॥ नांचिंकूदरिंहिकपिकरिविनोद । पी
 वतमधुमधुवनमगनमोद ॥ योंकहतलषणगहेपायआय ।
 मणिसहितमुद्रितभेंथ्योउठाय ॥ लगेसजनसैनभयोहियऊ-
 लाश । जयजयशगावततुलसिदास ॥ २ ॥ ३५ ॥

टी० । रघुपतिइ० ॥ १ ॥ साथी जामवंत आदि ॥ २ ॥ बालधि
 लंगूर ॥ ३ ॥ आऊति को आपत रूप निसाचरीं को किए भभरि

भड़कि परिनाम पचहिं पाप ते पातकी अंत मे पचत हैं तो क्यों न लंका मे विलाप होय ॥ ४ ॥ लूमिलंगूर ॥ ५ ॥ पोष्यो प्रताप लंका जराइ के श्री राम प्रताप कीं पुष्ट कियो दुअन दाप कहैं दुष्टन को अहंकार ॥ ६ ॥ मनि चूडामनि । संका । ए सब लक्षण जी कैसे जाने । उत्तर । सर्वज्ञता करि ॥ ७ ॥ १६ ॥

मू० । रागजयतिश्री । सुनऊरामविश्रामधामहरिजनकसुताअति विपतिजैसेसहति । हेसौमित्रिबंधुकरणानिधिमनमऊरट-तिप्रगटऊनहिकहति ॥ निजपदजलजविलोकशोकरतनयन निवारिरहतनएकक्षण । मनऊनीलनीरजशशिशभवरविवि योगद्वौअवतसुधाकण ॥ बऊराक्षसीसहिततरुकेतरतुहरेवि रहनिजजन्मविशोवति । मनहुंदुष्टइन्द्रियसंकटमहंबुद्धिविवे कउदयमगुजोवति ॥ सुनिकपिबचनविचारिहृदयहरिअन पाइनीसदासोएकमन । तुलसिदासदुखसुखातीतहरिसोच करतमानऊंप्राकृतजन ॥ २ ॥ ३६ ॥

टी० । हेसौमित्र बंधो हे करुणा निधे अस जानकी जू मन महं रटति हैं औ प्रगट नहीं कहति हैं भाव अति वियोग ते बोलि नहीं सकति हैं वा राक्षसन के भय ते ॥ १ ॥ अपने चरण कमल को देखत रहति हैं नीचे सिर करना एक सोक मुद्रा है औ सोक मे रहत हैं औ आपिन मे आंभु एक छन टिकत नाही मानो चंद्रमा ते उत्पन्न जे दोऊ स्याम रंग के कमल ते सूर्य के वियोग ते सुधा कणअवत हैं इहां दोऊ स्याम कमल नेत्र हैं मुख शशि है रविश्री राम हैं सुधा कण आंख हैं ॥ २ ॥ तरु के तर मे बऊत राक्षसिन के सहित तुहारे बिरह मे आपन जन्मवितावति हैं मानो बुद्धि दुष्ट इन्द्रीन के संकट मे विवेक उदै की राह ताकति है इहां दुष्टेन्द्री राक्षस हैं बुद्धि श्री जानकी जू हैं औ विवेक श्री राघव हैं ॥ ३ ॥ हरि कपि की बातें सुनि कै औ हृदय मे अस विचारि के कि सो

जानकी जू एक मन मे सदा अनपायनी कहै नास रहित भक्ति मे स्थित है गोसाई जी कहत है कि दुष सुष ते रहित जो हरि सो प्राकृत जन सम सोच करत है ॥ ४ ॥ १७ ॥

मू० । रागकेदारा । रघुकुलतिलकधियोगतिहारे भैदेखीजवजाइ जानकीमनहुँविरहमूरतिमनमारे । चित्रसेनैनअरुगढेसेचरणकरमढेसेश्रवणनहिँसुनतिसुपकारे रसनारटतिनामकर शिरचिररहैनितनिजपदकमलनिहारे ॥ दरसनआसलालसा मनमहंराखेप्रभुध्यानप्राणरखवारे । तुलसिदासपूजतित्रिजटानीकेरावरेगुणगणशुभनसवारे ॥ २ ॥ ३७ ॥

टी० । रघुकुलइ० । मानो विरह की मूरति है ताह मे उदास ॥ १ ॥ तसधीरे के नेत्र सम नेत्र है भाव अचल है रहे है औ गढे से चरन कर है भाव चेष्टा रहित है औ मूदे सम कान है ताते धीरे मे को कहै पुकारे से भी नही सुनति है जीभ ते नाम को रटति है औ वज्रत देर तक माथ पर हाथ धरे रहति है औ अप ने चरण कमल को सदा निहारे रहति है ॥ २ ॥ आप के दरसन की आसा औ लालसा मन मे राषे है ताते प्राण के रक्षा करनि हारो प्रभु को ध्यान राखे है औ रावरे गुन गन रूप संवारे भए फूल ते लजटा नीके पूजति है ॥ ३ ॥ १८ ॥

मू० । अतिहिँअधिकदरशनकीआरति रामवियोगअशोकविटपतरसौयनिमेषकल्पसमटारति ॥ बारबारवरवारिजलोचनभरि भरिवरतवारिउरठारति मनहुँविरहकेसद्यघायहिँयेलखित कितकिधरिधीरततारति ॥ तुलसिदासयद्यपिनिशिवासरक्षणक्षणप्रभुमूरतिहिँनिहारति । मिटतिनहुँसहृतापतउतनुकी यहविचारिअन्तरगतिहारति ॥ २ ॥ ३८ ॥

टी० । अतिइ० ॥ १ ॥ बार बार श्रेष्ठ कमल लोचन म गरम जल भरि भरि के उर पर गिरावति है मानो हृदै मे विरह के

तुरंत को घाव देखि के धीरज धरि के तकि तकि के ततारति कहै
छोटा देति है अंतर गति हारति भीतर से हारति है ॥ ३ ॥ १६ ॥
मू० । तुम्हरे विरह भई गति जौन चित्त दै सुन ऊ राम कर्णानिधि जा-
नौ ककुपैस कौ कहि हौन । लोचन नीर कृपण के धन ज्यौर रहत
निरन्तर लोचन कौन हाधुनि खगीलार्जापिंजरे मंहं राखि हि-
र्ये वड़े बधिक हठि मौन ॥ जेहि बाटिका वसति त हंपग म्ग गत जि
त जि भजे परातन भौन । खास समीर भेट भई भोरे ज्जंते हि मगु
पगुन धर्योति ज्जपौन ॥ तुलसिदास प्रभु दशासीयकी मुख करि
कहत होति अति गौन ! दीजे दरश दूरि को जै दुष हौ तुम आर-
ति आरत दौन ॥ २ ॥ ३६ ॥

टी० । तुम्हरे दू० । हे कर्णानिधि राम तुमरे विरह मे जानकी
जू को जो गति भई है ताको चित्त दै के सुन ऊ हम ककु जानत
है पै कहि नही सकत हौं ॥ १ ॥ निरंतर नेचन के कोन से नेचन
को जल रहत है जैसे कृपिन को धन कोने मे रहत है लाज रूपी
पिंजरा मंहं हाधुनि रूपी पक्षिणी कों वड़े बधिक रूप मौन ने
हठि करि के राषी है ॥ २ ॥ जेहि बाटिका मे श्री जानकी जू व-
सति है तहां ते खग म्ग अपना प्राचीन भौन छोड़ि के भजे भाव
शरीर से विरहानल की तपनि जो उठति है ताको न सहि सकी
खास औ समीर ते जो भूलीउ के भेट भई तो फेरते हि मग तीनो
समीर सीतल मंद सुगंध पग न धर्यो भाव एक बार काह्ल भाग
से बचि गए फेर जाइवे ते खास जलाइ देइ गो ॥ ३ ॥ हे प्रभ
सीय की जो दसा है सो मुख करि कहिवे ते अति गौण होति है
ताते दरसन दीजे औ दुष को दूर कोजे काहे ते कि तुम आर्त्त की
आर्त्ति दाहक हौ ॥ ४ ॥ २० ॥

मू० । कपिके सुनिकलको भल बयन प्रेमपुलकिसवगातसिधिलभये
भरेशलिलसरसौरहनयन । सियवियोगसागरनागरमनुबू-

डनलग्योसहितचितचयन लहीनावपवनजप्रशन्नतावरवसत
 हांगह्योगुणमयन ॥ सकतनबूभिकुशलबूभेविनुगिराविपुल
 व्याकुलउरअयन । ज्यौकुलीनसुचिसुमतिवियोगिनिसन्मुष
 सहैविरहसरपयन ॥ धरिधरिधीरवीरकोशलपतिकियेयत्नस
 केउतरुनदयन । तुलसिदासप्रभुसखाअनुजसौंसयनहिंकह्यो
 चलज्जमजिसयन ॥ २४ ॥

टी० । कपि० ॥ १ ॥ श्री जानकी जू के वियोग रूपी समुद्र में
 श्री रामजू के मन जो नागर सो अपने चित्त के आनन्द सहित
 बूडन लग्यो तहां पवन सुत की प्रशन्नता रूप नौकालही पर तहं
 ऊं वरवस ते काम ने गुन को गह्यो भाव मन को घीच्यो पवनज
 प्रशन्नता को नउका कहिवे को यह भाव कि एनके प्रशन्नता ते
 जानि परत है कि शीघ्र रावन जीत्यो जायगो ॥ २ ॥ श्री राम कु-
 शल नहीं बूभिक सकत हैं श्री कुशल बूभे विना उर रूप घर मे
 बानी अतिव्याकुल है जैसे कुलीन पवित्र सुंदर मतिवाली वियोगिनि
 नायका विरह को चोषो वानसन्मुष सहै है भाव कुछ उपाय नहीं
 करि सकति है ॥ ३ ॥ ४ ॥ २१ ॥

सू० । रागमाह । जवरघुवीरपयानोकीन्हो क्षुभितसिंधुडगमगतम
 हीधरसजिसारंगकरलीन्हो । सुनिकठोरटंकोरघोरअतिचौं
 केविधिचिपुरारिजटापटलतेचलीसुरसरीसकतनशंभुसंभारि
 भयेविकलदिग्पालसकलभयभरेभवनदशचारि । खरभरल
 झसशङ्कदशाननगर्भअविहिंअरिनारि ॥ कटकटातभटभालु
 विकटमर्कटकरिकेहरिनाद । कूटतकरिरघुनाथसपथउपरी
 उपरावदिवाद ॥ गिरितरुधरनखमुखकरालरदकालज्जकरत
 विषाद । चलेदशदिशिरिसिभरिधरुधरुहिकोवराकमनु
 जाद ॥ पवनपंगुपावकपतंगशशिदुरिगएथकेबिमान । जाचत
 सुरनिमेषसुरनायकनयनभारअकुलान ॥ गयेपूरिसरधूरिभूरि

भयत्रगथलजलधिसमान । नभनिसानहनुमानहांकसुनिस
सुभ्तकोउनअपान ॥ दिग्गजकमठकोलसहसाननधरतधर
णिधरिधीर । वारहिवारअमरषतकरषतकरकैपरीशरीर ॥
चलीचमचङ्गंओरसोरकछुवनैनवरणतभीर । किलकिलात
कसमसतकोलाहलहोतनीरनिधितीर ॥ जातुधानपतिजानि
कालवसमिलेविभीषणआइ । सरणागतपालकठपालकियो
तिलकालियोअपनाइ ॥ कौतुकहीवारिधवंधाइउतरेसुवेलेत
टजाइ । तुलसिदासगठदेखिफिरेकपिप्रभुआगमनसुनाइ ॥

२ ॥ ४१ ॥

टी० । जबइ० । छुभित कहै चलाय मान ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ के
हरिनाद सिंहनाद उपरी उपरा चढा चढी ॥ ४ ॥ धर धारन किए
रददांत वराक तुच्छमनुजाद राक्षस ॥ ५ ॥ वायु बंद है गयो अग्नि
सूर्य चन्द्रमा सब छिपि गए विमान थकि गए देवता निमेष जाचत
भए औ इन्द्र नैनन के भार ते अकुलाय उठे भाव बड्ड नेचन मे धूरि
परो ताते ॥ ६ ॥ धूरि से तलाव पूरि गए परवत औ थल संव समुद्र
के समान है गए भाव चरनन के आघात से आकाश में नगारा औ
हनुमान जू को हांक सुनि के कोऊ अपन पो नहीं समुभ्तत है
अर्थात् देहाध्यास रहित भए ॥ ७ ॥ दिग्गज कमठ वाराह शैस
धीर धरि के भूमि को धरत है औ शरीर मे कड़कै परी है ताते
वारंवार आमर्ष युक्त होइ पींचत है अर्थात् शरीर को सीधा करत
है ॥ ८ ॥ कसमसत एक में एक मिलि गए है ताते ॥ ९ ॥ १० ॥
॥ ११ ॥ १२ ॥ २२ ॥

मू० । रागअसावरी । आएदूतदेखिसुनिमोचशठमनमे बाहिरवजा
वैगालभालुकपिकालवसमोसेवीरसोचहतजीत्योरारिरणमे ।
रामक्षामलरिकालक्षणबालिबालकहिवालिकोगणतकृत्तज
लज्यो नघनमे । काजकोनकपिराजकायरकपिसमाजमेरेअ

नुमान इनुमान हरिगणमे ॥ समयसयानीरानीमृदुवानीकहै
पियपावकनहोहिजातुधानवेनुवनमे । तुलसीजानकीदियेखा
मीसोसनेहकियेकुशलनतरुसबहैहैचारक्षणमे ॥ २ ॥ ४२ ॥

टी० । आण्ड० ॥ १ ॥ चाम कहैं दुर्बलबालि बालक अंगद जल
ज्योन घनमें जैसे वे जल को वादर वे गनती को होत है हरि गन
बानर को समूह ॥ २ ॥ राक्षस रूपजो बांस का बन है तामे अग्नि
मति होई ॥ ३ ॥ २३ ॥

मू० । आपनी आपनी भांति सब काहूकहीहै मन्दोदरीमहोदरमा-
लिवानमहामतिराजनीतिपांजं चजहां लो जाकीरहीहै । म
हामद अंधदृशकन्धनकरतकानमी चुवसनीचुहठकुगहनिग-
हीहै । हंसिकहै सचिवसयानेमोसोयो कहतचहतमेरुडडन
बडीबयारवहीहै ॥ भालुनरवानरअहारनिअरनिकोसोजन्म
पवालकनिमागीधारिलहीहै । देखोकालकौतुकप्रिपीलकनि
पक्षलागेभागमेरेलोगनिकेभईचितचहीहै ॥ तोसोनतिलो-
कआजुसाहससमाजुसाजुमहाराजुआयसुभोजोईसोईसही
है । तुलसीप्रणामकैविभीषणविनीतिकहैख्यालवेधेतालकप्रि
केलिलङ्गादहीहै ॥ २ ॥ ४३ ॥

टी० । आपनी० । धारि कहैं फौज अपर पद सु० ॥ ४ ॥ १४ ॥

मू० । दूसरोनदेखियतसाहिबसमरामै वेदऊपुराणकविकोविद्विर
तरतजाकोयशंसुनतगावतगुणग्रामै ॥ मायाजीवजगजालसु-
भावंकरमकालसबकोसासकुसबमैसबजामै । विधिसेकरणहा
रहरिसेपालनहारहरसेहरणहारजपैजाकेनामै ॥ सोईन
रवेधजानिजनकीविनतीमांनिमतोनाथसोईजातेभलोपरिजा
मै । सुभटशिरोमनिकुठारपाणिमारिषेहुंलखीऔलखाईइ-
हांकियेसुभसामै ॥ बचनविभीषणविभीषणवचनसुनलागेदु-
खदूषणसेदाहिनेउमै । तुलसीजमकिहियेहन्योलातभले

तातचल्योसुरतरुताकितजिघोरघामै ॥ २ ॥ ४४ ॥

टी० । दूसरोद० । को विद्व पंडित विरत रत वैराग्य रत ॥ १ ॥ सासकु सासना कर्त्ता ॥ २ सुभटन में सिरोमनि परसुराम ऐसज्जं देपि औ देखाइ के श्रीराम से सुभ जानिकै सामें किए अर्थात् मि लापै किए ॥ ३ ॥ वचनन को विशेष भूषन कर्त्ता जो विभीषन का वचन है ताको सुनि कै यद्यपि दाहिने वचन है पर दुख औ दूषन समान वाम लगे वा दाहिने औ बायें जे बैठे रहे तिन के दुख दूषन समान लगे गोसाईं कहत है कि ऊमकि करि केहूदय में लात मा ख्यौ है तात भला किए अम कहि घोर घाम सम जो रावन है ता को तजि के सुर तरु समान जो श्रीराम हैं तिन्हको ताकि के चल्यो ॥

सू० । जायमायपायपरिकथासोसुनाईहै । समाधानकरतिविभीषन कोवारवारकहाभयोतातलातमारिवडोभाईहै ॥ साहिवपितु समानजातुधानकोतिलकताकेअपमानतेरीबडीयैवडाईहै । गरतगलानिजानिसनमानिशिषदेतिरोषकियेदोषसहेसमुभे भलाईहै ॥ इहांतेविमुखभयेरामकीसरणगयेभलोनेकुलोकु राखेनिपटनिकाईहै । मातपगसीसनाईतुलसीअशीशपाइ चलेभलेसगुणकहतमनभाईहै ॥ २ ॥ ४५ ॥

टी० । जायदू० । विभीषन अपने माता को टिग जाय के पांय परि के लात मारिवे की कथा सुनाई ॥ १ ॥ एक तो साहिव है दूसरे पितु समान है अर्थात् बड़ा भाई है और राजसन को राजा है ताके अपमान ते तेरी बटिए बड़ाई है विभीषन को गलानि में ग रत जानि के माता सनमानि के सीक्षा देति है कि समुभेते क्रोध किए मे दोष है और सहे में भलाई है ॥ २ ॥ यद्यपि रावन किहां ते विमुख भए में औ श्री राम जू के सरन गए मे भलो है पर त- द्यपि किंचित लोक राषे मे निपट सुंदराई है भाव लोग कहै गे कि संकठ समै मे भाई को छोड़ दियो ॥ ३ ॥ २६ ॥

म० । भाईकैसी करों डरों कठिन कुफेरैं सुखतसंकटपखोजातु है ग-
लानि गख्यो कृपानि धिको मिलो पै मिलि कै कुवेरैं । जाय गडे पाय
घाय धन दउठाय भेद्यो समाचार पाय पोच सोचत सुमेरैं तहई मि
लेम हे शदियो हित उपदेश रामकी सरण जाहि सुदिन नहेरैं ॥
जाको नाम कुम्भज कलेश सिंधु सोषिवे को मेरो कछ्यो मानितात
वांघै जनि वेरैं । तुलसी मुदित चले पाये है सगुण भलेर डू लूटि वे
को मानो मणि गणठेरैं ॥ २ ॥ ४६ ॥

टी० । भाई ६० । विभीषण अपने मन में विचार करत हैं कि हे
भाई हम कैसा करैं कठिन कुफेरैं हैं धर्म संकट मे परत भए भाव
राम विरोधी, किहां न रहना चाहिए औ त्यागि वे मे लोकोपहांस
कि आपद् काल मे छोड़ि भागे एहि ग्लानि मे गरे जात हैं फेर
यह निश्चै कियो कि कुवेर से मिलि करि के फेर औ रघुनाथ सी
मिलो ॥ १ ॥ फेर कुवेर के ढिग जाय दौड़ि के चरण गहत भए
कुवेर उठाय के भेंटत भए खोटो समाचार पाय कै सुमेर सम अ-
र्थात् अति सोच करत हैं वा सुमेर पर सोच करत हैं तहई औ
शिवजी मिले हित उपदेश दिए कि तूं श्रीराम के सरन जाऊ सु-
दिन मति ठूंडो ॥ २ ॥ जाको नाम लोस रूप समुद्र को सोषिवे को
अगस्त सम है हे तात मेरो कछ्यो मानि कै वेरा लकड़ी को
त है ताको मति वांघो भाव उपायांतर लोस संमुद्र तरिवे मे मति
करो वा वांघै जनि वेरै जाचा मति विचारो वा देर मति लगाओ
॥ २७ ॥

म० । रागकेदारा । शङ्करशिष्यासिष्यादकै चले मनहि मन कह
त विभीषणशीसमहे शहिनादकै । गये सोच भये सगुण सुमङ्गल
दशदिशिते देखे आदकै सजलनयनसानन्द हृदयतनप्रेमपुलक
अधिकादकै ॥ अन्तहु भायभलो भाईको कियो अनभलो मना
दकै । भइ कुवेरकी लात विधाताराखी वात बनादकै ॥ नाहित

क्यों कूबेर घर मिलि हरहित कहते चितलाइ कै । जो सुनि सरण
 रामताकेमै निजवामताविहाइ कै ॥ अनायास अनुकूल भूल धर
 भगमुदमूल जनाइ कै । छपासिंभुसनमानि जानि जनदीन लि-
 यो अपनाइ कै ॥ स्वारथ परमारथ करत लगत अमपथ गयो सि-
 राइ कै । सपनेकेसो सुख सुख शशिसुरसींचत देत निराइ कै ॥
 गुरुगौरीशशांडी सीतापति हित हनुमानहि जाइ कै ॥ मिलि
 होमोहिकहा क्रीवे अव अभिमत अवध अघाइ कै । मरतो कहां
 जाइ कौ जानै लटिलाल चीललाइ कै ॥ तुलसिदास भजि हौं रघु-
 वीरहिं अभयनि सानव जाइ कै ॥ २ ॥ ४७ ॥

टी० । शंकरइ० ॥ १ ॥ २ ॥ निदान मे भाई को भाई भलो हो
 त है यद्यपि हमारो अनभलो मनाइ कै कियो पर कूबर की लात
 सम भई विधाता ने भली भांति वात राखी ॥ ३ ॥ ४ ॥ छपासिंभु
 सूत पानिवे परिश्रम अनुकूल भए मुद को मूल रूप जो मार्ग ता-
 को जनाय कै सनमानि कै दीन जन जानि कै अपनाय लियो ॥ ५ ॥
 स्वारथ औ परमारथ दोऊ हस्तगत भयो औ अमपथ वीति गयो
 यह सपना है कै धों सौतुष है कि सुख रूप धान को देवता सींचत
 औ निराय देत हैं निराइव सोहिवे को कहत हैं ॥ ६ ॥ गुरु गौ
 रीस मिले अव सांई सीतापति औ हित हनुमान ते जाय के मिलि
 हौं अव हम को कहा करिवे को है वांछित की सीमा अघाय कै
 मिली ॥ ७ ॥ मै जो लालची सो लटिके ललचाइ के को जानै क-
 हां जाय मरतो अव अभै रूप नगारा वजाय कै श्री रघुवीर को भ-
 जि हौं ॥ ८ ॥ २८ ॥

मू० । पदपदुमगरीवनिवाजके देखि हों जाइ पाइलोचनफलहितसु-
 रसाधुसमाजके । गईवहोरओरनिर्वाहकसाजकविगरेसाज
 के । सवरी सुखदृष्टिगतिदायकसमनशोककपिराजके ॥ नाहिं
 नमोहिओरकृतहंककृजैसेकागजहाजके । अयोसरणसु-

खटपटपट्टजचौधेराज्ञवाजके ॥ आरतिहरणसरणसमर्थ
सबदिनअपनेकौलाजके । तुलसीयाहिहकहतनतपालकमोसे
निपटनिकाजके ॥ २ ॥ ४८ ॥

टी० । पद० ॥ १ ॥ जो बात गई है ताको वहीर निहारे हैं
औ अंत लों निर्वाह करनि हारे हैं औ विगरे भए साज के साज-
नि हारे हैं ॥ २ ॥ आरति के हरनि हारे हैं औ सब दिन मे अपने
भक्त कौ लाज के समर्थ सरण कहै रत्नक है । सरणगृहरत्नचोरि
त्यमरः । नत पालक शरणागत रत्नक ॥ ३ ॥ २६ ॥

मू० । महाराजरामपहिजाउंगो सुखस्वारथपरिहरिकरिहौसोइ
जोसाहिबहिसोहाउंगो । सरणागतसुनिवेगिबोलिहैहौनि
पट्टाहंसकुचाउंगो । रामगरीबनिवाजनिवाजिहौजानिहैठा-
कुरठाउंगो ॥ धरिहैनाथहाथमाधेएहितेकेहिलाभअघाउंगो
सपनोसोअपनोनककूलखिलधुलालचनलोभाउंगो ॥ कहि
हौबलिरोटिहारावरोबिनमोलहीविकाउंगो । तुलसीपट्ट
तरेओटिहौउबरौजूठहिखाउंगो ॥ २ ॥ ४६ ॥

टी० । महाइ० ॥ १ ॥ जानि हैं ठाकुर ठाउंगो ठांव कहैं स्थान
गयो भयो ठाकुर मोको जानि हैं अर्थात् स्थान भूट ॥ २ ॥ लघु
लालच लौकिक सुषादि ॥ ३ ॥ ४ ॥ ३० ॥

मू० । आइसचिवविभीषणकेकहीऊपासिन्नुदशकंधवन्मुक्तधुचरणश
रणआयोसही । विषमविषादवारिनिधिवूडतथाहकपीशक-
थालही।गयेदुषदोषदेखिपट्टजअवनसाधएकौरही ॥ वि
थिलसनेहसराहतनखशिषनीकिनिकाईनिरवही । तुलसी
मुदितदूतभएमनमहअभियलज्जमागतमही ॥ २ ॥ ५० ॥

टी० । अथइ० । विभीषण के सचिव ने श्री रामचंद्र से आइ
के कही ॥ १ ॥ तीक्ष्ण विषाद रूष समुद्र मे वूडत रहे तहां सुग्रीव
की कथा समुक्ति थाह पाई भाव वाली के चाम से सुग्रीव के उवारे

तो हमझं को उवारें गे ॥ २ ॥ नष ते सिष लो जो नीकी निकाई
निबही है ताको सराहत हैं औ सनेह ते सिथिल हैं दूत हर्षित
होत भयो मानो छांछ को मागत रहे औ अमृत पाए इहां छांछ
सनेसा है औ अमृत सुंदराई को देषिवो है ॥ ३ ॥ ३१ ॥

मू० । विनतीसुनिप्रभुमुदितभए ऋक्षराजकपिराजनीलनलबोलि
बालिनन्दनलये । वृभक्तिकहारजाडूपाडूनयधर्मसहितउत्तर
दये । वलीबंधुताकोविमोहवसवयरबीजवरवसवये ॥ वांहेपगा
द्वारतेरेतेसभयनकवहृफिरिगये । तुलसीअसरणसरणस्वा-
मिकेविरदविराजतनितनये ॥ २ ॥ ५१ ॥

टी० । विनती ॥ १ ॥ श्री रामजू कहे तुम सब के वृभक्तिसे
कहा है अस आज्ञा पाइ के नीति धर्म सहित उत्तर देत भए ते-
हि रावन वली को बंधु है जेहि ने विशेष मोह के वस बैर को
बीज बोए एह नीति कहे अब धर्म कहत हैं ॥ २ ॥ हेवांहे पगार
तेरे द्वार ते भै सहित जे पुरुष ते कबहूं फिरि न गए स्वामी के अ-
सरन सरन जे विरद हैं ते नित्य नए विराजत हैं पगार नाम यद्यपि
भक्तिका है पर इहां प्रबल के अर्थ में जानना ॥ ३ ॥ ३२ ॥

मू० । हियविहसिकहतहनुमानसों सुमतिसाधुसुचिसुहृदविभीष
णवृभक्तिपरतअनुमानसों । हौबलिजाउंऔरकोजानैकहिक-
पिक्रपानिधानसों । छलीनहोइस्वामिसन्मुखज्योतिमिरसात
हैजानसों ॥ घोटोखरोसभीतपालियैसोसनेहसनमानसों ।
तुलसीप्रभुकीवोजोभलोसोईवृभक्तिसरासनवानसों ॥ २ ॥

॥ ५२ ॥

टी० । हियद० ॥ १ ॥ कृपानिधान सो हनुमान जू यह बात
कही कि मै बलि जाउं आप छोडि और अस को जानै छली पुरु-
ष स्वामी के सन्मुख नहीं होत है सात हय जान जो सूर्य तिन्ह
सो जैसे अंधकार सन्मुख नहीं होत है ॥ २ ॥ खोटो है वां खरो

है पर सो विभीषण समीत है ताते सनेह युक्त सन्मान सो पालिये
शरासन औ बान सो बूझि कहै जानि के जो आप करव सो भलो
है भाव शरासन टेढा औ बान सूधा आप दोऊ को राषे हैं वा श
रासन बान सो बूझि कै आप जो करव सो भला है भाव दूसरे से
बूझि के को क्या प्रयोजन है आप के पराक्रम को को भेद ले सकै
गो ॥ ३ ॥ ३३ ॥

स० । सांचे ऊँ विभीषण आइ है बूझत विहंसि छपालु लषन सुनि कहत
सकुचि शिरनाइ है । औ है कहानाथ आयो है ह्यां क्यो कहि जा
ति बनाइ है रावण रिपुहि राषि रघुवर विनु को चि भवन पति पा-
इ है ॥ प्रभु प्रसन्न सब सभा सराहत दूत बचन मन भाइ है । तुल
सीवो लिये गिलक्षण सो भइ महराजर जाइ है ॥ २ ॥ ५३ ॥

टी० । सांचे ऊँ । लषन लाल सो श्री राम छपालु विहंसि के
बूझत है कि सांचे ऊँ विभीषण आवै गो यह सुनि शिर नवाइ स-
कुचि के लषन लाल कहत है ॥ १ ॥ हे नाथ आवै गो कहा अर्थात्
भविष्य आप काहे को कहत है विभीषण आइ गयो है औ आप
के इहां बनाइ के क्यो कहि जाइ सकत है आप के विना रावण के
रिपु को राषि कै असो को चि भवन मे है जो प्रतिष्ठा पावै गो ॥
२ ॥ प्रभु प्रसन्न है सब सभा सराहति है औ यह बचन विभी-
षण के दूत के मन मे भावत भयो लषन लाल सो श्री महाराज रा
मचंद्र की अज्ञा भई कि विभीषण को शीघ्र बलाइ लीजिये ॥ ३ ॥
॥ ३४ ॥

स० । चले लेन लषन हनुमान है मिले मुदित बूझि कुशल परस्पर स-
कुचत करिसन मान है । भयोर जाय सुपां उंधारिये बोलत छपा
निधान है । दूति देीन बन्धु देखे जन देत अभय वरदान है ॥ शी
ल सहसहि मभानु ते जगत कोटि मान ऊँ के भानु है । भक्तनिको
हित कोटि मां तु पितु अरिन्द को कोटि कशानु है ॥ जब गुण राज

गिरिगणिसकुचतनिजगुणगिरिरजप्रवान हैं । वाङ्मंगारबो
लकोअविचलुवेदकरतगुणगान हैं ॥ चरचाचलतिविभीषणकी
सोइसुनतसुचिबुदैकान हैं । चारुचापतुणौरतामरसकरनि
सुधारतवाण हैं ॥ हरषतसुरवरषतप्रभूनशुभसगुणकहतक-
ल्याण हैं । तुलसीतेद्वतद्वत्यजेसुभिरतसमयसुहावनध्यान हैं
॥ २ ॥ ५४ ॥

टी० । चलेइ० । लवाइवे के हेतु लघन लाल औ हनुमान ज
चले हैं जब विभीषण के टिंग गए तब हर्षित परस्पर मिले औ
कुशल भूमि के सन्मान करि के सकुचत हैं सकुचने को यह भाव
जस सन्मान किया चाही तस नाही बनत है वा करि के अर्थ से
जानना अर्थात् सन्मान से विभीषण जू सकुचत हैं ॥ १ ॥ २ ॥ प्रभु
सहस्र चंद्र सम शीलवान् हैं शतकोटि भानुह्र के भानु सम तेजस्वी
हैं अशानु कहैं अग्नि ॥ ३ ॥ जन को गुण जो रज सम है ताको
गिरि सम गनि के सकुचत है औ आपन गुण जो गिरि सम है
ताको रज सम मानत है ॥ ४ ॥ सुंदर चाप औ तरकस है कर क-
मलनि ते वान सुधारत हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥ ३५ ॥

मू० । रामहिंकरतप्रणामनिहारिकै उठे उभगिअनंदप्रेमपरिपूरण
विरद्विचारिकै । भयोविदेहविभीषणउतइतप्रभुअपनपौवि
सारिकै । भलीभांतिभावतेभरतज्योभेश्योभुजापसारिकै ॥ सा
दरसबाहिंमिलाइसमाजहिनिपटनिकटवैठारिकै । बूझतकु-
शलक्षेमसप्रेमअपनाइभरोसोभारिकै ॥ नाथकुशलकल्याण
सुसङ्गलविधिसुखसकलसुधारिकै । दैतलेतजेनामरावरोवि-
नथकरतसुखचारिकै ॥ जोमरतिसपनेनविलोकतसुनिमंदेश
मनमारिकै । तुलसीतेहिहोलीलियोअइभारिकहतकछनसंवा
रिकै ॥ २ ॥ ५५ ॥

टी० । रामहिंद के । विरह विचारिके अशरण के अरण हैम है

यह वान विचारि कै ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ हे नाथ जे रावरो नाम लेत
हैं तिन्है ब्रह्मा कुशल कल्याण सुमंगल सकल सुख सुधारि कै देत
हैं औ चारि मुख से विनय करत हैं ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३६ ॥

सू० । करुणा करकी करुणा भई मिटी मीचुल हिलङ्क शङ्क गइ काहू
सों न खुनि सखई । दशमुख तज्यो दूध माखी ज्यों आपुका दिसा
ढौलई । भव भूषण मोइ कियो विभीषण भद्र मङ्गल महिमा मई ॥
विधि हरि हर मुनि सिद्ध सराहत मुदित देव दुन्दुभिदई । वार-
हिं वार शुभन वर प्रतहि यहर प्रतकहि जय जय जई ॥ कौशिक
शिला जनक सङ्कट हरि ष्ट गुप्रतिकी टारी टई । खग मृग सवरनि
शाचर सबकी पूंजी विनु बाढी सई ॥ युग युग कोटि कोटि करत व-
करणी न कछु वरणी नई । राम भजन महिमा जलसी हिय तुल-
सी हूँ की वनि गई ॥ २ ॥ ५६ ॥

टी० । करुणा ६० । करुणा कर जो श्री राघव तिन्ह की करुणा
होति भई विभीषण की मृत्यु मिटी लंका मिली औ सब शंका गई
औ काहू सो खुनुस औ इषी न भई भाव विना परिश्रम ई सब
बात भई ॥ १ ॥ दशमुख ने विभीषण को दूध के माषी सम तज्यो
औ आप साढी सम लंका के सुष को लई सोइ विभीषण को श्री
राम ने भव जो संसार ताको भूषण औ मुद्र मंगल महिमा मई कि
यो ॥ २ ॥ ३ ॥ विश्वामिच अहल्या औ जनक को संकट हरि के
परशुराम की टई कहें गर्व टारे औ खग मृग भिन्न औ निशाचर
इन्ह सब की विन पूंजी की बढ़ती बाढी ॥ ४ ॥ युग युग में कोटि को
टि श्री राम के करतव हैं कछु नई करनी नहीं बरनी गई
॥ ५ ॥ ३७ ॥

सू० । मञ्जुल मरति मंगल मई भयो विशोक विलोक विभीषण ने हृदेह
सुधि सीवंगई । उठिदाहिनी औरतें सन्मुख सुषद मागि बैठ कल
ई नषशिष निरषि निरषि सुख पावत भावत कछु कछु अई ॥ वा

रकोटिशिरकाटिसाटिलटिरावणशङ्करपैलई । सोइलंकाल
खिअतिथअनवसररामटणासनज्योदई ॥ प्रीतिप्रतीतिरीति
सोभासरिथाहतजहंजहंतहंघई । वाङ्गवलीवानैतबोलकोवी
रद्विष्वविजईजई ॥ कोदयालुदूसरोदुनीजेहिजरणिदीनहि-
यकीहई । तुलसीकाकोनामजपतजगजगतीजामतिविनुवई

॥ २ ॥ ५७ ॥

टी० । मंजुल ६० । नेह कहैं संसारिक प्रेम और देह की सुधि
की मर्यादा गई वा श्रीराम के नेह ते देह की सुधि की मर्यादा गई
॥ १ ॥ दाहिने ओर बैठे रहे तहां ते उठिके सुखद सन्मुख बैठवे की
श्रीराम सो आजा मागि लई अर्थात् जामे रूप भली भांति देखि परै
भावत कछु कछु अई भई महा दुख की भावना करत रहे सो सुख
की भावना करन लगे ॥ २ ॥ अनंत वार सिर काटिके उंख समान
लटिके जो रावन ने श्रीशंकर पै लंका लई सोई लंका को विभीषन
को अतिथ मानिके अनवसर समुक्ति कै अर्थात् बन बास समुक्ति कै टन
के आसन समान दई भाव यह विचारे कि हम कछु न दिये ॥ ३ ॥
प्रीति प्रतीति रीति औ सोभा रूप नदी को जहां जहां थाह लेत है
तहां तहां अथाहै पावत है वाङ्ग के बली बोल के बाना वाले अर्थात्
जोकहत सोई करत और विश्व के विजै करनेवाले वीर औ नीतिवान
और दयाल कौन दूसरो दुनियां मे है जेहि ने दीन के हिय की
जरनि नासी है औ काको नाम जपत संसार मे पृथ्वी बिना बोए
ज मति है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३८ ॥

मू० । सबभांतिविभीषनकीवनी कियोऊपालुअभयकालहतेगईसं
सृतिसासतिघनी । सखालछनहनमानशंभुगुरुधनीरामको
शलधनी हियहिऔरऔरकीन्हीविधिरामऊपाऔरैठनी ।
कलुषकलङ्ककलेशकोशभयोजोपदपादूरावणरणी सोइपद
पाइविभीषनभोभवभूषनदलिदूषनअनी । वाइपगारउदार

शिरोमणिनतपाकपावनपत्नी शुभनवरधिरधुवरगुणवरणत
हरषिदेवदुन्दुभिहनी । रङ्कनिवाजरङ्गराजाक्रियेगयेगर्वग
रिगरिगनी रामप्रनाममहामहिमाकरसकलसुमंङ्गलमनि
जनीहोयभलोऐसेहिअजह्मं गयेरामसरनपरिहरिमणी भु
जाउठायसाषिसंङ्करकरिकसमखाद्रतुलसीभनी ॥ २ ॥ ५८ ॥

टी० । सब भांति ई० । संसृति संसार ॥१॥ श्रीलखनलाल औ
हनुमान जू सखा भये औ श्री शिवजू गुरु भये और कोशल धनी
जो श्रीराम सो धनी कहैं स्वामी भए विभीषन के हृदय में और
रहा भाव रावन को उपदेश करि हित करें और विधाता ने और
किया अर्थात् रावन न मान्यो और श्रीराम के छपा ते औरै ठनत
भई अर्थात् विभीषन ने लंक पाई ॥ २ ॥ जो राज पद पाय कै रनी
रावन पाय औ कलङ्क औ लील को खजाना भयो सोई राज पद
पायकै दूखन गन को दलि के संसार को भूषन विभीषन भयो ॥३॥
पावनपनी पवित्र जाकी प्रतिज्ञा है ॥ ४ ॥ ५ ॥ रंक निवाजा कहैं ग-
रीबनेवाज जो श्रीराम सो रंक जो विभीषनता को राजा किए औ
गनी कहैं धनी अपने गर्व ते गलि गलि गये अर्थात् विभीषन को
एश्वर्य देखि कै श्री राम के प्रनाम की महा महिमा की खानि
ने सकल सुमंल रूपमणि को उत्पन्न किये ॥ ६ ॥ मनी कहैं अभिमा
न ताको छोड़िके अजह्मं श्रीराम सरण गए ऐसेही भलो होए
अर्थात् जस विभीषन को भयो भुजा उठाय कै अर्थात् ईश्वर के ओ
र हाथ करि के और शिवजी के शास्त्री करि के सप्रथ खाय के तुल
सी ने कही ॥ ७ ॥ सो० । एतनेजपरनिहिहोय सन्मुषसीतानाथजो
हरिहरपसुहयसोय तरसतभसाघासको ॥ ३६ ॥

मू० । कहां क्योनविभीषनकीबनै गयोछोड़िकलसरणरामकीजोफ
लचारिचाह्योजनै । मङ्गलमूलप्रणामजासुजगमूलअमङ्गल
केखनै तेहरघुनाथहाथमायेदियोकोताकीमहिमाभनै ॥ ना

मप्रतापपतितपावनकियजेनअघानेअघअनै । कोउउलटोको
जसूधोजपिभयेराजहंसवायसतनै ॥ ऊतोललातऊशगातखा
तखरिमोदपादकोदोकणै । सोतुलसीचातकभयोयाचतराम
श्यामसुन्दरघनै ॥ २ ॥ ५६ ॥

टी० । कहोइ० । जो फल चारि चाख्यो जनै जो सरनागत चा-
रो वेद में फल रूप है औ अर्थ धर्म काम मोक्ष चारो की उत्प
त्ति करनि हारी है ॥ १ ॥ जाको प्रणाम मंगल को मूल है औ
अमंगल के मूल को षोदत है ते रघुनाथ ने हाथ माथे पर दियो
तव ताकी महिमा को को कहै ॥ २ ॥ अघ औ अनोति ते जेन अ
घाने ते पतितन को नाम ने अपने प्रताप ते पावन किये उलटो वा
ल्मीक जी जपि कै सूधो प्रल्हाद आदि जपि कै काक से हंस भए
॥ ३ ॥ दुर्बल शरीर ललचात जो षरी घात रह्यो औ कोदो के क-
नौ पाय कै आनन्द पावत रह्यो सो राम श्यामसुंदर घन को जाचत
माच चातक भयो इहां षरी लौकिक सुख को जानौ औ कोदो के
कणवत् स्वर्गादि सुख जानो औ चातक होव थी राम में अनन्य
होव है ॥ ४ ॥ ४० ॥

मू० । अतिभागविभीषणकेभले एकप्रणामप्रश्नरामभयेदुरितदो
षदारिददले । रावणकुम्भकर्णवरमागतशिवविरञ्चिवाचाऊ-
ले रामदरसपायोअविचलपदसुदिनसगुणनीकेचले ॥ मिल
निविलोकिस्वामिसेवककीउकटेतरुफूलेफले । तुलसीसुनिस
नमानवन्धुकोदशकन्धरहसिहियजले ॥ २ ॥ ६० ॥

टी० । अतिइ० । दुरित दोष पाप जनित दोष वा पाप औ औ-
गुन ॥ १ ॥ रांवन औ कुंभकरन को वर मांगत मे शिव विरंचि ने
सरस्वती करि के छले अर्थात् आन कै आन कहवाय दिए औ वे वर
मागे थी राम के दरसन ते विभीषन अविचल पद पाए औ सुंदर
दिन औ सुंदर सगुन भली भांति ते विभीषन के संग चले भाव वि-

भीषण दिन सगुनादिन विचारि रडे आप से आप संग लगे ॥ २ ॥
उकठे तर फूले फले को यह भाव कि जेजड़ श्रीराम सनेह रहित
रहे ते सनेह सहित भए हंसि हिय जले ऊपर से तो हंसे पर भी
तर से जले ॥ ३ ॥ ४१ ॥

म० । गए रामसरणसबकोभलो गनीगरीवडोछोटोबुधमूढहीन
बलअतिबलो । पंगुअन्धनिर्गुणीनिसम्बलजोनलहैजांचेजलो
सोनिवह्योनीकेजोजनमिजगरामराजमारगचलो ॥ नामप्र
तापदिवाकरकरतंगरततुहिनज्योंकलिमलो । सुतहितनाम
लेतभवनिधितरिगयोअजामिलसोखलो ॥ प्रभुपदप्रेमप्रणाम
कामतरुसद्यविभीषणकोफलो । तुलसिसुमिरतनामसवनि
कोमङ्गलमयनभजलथलो ॥ २ ॥ ६१ ॥

टी० । गएइ० । बुध पंडित ॥ १ ॥ निसम्बल विना खरच को रा
म राज मारग चलो श्री राम के राजमार्ग कहै भक्ति पथ मे जो
चलो ॥२॥ नाम प्रताप रूप सूर्य के तीक्ष्ण किरण ते कलिमलो वरफ
सम गलत है ॥ ३ ॥ प्रभु के पद मे प्रेम और प्रणाम रूप काम तरुसे
तत्त्वशैविभीषण को भलो भयो नाम सुमिरत मात्र सब जीवन को
आकाश जल थल मंगल मय होत है ॥ ४ ॥ ४२ ॥

म० । सुयशसुनिश्रवण होनाथआयोसरन उपलकेवटगृहसेवरीसंस्तु
तिसमनशोकअससोंवसुग्रीवआरतिहरन । रामराजीवलोच
नविमोचनविपतिश्यामनवतामरसदामवारिद्वरन लशतजट
जूटशिरचारुमुनिचौरकटिधीररघुवीरतूणीरसरधनुधरन ॥
जातुधानेशभ्राताविभीषणनामवन्धुअप्रमानगुरुग्लानिचाहत
गरन । पतितपावनप्रणतपालकरुणासिंधुराखिएमोहिंसौमि
त्रसेवितचरन ॥ दीनताप्रीतिसंकलितमृदुवचनसुनिपलकि
तनप्रेमजलनयनलागेभरन । बोलिलङ्के शकहिअङ्कभरिभेटि
प्रभतिलकदियोदीनदुखदोषदारिदरन ॥ रातिचरजातिआ

रातिसवभातिगतकियोकल्याणभाजनसुमङ्गलकरन । दासतु
लसीसद्वैहृदयरघुवंशमणिपाहिकहेकाहिकीन्होनतारणतर
न ॥ २ ॥ ६२ ॥

टी० । सुयसद्व० ॥ १ ॥ स्याम नव तामरस दाम नवीन नील क-
मल की माला सम जूट समूह ॥ २ ॥ जातु धानेस रावण गुहू
ग्लानि भारी ग्लानि से ॥ ३ ॥ संकलित संमिलित ॥ ४ ॥ राति चर
निसाचर आराति शत्रु इहां रावण को बंधु है ताते आराति कहे
सदय दया सहित ॥ ५ ॥ ४३ ॥

मू० । दीनहितविरदपुराणनिगायो आरतबंधुछपालुष्टदुलचितजा
निसरणहोआर्यों । तुम्हरेरिपुकोअनुजविभीषनवंशनिशाच
रजायो सुनिगुणशीलसुभावनाथकोमैचरनन्हिचितलायो ॥
जानतप्रभुदुखसुखदासनिकोतातेकहिनसुनायो । करिकरु-
णाभरिनयनबिलोकडुतवजानौअपनायो ॥ वचनविनीतसुन
तरघुनायकहंसिकरिनिकटबोलायो । भेय्योहरिभरिअङ्गभ
रतज्योलेङ्गापतिमनभायो ॥ करपङ्कजशिरपरसिअभयकियो
जनपरहेतुदेखायो । तुलसिदासरघुवीरभजनकरिकोनअभ
यपदपायो ॥ २ ॥ ६३ ॥

टी० । दीनद्व० । हेतु प्रीति अपर पद सु० ॥ ४४ ॥

मू० । रागधनाश्री । सत्यकहौमेरोसहजसुभाउ सुनहुसखाकपि
पतिलङ्गापतितुमसोकौनदुराउ । सबविधिहीनदीनअतिज-
डमतिजाकोकतहुनठाउ आयेसरणभजोनतज्योतेहियह-
जानतऋषिराउ ॥ जिनकोहोहितसवप्रकारचितनाहिनऔ
रउपाउ।यतिनहिंलागिधरिदेहकरोसबडरौंसुयशनसाउ॥
पुनिपुनिभुजाउठादूकहतहौंसकलसभापतिआउ । नाहिन
कोउप्रियमोहिदाससमकपटप्रीतिवहिजाउ ॥ सुनिरघुपति
केवचनविभीषणप्रेममगनमनचाउ । तुलसिदासतजिआस

चाससवञ्चैसेप्रभुकङ्गाउं ॥ २ ॥ ६४ ॥

टी० । सत्यद० । सहज वनावट रहित ॥ १ ॥ भजो कहैं अंगी-
कार करत हौं गिधिराउ नारदजू ॥ २ ॥ डरोन सुजस नसाइ कहि
वे को यह भाव कि भुञ्चनअनेकरोमप्रतिजासू यहमहिमाकछुवहुत
नतासू । इत्यादि ॥ ३ ॥ कपट प्रीति वहि जाउ कपट करि जो प्री-
ति होति है सो वहिजाऊ होति है भाव हमारी प्रीति निष्कपट
है अतएव अचल है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४५ ॥

मू० । नाहिनभजिवेयोगधियो श्रीरघुवीरसमानअनकोपूरणकृपा
हियो । कहहुकौनसुरशिलातारिपुनिकेवटमौतकियो । कौ
नेगोधअधमकोपितुज्यौनिजकरपिंडदियो ॥ कौनदेवसवरी
केफलकरिभोजनशलिलपियो । वालिचासवारिधिवूडतकपि
केहिगहिवांहलियो ॥ भजनप्रभाउविभीषनभाख्योसुनिक-
पिकटकजियो । तुलसीदासकोप्रभुकोशलपतिसवप्रकारवरि
यो ॥ २ ॥ ६५ ॥

टी० । नाहिन द० वियो कहैं दूसरो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ वरियो
कहैं बलवान ॥ ४ ॥ ४६ ॥

मू० । रागजयतिश्री । कवदेखोंगीनयनवहमधुरमूरति । राजि
वदलनयनकोमलकृपाअयनमयननिबहुछविअङ्कनिदूरति ॥
शिरसिजटाकलापपाणिसायकचापउरसि रुचिरवनमाललूर
ति । तुलसिदासरघुवीरकीसोभासुमिरिभईहैमगवनहितनु
कीसूरति ॥ २ ॥ ६६ ॥

टी० । श्री जानकी जू की उक्ति कमल के पत्र के समान नेत्र है
जेहि मूरति की औ कोमल है औ कृपा को गृह है औ काम स-
मूह के छवि को अंगनि ते दूर करति है ॥ १ ॥ लूरति लटकति
॥ २ ॥ ४७ ॥

मू० । रागकेदार । कहुकवहुं देखिहाँअलीहोआरजसुअन सा

नुजसुभगतनजवतेविष्णुरेवनतवतेदवसीलागोतीनङ्गभुञ्जन ।
 मूरतिस्वरतिकियेप्रगटप्रीतमहियेमनकेकरनचाहैचरणकुञ्ज
 नचितचट्टिगोविद्योगदशानकहिवेद्योगपुलकगातलागेलोच
 नचुञ्जन ॥ तुलसिचिजटाजानीसीयअतिअकुलानोम्टदुवानी
 कह्योअहैदवनदुञ्जन । तमीचरतमहारीसुरकञ्च, सुखकारी
 रविकुलरविअवचाहृतउञ्जन ॥ २ ॥ ६७ ॥

टी० । कङ्कडू० । आरज कहै अष्ट दवसी आगसी ॥ १ ॥ मन के
 करन मन के हाथन मे ॥ २ ॥ दवन दुञ्जन श्चु नाशक निसाचर
 रूप तम के नासनि हारे औ देव रूप कमल के सुख देनि हारे
 सूर्य कुल के सूर्य अव उगा चाहत है ॥ ३ ॥ ४८ ॥

मू० । अबलोंमैतोमोनकहेरी सुनुचिजटाप्रियप्राणनाथविनुवासर-
 निशिदुखदुसहसहेरी । विरहविषमविषवेलिवढीउरतेसुख
 सकलसुभायदहेरी सोदूसीचिवेलागिमनसिजकेरहटनयन-
 नितरहतनहेरी ॥ सरशरीरसुखेप्राणवारिचरजीवनआसतजि
 चलनचहेरी । तैप्रभुसुयशसुधासीतलकरिराखेतदपिनदप्लल
 हेरी ॥ रिपुरिसिघोरनदीविवेकवलधीरसहितज्जतेजातवहे-
 री । दैमुद्रिकाटेकतेहिअवसरसुचिसमीरसुतपैरिगहेरी ॥
 तुलसिदाससबसोचपोचमृगमनकाननभरिपूरिरहेरी । अब
 सखिसियसन्देहपरिहृहियआद्गयेद्वीवीरअहेरी ॥ २ ॥
 ॥ ६८ ॥

टी० । अबलोंदू० ॥ १ ॥ उर हे तीक्ष्ण विरह रूप विष की वे-
 ली वढी तेहि वेली ने स्वाभाविक सकल सुख को जराय दई औ
 तेहि वेली सीचवे के अर्थ काम के रहट रूप हमारे नेत्रनितनधे
 रहत है ॥ २ ॥ शरीर रूप तडाग सूपे प्राण रूप मछरी आदि जी
 वन की आसा छोडि के चलना चाहे पर तै ने प्रभु सुजस रूप अ-
 मृत ते सीतल करि के राखे तथापि तपनि न लहे ॥ ३ ॥ श्चु का

जो घोर रिस है सो नदी है विवेक बल धीरता सहित तामें वहे
जात रहे पर तेहि अवसर मे मुद्रिका रूप लकड़ी से थम्हाइ के हे
सखी पैरि कै पवन पूत गहत भए ॥ ४ ॥ सब सोच पोच रूप मृगा
सन रूप कानन मे भरि पूरि रहे हैं एतना सुनि चिजटा बोली कि
हे सखी श्रीजानकोजू अब संदेह को हिय ते छोड़ो दोज सिकारी
कुंअर आइ गए भाव सोच पोच रूप मृग अब न बचेंगे ॥ ५ ॥ ४६ ॥

सू० । रागविलावल । सोदिनसोनेकोकज्जकवअै है जादिनबंध्यो
सिंधुचिजटासोतंसंभ्रमसोहिअनिसुनैहै । विश्वदवनसुर
साधुसतावनरावणकियोआपनोपैहै कनकपुरीभयोभपविभी
षनविबुधसमाजविलोकनधैहै ॥ दिव्यदुन्दुभीप्रशंशिहैमनि
गणनभतलविमलविमाननिछैहै । वरपिहैकुशुमभानुकुल
मणिपरतवमोहिपवनपूतलैजैहै ॥ अनुजसहितशोभिहैक-
पिनमज्जतनुक्किकोटिमनोजहितैहै । इननयननयेहिभांति-
प्राणपतिनिरषिहृदयअनंदसमैहै ॥ बज्जरोसदलसनाथस
लकिमनकुशलकुशलविधिअवधदेखैहै । गुहपुरलोगसासु
द्वौदेवरमिलतदुसहउरतपतवतैहै ॥ मज्जलकलशवधावन-
घरघरपैहैमागनेजोजेहिभैहै । विजयरामराजाधिराजको
तुलसिदासपावनजशगैहै ॥ २ ॥ ६६ ॥

टी० । सोदिनदू० । सोने को कहिवे को यह भाव कि जैसे घा
तुन मे सोना उत्कृष्ट होत है तैसे दिनन में सो दिन उत्कृष्ट कव
आवैगो ॥ १ ॥ २ ॥ नभ तल आकाश औ पृथ्वी में ॥ ३ ॥ कोटि
मनोज हितैहै कोटि काम को संतप्त करि हैं ॥ ४ ॥ फेर दल स-
हित लक्ष्मण सहित नाथ को कुशल औ अवध को कुशल विधाता
देवैहै ॥ ५ ॥ ६ ॥ ५० ॥

सू० । सियधीरजधरियेराघवअवअैहै पवनपूतपहंपाइतोरिसुधिस
हज्जपालुबिलम्बनलैहै । सेनसाजिकपिभालुकालसमकौतु

कहिंपाथोधिवंघैहै । घेरो ई देखिवो लङ्कगढविकलजातुधानी
 पछितैहै ॥ निञ्चरशलभक्रशानुरामसरउडिउडिपरतजरतज
 लुजैहै । रावणकरपरिवारअगमनोयमपुरजातवहुतसकुचैहै
 तिलकसारिअपनाइविभीषणअभववांहदैअमरवसैहै । ज-
 यधुनिमुनिवरषिहै सुमनसुरव्योमविमाननिसानवजैहै ॥ व
 न्धुभमेतप्राणबल्लभपदपरसिसकलपरितापनसैहै । रामवाम
 दिशिदेखितुमहिंसवनयनवन्तलोचनफलपैहै ॥ तुमअतिहि
 तचितइहोनायतनुवारवारप्रभतुमहचितैहै । यहशोभासु
 खसमर्यावलोकातकाह्लतोपलकैनहिलैहै ॥ कपिकुललघनमु
 यशजयजानकिसहितकुशलनिजनगरसिधैहै । प्रेमपुलकि
 आनन्दसुदितमनतुलसिदासकलकीरतिगैहै ॥ २०० ॥

इतिश्रीरामगीतावल्यांसुंदरकाण्डसमाप्तः ॥ ५ ॥

टी० । सियइ० ॥ १ ॥ पाथोधि समुद्र । घेरो ई देखिवो लंकगढ
 लंकगढ फौज ते घेरो घेरो देखि पढ़ै गो ॥ २ ॥ रावण करि परि-
 वार अगमनो रावन अपने परिवार को आगे करि के ॥ ३ ॥ ४ ॥
 ॥ ५ ॥ न हितैहै नही हित करै गो अर्थात् पलक न लगावैगो ॥
 ॥ ६ ॥ ७ ॥ ५१ ॥

दो० । दीनउधारनसुजसतौ गावतबेदपुरान । हरिहरवरकहाभ
 यो विसराघोंनिजसान ॥ १ ॥

इतिश्रीतुलसीदासकृतरामगीतावलीप्रकाशिकटीकायांश्रीसीताराम
 कृपापाचश्रीसीतारामीयहरिहरप्रसादकृतौसुंदरकांडःसमाप्तः ॥

दो० । जनरंजनगंजनपलन भंजनधरनीभार । हरिहरभजुरघु-
 नाथकहं जोचाहसिभवपार ॥ १ ॥

मू० । रागमाहू । मानअजहुंशिषपरिहरिक्रोध पियपूरोआयोअव
 काहिकहुकरिरघुवीरबिरोध । जेहिताडकासुवाहुमारिमख
 राखिजनायोआपु कौतुकहोमारीचनीचमिसप्रगव्योविशिष

प्रतापु ॥ सकलभूपवलगर्वसहिततोख्योकठोरशिवचापु । व्या
हीजेहिजानकीजीतिजगहख्योपरसुधरदापु ॥ कपटकाकसा
सतिप्रसादकरिविनुश्रमवध्योविराधु । खरदूषणत्रिशिराकव-
न्धहतिकियेसुखीसुरसाधु ॥ येकहिबाणबालिमाख्योजेहिजो
वलउदधिअगाधु । कहुंघोंकंतकुशलबीतीकेहिकिंएरामअप
राधु ॥ लांघिनसकेलोकविजईतुमजासुअनुजकृतरेषु । उतरि
सिंधुजाख्योप्रचारिपुरजाकेदूतत्रिशेषु ॥ कृपासिंधुखलवनकृशा
नुसमयशगावतयुतशेषु । सोइविरदैतवीरकांशलपतिनाथ
समुक्तिजियदेषु ॥ मुनिपुलस्तिकेयशमयङ्गमङ्ककतकलङ्कह
ठिहोहि । औरप्रकारउवारनहींकहुंमैदेख्यौजगटोहि ॥
चलुमिलुवेगिकुशलसारदसियमहितअग्रकरमोहि । तुलसि
दासप्रभुसरणशब्दमुनिअभयकरैगेतोहि ॥ २ ॥ ७१ ॥

टी० । मानदू० । मंदोदरी कि उक्ति है आयो व कहैं आयो अब
॥ १ ॥ जन्मयो आप अपने को जनावत भए मिस बहाना ते ॥ २ ॥
दाप अभिमान ॥ ३ ॥ ४ ॥ बल उदधि अगाध बल रूप समुद्र जेहि
बालि को अथाह ॥ ५ ॥ ६ ॥ बिरदैत वानावाले टोहिकहैं टोइकै
॥ ८ ॥ ९ ॥ १ ॥

मू० । रागकान्हरा । तूंदशकशठभलेकुलजायो तामऊंशिवसेवावि
रञ्जिवरभुजबलविपुलजगतयशुपायो । खरदूषणत्रिशिराक-
वन्धरिपुजेहिबालीयमलोकपठायो ताकोदूतपूनीतचरितह
रिशुभसंदेशकहनहैंआयो ॥ श्रीमदन्धुपअभिमानमोहवस
जानतअनजानतहरिल्यायो । तजिव्यलीकभजुकारुणीकप्रभु
दैजानकिहिसुनहिसमुभायो ॥ यातेतवहितहोहिंकुशलकु
लअचलराजचलिहैनचलायो । नाहितरामप्रतापअनलमऊं
हैपतङ्गपरिहैशठभायो ॥ यद्यपिअङ्गदनीतिपरमहितकह्यो-
तथापिनकळुमनभायो । तुलसिदासमुनिवचनक्रोधअतिपाव

कजरतमनङ्गदृष्टनायो ॥ २ ॥ ७२ ॥

टी० । तूँइ० । अंगद की उक्ति ॥ १ ॥ २ ॥ श्रीमद धनमद व्य-
लीक कपट ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ २ ॥

मू० । तैमेरोमरमकछूनहिपायो रेकपिकुटिलढौठपशुपांवरमोहि
दासज्योडांउनआयो । भ्राताकुम्भकरनरिपुघातकसुतसुरपति
हिवन्धकरिल्यायो निजभुजबलअतिअतुलकहोँक्योंकन्दु क-
ज्यौकैलाशउठायो ॥ सुरनरअसुरनागखगकिन्दरसकलकर
तमेरोमनभायो । निअररुचिरअहारमनुजतनुताकोयशख
लमोहिसुनायो ॥ कहाभयोवानरसहायमिलिकरिउपायज्यो
सिंधुबंधायो । जोतरिहैभुजबीशघोरनिधिअैसोकोत्रिअन
मैजायो ॥ सुनिदशशीसवचनकपिकुञ्जरविहंसिईशमायहि
शिरनायो । तुलसिदासलंकेशकालवसगुनतनकोटिजतनस-
मुभायो ॥ २ ॥ ७३ ॥

टी० । तैइ० । रावन की उक्ति ॥ १ ॥ २ ॥ गन को भायो कहै
हमारो को कहै हमारो गुलाम को भायो करत है ॥ ३॥४॥५॥३॥

मू० । सुनुखलमैतोहिवज्जतबुभायो येतेमानशठभयोमोहवसजान
तहूँचाहतविषखायो । जगतविदितअतिबीरबालिबलजानत
होकिधोँअविसरायो विनुप्रयाससोउहल्योएकसरसरनाग
तपरप्रेमदेखायो ॥ पावज्जगनिजकर्मजनितफलभलेठौरह
ठिवैरबढायो । बानरभालुचपेटलपेटनिमारततवह्वैहैपछिता
यो ॥ होहौँदशनतोरिवेलायककहाकरौँजोनआयसुपायो ।
अवरघुबीरबाणविदलितउरसोवहिगोरणभूमिसोहायो ॥ अ
विचलराजविभीषणकोसबजेहिरघुनाथचरनचितलायो । तु
लसिदासएहिभाँतिवचनकहिगर्जतचल्योबालिन्दपजायो ७३

टी० । सुनुइ० । अंगद की उक्ति हे सठ एतना अभिमान मोह
बस भयो है ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ होहौँ कहै हम विदलित विशेष द-

लित ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४ ॥

मू० । रागकेदारा । रामलक्षण उरलाइ लये हैं भरे नीरराजीवनयन
सब अङ्ग अङ्ग परिताप तये हैं । कहत सशोक विलोक बंधु मुख वच
न प्रीति गथये हैं । सेवक सखा भक्ति भायप गुण च चाहत अब अथये हैं
निज की रति करतूति तात तुम सुझती सकल जये हैं । मै तुम विनु
तनु राखि लोक अपने अपलोक लये हैं ॥ भरेपन की लाज इहां
लों हठि प्रिय प्राण दये हैं । लागत सांग विभीषण ही परसी पर आ
पुभये हैं ॥ सुनि प्रभु वचन भालुक पि सुगण मोच सुखाइ गये हैं
तुलसी आइ पवन सुत विधि मनो फि गिनिर मयेन ये हैं ॥ २ ॥ ७५ ॥

टी० । राम इ० । लक्ष्मण जी की शक्ति लगीवे की कथा लिखत
हैं सब अंग परिताप तए हैं सब अंग परिताप तें तै उठे हैं ॥ १ ॥
वचन प्रीति गथए हैं वचन प्रीति से गुहे भए हैं सेवक औ सखा
औ भगति औ भाईपने को गुन अब डूबा चाहत है आव ए सब गु
ण लक्ष्मण छोड़ि दूसरे से कहां होय गो ॥ २ ॥ हे तात तुम अपनी
कीर्ति औ करतूति ते सकल सुझति को जीति लए हैं हम तुम्हारे
विना अपना तन लोक में राखि के अपलोक कहैं अजस को लए है
॥ ३ ॥ हमारे प्रतिज्ञा को लाज तुम को इहां लो भई कि हठि
करि के प्रिय जो प्राण सो दिए विभीषण को सांग लगत तापर लक्ष्म
ण आप टाल भए हैं भाव विभीषण जो मरैं गे तो श्री राघव की प्र
तिज्ञा जायगी यह विचारि आप शक्ति को लै लए टाल को सिपर
पारसीमे कहत हैं ॥ ४ ॥ निर्मल नए हैं मानो विधाता ने नए सिर
से फिर लक्ष्मण जी को बनाए हैं ॥ ५ ॥ ५ ॥

मू० । राग सोरठ । मोपैतान कहु है आई और निवाहि भली विधि
भायप चल्यो लक्षण सो भाई । परपितु मातु सकल सुख परिहरिजे
हिवन विपति बंटाई तासंग हों सुरलोक शोक तजिस को न प्राण
पठाई ॥ जानत हों या उर कठोर तें कुलिश कठिनता पाई । सुमि

रिसनेहसुमित्रासुतकोदरकिदरारनजाई ॥ तातमरणतिय
हरणगृह्वधभुजदाहिनीगवांई । तुलसीमैसवभांतिआपनेकु
लहिकालिमालाई ॥ २ ॥ ७६ ॥

टी० । मोपै६० । और अंतलों ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ दाहिना मुज
भाई को कहत हैं ॥ ४ ॥ ६ ॥

मू० । मेरोसवपुरुषारथधाको विपतिबंटावनबंधुवाङ्गविनुकरींभरो
सौकाको । सुनुसुग्रीवसांचेह्मं मोपरफेखोवदनविधाता औ
सेसमयसमरसङ्कटहैंतज्योलक्षणमोभ्राता ॥ गिरिकाननजै
हैंसाखासृगहोंपुनिअनुजसंधाती । हैहैकहाविभीषणकी-
गतिरहीसोचभरिछाती ॥ तुलसीसुनिप्रभुवचनभालुकपिस
सकलविकलहियहारे । जामवंतहनुमन्तबोलितवऔसरजा
निप्रचारे ॥ २ ॥ ७७ ॥

टी० । मेरोइ० । विपति बटावन विपति को बटावन हारो ॥
॥ १ ॥ ७ ॥

मू० । रागमारू । जौहौअवअनुसासनपावों [तौचन्द्रमहिनिचोरि
चैलज्योंआनिसुधाशिरनारों । कैपातालदलौआलाबलिअ-
मृतकुंडमहिल्यावों भेदिभुअनकरिभानुवाहिरोतुरतराङ्ग
दैतावों ॥ विबुधवैद्यवर्सअनोधरितौप्रभुअनुगकहावों । प
ठकोंनीचुमीचुमूषकज्यौंसवहिकोपापवहावों ॥ तुम्हरेहिदु
पाप्रतापतिहारेहिनेकुबिलम्बनलावों । दीजैसोइआयसुतुल
सीप्रभुजेहितुम्हरेमनभावों ॥ २ ॥ ७८ ॥

टी० । जौइ० । हनुमान जी की उक्ति है जो अब हम आज्ञां
पावें तो बसु सम चंद्रमा को गारि कै अमृत आनि कै सिर नवावें
॥ १ ॥ अथवां पाताल के सर्पों को मारि कै अमृत को कुंड भूमि प
र ले आवों अथवा ब्रह्मांड को भेदन करि तेहि राह ते सूर्य को
बाहर करों औ तेहि राह को राङ्ग से बंद करि देउं भाव जब

सूर्य ब्रह्मांड मे नरहै मे तब कैसे भिनुसार होयगो काज नसाईहि
होत प्रभाता एह आसै लेके इनुमान जी कहे त्रिबुध वैद्य अश्वनी
कुमार वरवस जो रावरी अनुगदास मीचु मृत्यु मूषक मूसा ॥ ३ ॥
॥ ४ ॥ ८ ॥

म० । सुनिहनुमंतबचनरघुवीर सत्यसमीरसुअनसबलायककह्यौ-
रामरनधीर। चाहियबैदईसआयसुधरिसीसकीसवलअन आ
न्यौसदनसहितसोवतहीजौलौपलकुपरैन ॥ १ ॥ जियैकुंअ
रनिसिमिलैमूलिकाकीन्हीविनयसुधेन । उद्योकपीससुमिरि
सीतापतिचल्यैसजीवनलेन ॥ २ ॥ कालनेमिदलिवेगिविलो
क्यौद्रोनाचलजियजानि । देपीदिव्यौषधीजहंतहंजरीनपरी
पहिचानि ॥ ३ ॥ लियौउठाइकुधरकंदुकज्यौवेगिनजाइवषा
नि । ज्यौंधाएगजराजउधारनसपदिसुदरसनपानि ॥ ४ ॥
आनिपहारजोहारेप्रभुकियौबैदराजउपचार । करुनासिंधु
बंधुभेद्यौमिटिगयौसकलदुषभार ॥ ५ ॥ मुदितभालुकपिक
टकलह्यौजनुसमरपयोनिधिपार । बङ्गरिठौरहीराषिमही
धरुआयोपवनकुमार ॥ ६ ॥ सेनसहितसेवकहिसराहतपु
निपुनिरामसुजान । वरषिसुमनहियहरषिप्रसंसतत्रिबुधवजा
इनिसान ॥ ७ ॥ तुलसिदाससुधिपाइनिसाचरभयेमनहुं
विनुप्राण । परीभोरहीरोरलंकगढदईहांकहनुमान ॥ ८ ॥
॥ २ ॥ ७८ ॥

टी० । सुनिह० ॥ १ ॥ श्री राघव कहे कि वैद्य चाहिए यह आ
ज्ञा स्वामी की हनुमान बल अयन सिर पर धरि के घर सहित वै
द्य को लंका से सोअतही आन्यो एतने सीघता से कि जब लो प-
लक न पख्यो ॥ २ ॥ सुधेन नामा वैद्य जो लंका से आयो सो विनै
कीन्ही कि रातिभर मे जड़ी मिलै तो कुअंर जीवै ॥ ३ ॥ ४ ॥ कु-
धर पर्वत कंदुक गेंदा वेग सीघता सुदर्शन पानि विष्णु ॥ ५ ॥ ६ ॥

ठौरहीं जहां से आए रहे तहैं रषि आए ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥
 सू० । रागकेदारा । कौतुकहींकपिकुधरलियोहै चल्थौनभनाइ
 माधरघुनाथहिसरिसनवेगवियोहै । देख्यौजातजानिनिचर
 विनुफरसरहयौहियौहै । पख्यौकहिरामपवनराष्यौगिरिपर
 तेहितेजपियोहै ॥ १ ॥ जाइभरतभरिअंकभेटिनिजजीवन
 दानदियोहै । दुषलघुलघनमरमघायलसुनिमुषवडोकौसजि
 यौहै ॥ २ ॥ आयसुइतहिस्वामिसंकटउतपरतनकळूकियो
 है । तुलसिदासविहख्यौअकाससोकैसेकैजातसियोहै ॥३॥
 ॥ २ ॥ ७६ ॥

टी० । कौतुकइ० । सरिस न वेग वियो है जाके बराबर दूसरे
 को वेग नही है ॥ १ ॥ भरत जू हनुमान जी को जात देखे निश्चर
 जानि के विनु फर को वान हृदय मे माख्यो तेहि वान ने पर कहै
 संपूर्ण हनुमान जी के तेज को पीलियो हनुमान जू राम कहि के
 पृथ्वी मे गिरे परवत को पवन ने रोकि राख्यो भाव जाते पुरी न द
 वि जाय ॥ २ ॥ भरत जू हनुमान जी के टिग जाय के अंक भरि भे
 टि के पुनि अपना आरहाय हनुमान जू को दान दियो है तब हनु
 मान जू जी उठे है एतना शेष है मरम घायल मर्म स्थान के घाव
 ते घायल ॥ ३ ॥ इत श्री रामज की आज्ञा अवधि भर आयोध्याजी
 मे रहिवे की औ उत श्री राघव जू संकट मे है कुछ करत नहीं
 बनत है भाव न रहत बनत न जात बनत है गोसाईं जी कहत
 है कि फथ्यो अकाश सो कैसे सियो जात है ॥ ४ ॥ १० ॥

सू० । भरतशत्रुसूदनविलोकिकपिचितचकितभयोहै रामलघनरन
 जीतिअवधआएकैधोंमोहिभ्रमकैधोंकाह्लकपटठयोहै । प्रेम
 पुलकिपहिचानिकैपटपटुमनयोहै कख्यौनपरतजेहिभांतिदु-
 ङ्गभाइन्हसनेहसोंसोउरलाइलयोहै ॥ १ ॥ समाचारकहि
 गहखभौतेहितापतयोहै । कुधरसहितचढोबिसिषवेगिपठवौ

सुनिहरिहियगरवगूढउपयौहै ॥ २ ॥ तीरतेउतरिजसुक-
ह्यौचहैगुनगननिजयौहै । धन्यभरतधन्यभरतकरतभयौमग
नमौनरह्यौमनअनुरागरयौहै ॥३॥ यहजलनिधिधन्यौमथ्यौ
लंघ्यौबंध्यौअचयौहै । तुलसिदासरघुवीरबंधुमहिमाकोसिं
धुतरिकोकविपारगयौहै ॥ ४ ॥ २ ॥ ८० ॥

टी० । भरत ६० । १ ॥ २ ॥ हनुमानजू समाचार कहे गहर
कहै बिलंब भयो तेहि तापते भरत जू तपि जात भए भरत जू
कहत भये कि पर्वत सहित हमारे बाण पर चढो तुम को शीघ्र
प्रभु के टिग भेज देउ यह सुनि के हनुमान जी के हृदय मे भारी
अहंकार उपज्यौ है कि मोरे भार चलहि किमि बाना फिर हनु
मान जी बाण पर चढे भरत जू को बोझ न जान प्रख्यौ बान चला
वन लगे तब हनुमान जू भरत जू को प्रभाव समुझि वाण ते उतरि
के भरतजू को यश कहा चाह्यौ पर भरत जू के गुन गनों ने जीति
लियो है भाव कहि वे को न समर्थ भये धन्य धन्य भरत कहत म
गन भए और चुप ह्यै जात भए औ मन भरत जू के अनुराग में
रँगि गयो ॥ ३ ॥ ४ ॥ यह समुद्र को सगर महाराज के पुत्रों ने
षन्यो वा प्रिय व्रत ने औ देवता देव्यों ने मथ्यो औ हनुमान जी ने
नाघ्यो औरधुनाथ ने बांधेउ औ अगस्त्य जी अचरू गए गोसाईं जी
कहत हैं कि भरत की महिमा समुद्र को तरिके कौन अस कवि
है कि जो पार गयो है एहि समुद्र तें महिमा समुद्र को अधिक
जनाए ॥ ५ ॥ ११ ॥

मू० । होतोनिहजोजगजनमभरतको तौकपिकहतद्वपानधारमग
चलिआचरनचरतको । धीरजधरमधरनिधरधुरहुतेगुरुधु-
रधरनिधरतको सबसदगुनसनमानिआनिउरअधऔगुन
निदरतको ॥ १ ॥ सिवजनसुगमसनेहरामपदुसुजननिसु
लभकरतको । सृजिनिजससुरतरुतुलसीकहुंअभिमतफर

निफरतको ॥ २ ॥ २८१ ॥

टी० । होतोइ० । अब हनुमान जी की उक्ति गोसांई जी कहत हैं जगत में जो भरत जी को जनम न होतो तो स्नेह का मार्ग उपान धार सम है तापर चलि के तेहि ब्रत को को आचरन करत ॥१॥ धरनि धर जां पर्वत तेहि के धुर कहैं भारद्वाज ते गुरू धुर कहैं अधिक है भार जेहि को ऐसे धीरज धर्म को धरनी पर को धरत औ सब सदगुनो को सनमानि कै हृदै मे आनि कै अघ औ औगुनन को कौन दरत कहैं विदीर्ण करत वा निदरत कहैं निरादर करत ॥ २ ॥ जो राम पद सनेह शिव को भी नही सुगम सो सुजन नि को को सुलभ करत भाव भरत जी की दसा स्मरण करि के श्री राम पद मे प्रीति उपजति है कहत सुनत सति भाव भरतको सीयराम पद होइ नरतको । निज यश रूप सुर तरु को सृजि के तुलसी कहं बांछित फरनि को को फरत भरतजी प्रति थी राम जी की उक्ति है मिटि है पाप प्रपंच सब अपिल अमंगल भार । लोक सुयश पर लोक सुख सुमिरत नाम तुम्हार ॥ ३ ॥ १२ ॥

मू० । सुनिरनघायल लघन परे हैं स्वामिकाज संग्राम सुभट सो लो है ललकिल रे हैं । सुवन सो क संतोष सुमिचिंर घुपति भगति वरे हैं । किन किन गात सुपात किन हिं किनु जल सत होत हरे हैं ॥ १ ॥ कपि सो कहत सुभाय अंब के अंब क अंबु भरे हैं । रघुनंदन विनु वंधु कु अवसर जट्ट पिधनु दुसरे हैं ॥ २ ॥ तात जाड कपि संग रिपु सूदन उठि कर जोरि परे हैं । प्रमुदित पुलकि पैत पूरे जनु विधिवस सुठर ठरे हैं ॥ ३ ॥ अंब अनुज गति लघि पवन ज भरता दिग जानि गरे हैं । तुलसी सब समुक्ता इमा तुते हि समय सचेत करे हैं ॥ ४ ॥ २ ॥ ८२ ॥

टी० । सुनिइ० । स्वामी के कार्य हेतु संग्राम में सुभट जो मेघ नाथ तासों ललकारि के लोह करि लरे हैं तेहि रन मे लघन ला

ल घायल परे हैं यह सुनि के सुमिचाजू को पुत्र को शोक है औ लक्षण जूरधुपति की भक्ति को वरे कहैं अंगीकार किए हैं ताते संतोष है याते छिन छिन मे गात सुघात औ छिन छिन मे झलसत औ हरे होत है ॥ १ ॥ २ ॥ माता के नेचों मे जल भरे हैं स्वाभाविक कपि सो कहति है यद्यपि धनु दूसरा है अर्थात् सहायक है तथापि कुअवसर मे विना बंधु के रघुनन्दन भए ॥ ३ ॥ हे रिपुसूदन अब तुम हनुमान के संग जाउ यह सुनि सचुहन जू हाथ जोरि के षड़े होत भए आनन्द करि पुलकित होत भए मानौ पूरे दांव पर विधि के बस पासा सुंदर ढार से ठरे हैं माता को औ श्चुहन की दसा देखि हनुमान जू औ भरत आदिक ग्लानि ते गरत भए तेहिं समै में मातु के समुभ्ताय के सब सचेत करे हैं ॥ ४ ॥ १३ ॥

मू० । विनयमुनाद्वीपरिपाय कहौकहाकपीसतुहसुचिसुमति सुहृदसुभाव । स्वामिसंकटहेतुहौजडजननिजनब्यौजाय । समयपादकहादुसेवकघञ्चौतौनसहाय ॥ १ ॥ कहतिसिधिल सनेहभोजनुधीरघायलघाय । भरतगतिलषिमातुसवरहि ज्यौगुडीविनुवाय ॥ २ ॥ भेटकहिकहिवोकह्यौयौकठिनमानसमाय । लाललोनेलषनसहितसुललितलागतनाय ॥ ३ ॥ देखिवंधुसनेहअंबसुभायलषनकुठाय । तपततुलसीतरनिचा सकुएहिनयेतिऊंताय ॥ ४ ॥ २ ॥ ८३ ॥

टी० । विनयदू० ॥ १ ॥ जाय व्यर्थ घञ्चो तोन सहाय सहाय में युक्त न भयो ॥ २ ॥ ज्यों गुठी विनु वायु जैसे वे हवा की गुठी ॥ ३ ॥ श्री कौशिल्याजू कहति है कि हमारो भेट कहि कै असो कहना कि तुम्हारी कठिन मानस माता ने अस कह्यो है कि हे लाल नायकहै नाव तुम्हारो लषन सहित ललित लागत है भाव निज सोभा जो चाहो तो लषन सहित आयो ॥ ४ ॥ भरत सचुहन को सनेह औ माता को सुभाव औ लषन को कुठाव में देखि कै तरनि

जो सूर्य तिन के चास देनिहारे जो हनुमानजू सो यह नए तीनो ताप से तपत हैं । संका । नंदिग्राम में श्री कौशिल्या जू आदि कैसे प्राप्त भई । उत्तर । महात्मन के मुख से अस सुना है जब लक्ष्मण जू को शक्ती लगी तब सुमित्रा जू स्वप्न देख्यो कि भुजा को सर्प ली ल्यो सो जाय श्री वशिष्ठ जू सो कछोउ सो सुनि वशिष्ठजू कछो कि लक्ष्मण को क्लृष्ट अरिष्ट है सो ताके हेतु यज्ञ सांति के अर्थ किआ चाहिए परंतु यह समै राक्षस करि जज्ञ नाही होयै पावत भरत जो रक्षा करै तो यज्ञ होय तब सब मिलि नंदिग्राम मे भरत के समीप आए के समाचार कहे तब भरत विना गासी को वा न लै करि रक्षा हेतु धरे ताही समै मे हनुमान आए सो निश्चर केभ्रम से भरत ज मारत भए ॥ ५ ॥ १४ ॥

म० । हृदयघाउमेरेपीररघुवीरै पाइसजीवनजागिकहतयौं प्रेमपु लकिविसरेसरीरै । मोहिकहापूछतपुनिपुनिजैसेपाठअरथ चरचाकीरै। सोभासुषकृतिलाङ्गभूपकहुंकेवलकांतिमोलही रै ॥ १ ॥ तुलसीसुनि सौमित्रिबचनसबधरिनसकतधीरौधी रै । उपमारामलघनकीप्रीतिकीक्यौं दीजैकीरैनीरै ॥ २ ॥

॥ २८४ ॥

टी० । हृदयद० । श्री लक्ष्मण जू सजीवन के पाय के जागि के प्रेम मे पुलकि के देहाध्यास विसारि के अस कहत हैं कि हम को पुनि पुनि कहा बूझत हौ जो घाव देखनो होय तो हमारे हृदै में देखो श्री पीर पूछना होय तो श्री रघुवीर जू सो पूछो नै से पाठ के अर्थ की चर्चा खगा सेकोज पूंछै भाव तस हम से पूछना है सोभा सुख हानि श्री लाभ राजा कहं है हीरा कीं केवल कांति श्री मोल मात्र है अस लक्ष्मण जू को बचन सुनि धीरो धीर को नही धरि सकत है श्री राम लघन की प्रीति की उपमा कीर श्री नीर की क्यौं दिजिए भाव उन की प्रीति षटाई आदि तें विल-

गाति है ॥ ३ ॥ १५ ॥

मू० । राग कान्हरा । राजतरामकामसतसुंदर । रिपुनजीतिअनुज
संगसोभितफेरतचापविसिषवनरुहकर । ख्यामसरीररुचिर
अमभीकरसोनिनतकनविचवीचमनोहर ॥ जनुषद्योतनिकर
हरिहितगनभ्राजतमरकतसैलसिखरपर ॥ १ ॥ घायलवीर
विराजतचहुंदिसिहरखितसकलरीऊअरुवनचर । कुसुमित
किंसुकतरुसमहमहंतरुनतमालविशालविटपवर ॥ २ ॥ रा
जिवनयनविलोकिकृपाकरिकियेअभयमुनिनागविबुधनर । तु
लसिदासयहरूपअनूपमहृदिसरोजवसिदुसहविपातिहर ॥
॥ ३ ॥ २८५ ॥

अब रावणादि सब निशाचरों के बध के अनंतर श्री रघुनाथ
जी के स्वरूप को बर्नन करत हैं टी० । राजतद्र० । वनरुह कमल
॥१॥ सुंदर ख्याम शरीर मे सुंदर अमबिंदु औ वीच वीच मे ओणित
कण हैं मानो खद्योत समूह औ हरहित जे चंद्रमा तिन के गन
जे तारा ते मरकत सैल के सिषर पर सोभत हैं इहां खद्योत ओ
णित कण है औ तारा अमबिंदु है मरकत शैल श्रीराम को शरी
र है खद्योत को कोऊ देश मे जुगुनू कोऊ देश मे भगजोगिनी
कहत हैं औ जो खद्योत सूर्य बाचक होय तौ भी वनत है क्योंकि
अरुणरंग सूर्य का भी है ॥ २ ॥ मानो फूले भए पलास के तरु स-
मूह मे युवा अष्ट विशाल तमाल को वृक्ष है इहां घायल वीर फूले
पलास सम हैं तमाल सम श्री राम हैं ॥ ३ ॥ ४ ॥ १६ ॥

मू० । रागअसावरी । अवधिआजुकिधौऔरोदिनह्वै है चढिधवर
हरबिलोकिदपिनदिसिबूभधौपथिककहातेआएवैहै । बह-
रिविचारिहारिहितसोचतिपुलकिगातलागेलोचनचैहैनिज
वासरनिवरषपुरवैगोविधिमेरेतहंकरमकठिनकृतकैहै ॥ १ ॥
बनरघुवीरमातृगृहजीवतिनिलजप्रानसुनिसुनिसुषखैहै । तु

लसिदासमोसीकठोरचितकुलिससारभंजिनकोह्वैहै ॥ २ ॥

॥ २८६ ॥

टी० । अवधि० । श्री कौशिल्या ज की उक्ति रघुनाथ के आइवे को दिन आजुइ है कि दुइ दिन और है सखी ते कहति है कि अटारी पर चढ़ि के दक्षिण दिसा देखि के पथिक सों बूझ कि वै कहां ते आए हैं भाव कदापि कहीं रघुनाथ से आवत कै भेंट भई होय ॥ १ ॥ विचार करि हारि हिए सोच करत है पुलकावली अंग मे है औ नेत्रन से आंसू टपकन लगे अब हृदै में सोचत है कि तहां विधाता के निकट मे मेरे छत कठिन कर्म कोई है ताते ब्रह्मा अपने दिनन सों चौदह वर्ष पुरवै गो ॥ २ ॥ कुलिश शाल भंजि कौन ह्वै है कुलिश कहै वज्र की शाल भंजिका कहै प्रति मासो भी नही होगी ॥ ३ ॥ १७ ॥

मू० । आलीअवरामलघनकितह्वैहै चिचकूटतज्यौतवतेनलहीसु धिवधूसमेतकुशलसुतह्वैहै । बारिबयारिविषमहिमआतपस हिबिनुवसनभमितलखैहै कंदमूलफलफूलअसनवनभोजन समयमितलकैसेवैहै ॥ १ ॥ जिन्हहिबिलोकिसोचिहैलता दूमघगमृगमुनिलोचनजलचैहै । तुलसिदासतिन्हकीजननी हामोसीनिठुरचितऔरौकज्जह्वैहै ॥ २ ॥ २८७ ॥

टी० । आली० । संका । हनुमान जी से तो सब वृतान्त सुने रहैं चिचकूट तज्यो तव ते न लही सुधि यह कैसे कहति है । उत्तर । व्याकुलता करि अपर पद सु० ॥ १८ ॥

मू० । रागसोरठ । बैठीसगुनमनावतिमाता कवअैहैमेरेबालकुशलघरकहज्जकागफुग्वाता । दूधभातकोदोनीदैहौसोनेचोचमटैहौजवासियसहितबिलोकिनयनभरिरामलघनउरलैहौ ॥ १ ॥ अवधिसमीपजानिजननीजियअतिआतुरअकुलानी । गनकबुलाइप्रायपरिपूछतिप्रेममगनसुदुवानी ॥ २ ॥

तेहिअवसरकोउभरतनिकटतेसमाचारलैआयो । प्रभुआग-
मनसुनततुलसीमानोसौनमरतजलपायो ॥ ३ ॥ २८८ ॥

टी० । वैठी६० । पद सुगम ॥ १६ ॥

मू० । रागगौरी । छेमकरीबलिवोलिसुवानी कुशलछेमसियराम
लषनकवअहैअंभवधरजधानी । ससिमुषिकुंकुमवरनिसु-
लोचनिमोचनिमोचनिवेदवषानी देविदयाकरिदेहिदरस
फलजोगिपानिविनवहिसवरानी ॥ १ ॥ सुनिसनेहमयवचन
निकटहैमंजुलमंडलकैमडरानी । शुभमंगलआनंदगगनधु
निअकनिअकनिउरजरनिजुडानी ॥ २ ॥ फरकनलगेसुअंग
विदिसिदिसिमनप्रसन्नदुषदसासिरानी । करहिप्रनामसप्रे-
मपुलकितनमानिविविधबलिसगुनसयानी ॥ ३ ॥ तेहिअव
सरहनुमानभरतसोकहीसकलकल्यानकहानी । तुलसिदा-
ससोइचाहसजीविनिविषमवियोगविधाबड़िभानी ॥ ४ ॥ २
८६ ॥

टी० । छेम६० । छेमकरी सपेद मुष वाली चील्ह को कहत हैं
काह्ल देश में खेम कल्यानी कहत हैं अएहैं अवध अवध रजजानी
रजधानी की जो सीवां तेहि अयोध्या जी मे कव अए हैं ॥ १ ॥ हे
शशि मुषी हे अरुणवर्णा तूं कहे तुम ॥ २ ॥ ३ ॥ मानि विविधि बलि
अनेकन पूजा मानि के ॥ ४ ॥ सोई कल्यान कहानी रूप दृच्छित
सजीवन ने विषम वियोग जनित जो बड़ी व्यथा ताको जराय दिए
॥ ५ ॥ २० ॥

मू० । रागधनाश्री । सुनियतसागरसेतुबंधायो कोसलपतिकीकुश
लसकलमुषिकोउएकदूतभरतपहिल्यायो । बधिविराधचि-
सिराषरदूषनसूपनषाकोरूपनसायो इतिकबंधवलअंधवा-
लिदलिकपासिंधुसुग्रीववसायो ॥ १ ॥ सरनागतअपनाइवि
भीषनरावनसकुलसमूलवहायो । विवुधसमाजनिवाजिवांह

दैवंदिकोरवरविरदकहायौ ॥ २ ॥ एकएकसोंसमाचारसुनि
नगरलोगजहंतहंसवधायौ । घनधुनिअकनिमुदितमयूरज्यौं
बूडतजलधिपारसोपायौ ॥ ३ ॥ अवधिआजुयौकहतपरसप
रवैगिबिमाननिकटपुरआयौ । उतरिअनुजअनुगनिसमेतप्र
भुगुरुद्विजगनचरननिसिखनायौ ॥ ४ ॥ जोजेहिजोगरामते
हिबिधिमिलिसबकेसनअतिमोदवढायौ । भेटौमातुभरतभर
तानुजक्यौकहौं प्रेमअमितअनमायौ ॥ ५ ॥ तेहीदिनमुनिदृं
दअनंदिततुरिततिलककोसाजसजायौ । महाराजरघुवंसति
लककोसादरतुलसिदासगुनगायौ ॥ ६ ॥ २६० ॥

टी० । सुनियतदू० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ मेघधुनि सुनि के जैसे मयू-
र प्रमुदित होत अर्थात्तस प्रमुदित भए औ जस समुद्र मे बूडत पा
र पावै तस पाए ॥ ४ ॥ अनुग सेवक ॥ ५ ॥ अनमायौ जो न अमा
य ॥ ६ ॥ ७ ॥ २१ ॥

सू० । रागजयतिथी । रनजीतिरामराउआए सानुजसदलससीय
कुशलआजुअवधअनंदवधाए । अरिपुरजारिउजारिमारि
पुबिबुधसुवासवसाए धरनिधेनुमहिदेवसाधुसबकेसवसोचन
साए ॥ १ ॥ दर्ईलंकथिरथयोविभीषनवचनपियूषपिआए ।
सुधासींचिकपिछपानगरनरनारिनिहारिजिआए ॥ २ ॥ मि
लेगुरवंधुमातुजनपरिजनभएसकलमनभाए । दरसहरषदस
चारिवरषकेदुषपलमैविसराए ॥ ३ ॥ बोलिसचिवसुचिसोधि
सुदिनमुनिमंगलसाजसजाए । महाराजअभिषेकवरषिसुर-
सुमननिसानवजाए ॥ ४ ॥ लैलैभेटनृपअहिपलोकपतिअति
सनेहसिखनाए । पूजिप्रीतिपहिचानिरामआदरेअधिकअप
नाए ॥ ५ ॥ दानमानसनमानिजानिखुचिजाचकजनपहिरा
ए । गएसोकसरसूषिमोदसरितासमुद्रगहिराए ॥ ६ ॥ प्र
भुप्रतापरविअहितअमंगलअधउलकतमताए । किएविशोक

नी अपने निर्मल चित्त को लगाय उनके पद कमल को सेवत ह
 ब्राह्मणन की मंडली औ मुनिन के समूहन के बीच में चन्द्र बदन
 मुख सदन सब लोग के नैनन को सुख दाता औ रघुनाथ सोहत
 हैं ब्राह्मणन वसिष्ठ न्याय करि ब्रह्म मंडली ते मुनीन्द्र हं दृष्टक लि
 खे ॥ २ ॥ सिर रुह कहैं वार कंचित कहैं टेढे तिनको वरुथ कहैं
 समूह विधुरित कहैं विखरे भए हैं तिनके बीच बीच फूलन के गु
 ष्ठे गथे हैं सो मानो मणि युक्त सर्पन के बालकन की सेना चंद्रमा
 के समीप आई है सो सेना देखि चंद्रमा हरिअकोर दै जुगल सुंद
 र कुंडल जो मयूर है ताको राखे अर्थात् सर्प को मयूर खात है तिन
 कुंडल मयूरन की छवि देषि चोर सर्प बालक वज्रत सकुचत हैं इहां
 मणि गूथे भये पुष्प है सिसुफणि की सेना टेढे विखरे वार है चंद्र
 मा मुख है कुंडल के आड़ कर वार मुखपर नहों आय सकत है सो
 सकुचना है संका सर्प को मणि गुप्त रहत हैं इहां फूल तो प्रगट
 है उत्तर मणि जो सिर पर गुप्त रहत है ताकी आभा बाहर चम
 कत है तैसे बालन में पुष्प गुप्त हैं किंचित पखुरी जो निकली है सो
 आभा रूप है ॥ ३ ॥ भौहैं ललित हैं औ भाल तिलक औ ठोड़ी
 औ ओठ औ दांत रसीले हैं हसी अति सुंदर है औ कपोल ना
 सिका सुंदर है मानो नीरज कहैं कमल इहां कमल करि नेत्र जा
 नना तिन के ऊपर भ्रमर की अवली लरत हैं इहां भ्रमर की पं
 क्ति दोनो भौहैं है सो कमल रूप नेत्र के रस पान करिवे हेतु
 लरत हैं सो विलोकि मधुकर जुगल जो कमल मे हैं इहां मधुकर
 जुगल कस्तूरी को तिलक रेष है जो केसर को तिलक मानो तो
 पीत जुगल मधुकर जानो पंकज मुष है अर्थात् कमल बदन पर जो
 जुग मधुकर तिलक रेष सो औ नासिका रूप सुआ सो दोऊ
 के बीच अर्थात् दोऊ भौहं भ्रमरावली के बीच कियो भाव धरहर
 कियो जाय कै ॥ ४ ॥ सुंदर पीत वस्त्र धारे हैं औ विसद बनमाल

तुलसी औ पुष्प करि रचित विविध विधान ते बनाई उर में सोभत
 मानो तमाल वृक्ष के अध विच हविध सूगन की पांति रुचिर बैठी
 है कोऊ संदेह करै कि पक्षी चंचल होत हैं थिर क्यों है रचे है
 ता हेतु लिषत है की सोने के जाल के भीतर परे हैं ताते उड़त
 नही हैं इहां तमाल तह राघव है अधविच वक्षस्थन है हविध की
 र पांति बनमाला जो हरित खेत पीत तुलसी पुष्पन करि है सो है
 सोने की जाल पीत बसन है ॥ ५ ॥ सिवजी के हृदय कमल मो
 राम रूपी भंवर जो नेवास करत है औ निर्यलीक कहैं दूषन रहि
 त मानस कहैं हृदय रूप गृह मे निरंतर जो छायो रहत है औ
 अति सै आनन्द को मूत है औ सकल सून हरणि हारो औ औ
 अवध के मंडन कहैं भूषन करनिहारो रघुराई मै जो तुलसी दास
 तापर सानकूल रहौ ॥ ६ ॥ ३ ॥

मू० । राजतरुवीरधीरभंजनभवभीरपीरहरनसकलसरजुतीरनि-
 रषडमषिसो है । संगअनुजमनुजनि करदनुजबलविभंगकरन
 अंगअंगछविअनंगअगनितमनमो है । सुप्रमामुषसीलअयन
 नयननिरषनिरषनीलकुंचितकचकुंडलकलनासिकचितपो है
 मनहुंइंदुविंभमध्यकंजमोनषंजनलषिमधुपमकरकौरआएत
 कितकिनिजगो है ॥ १ ॥ ललितगंडमंडलमुविशालभालति
 लकभलकभंजुतरमयंकअंकरुचिरवंकभौ है । अरुनअधरम
 धुरबोलदसनदमकदामिनिदुतिडलसतिहियहसनिचारुचि
 तवनितिरछौ है ॥ २ ॥ कंबुकंठभुजविसालउरसितरुनतुल-
 सिमालमंजुलमुक्तावलिजुतजागतिजियजो है । जनुकलिंदनं
 दिनिमनिइंद्रनीलसिषरपरसिधसतिलसतिहंसअनिसंकुल
 अधिकौ है ॥ ३ ॥ दिव्यतरदुकूलभव्यनव्यरुचिरचंपकचयचं
 चलाकलापकनकनिकरअलिकिधौ है । सज्जनचषभषनि के
 तवभूषनमनिगनसमेतरूपजलधिवपुषलेतमनमयंदवो है ॥४॥

अकनिवचनचातुरीतुरीयपेषिप्रेममगन पगनपरतदृतउतसव
चकिततेहिसमोहै । तुलसिदासयहमधिनहिकौनकीकहां
तेआइकौनकाजकाकेटिगकौनठाउंकोहैं ॥ ५ ॥ २६६ ॥

टी० । राजतद् ० । री सषी रघुवीर धीर भंजन करनि हारे भव
रूपी भीर को औ सकल पीर हरनि हारे सरजू तीर मे तेरे सांहे
कहै सनमुष सोभत है देषजु भाईऔ वहुत मनुष्य संग है औ द
नुजन के बल को विसेष तोड़नि हारे है जो दनुज वनपाठ होय
तो अस अर्थ करना दनुज रूप वन को तोड़नि हारे है है तो औ
से बलिष्ठ पर सुंदर ऐसे है कि अंग अंग की छवि पर एक को को
कहै अगिनित काम मोहै ॥ १ ॥ परमा सोभा औ मुष औ सील
के गृह जे नैन है तिन्है देषु औ खाम ठेठे बाल औ कुंडल औ
सुंदर नासिका जे चित्त पोहत है तिन्है देखु भाव वस करि लेत
है सो मानो चंद्रमा के बिंब के मध्य मे कमल मऊरी घंजरीट लषि
कौ भंवर मऊरी मुआ अपने अपने गौहै कहै संबंध जानि आए द्रहां
चंद्रबिंब औ राधव को मुष है तेहि मध्य कमल मीन घंजन रूपनेच
है तेहि को देषि कै कमल जानि बाल रूप भ्रमर आए औ कुंडल
रूप मकर अपनो सजाती नेत्र मीन को मानि आए औ नासिका
जो कीर सोजु अपनो सजातीय अर्थात् पत्नी नैन घंजन को जानि
आए ॥ २ ॥ ललित कपोल मंडल है औ सुंदर विसाल भाल तामे
तिलक अति सुंदर टेढी भौहै अंक सम है औ लाल ओठ है बोल
मधुर है औ दांतन की चमक दामिनि की दुति सम है हसनि औ
तिरछी चितवनि देषि हृदय झलसति है ॥ ३ ॥ संष के तीन रेषा
सम कंठ है भुज विसाल है उर मे तुलसी की माला मोतिन की
माला युक्त है जाको जोगी जिय सो देषत है मानो जमुनाजी नी
लमनिंद्र पहार के सिषर को परसि धसति कहै गिरति तहां हंस-
नि की पंक्ति संकुल कहै संकीर्ण अधिक होति अर्थात् एक मे एक

सटि लसति इहां जमुना तुलसी की माला है मनींद्र नील रघुनाथ
 है सिषर कांधा है ताको परसिधारा सम माला नीचे को गिह्यो
 है ताके पास जो मोतिन की माला है सो हंस की पंक्ति है ॥ ४ ॥
 अति अलौकिक पीत वसन भव्य कहैं सुंदर नवीन जो है सो कैधों
 सुंदर चंपा के पुष्पन का समूह है कैधो विजुरीन को समूह है कै-
 धो सोननि के भ्रमरन को समूह है अर्थात् पीत भ्रमरन का समूह
 है औ रूप रूपी समुद्र जो है सो भूषन रूप मनि गन समेत सज्ज
 न के नेत्र रूप मछरी के निकेत कहैं रहिवे को स्थान है भाव समु-
 द्र मे मछरी रहत है सो इहां सज्जन का नेत्र है उहां मनि गन
 रहत इहां भूषन है तेहि रूप रूपी समुद्र मे मन रूप हाथी को
 वपुष कहैं सरीर वोह लेत है अर्थात् डूबत उतिराति है ॥ ५ ॥ स-
 धी के बचन की चतुराई अकनि कहैं सुनि तव तुरीय जो श्री रघु-
 नाथ तिन को देखि कै प्रेम मे डूबत भईं पग नहीं इत घर के औ
 र परत न उत सरजू और परत तेहि समयमे सब चकित ह्वै गईं
 गोसांई जी कहत हैं यह सुधि नहीं रही की कवन की हौं औ
 केहि ठांवे ते आई औ कौन काज करना है काके टिग हौं औ क
 वन ठांवे के रहैया हौं तुरीय ते रघुनाथ बोध हेतु प्रमान । तुरीया
 जानकी प्रोक्ता तुरीयो रघुनंदनः इतिमहाराभायने ॥ ६ ॥ ४ ॥

मू० । देषसधिआजुरघुनाथसोभावनी नीलनीरद्वरनवपुषभुवनाभ
 रनपीतअंबरधरनहरनदुतिदामिनी । सरजुमज्जनकियेसंग
 सज्जनलियेहेतुजनपरहियेकपाकोमलधनी । सजनिआवतभ
 वनमत्तगजवरगवनलंकष्टगपतिठवनिकुवरकोसलधनी ॥ १ ॥
 सघनचिक्कनकुटिलचिकुरबिलुलितमृदुलकरनिविवरतचतुर-
 सरससुषमाजनी । ललितअहिसिमुनिकरमनज्जंससिसनस
 मरलरतधरहरिकरतरुचिरजनुजुगफनी ॥ २ ॥ भालभ्राज
 ततिलकजलजलोचनपलकआरुभूनासिकासुभगमुकआननी

हितकोककोकनदलोकसुखसशुभछाए ॥ ७ ॥ रामराजकु-
लिकाजसुमंगलसबनिसवैसुखपाए । देहिअमीसभूमिसुर
प्रमुदितप्रजाप्रमोदवढाए ॥ ८ ॥ आअमधरमविभागवेदपथ
पावनलोगचलाए । धरमनिरतसियरामचरनरतमनज्जंराम
सियजाए ॥ ९ ॥ कामधेनुमहिविपकामतरुकोउविधिवा-
मनलाए । तेतबअवतुलसीतेउजिन्हहितसहितरामगुनगा-
ए ॥ १० ॥ २६१ ॥

टी० । रणदू० ॥ १ ॥ २ ॥ सुधा से सीचि के कपिन को औ छ
पा से नगर के नर नारि को जिआवत भए ॥ ३ ॥ दरम हरष दर्-
शन के हर्ष से महाराज अभिषेक महाराज के अभिषेक होने में
॥ ४ ॥ ५ ॥ अहिप लोकपति शेष वासु की आदि औ इन्द्रादि लो-
कपाल ॥ ६ ॥ सोक रूप तलाव सूषिगए औ आनन्द रूप सरिता
औ समुद्र अथाह होत भए ॥ ७ ॥ प्रभु के प्रताप रूप सूर्य ने अ-
हित औ अमंगल औ अघ रूप उलूक को सुषदाई जो तम ताको
नाश किए दृहां तम करि अविद्या लेना औ हित रूप चक्रवाक औ
कमल को विगत सोक किए औ लोक मे सुंदर यस सुभ छाए ॥
॥ ८ ॥ श्री रघुनाथ के राज्य में सब काज में सुमंगल भयो औ सब
ने सब प्रकार के सुष पाए ॥ ९ ॥ मनहुं रामसिय जाए मानो श्री
सीता राम के पुत्र हैं भूमि काम धेनु होत भई औ दृक्ष कल्पतरु
होत भए औ कोऊ पर विधाता वामन भए ते प्रजा तव राम राज्य
में सुषी भए अब तेऊ सुषी हैं जे हित सहित रामगुन गाए ॥ १० ॥ २२ ॥
मू० । रागटोडी । आजुअवधअनंदवधावनरिपुरनजीतिरामधर
आए सजिसुविमाननिसानवजावतमुदितदेवदेषनधाए । घर
घरचारचौकचंदनमनिमंगलकलससबनिसाजेधुजपताकतो
रनवितानवरविविधिभांतिवाजनवाजे ॥ १ ॥ रामतिलकसुनि
दीपदीपकेन्द्रप्रआएउप्रहारलिए । सीयसहितआसीनसिंहा

सननिरषिजोहारतहरषिह्वये ॥ २ ॥ मंगलगानबेदधुनि
जयधुनिमुनिअसीमधुनिभुवनभरे । वरषिसुमनसुरसिद्धप्रसं
सतसर्वकेसवसंतापहरे ॥ ३ ॥ रामराजभईकामधेनुमहिमु-
षसंपदालोककाए । जनमजनमजानकीनाथकेगुनगनतुलसि
दासगाए ॥ ४ ॥ २६२ ॥ २३ ॥

इतिश्रीरामगीतावल्यांलंकाकांडः समाप्तः ॥

टी० । आजुइ० ॥ १ ॥ घर घरमे सुंदर चौक चंदन ते औ मणि
ते औ मंगल कलश सब ने साजे तोरण कहै बंदरवार वितान कहै
मंडप ॥ २ ॥ उपहार भेंट आसीन बैठे ॥ ३ ॥ ४ ॥ श्री रघुनाथ के
राज्य में भूमि काम धेनु भई सुख औ संपदा सब लोक मे क्वावत
भई जन्म जन्म में जानकी नाथ के गुन गन को गाए इहां जन्म
जन्म पद ते अपने को वाल्मीक जी को अवतार क्वचन किए स्पष्ट श्री
नाभा जी लिषे कलि कुटिल जीव निस्तार हित वालमीक तुलसी
भयो लंका कांड की समाप्त जैसे वाल्मीकजी राम राज्य मे किए
तैसे गीतावली मे गोसांई जी किए । दो० । मंगलश्रीसरयूसरितमं
गलविप्रिनिप्रमोद । मंगलसीतारामजू जोमोदऊकोमोद ॥

इतिश्री तुलसीदासकृत रामगीतावली प्रकाशिका टीकायां श्रीसीतारा
मठपापाच श्रीसीतारामीय हरिहरप्रसादकृतौ लंकाकाण्डः समाप्तः
मू० । रागसोरठ । वनतेंआइकैराजारामभएभुआल सुदितचौद-
हभुअनसवसुषसुषीसवसवकाल । भिटेकलुषकलेसकुलधनक
पटकुपथकुचाल गएदारिददोषदाहनदंभदुरितदुकाल ॥ १ ॥
कामधुकमहिकामतरुतहउपतमनिगनलाल । नागिनरते-
हिसमयसुखतीभरेभागसुभाल ॥ २ ॥ वरनआश्रमधरमरत
मनचचनबेषमराल । रामसियसेवकमनेहीसाधुसुमुषरसाल
॥ ३ ॥ रामराजसमाजवरनतसिद्धसुरदिगपाल । सुमिरिसो
तुलसीअजहुंहियहरषहोतविशाल ॥ ४ ॥ २६३ ॥

टी० । दो० । इतकलङ्गीउतचंद्रिका कुंडलतरिवनकान । सियसि
 यवल्लभमोसदा वसोहियेविचञ्चान ॥ १ ॥ वनइ० । भए भुञ्चाल घ-
 खी पालन में युक्त भए चौदहो भुञ्चन के वासी सब हर्षित औ सब
 काल में सब सुष करि सुषी होत भए ॥ १ ॥ पाप करि कलेश जो
 रोग जनित औ कुलक्षण टण छेदनादि सो मिटे औ कपट करि
 औ कुपंथ मे परि जो कुचाल तें चलत रचे सो मिटे औ दारुण क
 है घोर दंभ औ पाप रूप दुकाल अर्थात् दुरभिक्षादि तें जो दारुद्रि
 जनित दोष रचे सो गए ॥ २ ॥ भूमि काम धेनु भई दृक्ष कल्पदृक्ष
 भए पाथर सब लाल मणि के समूह भए अर्थात् चिंतामणि भए औ
 तेहि समय मे नागि नर सुजती औ सुंदर भाल अपना भाग्य तें भ-
 रत भए ॥ ३ ॥ वरणायम धर्म मेरत औ मन वचन करि हंस सम
 बेषधारी अर्थात् बालो मधुर औ वेषौ उज्जल औ रास सिय के से
 वक औ सनेही औ परकार्ज साधक औ सुमुख कहैं प्रसन्न मुख औ
 रस युक्त वचन अर्थात् मिष्ट भाषी ॥ ४ ॥ १ ॥

मू० । राग ललित । भोरजानकीजीवनजागे । सूतमागधप्रवीन
 बेनुवीनाधनिहारेगायकसरसरागरागे ॥ टेक । ख्यामलसलो
 नेगातआलसवसजभांतप्रियाप्रेमरसपागे । उनीदेलोचन
 चारुमुखसुषमासिंगारुहेरिहेरिहारेमारभूरिभागे ॥ १ ॥
 सहजसुहाईछविउपमानलहैकविमुदितविलोकनलागे । तु-
 लसिदासनिशिवासरअनूपरूपरहतप्रेमअनुरागे ॥ २ ॥
 २६४ ॥ ४ ॥

टी० । भोरइ० । सूत पौरानिक मागध बंस प्रसंसक सरस राग
 ते रागे कहैं गावत भए उनी दे लोचन नीद भरे नैन सुंदर और
 मुख को परम सोभा देखि सुंगार रसहारे औ एक के को कहैं
 बद्धत काम भागे ॥ १ ॥ स्वाभाविक सुंदर छवि ताकी उपमा कवि
 नहीं पावत हर्षित सब देखन लागे यह अनूप रूप के प्रेम में रा

तं दिन दास अनुरागे रहत हैं ॥ २ ॥ २ ॥

मू० । राग कल्याण । रघुपतिराजीवनयनसोभातनकोटिमयनकरु
णारसअयनचयनरूपभूपमाई । देखोसखिअतुलितछविंसं
तकंजकाननरविगावतकलकीरतिकविकोविदसमुदाई ॥ टेक
मज्जनकरिसरजुतीरठाढे रघुंसबोरसेवतपदकमलधीरनिरम
लचितलाई । ब्रह्ममंडलीमुनींद्रष्टं दमध्यइंदुवदनराजतसुप्र
सदनलोकलोचनमुखदाई ॥ १ ॥ विधुरितसिररुहवख्यकुं
चितविचसुमनज्युमनिजुतसिसुफनिअनोकससिसमीप्रआई
जनुसभीतदैअकीरराखेजुगरुचिरमोरकुंडलछविनिरखिचो
रसकुचतअधिकाई ॥ २ ॥ ललितभृकुटितिलकभालच्चिवुक
अधरद्विजरसालहासचारुतरकपोलनासिकासुहाई । मधु
करजुगपंकजविचशुकविलोकिनीर जपरलरतमधुपअवलीम
नोवीचिकियौजाई ॥ ३ ॥ सुंदरपटपीतविसदंभाजतवनमाल
सरसितुलसिकाप्रभूनरचितविविधिविधिवनाई । तरुतमाल
अधविचजनुचिविधिकीरपांतिरुचिर हेमजालअंतरपरिताते
नउड़ाई ॥ ४ ॥ संकरहृदिपुंडरीकनिवसतहरिचंचरीकनिरव्य
लीकमानसगृहसंततरहेछाई । अतिसयअनंदमूलतुलसि-
दाससानुकूलहरनसकलशूलअधमंडनरघुराई ॥ ५ ॥ २६५ ॥

टी० । रघुपति ३० । सखी प्रति सखी कहति है री माई अर्थात्
री सखी रघुपति जो कमल नयन हैं औ जिनके तनकी सोभा को
टि मयन सम है औ करुना रस के अयन कहैं गृह है औ चैन
दाता रूप भूप है जिनको वाजावत चैन कहैं आनंद रूप ब्रह्मादि
तिनके भूप हैं तिनको देखो अतुलित छवि हैं उनको औ संत रू-
पी कमल वन के सूर्य हैं अर्थात् प्रफुल्लित कर निहारे हैं औ उ-
नकी सुंदरि कीरति कविपंडितन को समुदाय गावत हैं ॥ १ ॥ सो
औ रघुंस वीर स्नान करिके सरजू तीर में खडे हैं धीर कहैं ग्या

चिबुकमुंद्र अघर अरुन द्विजदुतिसुधरवचनगंभीरवृद्धासभ
 वभाननी ॥ ३ ॥ अवनकुंडलविमलगंडमंडितचपलकलितक
 लकांतिअतिभांतिकच्छतिनतनी । जुगलकंचनमकरमनज्जंवि
 धुकरमधुरपिअतपह्निचानिकरिसिंधुकीरतिभनी ॥ ४ ॥ उ
 रमिराजतपदिकजोतिरचनाअधिकभालसुविमालचङ्गं पास
 वनीगजमनी । श्यामनवजलदपरनिरखिटिनकरकलाकौतु
 कीमनज्जंरहिधेरिउड़गनअनी ॥ ५ ॥ मंदिरनिपरषरीना
 रिआनंदभरीनिरखिवरखिंहिंविप्रलकुसुमकुंकुमकनी । दास
 तुलसीगमपरमकरनाधामकामसतकोटिमदहरतच्छिआप
 नी ॥ ६ ॥ २६७ ॥

टी० । देषु इति । हे सखी आजु जो रघुनाथ की शोभा बनी सो
 देखु श्याम भेष सम सरीर को रंग है सो सरीर समस्त भुवन के
 आभरण कहै भूषण रूप है औ पीतवसन का जो पहिरन है सो
 दामिनी की द्युति हरनि हारो है सरजू ते मज्जन किए संग में
 सज्जनन को लिए हेतु कहै प्रीति जन के ऊपर जिनके हृदय मे
 है औ कृपा करि कोमल स्वभाव घनी कहै अत्यंत है औ मतवारे
 श्रेष्ठ हाथी सम चाल है औ लंक कहे कठि औ ठवनि कहे अ-
 कड़ सिंह सम है हे सजनी कोशल घनी कुअर भौन आवत हैं ॥
 २ ॥ सघन चिक्कन टेढ़े वार अरुभे भाव स्नान किए ते अरुभे हैं
 ताको कोमल हाथ सो रघुनाथ विवरत कहै पृथक पृथक करत तासे
 अति रस युक्त परमा सोभा जनी कहै उत्पन्न भई सुंदर सर्पन के
 बालकन के समूह मानो चंद्रमा सन यहू में लरत तहां दुइ सर्प सुंदर
 धरहरि करत हैं इहां सर्पन के बालकन के समूह वार है शशि
 मुख है युग फनी दोउ हाथ है मुख पर जो वार परत है सो लरव
 है हाथन ते जो संहारव है सो धर हरि है भाव यह कि अमृत
 हेतु चंद्रमा सो सर्पन के बालक लरत हैं दुइ बड़े सर्प धर हरि

करत हैं कि जो कोई अपना माल न देतो तासो लड़ना न चाहिये
 ॥ ३ ॥ ललाट मे तिलक सोभत कमल सम नेत्र हैं पलकें और
 भौंह सुंदर है औ नासिका सुंदर सूगा के मुख सम है अर्थात् ठोर
 सम ठोड़ी औ अह्न अधर ओष्ठ के नीचे को भाग औ दांतनि
 की दुतिधर कहैं ओष्ठ सहित सुंदर है वचन गंभीर है औ मृदु
 हँसी संसार की न सनिहायी है ॥ ४ ॥ कानन मे चंचल निर्मल
 कुंडल है तिन्ह करि कपोल भ्रूषित है कल कहैं सुंदर सोभित अ
 ति प्रकाशित जिन्ह की कांति तिन्ह कुंडलन ने कछू तनी कहैं वि-
 ख्यान किया है ताको कहत हैं भानो दुइ सोने के मकर अर्थात्
 कुंडलन रूप मकरी चंद्र को किरन मधुर अमृत प्रियत दृष्टां मुख चं
 द्र है रूग अमृत है समुद्र को कीर्तिजो भनी भई है अर्थात्
 चंद्रमा अमृत अदि समुद्र ते उत्पन्न है यह कीर्ति तें
 पहिचानि करि के प्रियत की हमहूँ समुद्र ते उत्पन्न हैं तो
 भाइ के चीज लेवे में दोष नहीं ॥ ५ ॥ उर में पटिक
 सोभति ताकी रचना की जोति अधिक है औ गज मुक्ता करि बनी
 सुंदर विमल माला चहुँ पास सोभत सो भानो स्याम नवीन मेघ पर
 सूर्य की कला देखि कै कौतुक करने वाली तारागन की सेना घेर
 रही इहां स्याम नव जलद रघुनाथ को बच्छखल है औ पटिक जो
 ति टिनकर की कला है तारागन मे ती की दाना हैं कौतुक मेघ
 सूर्य की कला फो डोनो है ताको देखि तारागन विचारे हमहूँ
 सब उलटी करै त ते मेघ के ऊपर ताहूँ पर सूर्य के समीप आनि
 बैठे यह अति अश्चर्य कौतुक किये ॥ ६ ॥ मंदिरन पर खड़ी अनं
 द भरी नारि निरखि कै बहुत फूल औ कमकुम कहैं केसरि बा रो
 रो ताकी कनिका को दृष्टि करति हैं गोसाईं जी कहत हैं परम
 करुना के धाम जो राम सो आपनी छवि सो सौ कोटि काम के
 मद को हरत है ॥ ७ ॥

मू० । आजु रघुवीर छविजातिनहि ककु कही । सुभगसिंहासनामीन
 सीतारमन भवन अभिगाम बड्ड काममोभासही ॥ चारुचामर
 व्यजन छत्रमनिगन विपु नदाम मुकुतावली जोति जगिमगिर ही
 मन ऊं राकेससंग हंस उदगन अरु हिमिलन आण हृदय जानिनि
 जनायही ॥ १ ॥ मुकुटसुंदरसिरमिभा लवरति लक भूकुटिल
 कचकुंडलनिपरम आभाजही । मन ऊं हरहर जुगनमकरध्व
 जकेमकरलागि अवननिकरतमेरकीवतकही ॥ २ ॥ अरुनरा
 जीवदलनयन करुन अवनवदन मुखमासदन हासत्रयतापही ।
 विविधकंकनहार उरसिगजमनिमालमन ऊं वगपांतिजुगमि
 लिचलीजलदही ॥ ३ ॥ पीतनिरमलचैलमन ऊं मरकतसैल
 पृथुलदामिनिरही छ'इताजसहजही । ललितसायकचापपी
 नुभुजवत अतुलमनुजतनदनुजवनदहनसंडनमही ॥ ४ ॥ जा
 सगुनरूपनहि कनितनिगुनसगुनसंभुसनकादिशुकभक्तिद
 हकरगही । दासतुलसीरासचरनपंकजसदावचनमनकरम
 चहै प्रीतिनितनिरवही ॥ ५ ॥ २६८ ॥

टी० । आजु ६० । आसोन बैडे भुवन अभिगाम चौटहो भुवन मे
 सुंदर है सही मत्य ॥ १ ॥ सुंदर चंवर पंषा छत्र तामो बड्डत मनि
 गन औ मोतिन को पंक्ति अर्थात् आलरि लग है औ दाम कहें
 गुच्छा तिन की जोति जगमगाय रही मानो छत्र नही राकेस कहें
 पूर्न चंद्र है चमर नही हंस है चमर खेत होत है ताते हंस कहे
 मुक्तामनि नही है तारागन है औ पंषा नही है वरहो कहें मयूर
 है हृदय मे अपना स्वामी जानि मिलन आण पंषा मयूर के पक्ष कहें
 है औ मयूर के नाचये सम डोलत रहत है ताते मयूर कहे ॥ २ ॥
 सुंदर मुकुट सिर पर है औ ललाट मे अष्ट तिलक है भौहें दोही
 है औ दोऊ कुंडल परम प्रभा को लही है मानो मिव जी वर
 ते कामदेव के ध्वजा के दोऊ मकरी कान मो लगी मेली वत

कही करत है इहां दोऊ कुंडल मकुरी हैं भाव हमारे स्वामी का
म को मारि डारे अब हम को भी सिव कदापि मारि डारै यह
हेतु सिव जी को स्वामी रघुनाथ को जानि मेल को बत कही कर
त है की दून के कहे सिवजी न मारैगे मेल हूँ जाय गो ॥ ३ ॥
लाल कमल सम नेत्र करुना के गृह हैं औ मुख परमा सोभा को
घर तोनौ ताप हरता है और विविध प्रकार के कंकन हारादि अ
र्थात् वनमाला आदि औ उरमे गज मुक्ता की माला है सो मानो
माला नहीं है जुगवगपांति है सरीर रूप मेघ सो मिलि चली है
॥ ४ ॥ मल रहित पीतरंग को बसन मानो सरीर रूप भरकत मनि
के खेल पर पृथुल कहे समूह पीताम्बर रूप विजुरी सहजही सोभाव
जो चंचल ताको तजि कै छाये रही धिर होय रही पो नभुजा औ
बल अतुलित है सुंदर वान धनुष धारे मनुष्य के सरीर सम सरीर
औ दनुज रूपी वन के दहन कहे अग्नि औ पृथ्वी के मूषन कर्ता
है ॥ ५ ॥ जाके गुन रूप को निर्गुन सगुन सिवादि नही कहत
अर्थात् नहीं निश्चै करि सकत संभु सनकादि सुक केवल भक्तिही
को दृढ़ करि गहि रही है गोसांई जी कहत हैं कि हम तिन्ह रा
म के चरन कमल मे सदा मन बचन कर्म करि प्रीति को निवाह
वो चाहत हैं ॥ ६ ॥ ६ ॥

मू० । रामराजराजमौलिमुनिवरमनहरनसरनलायकमुषदायकर
घुनायकदेषोरी । लोकलोचनाभिरामनीलमनितमालस्या
मरूपसौलधामअंगकुविअनंगकोरी । भाजतसिरमुकुटपुर
टनिरमितमनिरचितचारुकुंचितकचरुचिरपरमसोभानहि
थोरी । मनहुंचंचरीकपुंजकंजटंदप्रीतिलागिगुंजतकलगान
तानदिनमनिरिभयोरी ॥ १ ॥ अरुनकंजदलविसाललोचन
भूतिलकभालमंडितश्रुतिकुंडलवरसुंदरतरजोरी । मनहुंसं
वरारिमारिललितमकरजुगविचारिदीन्हेसस्तिकहंप्रारिभा

जतदुङ्गओरी ॥ २ ॥ सुंदरनासाकपोलचिवुकअधरअरुन-
 बोलमधुरदसनराजतजवचितवतमुषमोरी । कंजकोसभीत-
 रजनुकंजरागसिधरनिकररुचिररचितविधिविचित्रतडितरं-
 गवोरी ॥ ३ ॥ कंबुकंठउरविशालतुलसिकानवीनमालमधु
 करवरवासविवसउपमासुनिमोरी । जनुकलिंदजातनीलसैल
 तेषसीसभीपकंदष्टदवरषतकृषिमधुरघोरिघोरी ॥ ४ ॥ निर
 मलअतिपीतचैलदामिनिजनुजलदनोलराषीनिजसोभाहि-
 तविपुलविधिनिहोरी । नैननिकोफलविशेषत्रह्यअगुनसगुन
 वेधनिरषडतजिपलकसुफलजीवनलेषोरी ॥ ५ ॥ सुंदरसी
 तासमेतसोभितकरुननिकेतसेवकसुषदेतलेतचितवतचित-
 चोरी । वरनतयहअमितरूपधकितेनिगमनागभूपतुलसिदा
 सकृविविलोकिसारदभद्रभोरी ॥ ६ ॥ २६६ ॥

टी० । रामराजदू० । राजन के मौलि कहैं मस्तक रूप औ सु-
 नि वरन के मन हरनिहारे औ सरन के जोग्य सुख के दाता र-
 घुकुल के स्वामी वा रघुनाम जीव ताके स्वामी जो राम राजा तिन
 कोरी सखी देखो सब जग के नेत्रों को रमनीय हैं औ नील मनि
 सम स्याम औ चिक्कन औ तमाल सम पुष्ट औ स्वाम हैं औ रूप औ सी
 ल के गृह हैं औ कोरी कहैं करोरिन काम की छवि है जाको ॥१॥ सि
 र से परट कहैं सोना ताको मुकुट निरमित कहैं बनायो औ मनि
 न करि जडित सुंदर सोभत औ सुंदर टेढे बाल तिनके उत्कृष्ट सो
 भा थोरी नहीं मानो बाल नहीं भ्रमरन को समूह हैं सुख औ
 दोज नेत्र एही कमलन के दृंद हैं तिनके प्रीति लागि गुंजार कर
 त हैं सो सुंदर तान करिगान ते सूर्य रूप मुकुट को गिभायो भा
 व सूर्य को चंचल सुभाव है ताको रीति के छोड़ि थिर ह्वै बैठे ॥
 २ ॥ लाल कमल के दल समान विसाल नेत्र हैं औ भौह करि ति
 लक करि भाल सोभित है औ अष्ट कुंडलनि की जोड़ी अति सुं-

दर कानन में हैं मानो संवरारि कहैं काम ताकों मारि कुंडल न
 हीं है ताके पताका केलित दोऊ मछरी हैं तिनको मुख रूप चं-
 द्रमा कहैं सिवत्रू दियो सो दोऊ और सोभत हैं ॥ ३ ॥ नासिका
 औ कपोल औ ठोड़ी सुंदर हैं औ ओठ लाल हैं बोल मधुर है
 जब मुख मोरि देखत हैं तब दाँतै सोभत हैं मानो कमल कोस के
 भीतर कंज कहैं कमल राग कहैं लाल अर्थात् लाल कमल तिनके
 सुंदर सिषर का समूह अर्थात् पषुरिन का समूह विधि कहैं ब्रह्मा
 ने राञ्चर्य विजुरी के रंग में बोरि कै रचित किया है इहां कंज को
 स मुख कोस है ताके भीतर लाल कमल को सिषर को समूह दा-
 तै अरुन है तड़िता को रंग भलक है वा कंज राग कहैं पद्य राग
 मनि शृंग तिनके समूह ॥ ४ ॥ संघ सम कंठ है छाती चौड़ी है
 तामे नवीन तुलसी को माला है तेहि विषे श्रेष्ठ सुगंध तें विवस
 ह्वै भ्रमर घेरि रहे हैं ताकी जो उपमा है री सखी सोसुनु मानो
 कलिंद जात कहैं जमुना जी नील परवत तें धसी कहैं गिरी तिन
 के समीप कंद टुंड कहैं मेघन को समूह इहा जमुना स्याम तुल-
 सी की माला है औ राघव को सरीर नील परवत है धसि वो माला
 को नीचे के ओर लटकनो है ताके समीप जो भ्रमर रन का भी रहै
 सो मेघ है माला के पुष्प के रस लेइ उड़त हैं मुख से जो रस ट-
 पक परत है सो बरसना है जो गुंजार मब्द करत हैं सो गरजना
 है ॥ ५ ॥ अति निर्मल जो पीत वसन विजुरी मम ताकों मानों स्याम
 मेघ ने बड्डत प्रकार निहोरा करि अपने सोभाहित राखी है इहां
 स्याम मेघ स्याम सरीर है पीत चैल दामिन में रूपक अलंकार है
 जनु उत्प्रेक्षा है नील जलद मे रूपकातिसयोक्ति तीन अलंकार
 का संकर है विशेष करि नैनन को फल रूप ब्रह्म अगुन सगुन वेष
 औ रामचंद्र को निमेष तजि देखहु तब अपने जीवन को सुफल
 जानो ॥ ६ ॥ करुना निकेत करुना के गृह निगम वेद नाग भूप शेष ॥

मू० । राग केदारा । सषिरधुनाथरूपनिहारसरदविधुरविसुमन
मनसिजमानभंजनिहार । ख्यामसुभगसरीरजनमनकामपू
रनिहार चारुचंदनमनङ्गमरकतसिषरलसतनिहार ॥ १ ॥
रुचिरउरउपवीतराजतपदिकगजमनिहार । मनङ्गसुरध-
नुनषतगनविचतिमिरगंजनिहार ॥ २ ॥ विमलपीतदुकूल
दामिनिदुतिनिंदिनिहार । बदनसुषमासदनसोभितमदन
मोहनिहार ॥ ३ ॥ सकलअंगअनूपनङ्गिकोउसुकविवरननि
हार । दासतुलसोनिरषतद्विसुषलहतनिरषनिहार ॥ ४ ॥
॥ ३०० ॥

टी० । सषिदू० । सरद को पूर्ण चंद्र औ अश्वनी कुमार औ काम
के अहंकार भंजनिहार रूप निहार ॥ १ ॥ सुंदर चंदन जो सरीर
मे है सो मानो मरकत के सिषर पर निहार कहै वरफ लसत है
॥ २ ॥ सुंदर उर मे जज्ञोपवीत औ पदिक कहै चौकी औ गजमुक्त
न का हार सोभत है सो मानो जज्ञोपवीत नही है इंद्र धनु है
इहां केवल आकार मे उपमा है रंग मे नही गज मनिहार नही
है तारागन है ताके बीच मे चौकी नही है तिमिर गंजनिहार
कहै सूर्य है ॥ ३ ॥ दामिनि के दुति को निंदा करनि हारो निर्म-
ल पीत वसन है जाको औ मदन को मोहन करनि हारो परमा
सोभा को गृह को सोभित बदन जाको ॥ ४ ॥ निरषि निहार देष
ने वालो पर ॥ ५ ॥ ट ॥

मू० । सषिरधुवीरमुषकविदेषु चित्तभीतिसुप्रीतिरंगस्वरूपताअवरे
षु ॥ नयनसुषमानिरषिनागरिसुफलजीवनलेषु । मनद्विविधि
जुगजलजविरचेसप्तिसुपूरनमेषु ॥ १ ॥ बृकुटिभालविसाल
राजतरुचिरकुं कुमरेषु । स्वमरद्वैरविकिरनल्याएकरनजनु
उनमेषु ॥ २ ॥ सुम्षिकेससुदेससुंदरसुमनसंजुतपेषु । मनङ्गउ
डगनवाङ्गआयेमिलनतमतजिदेषु ॥ ३ ॥ अवनकुंडलमनहुं

गुरुकविकरतवादविशेषु । नासिकाद्विजअधरजनुरह्यौमदन
करिबज्जवेषु ॥ ४ ॥ रूपवरनिनहिसकतनारदसंभुसारदसेषु
कहेतुलसीदासक्यौमतिमंदसकलनरेषु ॥ ५ ॥ ३०१ ॥

टी० । चित्त रूपी भीत पर सुंदर प्रीति रूपी रंग तें ता स्वरूप
कों लिषि लेज्ज ॥ १ ॥ हे नागरि नेचों की परमा सोभा देखि कै
अपने जीवन को सुफल लेखो मानो नेच नही है ब्रह्मा ने मेख
रासि के पुर्न चंद्रमा मे जुगल कमल बनाए है इहां मेष रासि को
घनचंद्र श्री राघव को मुष है मेषके चंद्रमा निर्मल होत है श्री मे
पही के संक्रांति मे श्रीराघव को जन्महू है ताते मेष के चंद्रमाकी
उपमा दिए चंद्रदिग कमल कैसे विगसित भए सो हेतु आगे लिष
त है ॥ २ ॥ भौहै युक्त भाल जो विसाल है तामे सुंदर केसरि को
जुगल रेषा सोभत है मानो भौह दोनो भ्रमर है तिन्हो ने उन्मेष
कहै विकास करिवे हेतु नेच रूप कमल के कुमकुम रेषा रूप सूर्य
किरिन को ल्याए भाव यह कि मुख रूप चंद्र देखि संपुटित भए है
तिन को तिलक रेख रूप सूर्य किरिन ते प्रफुल्लित कराये चाहत
है छवि रूप मकरंद के पान करिवे हेतु ॥ ३ ॥ सुंदर मुष पर केस
अपने भाग पर सुंदर पुष्पन जुत देष मानो फूल जो है सो तारागन
है तिन्ह के वाह ते बाररूप तम मुष रूप चंद्र तें मिलन आये
॥ ४ ॥ कानन मे जो दोऊ कुंडल है सो वृहस्यापि सुक्र है परस्पर
बाद करत है इहां कुंडलन का हलना सो बाद है नाक दांत ओठ
नही है मानो काम बहुत वेष करि टिक रह्यौ है ॥ ५ ॥ सकल न
रेषु सब मनुष्यन मे ॥ ६ ॥ ६ ॥

मू० । रागजयतथी । देषोराघोवदनविराजतचारु । जातनवरनिवि
लोकतहीमुषमुषकिधौछविवरनारिसिंगारु । रुचिगचिवकु-
रदजोतिअनूपमअधरअरुनसितहासनिहारु मनोससिकर
बखौचहतकमलमहुंप्रगटतदुरतनवनतविचारु ॥ १ ॥ नासि

कसुभगमनं सुकसुंदरचितवतचकितआचरजअपाह । क-
लकपोलभृदुबोलमनोहररीभिक्षितचतुरअपनपौवारु ॥२॥

नयनसरोजकुटिलकचकुंडलभृकुटिसुभालतिलकसोभासारु
मनंकेतुकेमकरचापमरगयोविसरिभयौमोहितमारु ॥ ३ ॥

निगमसेषसारदशुकसंकरवरनतरूपनपावतपाह । तुलसिदा
सकहैकहौकौनविधितिलघुमतिजडकूरगँवारु ॥ ४ ॥ ३०२ ॥

टी० । देषो इ० । हे सखी देषो श्री राघव को मुख सुंदर सो
भत है देखतही जो मुख होत है सो बरन्यो नहीं जात है मुख
है कैधौ अष्ट छवि रूप स्त्री को बृंहंगार है ॥ १ ॥ सुंदर ठोड़ी है
श्री दांतनि की जोति अनुपम है ओठ लाल श्री हँसी उज्जल इन
सब को निहार मानो हँसी रूप चंद्रमा को किरन ओठ रूप क-
मल मो वसो चाहत है पर विचार नहीं बनत कवहूँ प्रगटत कव
हूँ छिपि जात है अर्थात् जब रघुनाथ मुमुकात तब प्रगटत जब मु-
सुकाव छोड़ देत तब छिपि जात ॥ २ ॥ नासिका जो सुंदर सो मा-
नो सुवा को चोच है अपार आश्चर्य करि देखन वारे चकित हो-
य ताको चितवत है सुंदर कपोल है श्री कोमल बोल मनोहर है
ताको सुनि चतुर जन चित्त में रीभिक्ष के अपनो अपनपो कहै देहा
ध्यास वा आत्मा अपना नेवछावरि करत ॥ ३ ॥ नेत्र कमल सम हैं टे-
ढे वाले है श्री कुंडल भौंह सुंदर भालतिलक ए सब सोभा को सा-
रांस रूप हैं मानो कुंडल नहीं केतु कहैं ध्वजापर के मीन हैं श्री
भृकुटी नहीं हैं चांप है तिलक नहीं है वान है श्री रघुवर को
मुख देखि मोहित होय काम इन सब को विसारि गयो ॥ ४ ॥ ५ ॥

१० ॥

मू० । राग ललित । आजुरघुपतिमुखदेखतलागतसुखसेवकसुरुख
सोभासरदससिंहिहाई । दसनवसनलालविशदहासरसाल
मानोहिमकरकरराखेराजीवमनाई ॥ अरुननैनविसालल

लितवृकुटिभालतिलकचारुतरकपोलचिबुकनासिकासुहाई
 विधुरेकुटिलकचमानङ्गमधुलालचञ्चलिनलिनजुगलऊपर
 हेलुभाई ॥ १ ॥ अवनसुंदरसमकुंडलकलजुगमतुलसिदास
 अनूपउपमाकहोनजाई । मानङ्गमरकतसीपसुंदरससिसमी
 पकनकमकरजुतविधिविरचौवनाई ॥ २ ॥ ३०३ ॥

टी० । हे मखी आजु रघुपति मुख टेषत सुख लागत कहैं सुख
 होत है वह मुख कैसो है की सेवक पर सुंदर रूप पूर्वक रहत है
 औ जाके सोभा कों सरद पूर्णों को चंद्रमा सिंहात है दसन
 वसन कहैं ओठ सो लाल है औ हांस उज्जल रसोला है
 मानो मुख नहीं चंद्रमा है उज्जल हांस नहीं ताकों
 कर कहैं किरन है तिहि से ओष्ट रूप कमल को मनाइ रा
 खे भाव चंद्रमा को कमलते विरोध है ताको छोड़ाय राखे ॥ १ ॥
 लाल नैन विसाल है सुंदर है औ कपोल ठोड़ी नासिका सुंदर है
 औ विखरे भए टेढ़े बार है सो मानो बार नहीं है भ्रमरै है छ-
 वि रूप मधु के लालच तें जुगल नेत्र रूप कमल के ऊपर सो भा
 य रहे हैं ॥ २ ॥ कान सुंदर है ताके सम कुंडलोकल कहैं सुंदर
 दुइ हैं गोसाईं जीकहत है की उपमा रहित है ताते उपमा नहीं
 कही जात है मानो कान नहीं है मरकत मनि जो स्याम रंगको
 ताको सीप सुंदर है सो मुख रूप चंद्रमा के निकट सोने के कुंड
 ल रूप मछरी जुत ब्रह्मा जी ने बनाइ रच्यो है संका कहे की उ
 पमा नहीं कहि जाति है फेरि उपमा काहे सो क्यों उत्तर । जब
 उपमा न पाए तब जौ कवळ न हो निहार सो उपमान ते ठह-
 राए अर्थात् मरकत मनि की सीप न होति औ सोने की मछरी
 नहीं होति ॥ ३ ॥ ११ ॥

मू० । राग भैरव । प्रातकालरघुवीरवदनछविचितैचतुरचितभेरे ।
 होहिबिबेकविलोचननिरमलसुफलसुसीतखतेरे ॥ भालवि-

शालविकटभृकुटीविचतिलकरेषरुचिराजै । मनङ्गमदनतम
 तकिमरकतधनुजगलकनकसरसाजै ॥ १ ॥ रुचिरपलकलो
 चनजुगतारकस्यामअरुनसितकोए । जनुअलिनलिनकोस-
 मङ्गबंधुकसुमनसेजसजिसोए ॥ २ ॥ त्रिलुलितललितकपो
 लनिपरकचमेचककुटिलसुहाए । मनोविधुमहवनरुहविलो
 किअलिविपुलसकौतुकआए ॥ ३ ॥ सोभितअवनकनककुंड
 लकललंविदिविभुजमूले । मनङ्गकेकितकिगहनचहतजुग
 उरगइंदुप्रतिकूले ॥ ४ ॥ अधरअरुनतरदसनपांतिवरमधुर
 मनोहरहासा । मनङ्गसोनसरसिजमङ्गकुलिसनितडितस
 हितकृतवासा ॥ ५ ॥ चारुचिबुकशुकतुंडविनिंदकसुभगसु
 उन्नतनासा । तुलसिदासछविधामराममुखसुखदसमनभव
 चासा ॥ ६ ॥ ३०४ ॥

टी० । प्रात० । हे चतुर चित्त मेरे प्रात काल रघुवीर के मुख
 की छवि कों देषो तव विवेक रूपी नेत्रतेरे मल रचित फल सहित
 औ सीतल होहिं चतुर कहिवे को यह भाव कि मुख छवि के सन
 मुख कराया चाहत है ताते बडाई दै बोले ॥ १ ॥ विसाल भाल
 औ भौंह के बीच मे तिलक की रेषा सुंदर सोभति है मानो मुख
 रूप काम ने बाल रूप तम को ताकि कै भौंह रूप धनुष पर पीत
 तिलक रूप युगल सोने को बान साच्यो है ॥ २ ॥ पलकें औ नेत्रें
 सुंदर है तारक कहै पुतरी स्याम है औ ललाई मिश्रित खेत आंख
 केकोए कहै कोने है सो मानो पुतली रूप भ्रमर नेत्र रूप कमल
 के कोस में ललाई रूप दुपहरि के फूल की सज्या विक्राय सोए ॥
 ३ ॥ अरुभे स्याम टेढे वार सुंदर कपोलन पर सोभत है मानो म
 ष चंद्र मह नेत्र रूप वनरुह कहै कमल देषि कै केस रूप भ्रमरें
 कौतुक सहित अर्थात् एक से एक मे मिले क्रीड़ा करते आये ॥ ४ ॥
 लंबे जो विवि कहै दोऊ भुजा है तिन के मूल मे सुंदर सोने के

कुंडल कानो के सोभित हैं सो मानों कुंडल रूप मयूर को देखि
 कै दोऊ भुजा रूप सर्प जो चंद्रमा के प्रतिकूल मे है अर्थात् मुख
 चंद्र के सम्मुख मुख नहीं है पार्श्वभागमे है सो पकड़ा चाहत है
 भाव कुंडल मयूर को मुख चंद्र के अनुकूल जानि के ॥ ५ ॥ ओठ
 लाल तर है दांतनि की पांति श्रेष्ठ है औ मधुर हंसी मन की हर
 निहारी है मानो ओठ नहीं सोन कहैं लालरंग के सरसिज क
 हैं कमल है तामे दांत पंक्ति नहीं कुलिस कहैं हीरन का समूह है
 सो तड़िता रूप हंसी सहित वास कियो है बा दांतनि की चमक
 सो तड़िता है ॥ ६ ॥ सुंदर ठोड़ी है औ सुवा के ठोर को निंदा क
 रनि हारी अति सुंदर उन्नत नासिका है गोसाईं जी कहत हैं छ-
 वि को धाम औ मुख को दाता औ भवचास को समन करनिहारो
 श्री राम जी को मुख है ॥ ७ ॥ १२ ॥

म० । राग केदारा । सुमिरतऔरघुबीरकीवाहैं होतसुगमभवउद
 धिअगमअतिकोउलांघतकोउउतरतथाहैं । सुंदरख्यामसरी
 रसैलतेधसिजनद्वैजमुनाअवगाहैं अमितअमलजलवलपरिपू
 रनजनजनमीसिंगारसविताहैं ॥ १ ॥ धारैवानकूलधनुभूष-
 नजलचरभंवरसुभगसवधाहैं । विलसतिवीचिविजैविरुदाव-
 लिकरसरोजसोहतसुषमाहैं ॥ २ ॥ सकलभुवनमंगलमंदिर
 केद्वारविशालसोहार्ईसाहैं । जेपूजीकौसिकमपरिषवनिजन
 कगनपसंकरगिरिजाहैं ॥ ३ ॥ भवधनुदलिजानकीविवाहो
 भएविहालन्टपालत्रपाहैं । परशुपानिजिन्हकिएमहामुनिजे
 चितएकवज्जंनठपाहैं ॥ ४ ॥ जातुधानतियजानिवियोगनि
 दुषईसीयसुनाइकुचाहैं । जिन्हरिपुमारिसुरारिनारितेइसी
 सउघारिदिवाईधाहैं ॥ ५ ॥ दसमुखविवसतिलोकलोकपति-
 विकलविनाएनाकचनाहैं । सुवसवमेगावतजिन्हकोजसुअम-
 रनागनरसुमुषिसनाहैं ॥ ६ ॥ जेभुजबेदपुरानशेषसुकसारद

सहितसनेहसराहैं । कलपलताडुकिकलपलतावरकामदु-
हाडुकिकामदुहाहैं ॥ ७ ॥ सरनागतआरतप्रनतनिकोदैं
दैअभयपदऔरनिवाहैं । करिआंईकरिहैंकरतीहैंतुलसिदा
सदासनिपरकाहैं ॥ ८ ॥ ३०५ ॥

टी० । सुभिरतइ० । श्री रघुनाथ के भुजन को स्मरण करत मात्र
मे संसार रूपी समुद्र जो अति अगम है सो सुगम होत पराभक्ति
वाले तो वाही काल लांघि जात औ सकामा भक्तिवाले प्रारब्धभोग
पूर्वक संसार समुद्र को घाहैं उतरत अर्थात् किंचित देर होत पर
उतरै मे संदेह नहैं ॥ १ ॥ सुंदर ख्याम सरीर रूप परवत ते मा-
नो द्वै जमुना की धारा अवगाहैं कहैं अथाहैं घसी भाव नीचे को
गिरी भिति रहित निर्मल बल रूप जल करि भरी जमुना जो सूर्य
से जनमी हैं यह भुजा रूप जमुना इंगार रस रूप सविता कहैं
सूर्य से जनमी हैं ॥ २ ॥ वान धार है धनुकूल है जो भूषण पहि-
रे हैं सो जलचर हैं औ सब घाहैं भवर हैं घाह अंगुरी के बीच
को कहत हैं जाको कोऊ देश मे गाई कहुं घाई कहुं गासा कह
त हैं नदी मे कमल रहत है इहां सुषमा कहैं परमा सोभा करि
सोहत जो कर सो कमल है ॥ ३ ॥ सकल भुवन रूप मंदिर के मं-
गल रूप जो दरवाजा विसालता के सुंदर साहैं कहै चौकठ को वा-
जू भुजा हैं भाव बाजू आधार ते दरवाजा रहत है तैसे सर्व मंगल
इन भुजन के आधार तें रहत हैं औ जेहि भुजन को विश्वामित्रजी
के जज्ञ मे रिषि सब औ विवाह मे जनकजी औ असुरन के जय
किए पर गणप कहैं लोकपाल सब औ शिव पार्वतीजू काशी मे जे
मरै तेहि के मोक्ष हेतु पूजी ॥ ४ ॥ जिन्ह भुजन ने सिव धनु तोरि
जानकी जू को विवाही राजा सब टपा कहैं लज्जा करि विहाल
भए औ जेहि भुजन ने परसुराम को महामुनि किए अर्थात् सांत
बनाय दिए जे परसुराम छपा जुक्त काहू को कवहू न देखे ॥ ५ ॥

श्री जानकी जू को वियोगिनि जानि निसाचरन की स्त्री कु चाहै
 सुनाय दुष देत भईं तव जिन्ह भुजन ने सचु को मारि कै तेई नि-
 साचरन की स्त्रीन की सीस उधारि कै अर्थात् विधवा करि कै धा
 कहै दोहाई देवाई दाहै पाठ होय तो अस अर्थ करना उन के प
 तिन के चिता को दाहै कहै आंचे देवाई अर्थात् दग्ध करिबे समै
 मे ॥ ६ ॥ तीनौ लोक के लोकपालन को रावन विकल औ विशेष
 वसकरि नाक ते चना विनाए सो सुवस वसे जिन्ह भुजन को जस
 देवता नाग नरन स्त्री सनाहै कहै अपने पतिन सहित गावति है
 ॥ ७ ॥ जेहि भुजन को वेद पुरान सेष सुक सरस्वती नेह सहित
 सराहै है कि कल्पवृक्ष के कल्पवृक्ष औ कामधेनुहं के कामधेनु है
 भाव कल्पवृक्ष कामधेनु जो सब को मनोरथ पूरन करत तिनहू के
 मनोरथ पूरन करत है ॥ ८ ॥ आरत जीव सरनागत मे आय प्रना
 म करत तिन को अभै पद दैदै और कहै अंत लो निवाहत भाव
 आदि सों अंत लो निवाहत गोसांई जी कहत है सोकर दासनि
 पर छाहै करि आए औ करैगे औ करत है ॥ ९ ॥ १३ ॥

मू० । रागभैरो । रामचंद्रकरकंजकामतरुवामदेवहितकारी सिय
 सनेहवरबेलिवलितवरप्रेमबंधुवरवारी । मंजुलमंगलमूलमू
 लतनुकरजमनोहरसाषा रोमपरननषसुमनसुफलसवकाल
 सुजनअभिलाषा ॥ १ ॥ अविचलअमलअनामयअविरलललि
 तरहितकलछाया । समनसकलसंतापपापरुजमोहमानमद
 माया ॥ २ ॥ सेवहिशुचिमुनिभंगविहंगमनमुदितमनोरथ
 पाए । सुमिरतहियज्जलसततुलसीअनुरागउमगिगुनगाए ॥ ३
 ३०६ ॥

टी० । श्री रामचन्द्र का हस्तकमल रूप जो कल्पवृक्ष सो वामदेव
 कहै सिवजू को हितकारी है औ श्री जानकी जू को स्नेह सोई
 श्रेष्ठ लता है तेहि करि बलित कहै आछादित है औ श्रेष्ठ प्रेम

जो बंधु का सोई बरवारि कहै वाढ़ है अर्थात् ताको घेरा है ॥ १ ॥
 हस्त कमल रूप कल्प वृक्ष उज्ज्वल मंगल मूल को मूल कहै जड़
 सो तनु कहै शरीर है औ करज कहै अंगुरी सब साखा हैं हस्त में
 जो रोम है सो वृक्ष को पत्र है नख फूल है औ सुंदर जनन का
 जो अभिलाषा सब काल में सोई सुंदर फल है भाव अभिलाषानु-
 सार फल फल्यो रहत है ॥ २ ॥ विशेषकरि चंचलता रहित निर्मल
 औ रोग रहित भाव जैसे भिलामा आदि वृक्ष की छाया रोगकारी
 होति है तैसी नहीं अविरल कहै सघन है देखिवे में ललित है औ
 छल करि रहित छाया है अर्थात् ठग आदि वृक्ष लगाय भलो थल
 बनाय राखत है कि कोई पथिक सुथल देखि वास करै गो ताको
 घनादि हरोगो तस नहीं फिर छाया कैसी है लसक संताप अर्था
 त दैहिक दैविक भौतिक समन करनि हारी है औ पाप औ रोग
 औ माया करि जो मोहमान मद ताको समन करनिहारी ॥ ३ ॥
 वृक्ष को अमर पक्षि सेवत है इहां पवित्र जो मुनिन को मन सोई
 अमर औ पक्षी है सो मन भाए रस फल पाए हरखित है सेवत
 गुसाईं जी कहत है वा कल्पवृक्ष के तो नीचे गए सुख पावत है
 औ इहां स्मरण करत मात्र में हिय ऊलसति औ गुनगान किए ते
 अनुराग उमगि चलत ॥ ४ ॥ १४ ॥

म० । रामचरनअभिरामकामप्रदतीरथराजविराजै । संकरहृदय
 भक्तिभूतलपरप्रेमअक्षयबटकाजै ॥ स्वामचरनपदपीठअरुनत
 ललसतिविसदनषथेनी । अनुरविसुतासारदासुरसरिमिलिच
 लिललितत्रिवेनी ॥ १ ॥ अंकुसकुलिसकमलध्वजसुन्दरभव
 रतरंगविलासा । मज्जहिंसुरसज्जनमुनिजनमनमुदितमनो
 हरवासा ॥ २ ॥ विनुविरागजपजागजोगत्रतविनुतीरथतनुत्या
 गे । सबसुषसुलभसद्यतुलसीप्रभुपदप्रयागअनुरागे ॥ ३ ॥ ३०७ ॥

टी० । रामद० । चरन में तीरथ राज प्रयाग को रूपक करि क

इत हैं श्रीराम को चरन रमनीय मनोरथ दाता प्रयाग रूप सोभै
 है शंकर को जो प्रेम सोई अक्षय वट है सो शंकर के हृदय की
 भक्ति रूप भूतल पर सोइत है ॥ १ ॥ पद पीठ श्याम वर्ण है तर
 वा लाल है औ नखन्ह की पंक्ति उज्वल सोइति है मानहु यमना
 सरस्वती औ गंगा मिलि के सुंदरि चिबेनी चली है सरस्वती जैसे
 प्रयाग में गुप्त है तैसे तर वो गुप्त है ॥ २ ॥ अंकुशादि जे चिन्ह हैं
 ते भँवर तरंग के विलास हैं सुरसंत औ मुनि जन अर्थात् मननशी
 ल ते मनोहर चरन रूप प्रयाग में वास औ मज्जन करत है इहां
 पद के वर्णिवे आदि में जो हर्षना औ पुलकना है सो मज्जन है
 कहतसुनतहर्षहिंपुलकहीं । तेसुकृतीमनमुदितनहाहीं ॥ औ ध्यान
 करना वास करना है ॥ पदराजीववरनिनिहिंजाहीं । मुनिमननमधु
 पवसहिंजिन्हमाहीं ॥ ४ ॥ १५ ॥

मू० । रागविलावल । रघुवररूपविलोकुनेकुमन । सकललोक
 लोचनसुषदायकनषसिखसुभगश्यामसुंदरतन ॥ चारुचरन
 तलचिन्ह । चारिफलचारिदेतपरराजतनचारिजानिजन ॥
 षजनुकमलदलनिपरअरुनप्रभारंजिततुषारकन ॥ १ ॥
 जंघाजानुआनुउरऊरुकटिकिंकिनपटपीतसुहावन । रुचिर
 नितंवनाभिरोमावलित्रिबलिवलितउपमाककुआवन ॥ २ ॥
 ष्ट गुपदचिन्हपदिकउरसोभितमुकुतमालकुंकुमअनुलेपन ।
 मनहु परसपरमिलिपंकजरवि प्रगथ्यौनिजअनुरागमुजसध
 न ॥ ३ ॥ बाहुविसालललितसायकधनुकरकंकनकेपूरस
 हाधन । विमलदुकूलदलनदामिनिदुतिजग्योपवीतलसत
 अतिपावन ॥ ४ ॥ कंवुश्रीवच्छविसीवचिवुकाद्विजअधरकपो
 लबोलभयमोचन । नासिकसुभगकपापरिपूरनतरुनअरु
 नराजीवविलोचन ॥ ५ ॥ कुटिलभृकुटिवरभालतिलकरु-
 चिशुचिसुंदरतरअवनविभूखन । मनहुंमारिमनसिजपरा

रिदिएससिहिचांपसरमकरअट्टपन ॥ ६ ॥ कुंचितकचकंच-
नकिरीटसिरजटितजोतिमयञ्जविधिमनिगन । तुलसिदाम
रविकुलरविच्छविकविहिनसकतशुकसंभुसहसफन ॥ ७ ॥

॥ ३०८ ॥

टी० । रघुवरदू० । सुंदर तरवामेजे अंकुशादिचारि चिन्ह हैं ते जन
जानि के ललकारि के चारो फल देत हैं वा अंकुश अर्थ कुलिश ध-
र्म कमल कामध्वज मोक्ष देत है नष मानहुं नहीं सोहत है कम
ल दलनि पर प्रातःकाल के सूर्य के प्रभा तें रंजित ओसकण सोह
त है ॥ २ ॥ बलित सहित ॥ ३ ॥ शृगु पद को चिन्ह और धुकधु-
की औ मुक्तामाल और केसर को अनुलेपन सोहत हैं मानो कम
ल औ सूर्य परस्पर मिलि के अपना अनुराग औ घनोसुयश प्रगट
कियो है इहां शृगु पद चिन्ह कमल पदिक सूर्य मुक्तामाल सुयश
कुंकुम को अनुलेपन अनुराग है ॥ ४ ॥ केयूर विजायठ महाधन
बड़े मोल को ॥ ५ ॥ द्विज दांत ॥ ६ ॥ ठेठो भौ हैं औ थोठ भा
ल पर सुंदर तिलक है और कुंडल की रुचि कहिये कांति सुंदर है
मानो शिव ने कामदेव को मारि के ताकों चापशर औ दूषण रहि
त मकर चंद्रमा को दियो है यहां मुख चंद्र है शृकुटी चांप है ति
लक शर है कुंडल मकर है ॥ ७ ॥ ७ ॥ १५ ॥

मू० । राग कान्हरा । देषोरघुपतिच्छविचतुलितअति । जनुतिलोक
मुषमासकेलिबिधिराषीरुचिरअंगअंगनिप्रति ॥ पदुमरागरु
चिह्नुदपदतलध्वजअंकुसकुलिसकमलएहिहरति ॥ रहीआ
निचहुंविधिभगतनकीजनुअनुरागभरीअंतरगति ॥ १ ॥ स
कलसुचिन्हसजनसुषदायकजरघरेषविशेषविराजति । मन-
हुंभानुमंडलहिस्वारतधस्यौसूतविधिसुतविचिचमति ॥ २ ॥
सुभगअंगुष्टअंगुलीअविरलककुक्कअरुननषजोक्तिजगमंगति
अरनपीठउन्नतनतपालकगूढगुलफजंप्राकदलीजति ॥ ३ ॥

कामतनतलसरिसजानुजुगऊरूकारिकरकरभहिविलषावति
 रसनारचितरतनचामीकरपीतवसनकटिकसेसरवसति ॥ ४ ॥
 नाभीसरचिवलीनिसेनिकारोमराजिसेवालछविपावति । उर
 मुकतामनिमालमनोहरमनहुंइंसअवलीउडिआवति ॥ ५ ॥
 हृदयपदिकभृगुचरनचिन्हवरवाङ्गविशालजानुलगिपङ्कच-
 ति । कलकेयूरपूरकंचनमनिपङ्कचीमंजुकंजकरसोहति
 ॥ ६ ॥ सुजवसुरेषसुनषअंगुलिजुतसुंदरपानिसुद्रिकाराजति
 अंगुलीचानकमानवानछवि सुरनिसुषटअसुरनिउरसालति
 ७ ख्यामसरीरसुचंदनचरचितपोतदुकूलअधिकछविछाजति
 नीलजलदपरनिरखिचंद्रिकादुरनि त्यागिदामिनिजनुदमक-
 ति ॥ ८ ॥ जग्योपवीतपुनीतविराजतगूढजंजुबनिपौनअंसतति
 सुगदृष्टउन्नतककाटिकाकंबुकंठसोभामनमानति ॥ ९ ॥ स
 रदसस्यसरसौरुहनिंदकमुखसुखमाककुकहनहिवनति ।
 निरषतहीनयननिनिरूपमसुखरविसुतमदनसोमदुतिनिदर
 ति ॥ १० ॥ अरुनअधरद्विजपांतिअनूपमललितहसनिजनमन
 आकरषतिविद्रुमरचितविमानमध्यमानोसुरमंडलीसुमनचय
 वरषति ॥ ११ ॥ मंजुलचिबुकमनोहरहनुधलुकलकपोलना
 सामनमोहति । पंकजमानविमोचनलोचनचितवनिचारुअ
 ष्टतजलसींचति ॥ १२ ॥ केससुदेसगंभीरबचनवरश्रुतिकुंड
 लडोलनिजियजागति । लखिनवनीलपयोदरसितसुनिरुचि
 रमोरजोरीजननाचति ॥ १३ ॥ भौहैवंकमयंकअंकरुचिकुं
 कुमरेषभालभलिभ्राजति । सिरसिहेमहीरकमानिकमयमु
 कुटप्रभासवभुवनप्रकासति ॥ १४ ॥ बरनतरूपपारनडिंपावत-
 निगमषेषशुकसंकरभारति । तुलसिदासकेहिविधवघानिक
 हैयहमनवचनअगोचरमूरति ॥ १५ ॥ ३०६ ॥

टी० । देखो इ० ॥ १ ॥ लाल मणि कौ कांति सम कोमलतरवा

है और तामे ध्वज अंकुश कुलिश कमल एहि चारि रेखन की सूरति है मानो सो रेखा अन्तर्गति अनुराग भरी से आर्तजिज्ञासु अर्थार्थी ज्ञानी चारो प्रकार के भक्तन की आनि रही ॥ २ ॥ सब श्री रघुनाथ के पटन के सुंदर चिन्ह सुजनन के सुखदायक हैं पर उह रेखा विशेष सोभति है मानो सूर्य मंडल के सँवारते से विचित्र मति विश्वकर्मा ने सूत धख्यो है यहां तरवा को रंग लाल है ताते सूर्य मंडल की उपमा कही ॥ ३ ॥ उन्नत ऊँचा नत पालक सरनागत पालक गूढ गुलफ घुटना टँका है ॥ ४ ॥ करि कर करभिहं बिलखावति हाथी के बच्चा के सुंड को बिलखावति है रसना किंकिनी चामी कर सुवर्ण सरवमति तरकस ॥ ५ ॥ नाभी तड़ाग है तेहि तड़ाग की सीढ़ी चिबली है औ तामेरोमन की पांति सेवार की छवि पावति है ॥ ६ ॥ केयूर पूर कंचन मनि कंचन औ मणि ते पूर कहैं भरा विजायठ है ॥ ७ ॥ सुजव सुरेख सुंदर जब की रेखा है अंगुली चान अंगुस्ताना ॥ ८ ॥ मानो श्याम मेघ पर चंद्रिका देखिके चंचलता त्यागिके दामिनि दमकति है यहां श्याम मेघ श्यामसरीर है चंदन चंद्रिका है दामिनि पीताम्बर है दामिनि के स्थिर होने को यह भाव कि जब चंद्रिका ने अपना मर्याद छोड़ा तब हम क्यों न छोड़ै ॥ ९ ॥ सुंदर यज्ञोपवीत सोभति है हँसुली गुप्त है औ विस्त्रित औ पृष्ठ कांध है औ पीठि की सुंदर गढ़नि है छकाठि का कहैं खेवाड़ी कोज देश में जाको जोता कहत हैं अर्थात् गले को पृष्ठभ्रम सो उन्नत है ॥ १० ॥ रविसुत अश्विनी कुमार सो म चंद्रमा ॥ ११ ॥ ओठ लाल है औ दांतनि की पांति उपमा रहित है औ जन के मन की खींचनिहारी सुंदरि हँसनि है मानो मंगा के विमान के मध्य से देवता की मंडली फूलन के समूह वर्धत हैं इहां विद्रुम ते रचित विमान ओठ है मुर मंडली दांत है फूलन के समूह हँसी है ॥ १२ ॥ त्रिविक कपोलन के नोचे को भागहन

कहै ठोढ़ी पंकज कमल ॥ १३ ॥ मानो नवीन मेघ देखि कै औ
 गर्जनि मुनि कै सुंदर मोर की जोरी नाचति है इहां नवीन मेघ
 केश है गंभीर बचन गर्जनि है कुंडल मोर है डोलनि नाचनि है
 ॥ १४ ॥ भौहै जो टेढ़ी है सो चंद्रमा के चिन्ह सम है भाव वि-
 ना अंक कोमर्यक उत्पाती हेत है ताते भ्र को चन्द्रमा कह्यौ सत
 सई भेविहारी ने लिखा है ॥ नीचनिचाईज्यौतजै तौचितअधिकडे
 रात । ज्यौनिकलंकमर्यकलषि लोगगनेउत्पात ॥ १५ ॥ १६ ॥

मू० । राग स० । आलीरीराघोजूकेरुचिरिहिडोलनाभूलनजैयै ॥ फ
 टिकभीतिसुचारुचहुंदिस्सिमंजुमनिमयपौरि गचकांचलषिम
 ननाचसिषिजनुपांचसरसुफसोरि ॥ तोरनबितानपताकचाम
 रध्वजसुमनफलधोरि प्रतिछांइछबिकविसाषिदैप्रतिसोकहै
 गुरहोरि ॥ १ ॥ मदनजयकेषंभसेरचेषंभसरलविसालपाटीरपा
 टिविचित्रभंवरवलितवेलनलाल डांडीकनककुंमुमतिलकरेषै
 सिमनसिजभालपटुलीपदिकरतिहृदयजनुकलधौतकोमलमा
 ला ॥ २ ॥ उनएसघनघनघोरदुभ्रिसुषदसावनलाग वगपांति
 सुरधनुदमकदाभिनिहरितभूमिविभाग । दादुरमुदितभरेस
 रितसरमहिउमगजनुअनुराग पिकमोरसधुपचकोरचातक
 सोरउपवनवाग ॥ ३ ॥ सोसमोदेषिसोहावनोनवमतसँवा-
 रिसँवारि । गुनरूपजोवनसीवसुंदरिचलीभंडनिभ्रारि । हिं
 डोलसालबिलोकिसबअंचलपसारिपसारि लागीअसीसनरा
 मसौतहिंसुखसमाजुनिहारि ॥ ४ ॥ भूलहिंभुलावहिंओ-
 सरिन्हगावैसुहवगौडमलार मंजीरनूपरबलयधुनिजनुकाम
 करतलतार । अतिमचतअमकनमुषनिविथुरेचिकुरविलुलि-
 तहार । तमतडितउडगनअरुनविधुजनुकरतव्योमविहार ॥
 ५ ॥ हियहरषिवरषिप्रसूननिरषतिविबुधतियटनतूरि । आं-
 मंदजललोचनमुदितमनपुलकतनभरिपूरि । सबकहहिंअवि

चलराजनितकल्याणमंगलभूरि।चिरजिओजानकिनाथजगु
लसीसजीवनमूरि ॥ ६ ॥ ३१० ॥

टी० । आलीइ० । अति सुंदर चहुंओर स्फटिक मणि की भी-
ति है औ सुंदर मणिमै दरवाजा है हे सखी कांच को गच देखि
कै मन नाचत है मानो कांच को गच नहीं है काम की
फांसी है बंदनेवार मंडप प्रताका चमर ध्वज फूल फलनि की घोषा
परिछाहीं प्रति की कृषि कवि की शास्त्री दैकै विंघ प्रति कहति है
कि तुमसे हम गरुहैं ॥ १ ॥ सरल स्रधा पाटीर नीचे के चारो
पाटीको कहत है औपाटी ऊपरके चारो पाटी को कहतहैं भंवरा
गोल गोल धरनमे लटके रहत हैं बलित ग्रंथित बेलना धरन के
नीचे रहत है जामे डांडी लगाई जाती है पटुली पटरा सोपटरा
नहीं है मानो रतिके हृदै की सोनेकी मालाकी पटिक है अर्थात्
जुमावली है भाव पटरा पटिक है औ जामे लटको है सो सोनेकी
माला है अर्थात् डांडी जाको एक बार कुमकुम तिलक को उपमा
कहिआए ॥ २ ॥ सघन घन गंभीर घटा स्टुभ्रि नान्ही नान्ही
बूंदो सोइ० ॥ ३ ॥ नवमत सोरहो प्रंगार डिंडोल सार भूलिवे को
स्थान ॥ ४ ॥ ओसरिन्ह पारिन्ह स्रहाराग औ गौंड मल्लार राग गा
वैं मंजीर पायजेव नूपुर धुंधुंरु बलय कंकन एनके जो धुनिहै सो
धुनिनहीं है मानो काम के हथोरो के ताल हैं अत्यंत जो भूना
मचतहै ताले पखीना को कन मपनपर ह्वै रहेंहैं औ बार विपरि
परेहैं औ माला डोलि रहेहैं बार बिखरे तमहै अंगकी गोरार्इ
तडिता है उडगन कहैं तारागन सो अमकन हैं अरुन कहैं सूर्य
सो हार है औ विबुध कहैं चंद्रमा सो मुष है सो आकाश मे वि-
हार करत हैं ॥ ५ ॥ विबुध तिव के टन तूरिवे को यह भाव कि
जामे नजर न लखौ वा लज्जाको टन सम तोरि के देखें वा स्वर्गमुख
को तन सम तोरें ॥ ६ ॥ ३१० ॥

म० । रागब्रह्मव । कोसलपुरीसुहावनीसरिसरजूकेतीर भूपावली
 मुकुटमनिन्दपतिजहारधुवीर । पुरनरनारिचतुरअतिधरमनि
 पुनरतनीति सहजसुभायसकलउरश्रीरधुवरपदप्रीति । कूंद
 श्रीरामपद जल जातसवकेप्रीतिअविरलपावनी । जोचहृत्तशु
 कसनकादिसंभुविरंचिमुनिमनभावनी ॥ सबहीकेसुंदरमंदि
 राजिरराउरंकनलषिपरे । नाकेसदुर्लभभोगलोगकरहिनम
 नविषयनिहरे ॥ १ ॥ सवरितुसुषप्रदसोपुरीपावसअतिकम
 नीय । निरपतमनहृहरतिहृठिहरितअवनिरमनोय । वीरव
 हृटिविराजहीदादुरधुनिचहुंश्रार । मधुरगरजिघनवरषाहं
 सुनिसुनिबोलतमोर ॥ कूंद । बालतजोआतकमोरकोकिलकी
 रपारावतघने षगविपुल्लपालेबालकनिकूजतउडातसुहावने ।
 बकराजिराजतगगनहरिधनुतडितदिसिदिसिसोहृहीं नभ-
 नगरकीसोभाअतुलअवलोकिसुनिमनमोहृहीं ॥ २ ॥ गृह
 गृहरचेहिंडोलनामहिगचकांचसुठारि । चिचविविचचहृंदि
 सिपरटाफटिकपगार । सरलविसालविराजहिंविद्रुसषंभसु
 जोर । चारुपाटिपटुपुरटकीभरकतमरकतभोर ॥ कूंद । मर
 कतभवरडांढीकनकमनिजटितदुतिजगमगरही पटुलीमन-
 हृंविधिनिपुनतानिजप्रगटकरीराषीसही । बज्जरंगलसतधि
 तानमुकुतादामसहितमनोहरा । नवसुमनमालसुगंधलोभेसं
 जुगुंजतमधुकरा ॥ ३ ॥ भुंडभुंडभूतनचलीगजमामिनिवर
 नारि कुसुंभचौरतनसोहृहींभूषनविविधसंवारि । प्रिकवय-
 नीमृगलेचनीसारदससिसमतुंड । रामसुजससवगावहींसुख
 रसुसारंगुंड ॥ कूंद । सारंगुंडमलारसोरठसुहवसुधरनि
 बाजहीं बज्जभांतितानतरंगसुनिगंधर्वकिन्नरलाजहीं । अति
 मचतछूठतकुटिलकचछविअधिकसुंदरिपावहीं पटउडतभूष
 नपसतहंसिहंसिअपरसषीभूलावहीं ॥ ४ ॥ फिरिफिरिभू

लहिंभामिनोअपनीअपनीवार विबुधविमानथकितभएदेखत
चरितअपार । बरपिसुमनहरषहिंसुरवरनहिहरिगुनगाथ
पुनिपुनिप्रभुहिप्रसंसहींजयजयजानकिनाथ ॥ छंद । जयजा
नकीपतिविसदकीरतिसकललोकमलापहा सुरवधूदेहिअसौ
सजीवज्जरामसुखसंपतिमहा ! पावससमयकहुअवधवरनत
सुनिअघौघनसावहीं रघुवीरकेगुनगननवलनितदासतुलसी
गावहीं ॥ ५ ॥ ३११ ॥

टी० । कोश्लदू० । सरि नदी जल जात कमल अविरल निरंतर
अजिर आंगन नाकेश इंद्र ॥ १ ॥ अविनिष्ट्यी चातक पपीहा को-
किल कोदूल कीर सुआ पारावत कबूतर बकराजि बकपांति हरिधनु
इंद्रधनु ॥ २ ॥ पगार भीति विद्रुम मूंगा पुरट सोना मुकुतादाम
मोतिन्ह कीमाला मधुकर अमर ॥ ३ ॥ शारद शशि समतुंड शर-
त्काल पूर्णिसाकेचंद्र सम मुख गुंड मलार भेद ॥ ४ ॥ विशद उज्वल
॥ ५ ॥ ३११ ॥

मू० । रागअसावरी । सांभसंभयरघुवीरपुरीकीसोभाआजुवनी ल
लितदीपमालिकाविलोकाहिंहितकरिअवधधनी । फाटकभी
तसिधरनिपरराजतिकंचनदीपअनी । जनुअहिनाथमिलन
आयेमनिसोभितसहसफनी ॥ १ ॥ प्रतिमंदिरकलसनपरम्वा
जहिंमनिगनदुतिअपनी । मानहुं विपुलप्रगटिपुरलोहित-
पठइदिएअवनी ॥ २ ॥ घरघरमंगलचारएकरसहरषितरंक
गनी । तुलसिदासकलकीरतिगावतजोकलिमलसंमनी ॥ ३ ॥

॥ ३१२ ॥

टी० ॥ अर्थसे सूचित होत है कि यह पद देवारी को है सांभदू०
इहां स्फटिक की भित्ति सेसहै औ ताकी सिधरै फनि है औदोष
मालिका मनिहै ॥ १ ॥ इहां लोहित कहै मंगल सो कलसन के
मणिहै ॥ २ ॥ रंक दरिद्र गनी तालवर ॥ ३ ॥ ३१२ ॥

मू० । रागगौरी । अवधनगरअतिमुंदरवरसरिताकेतीर नीतिनिपुन
 भरतिअवसहिंधरमधुरंधरधीर । सकलरितुन्हसुषदायकताम
 हुंअधिकवसंत भूपमौलिमनिजहंससदृपतिजानकौकंत ॥ १ ॥
 बनउपवननवकिशलयकुसुमितनानारंग । बोलतमधुरमुख
 रखगपिकवरगुंजतभृंग ॥ २ ॥ समयविचारिछपाविधिहार
 देखिअतिभीर । खेलहुमुदितनारिनरविहंसिकहेउरषुबीर
 ॥ ३ ॥ नगरनारिनरहरषितसवचलेषेलनफागु । देखिराम
 छविअतुलितउभगतउरअनुरागु ॥ ४ ॥ स्यामतमालजलद-
 तननिरमलपीतदुकूल । अरुनकंजदललोचनसदादासअनु-
 कूल ॥ ५ ॥ सिरकिरीटश्रुतिकुंडलतिलकमनोहरभाल । कुं-
 चितकेसकुटिलभुअचितवनिभगतछपाल ॥ ६ ॥ कलकपो-
 लशुकनासिकललितअधरद्विजजोति । अरुनकंजमडंजनुजु
 गपांतिरुचिरगजमोति ॥ ७ ॥ वरदरग्रीवअमितबलवाहुसु
 पीनविसाल । कंकनहारमनोहरउरसिलसतिवनमाल ॥ ८ ॥
 उरसुगुचरनविराजतद्विजप्रियचरितपुनीत । भगतहेतुनर-
 विग्रहसुरवरगुनगोतीत ॥ ९ ॥ उदरचिरेखमनोहरमुंदर
 नाभिमंभीर । हाटकघटितजटितमनिकटितटरटमंजीर १०
 ऊरुजानुपीनसुदुमरकतषंभसमान । नूपुरमुनिमनमोहत-
 करतसुकुमलगान ॥ ११ ॥ अरुनवरनपदपंकजनखदुतिहं
 दुप्रकास । जनकसुताकरपल्लवलालितविपुलविलास ॥ १२ ॥
 कंजकुलिसध्वजअंकुसरेषचरनशुभचारि । जनमनमीनहर
 नकहंसनसीरचीसंवारि ॥ १३ ॥ अंगअंगप्रतिअतुलितसुषमा
 वरनिनजाइ । एहिमुखमगनहोइमनफिरिनहिअनतलो-
 भाइ ॥ १४ ॥ खेलतफागुअवधपतिअनुजसखासवसंग । वर
 पिसुमनसुरनिरखिहिसोभाअमितअनंग ॥ १५ ॥ तालसुदं
 गभांभडफवाजहिंपनवनिसान । सुषरसरससंहनाइन्हमाव

हिसमयसमान ॥ १६ ॥ बीनावेनुमधुरधुनिमुनिकिन्तरगं-
धर्व । निजगुनगरुअहृअतिमानहिंसनतजिगर्व ॥ १७ ॥
निजनिजअटनिमनोहरगानकरहिंपिकवैनि । मनऊं हिमा
लयसिपरनिलसहिंसमरवृगनैनि ॥ १८ ॥ धवलधामतेनि
कसहिंसजहंतहंनारिवरुथ । मानऊं मथतपयोनिधिविपुलअ
पहराजुथ ॥ १९ ॥ किंसुकवरनसुअंसुकसुषमामुषनिसमे
त । जनुविधुनिवहरहकरिदामिनिनिकरनिकेत ॥ २० ॥ कं
कुमसुरसुअवीरनिभरहिचतुरवरनारि । रिनुसुमायसुठिसो
भितदेहिदिविधिविधिगारि ॥ २१ ॥ जोसुखजोगजागजपतप
तीरथतेदूरि । रामकृपातेसोदुसुखअवधगलिनरह्यौपरि ॥
२२ ॥ खेलिवसंतकियौप्रभुमज्जनसरजूनोर । विविधिभांति-
जांचकजनप्राणभूषनचौर ॥ २३ ॥ तुलसिदासतेहिअवसर
मांगीभगतिअनूप । हृदुसुसुकोददीन्हितवकृपादृष्टिरघुभूप
॥ २४ ॥ ३१३ ॥

टी० । अवध ६० । वर सरिता सरजू ॥ १ ॥ नवकिसलय नवी
न पल्लव कुसमित पुष्पित ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ पौत दुकूल पोतांवर ॥ ५ ॥
श्रुति कान कंचित टेढा ॥ ६ ॥ द्विज दांत इहां मुख कोस अरुन
कमल है औ जुग दंत पंक्ति गजमोती है ॥ ७ ॥ बरदर प्रिय अ
ठ संघ सम कंड ॥ ८ ॥ द्विज प्रिय चरित पुनीत श्रीराम द्विजन के
प्रिय है औ चरित पुनीत है वाद्वि जन को प्रिय है चरित पुनीत
जिनका ॥ ९ ॥ हाटक सोना इहां संजौर करि किंकिनी लेना पावजेव
नहीं ॥ १० ॥ ११ ॥ इंदु पंद्रमा ॥ १२ ॥ इहां रेखै बंसौ है वा
एक अंकुस रेखा को बंसौ कहा ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ घनव डोल
निसान नगारा ॥ १६ ॥ हरुअ हलुका ॥ १७ ॥ अटनि अटारिन
अमर वृग नवन देव प्रती ॥ १८ ॥ इहां धवल धांसु और सागर
औ निकसनेवाली नारि अपहरा समूह है ॥ १९ ॥ किंसुक वरद

कहैं लाल बरन के सुंदर अंसुक कहैं जो बख तेहि समेत परम
 सोभा सहित जे मुपैं हैं ते मानो विधुनिवह कहैं चंद्रमा के
 समूह हैं औ दामिन निकर अरुन बख के घुघुटैं हैं तिनमें निके-
 तकहैं गृह करि रहे हैं ॥ २० ॥ कुंकुम कुंकुमा सुरस अवीर घो
 रा भया अवीर सुठि सुंदर ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ गोसांई जा कहत
 हैं जे तेहि अवसर मे अनूप भक्ति मागी तेहि कों बृद्ध मुसकाय के
 तब कहैं तेहि काल में छपा दृष्टि करिके रघु भूपक हैं रघु कुलके
 राजा दिए बारघुकहैं जीव तिन के भूप जे श्री राम ते दिए वा गो-
 सांई जी ध्यान मे यह पद बनाए वा काल मे प्रत्यक्ष रघुनाथ बरदान
 दिए सो स्पष्ट अंत के तुक मे लिषे ॥ २४ ॥

मू० रागवसन्त । घेलतवसन्तराजाधिराज । देषतनभकौतुकसुर
 समाज ॥ सोहैंसपाअनुजरघुनाथसाथ । भोलिन्हअवीर
 पिचकारिहाथ ॥ बाजहिंभृदंगडफतालबेनु ॥ छिरकहिंसुगं
 धभरैमलयरेनु ॥ १ ॥ उतजवतिजुथजानकीसंग ॥ पहिरे
 पटभूपनसरसरंग ॥ लियेछरीवेतसोधेविभाग । चांचरिभू
 मकगावहिंसरसराग ॥ २ ॥ नूपुरकिंकिनिधुनिअतिसुहाई
 ललनागनजबजेहिधरहिधाइ ॥ लोचनआंजहिंफगुवामना
 इ । छड़ाहिनचाइहाहाकराइ ॥ ३ ॥ चट्टिपरनिविदूषक
 स्वांगसाजि । करैकूटनिपटगईलाजभाजि ॥ नरनारिपरस
 परगारिदेत । सुनिहंसंतरामभाइन्हसमेत ॥ ४ ॥ बरषतप्र
 मूनवरबिबुधष्टन्द । जयजयदिनकारकुलकुमुदचंद ॥ ब्रह्मादि
 प्रसंसतअवधवास । गावतकलकीरतितुलसीदास ॥ ५ ॥

॥ ३१४ ॥

टी० । घेलतइ० । नभ आकाश मलयरेनु चंदनरज ॥ १ ॥ २ ॥
 लोचन आजहिं अंजन लगाइ देइ ॥ ३ ॥ पर गदहा विदूषक भांड
 ॥ ४ ॥ बिबुध देवता ॥ ५ ॥ ३१४ ॥

मू० । रागकेदारा । देषतअवधकोआनंद हरषिवरषतसुमनदिन
दिनदेवतनिकोट्टंद । नगररचनासिधनकोविधितकतवज्जवि
धिबंद निपटलागतअगमज्यौंजलचरहिंगमनसुछंद ॥ १ ॥
मुदितपुरलोगनिसराहतनिरषिसुषमाकंद । जिन्हकेसुअलि
चषपिअतराममुषारबिंदमरंद ॥ २ ॥ मध्यव्योमविलंबिचल
तदिनेसउड़गनचंद । रामपुरीविलोकितुलसीमिटतसबदुख
इंद ॥ ३ ॥ ३१५ ॥

टी० । देषतइ० । नगर रचना सीपवे को बंद कहैं प्रकार बज्ज
विधिते विधाता तकत हैं सुछंद खेच्छा ॥ १ ॥ सुखमा कंद परम
सोभा के मूल सुअलि चख नेच रूप सुंदर भ्रमर मरंद रस ॥ २ ॥
व्योम आकाश दिनेश सूर्य उड़गन तारागन ॥ ३ ॥

म० सौरठ । पालतराजयौराजारामभरमधुरीन । सावधानसुजान
सबदिनरहतनथलयलीन ॥ खानषगजतिन्याउदेष्यौआपुवै
ठिप्रवीन । नीचहतिमहिदेवबालककियौसीचविहीन ॥१॥
भरतज्यौंअनुकूलजगनिरुपाधिनेहनवीन । सकलचाहतराम
हीज्यौंजलअगाधहिमीन ॥ २ ॥ गाइराजसमाजजाचतदा
सतुलसीदीन । लेहुनिजकरदेहुनिजपदप्रेमपावनपीन ॥ ३ ॥
॥ ३१६ ॥

टी० पालतइ० । नयनीति जती ने खान को मारा रहा सो विने
पत्रि का मे स्पष्ट है खान केहेतु कियो पुरबाहर जती गयंद चढाई
अर्थात् शिव निर्माल्य षाडवे ते खान भयोरह्यो सोई अधिकार जती
को दिए काक औ उलूक को विवाद रहा उलूक कहत रहा किई
अखान हमारा है औ काक कहत रहा कि हमारा है सो पहिले
ते रहनेवाला उलूक कौ जानिके जिताए औ सूद्र तप करत रहा
ताते ब्राह्मण को बालक मरिगयो ताते तेहिसूद्र को मारि के ब्रा
ह्मणके बालक कौ जिआए ॥ १ ॥ जैसे भरत जी अनुकूल है तैसे

निरुपाधि नह नवीन पूर्वक जगत अनुकूल है ॥ २ ॥ ३ ॥ ३१६ ॥
 मू० । संकठसुकृतकोसोचतजानिजियरघुराउ । सहसद्वादशपंचस
 तमैककुक्क है अत्र आउ ॥ भोगपुनिपितुआपुकोसोउकियेवनै-
 बनाउ । परिहरेविनुजानकीनहिऔरअनवउपाउ ॥ १ ॥
 पालिवेअसिधारव्रतप्रियप्रेमपालसुभाउ । होइहृदितकेहिभां
 तिनितसुविचारुनहिचितचाउ ॥ २ ॥ निपटअसमंजसहुंवि
 लसतिमुषमनोहरताउ । परमधीरधुगीनहृदयकिहरषविस
 मयकाउ ॥ ३ ॥ अनुजसेवकसचिवहैंसबसुमतिसाधुसपाउ
 जानकोउनजानकीविनुअगमअलपलखाउ ॥ ४ ॥ रामजो
 गवतभीयमनपियमनहिप्रानप्रियाउ । परमपावनप्रेमपरमि
 तसमुभितुलसीगाउ ॥ ५ ॥ ३१७ ॥

टी० । संकठइ० । सहसद्वादश पंचशत बारह हजार पांचसै वर्ष
 मे ककुक्क अत्र आय है यद्यपि बाल्मीकि जी के मत से इत्यार है ह
 जार वर्ष आवत है इहां गोसाईं जी वह कल्प से भित्त के लिखे
 ताते संका नहीं करना ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३१७ ॥

मू० । रामविचारिकैराखीठीकदैनमाहि । लोकवेदसनेहपालत
 पलकपालहिजाहिं ॥ प्रियतमापतिदेवताजेहिरमासिहाहिं
 गुर्विनीसुकुमारिसियतियमनिसमुभिसकुचाहिं ॥ १ ॥ मे-
 रेहीसुखसुखीसुखअपनोसोसपनहूंनाहिं । गेहनीगुनगेह
 नीगुनसुमिरिसोचसमाहिं ॥ २ ॥ रामसीयसनेहवरनतअ-
 गमसुकविसकाहिं । रामसीयरहस्यतुलसीकहतरामकृपाहिं
 ॥ ३ ॥ ३१८ ॥

टी० । रामइ० ॥ १ ॥ गेहनी श्री जानकी जू गुनगेहनी गुनके
 गृह ॥ २ ॥ राम कृपाहिं राम कृपाकरि तुलसी श्रीराम रहस्य को
 कहत हैं ॥ ३ ॥ ३१८ ॥

मू० । चरचाचरनिचोचरीजाविमनिरघुराइ । दूतमुखसुनिलो-

कधुनिघरघरनिबूझीआइ ॥ प्रिआनिजअभिलापरुचिकह
कहतिसियसकुचाइ । तीयतनयसमेतापसपूजिहौवनजाइ
॥ १ ॥ जानिकरुनासिंधुभावीविवससकलसहाइ । धीरधरि
रघुवीरभोरहिंलिएलषनबोलाइ ॥ २ ॥ ताततुरतहिसाजि
ख्यंदनमीयलेऊचढाइ । बालमीकमुनीसआअमआइअऊप
हुंचाइ ॥ ३ ॥ भलेहिनाथसुहायमाथेराषिरामरजाइ । च
लेतुलसीपालिसेवकधर्मअवधिअघाइ ॥ ४ ॥ ३१६ ॥

टी० । चरचाइ० । चानि सों दूतन सों जानि मनिज्ञानी सिरो
मनि अर्थात् ब्रह्मादि जे ज्ञानी तिनके सिरोमनि ॥ १ ॥ २ ॥ ख्यं-
दन रथ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ३१६ ॥

मू० । आएलषनलैसौपीसियमुनीसहिआनि । नाइसिररहेपाइ
अभिसिषजोरिषंकजपानि ॥ बालमीकविलोकिव्याकुललखन
गरतमलानि । सर्वविदबूझतनविधिकीवामतापहिचानि ॥
१ ॥ जानिजिअनुमानहोसिअसहसविधिसनमानि । रा
मसदगुनधामपरमितिभईकछुकमलानि ॥ २ ॥ दोनबंधुद-
यालदेवरदेषिअतिअकुलानि । कहतिवचनउदासतुलसीदा
सचिमुअनरानि ॥ ३ ॥ ३२० ॥

टी० । आएइ० । सर्वविद सर्वज्ञ ॥ १ ॥ श्रीराम सदगुन धाम
के परमित कहैं मर्यादा हैं पर यह क्या किया यह विचारि के बाल
मीक जी की बुद्धि कुछ मलान भई ॥ २ ॥ ३ ॥ ३२० ॥

मू० । तौलौवल्लिआपुहीकीबीबिनयसमुभिसुधारि । जौलौहोसि
षिलेउवनसिषिरीतिवसिदिनचारि ॥ तापसीकहिक्रहापठव
तिष्टप्रतिकोमनुहारि । बळरितेहिबिधिआइकहिहैसाधुको
उहितकारि ॥ १ ॥ लषनलालऊपालनिपटहिडारिबीनवि-
आरि । पालिबीसवतपसिनिज्यैराजधरमविचारि ॥ २ ॥
सुनतसीतावचनमोचतसकललोचनवारि । बालमीकिनसके

तुलसीसोसनेहसंभारि ॥ ३ ॥ ३२१ ॥

टी० । सु० ॥ ३२१ ॥

मू० । सुनिव्याकुलभयेउतरुककुक्कन्नौनजाइ । जानिजियविधि
वासदीन्हीमोहिसरूपसजाइ कहतहियमेरीकठिनईलधिग
इप्रीतिलजाइ । आजुऔसरअैसेहूँ जौनचलेप्रानवजाइ ॥१॥
इतहिसीयमनेहसंकटउतहिरामरजाइ । मौनहीगहिच
रनगौनेसिषसुआसिखपाइ ॥ २ ॥ प्रेमनिधिपितुकोकछ्यौ
मैपरुषवचनअघाइ । पापतेहिपरितापतुलसीउचितसहेसि
राइ ॥ ३ ॥ ३२२ ॥

टी० । सु० ॥ ३२२ ॥

मू० । गौनेमौनहीबारहिवारपरिपरिपाय । जातजनुरथरचीक
रलछिमनमगनपछिताइ ॥ असनविनुवनवरमविनुरनवच्यौ
कठिनकुघाय । दुसहसांसतिसहनकोहनुमानज्यायौजाय
॥३॥ हेतुहोसियहरनकोतवअवहुंभयौसहाय । होतहठिमो
हिदाहिनोदिनदैवदाहनदाय ॥ २ ॥ तज्यौतनसंग्रामजेहि
लगिगीधजसीजटाय । ताहिहोपहुंचाइकाननचल्यौअवधसु
भाय ॥ ३ ॥ घोरहृदयकठोरकरतवसुज्यौहोविधिवाय । दास
तुलसीजानिराथ्यौऊपानिधिरघुराइ ॥ ४ ॥ ३२३ ॥

टी० । गौनेइ० । लछिमन जी पञ्चात्ताप मे मगन है मानो ल-
छिमन जी नही जात है करते रची भई अर्थात् प्रतिमा सो जातहै
कोऊ रचीकर मृतक को कहत अब लछिमन जी का पछिताव क-
हत है कि भोजन बिना वन मे वचेउं औ वषतर बिनारण मे वचे
उं कठिन कुघाउ का अन्वय दुसरे तुकसे है ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥
॥ ३२३ ॥

मू० । पुचिनसोचिवैआईहोजनकगृहजियजानि । कालिहीकल्या
नकौतुककुशलतुबकल्यानि ॥ राजरिषिपितुससुरप्रभुंपतित्

सुमंगलघानि । असेह्लथलवामतावडिबामविधिकीधानि ॥ १ ॥
 बोलिसुनिकन्यासिषार्इप्रीतिगतिपडिचानि । आलसिन्हकीदे
 वसरिसीयसेदूअज्जसनमानि ॥ २ ॥ न्हाइप्रातडिपूजिवोवट
 विटपअभिसतदानि । सुवनलाज्जउक्खाज्जदिनदिनदेविअनहि
 तहानि ॥ ३ ॥ पायतापविमोचनीकडिकथासरसपुरानि ।
 बालमीकप्रबोधतुलसीगईगरुअगलानि ४ ॥ ३२४ ॥

टी० पुचिइ० । राजरिषि तुन्हारे पिता औ समुर है प्रभु पति है
 तूं सुमंगल घानि है ॥ १ ॥ रिषि श्री जानकी कों आपनि कन्या
 बोलि प्रीति कौ गति पडिचानि के सिषार्इ कि हे सिय आलसिन्ह
 की देवता जो गंगा है तिन्ह को सनमान करिके सेदूअज्ज ॥ २ ॥
 ३ ॥ ४ ॥ ३२४ ॥

मू० । जवतेजानकीरडिहृचिरआश्रमआइ । गगनजलथलविमल
 तवतेसकलमंगलदाइ ॥ निरसभूरुइसरसफूलतफलतअति
 अधिकाइ । कंदमूलअनेकअंकुरखादमुधालजाइ ॥ १ ॥ म
 लयमरुतमरालमधुकरभोरपिकसमुदाइ । मुदितमनमृगवि
 हंगविहरतविषमचयरुचिहाइ ॥ २ ॥ रइतरविअनकूलदि
 नससिरजनिसजनिसुहाइ । सीयसुनिसादरसराहतिसपिन
 भलोमनाइ ॥ ३ ॥ मोदविपिनविनोदचितवतलेतचितहिँचु
 राइ । रामविनुसीयसुपदवनतुलसीकहैकिमिगाइ ॥ ४ ॥ ३२५ ॥

टी० जवतेइ० । निरसभूरुइ शुष्क वृक्ष ॥ १ ॥ मलय मरुत द
 क्षिण पवन तेहि से मुदित मन मृग पक्षी विषम बैर विहाय
 विहरत है ॥ २ ॥ रइतर विअनकूल दिन उष्यता आदिसे लेश
 नही देत है ॥ ३ ॥ ४ ॥ यहि प्रकरणकी व्याख्या स्पष्ट करिनी
 लिषा बाल्मीकीय रामायण औ पद्मपुराण मे स्पष्ट है ॥ ३२५ ॥

मू० । सुभदिनसुभघरीनीकोनषतलगनसुहाइ । पूतजाएजानकीद्वै
 मुनिवधूउठिगाइ ॥ हरषिवरषतसुमनसुरगइगहेबधाएवजा

इ । भुञ्जनकाननआश्रमनिरहेमोदमंगलकाइ ॥ १ ॥ तेहि
निमातहेसत्रुसूदनरहेविधिवसआइ । मांगिसुनिसोविदाग
वनेभोरसोसुषपाइ ॥ २ ॥ मातुमौसीवहिनहूतेमासुतेअधि
काइ । करहितापसतीयतनयासीयहितचितलाइ ॥ ३ ॥
कियेविधिव्यौहारमुनिवरविप्रष्टंदबोलाइ । कहतसवरिपि
छपाकोफलभयौआजुअघाइ ॥ ४ ॥ मुरुपरिसिसुषसुतनिको
सियसुषदमकलसहाइ । शूलरामसनेहकोतुलसीनजियते
जाइ ॥ ५ ॥ ३२ई ॥

टी० सुभइ० । पद सुगम कथा स्पष्ट श्री मद्रामायणमे ॥ ३२ई ॥
मू० । मुनिवरकरिछठीकीन्हीवारहेकीरीति । वनवसनपहिराइता
पमतोषिपोषेप्रीति ॥ नामकरणसुअन्नप्रासनवेदवांधीनीति
समैसवरिपिराजकरतममाजसाजिसमीति ॥ १ ॥ बाललाल
हिँकहिँकरिहैराजुसवजगुजीति । रामसियसुतगुरअनुग्र
हउचितअचलप्रतीति ॥ २ ॥ निरुषिकालविनोदतुलसीजा-
तवससरवीति । प्रिअचरितसियचितचितेरोलिषतनितहितभी
ति ॥ ३ ॥ ३२७ ॥

टी० । मुनिइ० । समीति सभा वा समिच ॥ १ ॥ २ ॥ हित भी-
ति प्रीति रूप भीति पर ॥ ३ ॥ ३२७ ॥

मू० । बालकसीयकेविहरतमुदितमनदोउभाइ । नामलवकुशराम
सिअअनुहरतसुंदरताइ ॥ देतमुनिमुनिमिसुखिलौनालेतधर
तदुराइ । पेलपेलतदुपसिमुन्हकेबालष्टंदबोलाइ ॥ १ ॥
भूपभूपनवसनवाहनैराजसाजसजाइ । बरमचरमउपास
धनुतुलसेतवनाइ ॥ २ ॥ दुखीसियपिअविरहतुलसीसुषीसु
तसुषपाइ । अंचपयउफनातसीचतसखिलज्यौसकुचाइ ॥
॥ ३ ॥ ३२८ ॥

टी० । बालइ० ॥ १ ॥ बरम वषतर चरम ढाल कपान तरवार तू

न तरकस ॥ २ ॥ ३ ॥ ३२८ ॥

मू० । केकडूजौलौजिअतरही । तौलौवातमातुसोंमुहभरिभरतन
भूलिकही ॥ मानीरामअधिकजननीतेंजननिङ्गसनगही ।
सीयलघनरिपुद्वनरामरुखलघिसवकीनिवही ॥ १ ॥ लोक
बदमरजाददोषगुनगतिचितचघनचही । तुलसीभरतसमुभि
सुनिराषीरामसनेहसही ॥ २ ॥ ३२९ ॥

टी० बालइ० । गस गांस ॥ १ ॥ चष नेच इहां सिंहावलोकन
रीति से पिछिली कथा कहे ॥ ३२९ ॥

मू० रागरामकली । रघुनाथतुन्हारेचरितमनोहरगावतसकलअव
धवासी । अतिउदारअवतारमनुजवपुधरेब्रह्मअजअविनासी ॥
प्रथमताडिकाइतिसुवाङ्गवधिमघराष्यौद्विजहितकारी । दे-
षिदुषीअतिसिलाआपवसरघुपतिविप्रनारितारि ॥ १ ॥ सबभू
पनिकोगरबह्ख्यौहरिभंज्यौसंभुचापभारी । जनकसुतासमे
तआवतगृहपरसरामअतिमदहारि ॥ २ ॥ तातवचनतजिरा
जकाजसुरचिचकूटमुनिबेकधख्यौ । एकनयनकीन्होसुरपति
सुतवधिविराधरिषिशोकहख्यौ ॥ ३ ॥ पंचवटोपावनराघौक
रिसूपनषाकुरुपकीन्ही । परदूषनसंघारकपटमृगगीधराजक
ङ्गतिदीन्ही ॥ ४ ॥ इतिकबंधसुग्रीवसषाकरिवेधेतालबालि
माख्यौ । बानररीछसहायअनुजसँगसिंधुवांधिजसुविसताख्यौ
५ ॥ सकुलपुचदलसहितदसाननमारिअसुरसुरदुषटाख्यौ ।
परमसाधुजियजानिविभीषनलंकापुरीतिलकसाख्यौ ॥ ६ ॥
सीताअरुलछिमनसंगलीन्हेऔरौजितेदासआए । नगरनिक
टबिमानआयौसबनरनारीदेपनधाए ॥ ७ ॥ सिवबिरंचिशुक
नारदादिमुनिअस्तुतिकरतबिमलबानी । चौदहभुअनचराच
रहरषितआएरामराजधानी ॥ ८ ॥ मिलेभरतजननीगुरप
रिजनचाइतपरमअनंदभरे । दुसहवियोगजनितदारुनदुष

रामचरनदेषतविसरे ॥ ८ ॥ वेदपुरानविचारलगनशुभमहा
 राजअभिषेककियौ । तुलसिदासजियजानिसुअवसरुर्भाक्तादा
 नतवमागिलियौ ॥ १० ॥ ३३० ॥ इति श्री रामगीतावल्यां
 उत्तर काण्डः समाप्तः ।

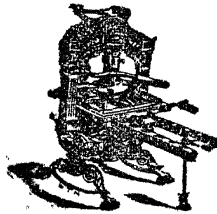
टी० रघुनाथई० । इहां सब राम चरित्र क्रमसे लिखे पद पदसु
 गम ॥ ३३० ॥

दोहा ।

श्रीलछिमनरघुनाथनिधि रामसषेपदनाथ ।

हरिहरसममतिमंदहू टोकालईवनाथ ॥

इति श्री रामगीतावलीप्रकाशिका टोकायां श्री सीताराम कृपा पात्र
 श्री सीतारामोयहरिहरप्रसादकृतौ उत्तर काण्डः समाप्तः ।



शुद्ध अशुद्ध पत्र ।

—०००—

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१	वालांदगंवरं	वालंदिगंवरं
१	१७	हरषंत	हरषवंत
४	४	रहां	रहीं
४	४	हरहीं	हरदी
५	३	गहहे	गहगहे
५	६	उठै	उठे
५	१४	जोवज्ज	जीवज्ज
६	२	लाग	लोग
६	१५	महेली	सहेली
७	७	बो	को
७	१६	अहिवती	अहिवाती
७	१७	गुणा	गुणी
८	४	तसा	तासा
९	११	पतना	पुतना
९	१६	एश्वर्य	ऐश्वर्य
१०	१०	बरद	विरद
१०	१७	विखद	विषाद
१०	१६	सआसिन	सुआसन
११	२६	झेरा	झेषा
१२	३	जन्यत्मा	जन्यात्मा

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	५	मजत	सजत
१३	१८	सरअ	सरस
१५	५	रात्री	रात्रि
१५	११	मणी	मणि
१५	२४	सतुहन	सत्रुहन
१५	२६	उसव	उत्सव
१६	१२	लखाए	लिखाए
१७	१	भई	भईं
१७	३	को है	को हैं
१७	६	जहि	जोहि
१७	१८	पर	पुर
१७	२३	के	०
१८	१६	इंद्रनी	इन्द्रानी
१८	१८	फल	फल
१८	२१	नरदे	नरदेव
१८	२५	सूतका	सूतिका
१८	२६	कुशर्वकलसमाप्ति	कुशलपूर्वकसमाप्तिभई
		पूईभ	
२०	७	विवि	विधि
२०	१५	सोरठा	सोरठ
२०	२२	लट	लटू
२०	२५	कठला	कठुला
२०	२५	बद	बटू
२०	२६	भिंगुरिया	भिंगुलिया
२१	५	बुभै	बुभाय

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१	१०	सुसंत	सुसंच
२१	१६	पुष	सुष
२२	१३	तलक	तिलक
२२	२२	चारुगा	चारुगाय
२२	२४	दिये	दिये
२३	१४	लिए हैं	लए हैं
२३	२१	आसिवाद दिए	आसिवाद दए
२४	३	सेना	सेना
२४	१०	एसै	ऐसे
२४	१७	नासिंह	नरसिंह
२४	१७	मय	भय
२४	२५	लगे	लागे
२५	१३	बध	बधू
२५	२३	पजि	पूजि
२६	१३	भीतरभवनबोला- योजिदियो	भीतरभवनबुलायो
२६	१३	पायपषारिअआसन	पायपषारिपूजिदियो आसनअ
२६	१४	चारुचरन	चरनचारु
३१	२४	पर्यायश	पर्याय हैं
३२	२६	घोड़कशला	घोड़कशला
३४	२३	परणी	पूरणी
३७	२६	द्यति	द्युति
३८	६	वह	वा
३८	१०	चिता	न्विता

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३८	३	अंकस	अंकश
३८	२२	यवोंगुष्टे	यवोंगुष्टे
३८	२५	आ	श्री
३८	२६	जम्ब	जम्बू
४०	२	मध्यागः	मध्यगः
४०	४	धनुस्तूणो	धनुस्तूणो
४०	४	चतुर्विंशति	चतुर्विंशति
४०	१४	उच्यते	मुच्यते
४०	१७	सरथ	सरथू
४०	१८	रक्तो	रक्तः
४०	१८	माही	मही
४१	५	संदर	सुंदर
४१	२१	गासाई	गोसाई
४१	२२	रनुनाथ	रघुनाथ
४२	६	अनुभवनि	अनुभवति
४३	६	ठि	उठि
४३	१४	लुप्तोत्पेक्षा	लुप्तोत्पेक्षा
४४	२	हरि	हर
४५	१६	कि	०
४६	२०	डरप्रति	डरप्रत
४७	११	पैजन	पैजनी
४७	१८	ववचन	वचन
४८	१६	युअ	युक्त
५०	८	चूद्र	चंद्र
५१	७	तेष	तोष

पत्र	पंक्ति	शुद्ध	शुद्ध
५१	१	घरे	घारे
५२	७	वैटभारे	कैटभारे
५३	७	प्रत्यसा	प्रत्यासा
५३	८	॥	वा
५३	२६	असन	आसन
५४	२२	अवधि	अवध
५५	२	सुभप्रमंग	सुभगसंग
५५	५	सोभदन	सोभादान
५५	७	सकल	सकल
५६	२३	ठेकि	ठोकि
५७	३	वमन	बमन
५७	३	सष	सषा
६०	८	विष्वामित्र	विश्वामित्र
६१	११	मरति	मूर्ति
६२	३	जेति	जोति
६२	१०	कसे है	कसे हैं
६२	१४	नषभिष	नषसिष
६३	५	छ	छवि
६३	१५	पछो	पछी
६३	१४	षवन	षरिकन
६३	१७	कमन	कमल
६४	२	बचविच	विचविच
६४	३	ष्यातदती	ष्यालदली
६४	६	वामी	वासी
६४	१७	अंमन	अंसन

पत्र	पंक्ति		
६४	२४	दल	दली
६४	२६	है	हैं
६५	१२	लाभकोलटि	लाभकौलूटि
६५	१६	सम	सम
६६	२	टेकिकै	टेषिकै
६६	५	सेना	सोना
६६	११	मो	मोर
६६	२६	पाषन	पाषान
६७	३	च्छेदत्यादि	गच्छतस्तस्य रामस्य पा दस्यर्शात्महाशिलाका- चिघोषा भवत्सघो वि- स्मितं मुनिरब्रवीतशापि दग्धा पुराभर्त्तारामश- क्रापराधतः अहल्याख्या शिलाजज्ञे शतलिङ्गोद्य तः स्वराट् त्वदंघ्रिस्पर्श नातस्यैशापान्तं प्राहगो तमः तस्मादियंते पादाज स्यर्शात्श्रुद्वाभवत्प्रभो
६७	७	मरति	मूरति
६७	८	मीई	सोई
६७	१३	हरो	हरी
६७	१६	नहिहै	नरहिहै
६७	१७	तोनि	तोनि
६७	२३	॥	रा

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६७	२५	प्र	प्रभु
६६	१२	नत्र	नेत्र
७०	१	कन	कान
७०	२	ो	रो
७०	८	तड़िका	ताड़िका
७०	१४	नथ	नाथ
७०	१६	होयपिधन	हि केय पिधान
७०	१७	विदेहत	विदेहता
७०	१८	पौर पौरि	पैरि पैरि
७१	६	स्वरथ	स्वारथ
७१	७	तते	ताते
७१	८	र	०
७२	१७	मनदरति	मदनरितु
७४	२६	ताडक	ताडाका
७७	१६	अर्थत्	अर्थात्
७८	१	पट	पद
८०	१०	सगई	सागाई
८०	३	नीह	नहीं
८०	१४	मथे	माथे
८१	६	कमकल	कमल
८४	११	सुंदरतलभूमिजो	सुंदरजोभूमितल
८६	२	जनकौ	जनकको
८६	१७	आत	अर्थात्
८७	१७	तुल	तुलसी
८८	१६	अग	अंग

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८८	२१	टोड	टोड
८९	४	देषि दे २	देषि देषिरी
९१	२३	श्रीरामज	श्रीरामजू
९२	१	भप	भूप
९२	२६	किकि	कि
९६	८	म्नाजत	म्नाजत
९६	८	मो	सो
९६	१७	पोवो	पावो
९६	१७	मलि	मेलि
९६	१८	कींकर	किंकर
९७	२५	प्रल	प्रलय
९८	१३	साङ्गिमुष	साङ्गिमुषै
९८	२३	मेव	मेव
१०१	१३	तुली	तुलसी
१०१	१९	राड	राड
१०१	२३	भीहै	भौहै
१०२	५	मिअान	मिअानसे
१०२	२६	दुर्वाकमधक	दुर्वाकमधूक
१०३	७	ससखि	सखि
१०३	२४	जावन	जीवन
११३	११	षम	षेम
११४	२६	जा	जो
११५	३	तडागम	तडागमे
११५	५	जोगै	जोरी
११५	६	तगोरी	तनगोरी

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११८	१४	वौचि	वोचि
११८	२४	चिरं	चिर
१२०	६	संवमुअन	सवसुअन
१२२	१	सम्बत्	सम्मत
१२२	२३	से	सो
१२४	२१	सो	जो
१२४	२४	।	प
१२५	५	जहि	जवहि
१२५	१२	वनने	वनके
१२५	१५	जारे	जोरे
१२५	१८	निहारे	निहोरे
१२७	८	टिआ	प्रिया
१२७	२५	कनकक	कनक
१२८	११	समह	समह
१३०	१	पोपोही	पोही
१३१	१	हां	हौं
१३१	६	पारथ	पाथर
१३२	१	बधटी	बधूटी
१३२	१४	मोहीह	मोहीहै
१३३	१७	तन	तून
१३३	२४	वैय	वय
१३४	२०	सलोनीनी	सलोनी
१३५	१	अग	अगजग
१३५	१४	हैं	कहैं
१३५	२५	जन	जनि

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८८	२१	टोउ	टोऊ
८९	४	देषि दे २	देषि देषिरी
९१	२३	श्रीरामज	श्रीरामजू
९२	१	भप	भूप
९२	२६	किकि	कि
९६	८	म्नाजत	म्नाजत
९६	८	मो	सो
९६	१७	पोवो	पावो
९६	१७	मलि	मेलि
९६	१८	कींकर	किंकर
९७	२५	प्रल	प्रलय
९८	१३	साईंमुष	साईंमुषै
९८	२३	मेव	मेव
१०१	१३	तुली	तुलसी
१०१	१९	राउ	राड
१०१	२३	भीहै	भौहै
१०२	५	मिआन	मिआनसे
१०२	२६	दुर्वाकमधक	दुर्वाकमधूक
१०३	७	ससखि	सखि
१०३	२४	जावन	जीवन
११३	११	षम	षेम
११४	२६	जा	जो
११५	३	तडागम	तडागमे
११५	५	जोगै	जोरी
११५	६	तगोरी	तनगोरी

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११८	१४	बोचि	बोचि
११८	२४	चिरं	चिर
१२०	६	संवसुअन	सवसुअन
१२२	१	सम्बत्	सम्मत
१२२	२३	से	सो
१२४	२१	सो	जो
१२४	२४		प
१२५	५	जहि	जवहि
१२५	१२	बनने	बनके
१२५	१५	जारे	जोरे
१२५	१६	निहारे	निहोरे
१२७	८	टिआ	प्रिया
१२७	२५	कनकक	कनक
१२८	११	समह	समह
१३०	१	पोपोही	पोही
१३१	१	हां	हौं
१३१	६	पारथ	पाथर
१३२	१	बधुटी	बधूटी
१३२	१४	मोहीह	मोहीहै
१३३	१७	तन	तून
१३३	२४	वैय	वय
१३४	२०	सलोनीनी	सलोनी
१३५	१	अग	अगजग
१३५	१४	हैं	कहैं
१३५	२५	जन	जनि

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३६	६	सहन	सोहति
१३६	१३	नघन	नयन
१३७	११	भरि	भूरि
१३८	६	फलि	फूलि
१३८	१०	आ	औ
१३८	१२	रामदि	रामादि
१४०	७	करिकेके	करिके
१४१	६	लीनो	लोनी
१४१	२३	तुली	तुलसी
१४३	६	समत	समेत
१४३	२१	गंजत	गुंजत
१४३	२२	सरद	सरद
१४४	५	संत	संतत
१४४	१०	कहौला	कहौं कला
१४५	१४	बालत	बोलत
१४५	२४	सांवर	सावर
१४५	२६	जरचर	जलचर
१४७	१०	मकाम	मनकाम
१४८	१	तरुनतरुनतरुनी	तरुन तरुनी
१४८	२	करनिकह	करनिकर
१४८	२१	आनद	आनंद
१४८	२२	दूससर	दूसर
१४८	२६	कनिकर	करनिकर
१५०	२०	परि	पति
१५१	१	दवय	दवाय

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५२	१४	साता	सीता
१५३	१	उरका	उरको
१५३	१०	स्यामात	स्यामता
१५५	२	सोकत	सोकन
१५५	१६	प्रीतिकी	प्रीतिकी
१५६	६	मनोधता	मनोरघतो
१५६	१८	वरुणी	वारुणी
१५८	२६	ककुरे	ककू
१६०	१३	नडाग	तडाग
१६०	३१	तुलसी	तुलसि
१६०	२३	पार	पीर
१६०	२४	बज्ज	बाज्ज
१६१	१८	तुलसी	तुलसि
१६२	१७	विवक	विवेक
१६३	६	त्याग	त्यागि
१६७	२	महि	मनहिं
१६७	२४	कौशल्याज	कौशल्याड
१६८	८	स्वामि	स्वामी
१६८	१३	जानहीं	तेजनों
१६८	१८	प्रभ	प्रभु
१६८	२२	आवा	आवा
१७१	२०	कुकुटी	कुटो
१७४	२	नीच	नीच
१७४	२५	लाल	लाले
१७५	११	रहे	हे

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७ई	१४	पाताप	परिताप
१७७	२	लागि	लगि
१७७	२३	महीजै	सहीजै
१८१	२०	ठालि	बालि
१८१	२३	वरणयामवंत	वरणवामवंत
१८२	१८	किस्किदा	किस्किधा
१८३	८	लक	लूक
१८४	१२	जाकी	जानकी
१८४	२३	भूष है	न भूष है
१८५	३	सयम के	समय पाय के
१८५	८	काज	काज में
१९०	३	ी	का
१९१	७	सत्य	सत्य
१९२	२५	पुत्रने	पुत्रां ने
१९५	१४	अघाव	अघाय
१९७	२५	लेचनम	लाचनमें
२०२	२५	तद्यपि	तथापि
२०३	२३	कुबेर	कुबरे
२०८	२४	भरति	भूरति
२१०	३	बीरद	बीर
२११	१	पाक	पालक
२११	११	लंक	लंका
२११	१२	लोत	लाश
२१२	१४	नवाजा	निवाज
२१३	१०	तुलसि	तुलसी

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१४	२३	यतिनहि	तिनहि
२१५	१३	तुलसी	तुलसि
२१५	१८	अङ्गनि	अङ्गनि
२१५	२०	मगव	मगन
२१६	५	कञ्चु	कंज
२१७	८	तं	तूं
२१७	९	भप	भूप
२१८	२०	प्रकाशिक	प्रकाशिका
२१९	८	श्रुत	श्रुति
२१९	११	सारद	सादर
२१९	२४	आयोअव	आयोव
२१९	१५	जनमयो	जनायो
२२१	२१	निर्मल	निर्मल
२२२	११	ससकल	सकल
२२४	३	निचर	निश्चर
२२४	१८	रामज	रामजू
२२५	७	विलंलख	विलख
२२८	११	भरतज	भरतजू
२२९	२	रिपुन	रिपुन
२२९	२२	बैहै	बैहै
२३०	१	सार	साल
२३१	१६	अएहै	अैहै
२३१	५	अख	अवि
२३६	१	रात	राति
२३६	५	रघुंस	रघुवंस

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३७	१	सेवतह	सेवतहै
२३८	१८	भंजु	भंजु
३३८	२६	निकैतव	निकैत
२४१	३	बछु	कछु
२४१	४	पहिचनि	पहिचानि
२४४	१३	भूषन	भूषन
२४६	७	समूह	समूह
२४६	८	राञ्जर्थ	आञ्जर्थ
२५३	८	संदर	सुंदर
२५५	११	लसक	सकल
२५६	१५	राजतन	०
२५६	१६	षजनु	राजतनषजनु
२५८	१	तन	तून
२६०	५	चन्द्रमाकह्यो	चन्द्रमाकोचिन्हकह्यो
२६५	६	कंकुम	कुंकुम
२६५	१०	परि	पूरि
२६५	२२	पंद्रमा	चंद्रमा
२६६	१४	जवति	जुवति
२६६	१८	छडाहि	छाडिहि
२६८	१३	आप	आपु
२७१	२१	मन	मनहोय
२७३	१६	बटो	बटो

